जंगल के जीव

लेखक

श्रीराम शर्मा

चित्रकार

श्री आर० एस० पण्डित (काठियावाड़)

प्रकाशक

विशाल भारत बुक डिपो

१६५।१, हरिसन रोड,

कलकत्ता।

समर्पण

उन देशवासियोंको जो अपने देशकी
धूल-मिट्टीकी शक्तिको समझते हैं
और अपने देशकी वसुधा—
जंगली जानवरों — को
पहचानते हैं और उनसे
प्रेम करते हैं।

कथा-सूची

चित्र-सूची

प्रकाशककी ओरसे

पाठकोंके सम्मुख 'जंगलके जीव' पुस्तक रखते हुए हमें हर्ष होता है। यहाँ यह बताना भी आवश्यक है कि भारतीय साहित्यमें इस प्रकारकी यह प्रथम पुस्तक है। गुजराती और बँगलामें तो इसका अनुवाद हो ही रहा है; अंगरेजीमें भी इसके अनुवादके छापनेके लिए साहित्य-पारखी जोर दे रहे हैं।

अयोध्या सिंह

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक—जंगलके जीव—में ९ जंगली जीवोंके जीवन-स्कैच हैं। विचार था कि कम-से-कम एक दर्जन स्कैच इस पुस्तकमें छपते; पर इन नौ स्कैचोंसे ही पुस्तकका कलेवर काफी बढ़ गया है। यदि तीन और स्कैच इसमें शामिल किये जाते तो लगभग एक दर्जनके चित्र और बढ़ जाते और ४-५ फार्मका मैटर बढ़ जाता। ऐसा करनेसे पुस्तकके मूल्यमें भी वृद्धि करनी पड़ती और शायद यह बात पाठकोंको पसन्द न आती। अगले संस्करणमें यदि पाठकोंका आग्रह हुआ तो इस प्रकारके कुछ और स्कैच बढ़ा दिये जायँगे।

यह पुस्तक लेखकके पचीस वर्षके अन्वेषण, निरीक्षण और प्रकृति-अध्ययनका फल है। प्रकृति-अध्ययनसे तात्पर्य किताबी ज्ञानसे नहीं है, वरन् उस प्रकृति-शास्त्रसे है, जो हमारे देशमें चारों ओर फैला हुआ है, उसी प्रकृतिकी पोथीका अध्ययन लेखकने थोड़ा-बहुत किया है। इस प्रकारके अध्ययनमें समयकी बड़ी आवश्यकता होती है। कभी-कभी ऐसा होता है कि दो-चार बारकी देखी हुई बातोंके विरुद्ध कुछ बातें देखनेको मिलती हैं और तब उन बातोंका समन्वय करना पड़ता है। सोचना-विचारना

तो पड़ना ही है। हमारे देशमें इस प्रकारके शोध और निरीक्षणके लिए सरकारकी ओरसे न कोई सुविधा है और न व्यक्तियोंकी इस ओर अभिरुचि है, जो इस प्रकारके कार्यमें योग दे सकें। जो कुछ इस दिशामें व्यक्तिगत रूपसे हो रहा है, वह सागरकी एक बून्दके बराबर है। हाँ, अंगरेजोंने तथा अन्य विदेशियोंने इस दिशामें काफी काम किया है। उदाहरणके लिए कांग्रेसके पिता ह्यूम साहबने अपनी सरकारी नौकरीके दिनोंमें जब वे इटावेके डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट थे भारतीय पक्षीके अण्डों और घोंसलोंपर जो बृहद् पुस्तक लिखी है, उससे वे अमर हो गये हैं। पुस्तक तीन भागोंमें प्रकाशित हुई है और आजकल बड़ी कठिनाईसे वह मिलती है। जिस स्थानपर ह्यूम साहबने पक्षियोंका निरीक्षण इटावेमें किया था उसको इस विषयके लेखक काशी, मक्के और मदीनेकी तरह देखने आते हैं। यह ठीक है कि ह्यूम साहबने पक्षियोंका जो सूक्ष्म अध्ययन इटावेमें किया था, उसमें और अबके अन्वेषण और निरीक्षणमें कहीं-कहीं अन्तर है; पर इससे ह्यूम साहबकी पुस्तकका महत्त्व और भी बढ़ जाता है। भागीरथीको लानेवाले भगीरथ थे। उसमें से नहरें निकालनेवाले तथा पुल बाँधनेवाले इञ्जिनियर आवश्यक तथा अति उपयोगी होनेपर भी उतना महत्त्व नहीं रखते, जितना कि भगीरथ। प्राकृतिक जगतमें जो निरीक्षण करते हैं, उनके निरीक्षण तथा बादके निरीक्षणमें अन्तर होना स्वाभाविक है; पर इस बातसे कोई इनकार नहीं कर सकता कि इस दिशामें दर्जनों व्यक्तियोंको काम करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति किसी एक पक्षी अथवा किसी एक जानवरके अध्ययनमें अपना सारा जीवन लगा दे और उसपर एक विस्तृत पुस्तक लिख दे तो उसे साहित्यिक अमरत्व प्राप्त हो सकता है। स्वयम्

इन पंक्तियोंके लेखककी तबीयत करती है कि वह अपना शेष जीवन इस प्रकारके अध्ययनमें दे और कुछ किताबें हिन्दी-साहित्यको दे जाय; पर अपने संघर्षमय जीवनके कारण ऐसा करना प्रतीत नहीं होता। इस पुस्तकमें वर्णित जानवरों और पक्षियोंके विषयमें उसने प्रकृतिकी पोथीसे जो अध्ययन किया है उसके लिए उसे बचा-खुचा कर समय निकालना पड़ा। शिकार खेलनेकी धुनके पीछे पशु-पक्षियोंका अध्ययन ही उसके लिए अधिक महत्त्व-पूर्ण था। अध्ययनकी खातिर बीसोंबार जानवरोंको उसने मारा नहीं। एक-एक बातकी जानकारीके लिए महीनों लग गये। कछुए कहाँ अण्डे देते हैं, मगरोंके अण्डोंकी उपयुक्त जगह कौनसी होती है, इन बातोंको देखनेके लिए मामूली समय नहीं लगा है। घर और बाहरवाले लेखककी इस प्रवृत्तिको प्रायः मूर्खतापूर्ण कहते रहे हैं। लेखकने इस प्रकारके व्यङ्गोंका बुरा नहीं माना। जो कुछ उससे बन पड़ा है और जैसे भी उससे लिखा गया है वह पाठकोंके सामने है।

यदि प्रत्येक स्कैचके विषयमें लिखा जाय कि उसके लिखनेमें कैसे प्रेरणा मिली तथा उसके लिखनेमें कितनी कठिनाइयाँ आईं, तो भूमिका बहुत बढ़ जायगी। यहांपर इतना ही लिखना काफी है कि इन स्कैचोंके अध्ययनमें लेखकका बहुत अधिक समय गया है। काला हिरन : द्रुतगामीका निरीक्षण और अध्ययन उसके गांवके आस-पासका है। सात-आठ वर्षकी अवस्थासे हिरनोंको समझनेका उसका शौक रहा है, अबसे २५-३० वर्ष आगरे और मैनपुरीके जिलोंमें दो-दो सौ और ढाई सौ हिरनोंकी टोलियाँ दिखाई पड़ती थीं। अपने ही गांवके पास दसों बार एक-एक टोलीमें तीन-सौके करीब हिरन लेखकने गिने थे। आज तो इक्का-दुक्का हिरन भी

कठिनाईसे दिखलाई पड़ता है। खानेवालोंने हिरनोंका खात्मा-सा कर दिया है। यदि अपने देशके इस सुन्दर हिरनकी रक्षा नहीं की गई तो आशंका है कि कहीं इस हिरनका खात्मा ही न हो जाय। ऐसी दशामें यदि कोई काले हिरनका उसकी जंगली हालतमें निकटतम अध्ययन करना चाहे तो बड़ी कठिनाई होगी। लेखकने लगातार दस-बारह वर्ष तक विशेषकर गर्मियोंके दिनोंमें दूरबीन लेकर अपने गाँवके आस-पास घण्टों अध्ययन किया है। नोट्स लिये है, छिपकर घण्टों पन्द्रह-बीस गजकी दूरीसे उनका अध्ययन किया है और उसी बूतेपर काले हिरनका जीवन-स्कैच लिखा गया है।

'बघेरा : खूनका प्यासा' एक प्रकारसे लेखकके गढ़वाल जीवनका फल है। टिहरीके आस-पास बघेरेकी खोज और उसके अध्ययनमें लेखकने कई वर्ष बिताये। गढ़वालके गिरिशिखरों और जंगलोंने लेखकको स्फूर्ति और प्रेरणा दी। बघेरेपर तो लेखक १५०-२०० पृष्ठकी एक स्वतन्त्र पुस्तक लिख सकता है। गढ़वाल विशेषकर टिहरी गढ़वालकी प्राकृतिक छटाकी अमिट छाप लेखकके मनपर है। कदम-कदमपर गढ़वालमें प्राकृतिक अध्ययनके लिए सामग्री भरी पड़ी है। यों बघेरेका हमारा अध्ययन देहरादून तथा मैदानी इलाकोंका भी है; पर गढ़वाल उसका मुख्य स्रोत है।

'घड़ियाल : खूनी' यमुना, गंगा, काली, और रामगंगा नदियोंके किनारे से ली हुई सामग्री है। घड़ियालके बारेमें अंगरेजी लेखकोंने भूलें की हैं कि वह आदमखोर नहीं होता। डुडेकरकी प्रसिद्ध पुस्तक तकमें घड़ियालके बारेमें गलत बयानी है और चित्र तक गलत है।

'शेर : शक्तिपुंज'के लिए देहरादून और ऋषीकेशके आस-पासके जंगलोंकी खाक छाननी पड़ी।

'हाथी : समझदार' भी ऋषीकेश और देहरादूनके जंगलोंकी देन है।

'जंगली सूअर : सूरमा' कटियारी रियासत (हरदोई), मैनपुरी और आगरे जिलोंकी घूमघाम और शिकार खेलनेका नतीजा है।

'बया : अद्भुत'के बारेमें एक बात विशेष तौरसे लिखनी है। बयाके बारेमें एक अंगरेजी पुस्तक Dwellers in the Jungle में एक लेख था। पहले कुछ पैराओंको छोड़कर बया सम्बन्धी स्कैच उसी लेखपर आधारित है। पर वर्षाके आगमनका वर्णन लेखकका अपना निजी है।

'सियार : सयाना' तो हर गाँव और बस्तीके पास रहता है। प्रकृतिकी म्यूनिस्पैलिटीका वह एक आवश्यक प्राणी है। सियारके चातुर्य पाठकोंको आश्चर्य होगा। पर उसपर तो कोई बहुत बड़ी पुस्तक लिख सकता है।

'जंगली मुर्ग : छैल छबीला' वास्तवमें छैला होता है। गढ़वालकी मधुर-स्मृतियोंमें लेखक उसे भूल नहीं सकता। टिहरीके आस-पास जंगली मुर्ग—कुकड़े—की खातिर उसके स्वभाव जाननेके लिए लेखक नालों और झाड़ियोंमें बैठा है और वे गढ़वालकी प्राकृतिक छटाके सानिध्यने लेखकको उनसे मैत्री करनेको प्रेरित किया।

लेखकने अपने बँगाली और गुजराती मित्रोंसे पूछा कि क्या इस प्रकार का साहित्य—जंगली जानवरोंके जीवन स्कैच उन भाषाओंमें है। मित्रोंने

बताया कि इस प्रकारके स्कैच उन भाषाओंमें नहीं है और इसलिए इस पुस्तकका अनुवाद उनमें हो रहा है।

आशा है इन स्कैचोंसे हिन्दीके नवीन लेखकोंको कुछ प्रेरणा मिलेगी और वे शायद निकट भविष्यमें इस प्रकारके साहित्यसे हिन्दीका भण्डार भर सकें। यदि ऐसा हो तो लेखकको अपार आनन्द होगा।

कलकत्ता,

८-५-४९ (गुरुदेव जन्म तिथि)

श्रीराम शर्मा

काला हिरन : द्रुतगामी

काला हिरन—द्रुतगामी

जेठका महीना। आगरेका ज़िला और समय ठीक दोपहरी। लूके झकोरे हाय-हाय और सांय-सांय करते हुए पेड़ोंको डरा रहे थे। जीव-जन्तुओंका दम-सा निकला जा रहा था। धरती गरम तवेके समान तप रही थी। बवंडर जो कभी उठ खड़ा होता, तो प्रतीत होता कि चंडी विकराल रूपमें सिरके बाल बखेरे और घास-पातके सिरोंका संहार करके ऊपर आकाशमें उन्हें फेंक रही हो। बवंडरकी चोटी सूर्यको छूती दिखाई देती, मानो दिवाकर बवंडर-चिमनी द्वारा धरातलपर अपने तापको पम्प कर रहा हो। भन्नाता हुआ एक बवंडर उठता, पेड़ों और पौधोंको गाली-गलौज-सा करता, थोड़ी दूरपर शीघ्र ही एक और बवंडर उठता और अपने घमंडमें मुट्ठी भर धूल सूर्यके मुँहपर फेंकता।

गरमीके प्रकोपसे मैदानकी हरियाली परास्त ही नहीं, नष्ट भी हो चुकी थी। हां, आक और जवासा ग्रीष्मरानीके मुँहलगे नौकरोंकी भांति पिट्ठू बने पनप रहे थे। उनकी असंख्य आँखें—फूल—तिरछी नज़रोंसे लूके इशारेपर इधर-उधर घूम-फिरकर, हरियालीकी टोह लगाते और उनपर फब्तियां कसते कि आखिर वे ग्रीष्म-गरिमाको कब तक न मानेंगे।

दूर-दूरपर खड़े पेड़ त्राहि-त्राहिकी रट लगा रहे थे। उनकी हालत उन देश-भक्त विद्रोहियोंकी-सी थी, जो शत्रुओंके अपार बलसे छिन्न-भिन्न होकर भूखे-प्यासे अपनी आन-बानपर मर-मिटनेको तैयार हों—एक आदर्शकी खातिर। ऊपरसे सूर्य और अगल-बगलसे ग्रीष्मकी सूखी लू अपने आक्रमणोंसे उन्हें

बेहाल कर रहे थे। रणबाँकुरी ग्रीष्मरानी अपने क्रोधमें, कभी-कभी आँधीके डिवीज़नको, पीड़ित पर ग्रीष्म-सेनासे मोरचा लेनेवाले पेड़ोंसे भिड़ा देती और बात-की-बातमें हरियालीके अनेक सूरमा चीत्कारके साथ, हरियाली ज़िन्दाबाद कहते हुए, विदीर्ण हृदयसे मूर्च्छित और खंडित होकर गिर पड़ते। टूटी शाखाएँ और उखड़े पेड़ रणक्षेत्रमें पड़े भीमकाय योद्धाओंकी भुजाओं और लोथोंकी याद दिलाते; पर जिस प्रकार सच्चे वीरोंका नैतिक बल अजेय होता है और अपने बुद्धि-बलसे वे लड़-भिड़कर और प्रहारोंको सहकर भी डटे रहते हैं, उसी प्रकार बहुत से पेड़ डटे खड़े थे।

सुदूर उत्तरमें हिमालयकी तलहटीके गिरि-शिखर भी झुलसे-से खड़े थे। जंगली जानवर सघन झाड़ियोंमें मुँह छिपाये पड़े थे। कुछ घबराकर गुफाओं में पड़े हाँप रहे थे। सूअर अपनी टोलियों में झाड़ियोंमें खुदे स्थानोंमें सिसक से रहे थे। नील गायोंके झुण्ड छेंकुरके झुरमटोंमें खड़े और बैठे जुगाली कर रहे थे। गीदड़ोंकी हालत भी अच्छी न थी। वे भी जीभें निकाले हाँफू-हाँफू कर रहे थे और दूर खड़े चिकारों (Ravinedeer) को कोस रहे थे कि किस प्रकार उनकी दाढ़ें हिरनोंके ताज़े मांसमें गड़ें। पक्षी भी परेशान थे। मनुष्योंने भी अपने घरोंमें शरण ले रखी थी। गाँव ऐसे प्रतीत होते थे, मानो धरतीके वक्षस्थलपर फफोले हों।

* * *

गाँवसे दक्षिणकी ओर, रेलवे लाइनके पार, बबूलोंकी छायामें हिरनोंका एक झुंड आराम कर रहा था। कुछ सचेत सन्तरी ड्यूटीपर तैनात थे। कुछ हिरनियाँ बैठी रौंथ कर रही थीं। दो-तीन पट्ठे हिरन बबूलोंके तनोंसे अपनी रगड़ रहे थे। झुण्डका नायक हिरन सुषुप्तावस्था में पड़ा अपने नेतृत्वके
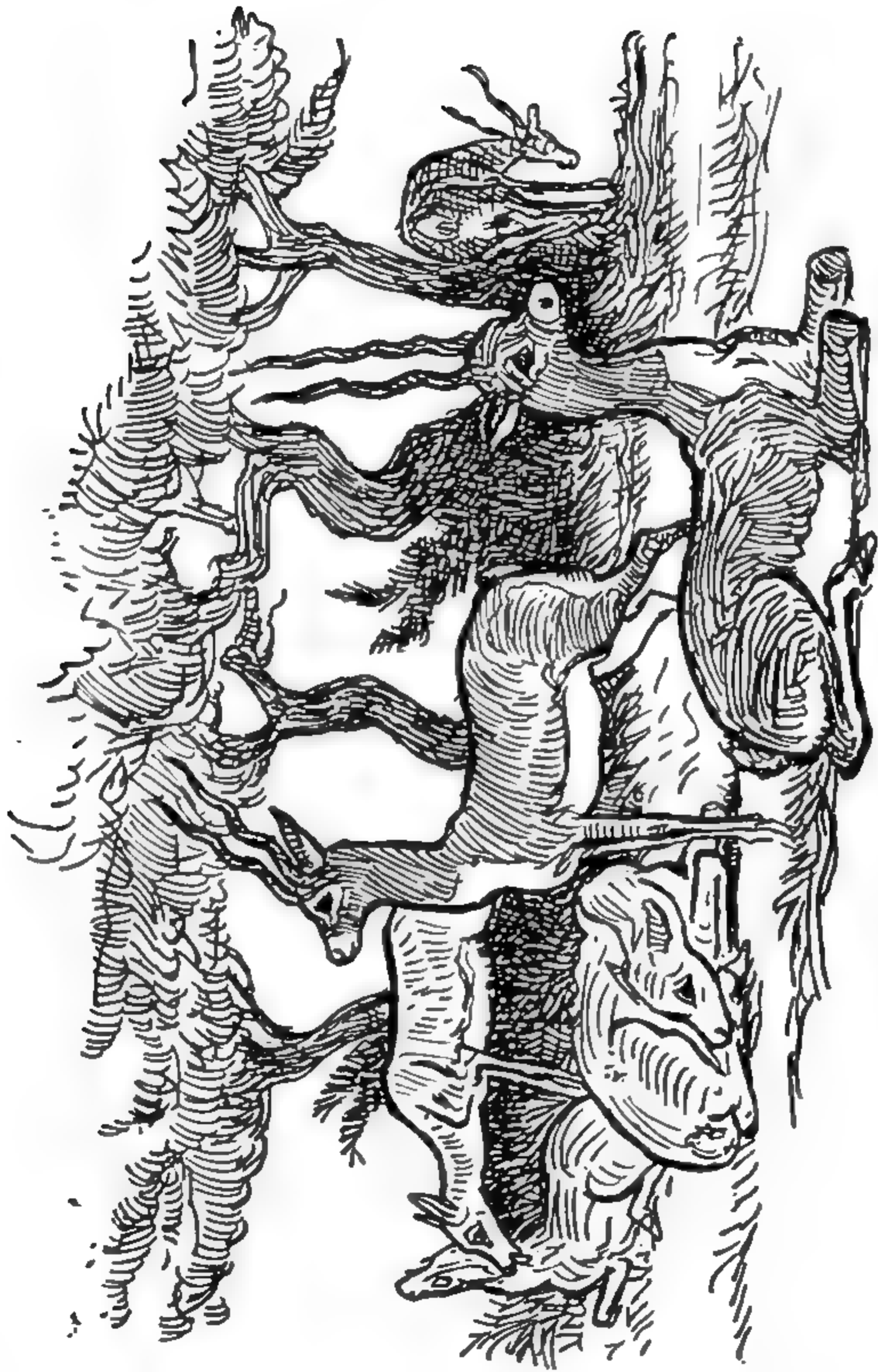
"बबूलोंकी छायामें हिरनोंका एक झुण्ड आराम कर रहा था।" पृ० २

कारनामोंका स्वप्न-सा देख रहा था और कानपर जब कभी कोई मक्खी आ बैठती, तब कान फटफटाकर उसे उड़ा देता था। जब कभी कोई सेंगरी (बबूलकी-फली) टपक पड़ती, तब उसे बैठे-ही-बैठे हिरन या हिरनी गर्दन बढ़ाकर मुँहसे उठाकर चबा लेते। टोली चैनकी वंशी-सी बजा रही थी। बबूलोंकी छत्रछाया में सूर्य-तापसे सुरक्षित हिरनोंका झुण्ड आराम कर रहा था; पर एक हिरनी कभी उठती और कभी बैठती। थोड़ी देर में वह चकित-भीता हिरनी झुण्डको छोड़कर धीरे-धीरे आगे बढ़ी। झुण्डके अन्य सदस्योंने उसे देखा; पर कोई विस्मित नहीं हुआ। चिन्तित और घबराई-सी हिरनी कुछ क़दम चलकर करीब ही झरबेरीकी आड़में खड़ी हो गई और सचेत पर करुण नेत्रोंसे उसने इधर-उधर देखा। विरहाकुल भूमिने सहानुभूति प्रकट की, शिवनेत्र — सूर्य—ने भी हिंस्र जीव
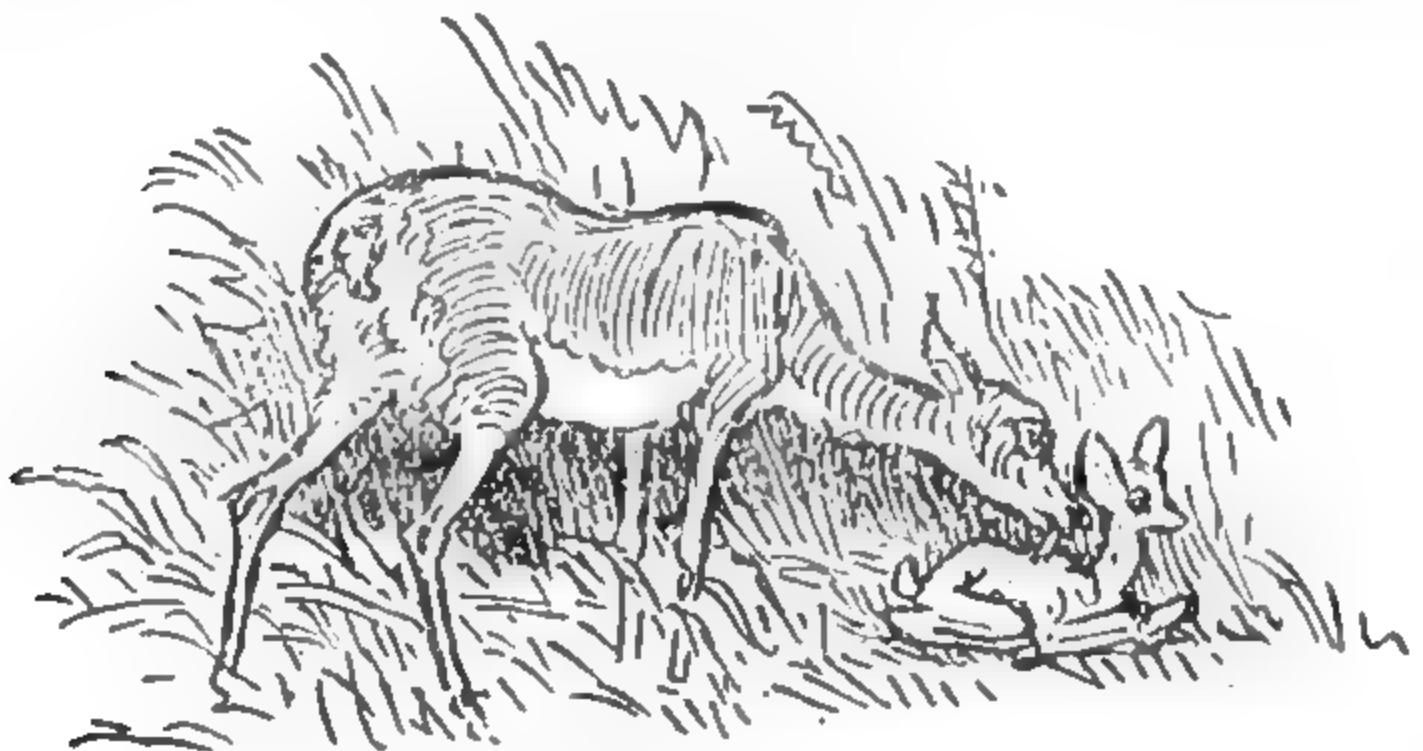
"पाँच मिनटमें हिरनीने उसे चाट-चूटकर साफ़ कर दिया।"

पर कड़ी नजर रखी। प्रकृतिने प्रसूति-क्रियामें सहायक बनना सहर्ष स्वीकार किया। हिरनी बैठी। पीड़ासे कुछ बेचैन हुई। थोड़ी ही देर बाद वह घबराई-सी खड़ी हो गई और उसके क़रीब झिल्लीमें लिपटा एक मांस-पिंड कँपा! पाँच मिनटमें ही हिरनीने उसे चाट-चूटकर साफ़ कर दिया, मानो किसी दक्ष दाईने

उसे स्नान कराकर तौलियासे पोंछकर सुखा दिया हो। हिरनी कोई मानवी माता थोड़े ही थी, जिसकी परिचर्याके लिए डाक्टरों और औषधियोंकी ज़रूरत हो। सभ्यता और बनावटी जीवनके अभिशाप तो उनके लिए ही हैं, जो प्रकृतिकी उपेक्षा करके, सादगीके सीधे और सुगम मार्गको छोड़कर, खान-पान और रहन-सहनके कृत्रिम कूपमें जान-बूझकर गिरते हैं।

मृग शावकने भोली आंखोंसे अपनी माकी ओर निहारा, और माने अपनी कातर दृष्टिसे उसकी आंखोंमें स्नेह उंडेला। स्नेह-आकर्षणसे शावकके कोमल शरीरमें बिजली-सी दौड़ गई। लड़खड़ाकर वह खड़ा हुआ। क्षीण शब्द—रंभाने के धीमे शब्द 'ओंअ' से उसने अपनी सजीवता प्रकट की। झरबेरीने झूम-झूमकर पुत्र-जन्मपर सोवरिके गीत गाये। लूकी सिहरिनने रागिनी छेड़ी। सूर्यने मूक ठेका लगाया और मृग-शावक ने हूलें मार-मारकर मातृ-अंचलसे श्वेत जीवन-रस पान किया। हिरनी दूध पिलानेमें कभी अपने बच्चेको दुलार करती और कभी कनौती करके चारों ओर देखती कि कहीं कोई शत्रु तो निकट नहीं है। पिछली बार ऐसे ही समय गन्ध पाकर दो गीदड़ उधर आ निकले थे और उसके क्रोध, क्लेश और दर्द-भरी पुकारका उनपर कुछ असर नहीं हुआ था, और उसके लालको वे बात-की-बात में चट कर गये थे। प्रकृतिके प्रांगणमें जीवन-मौतके ये सौदे होते ही रहते हैं, इसलिए हिरनी बहुत सतर्क थी। हां, ऊपर गिद्धको मँडराता देखकर वह चिन्तित अवश्य थी कि उनके मँडरानेको देखकर कहीं गीदड़ और कुत्ते उधर न आ निकलें। पर इस बार प्रकृतिने हर तरहसे उसकी सहायता की थी। बच्चा भी काफ़ी होनहार प्रतीत होता

था। बदन, रंग-पुट्ठे और टाँगोंकी बनावट मृग-शावकको नेतृत्व-पथपर ले जानेके प्रमाण-स्वरूप थे। अतः सुविधाके लिए उसे चौधरी सम्बोधित किया जायगा।

टाँगें फरहरी होते ही एक घंटेके भीतर दुधपिया चौधरी अपनी माकी बगलमें चलने लगा। प्रेम-विभोर तथा शंकिता हिरनी चौधरीको शीघ्र ही जीवन-शिक्षा देने लगी। जब कभी वह आतुर होकर इधर-उधर दौड़नेकी कोशिश करता, तभी वह मीठी भर्त्सनामें 'आँउउ'की चेतावनी देती मानो उससे कहती, "पूत, अभी तुझे अनुभव नहीं है और न तेरी टाँगोंमें इतना बल है, जो अपने शत्रुओंसे भागकर पिंड छुड़ा सके और न तुझमें इतनी शक्ति है, जो कुत्तों और गीदड़ोंसे सफलतापूर्वक लड़ सके।" भर्त्सना और चेतावनी-सूचक दृष्टि और शब्दसे चौधरी चौकन्ना होकर अपनी माकी बगलसे उसी प्रकार आ लगता, जिस प्रकार दो-तीन वर्षका बालक किलकारी मारकर और दौड़कर अपनी माका दामन पकड़ लेता है।

* * * * *

सूर्य ताप कम होनेपर बबूलोंमें बैठा झुण्ड भोजनकी खोजमें चल पड़ा था; पर हिरनी अभी झुण्डमें शामिल नहीं हुई थी। दिनके अवसानपर, गरमी के कम होनेपर; भूखकी गरमी ज़ोर पकड़ती है। गीदड़ और भेड़िए पेटकी ज्वाला बुझानेके लिए शिकारकी खोजमें निकलते हैं। सान्ध्य वेलामें ही खास तौरसे चौधरीकी खबरगीरी करनी थी।

कुछ दूर हिरनी चलती और चौकन्नी होकर खड़ी हो जाती और चौधरी को दूध पिलाती। दाएँ-बाएँ पूँछ हिलाकर चौधरी माताके स्तनसे लग

जाता और दूधका फेन धरती माताके माथेपर टपक पड़ता। स्नेहपगी मा वात्सल्य-विह्वल होकर अपने लालका मल-मूत्र तक चाट जाती। मातृ-स्नेह-रूपी सुरसरिमें बच. . सब मैल पवित्र हो जाता है।

सायंकालको ऊस क्रो ओरसे आते हुए दो गीदड़ोंपर हिरनी की जो नज़र पड़ी, तो उसका हृदय धक्-धक् करने लगा। कनौती करके उस ओर वह देखने लगी और चौधरीको अपनी आड़में खड़ा कर लिया। खड़े-खड़े कभी वह अगला पैर उठाकर वहीं-का-वहीं रखती और कभी कातर दृष्टिसे चौधरीकी ओर निहारती। गीदड़ोंने समझा, झुण्डसे बिछुड़ी हिरनी खड़ी है। उस ओर देखते हुए वे आगे बढ़े। उन्होंने समझा, हिरनीको पकड़नेकी चेष्टा उनके लिए आकश-कुसुम तोड़नेके समान है। खरगोश, मेंढ़क अथवा चूहेकी टोहमें—विशेषकर पानी पीनेकी टोहमें—गीदड़का जोड़ा आगे बढ़ा, और हिरनीकी जान-में-जान आई। क़रीब ही आककी हरी-भरी एक झाड़ी थी। सावधानीसे वह उस ओर बढ़ी और आकोंके कोमल पात खाने लगी। भोजन और पानी दोनोंकी प्राप्ति उसे हुई। वह अलबेली ज़च्चा थी। अपने 'लालका मान' भी करती थी; पर हरीरे और केवकेके बजाय उसे आकके पत्ते और सूखी घासके तिनके ही मिले।

पहली रातकी रखवाली तो उसे काल-रात्रिके समान थी। लोमड़ी के आगमन या खरगोशके फुदकनेपर वह घबरा जाती। यद्यपि प्रसूति-स्थानसे वह लगभग छै-सात फर्लांग दूर आ गई थी; फिर भी उसे चौधरी की रक्षाका ख़याल था।

प्रातःकाल दो-तीन गीदड़ सौ-सवा-सौ गज़की दूरीसे निकले, तो वह

अचल होकर ज़मीनसे चिपट गई, और उसका रंग ज़मीनसे मिल गया। गीदड़ोंको इस बातका पता भी न लग पाया कि चौधरी और उसकी मा वहांपर गीदड़ोंकी आंखोंमें धूल झोंककर बैठे हैं। यदि गीदड़ देख भी पाते, तो भी चौधरीमें अब इतना दम आ गया था कि वह गीदड़ोंकी गति से एकाध मील दौड़ लेता; पर फिर भी हिरनी नहीं चाहती थी कि किसी प्रकारसे उसकी परीक्षा हो।

दूसरे दिन हिरनी चौधरीके साथ झुंडमें जा मिली। पहले तो झुंडको देखकर चौधरी चकराया; पर जिसे माकी गोदकी शरण प्राप्त हो अथवा माका सहारा हो, उसे किसका डर? कुदककर और सहमकर वह पहले तो माकी बगलसे जा मिला; पर थोड़ी देर बाद उसकी झिझक खुल गई, और जब झुंडमें उसने अपने समवयस्क शावक देखे, तब खुशी से उसकी बाछें खिल गईं। झुंडके हिरनों और अन्य हिरनियोंने चौधरी के आगमनपर मूक प्रसन्नता प्रकट की।

* * * *

चौधरी दिन दूना और रात चौगुना बढ़ा। झुंडके साथ उसने शत्रुओंसे सतर्कताकी कला सीखी। जब कभी गांवके कुत्ते झुंडका पीछा करते, तब पहले तो हिरन दुलकी चाल चलते, फिर मोठी पोइया और कुत्तोंको क़रीब आते समझकर हिरन छलांग मारकर दौड़ते। झुंड ऐसे मौक़ोंपर कई विभागोंमें विभाजित हो जाता। कुत्ते उल्लू बनकर और थककर लौट जाते। चौधरीके जन्मके चार दिन बाद ही प्रातःकाल गांवके तीन-चार लड़के चार-पांच कुत्तोंको लेकर उधर आ निकले। हिरनोंको देखकर लड़कोंने कुत्तोंको हुलकारा, "दूलै-लै, दूलै-लै। सेरा लैह, झब्बू दूह।"

कुत्तोंने पहले घात लगाई; पर जैसे ही लड़के दूलै-लै दूलै-लै करके हिरनोंकी ओर भागे, वैसे ही कुत्तोंने हिरनोंका पीछा किया। हिरनोंकी टोलीने पहले तो लेंडी कुत्तोंकी परवाह न की और धीरे-धीरे वे भागे; पर दूसरे गाँवकी ओरसे भी कुछ आदमी उधर आते दिखाई दिये। तीसरी ओर कुछ आदमी घास खोद रहे थे। उनसे किसी भयकी आशंका नहीं थी; पर फिर भी थे तो वे आदमी। एकदम टोलीमें भिरू पड़ा। अनुभवी हिरन और हिरनियाँ तो बातकी बातमें छलाँगें भरते हुए दूर हो गये। लेंडी कुत्तोंमें दम ही कितना था। दो फर्लांगकी दौड़में ही उनका दम फूल गया। एक तो खेत-भरकी दौड़में ही 'खों-खों-खाँव' करके रुक गया। उसे खाँसी थी। पर टोलीके मृग-शावकोंकी माताओंको दुतरफ़ा आक्रमणसे कुछ चिन्ता हुई। चौधरीकी मा घसियारोंकी ओर भागी थी। जैसे ही वह उनके क़रीब आई, वैसे ही घसियारोंने दूलै-दूलैकी आवाज़ लगाई। बिदककर चौधरी वापस लौटा। दो कनफटे कुत्ते चौधरीका पीछा कर रहे थे। अपनी माके साथ वह कुत्तोंको पीछे छोड़नेवाला ही था कि बिदककर वह कुत्तोंकी ओर बढ़ा। लड़कोंने आवाज़ लगाई, "लैह बूचा बेटा!" कुत्तोंने ज़ोर लगाया। हिरनी हकपकाई और भागकर चौधरीके आगे निकल गई और लौटकर कुत्तोंकी ओरको दुल्की चालसे चलने लगी। कुत्ते झाँसेमें आ गये। उन्होंने समझा कि हिरनीको वे हथिया लेंगे। चौधरी माकी चाल समझ गया और दूसरी ओरको भाग गया। कुत्तोंने बचा-खुचा दम लगाकर हिरनीका पीछा किया। हिरनी कुत्तोंको ललचा रही थी। वह इतनी गतिसे दौड़ रही थी कि कुत्तोंसे दस-बारह गज़ दूर रहती थी। दो फर्लांग तक वह दोनों कुत्तोंको इसी तरह चकमा देकर ले गई

और तब एकदम उसने चौकड़ी भरी और कावा काटकर शीघ्र ही चौधरीसे आ मिली। थके कुत्तोंने लड़कोंके पास जानेकी अपेक्षा गाँवकी ओर जाना ही ठीक समझा।

*　　*　　*　　*　　*

टोलीके साथ चौधरी अपनी माकी देख-रेखमें प्रतिदिन मीलों घूमता। एक-आध मीलकी दौड़ तो उसे किसी न किसी बहाने लगानी ही पड़ती। गाँवके कुत्ते हुल्कारनेपर टोलोको रपटाते, तो कभी गीदड़ों व भेड़ियोंके आतंकसे उन्हें भागना पड़ता। यों तो जन्मके १५-२० दिन बाद ही चौधरीको धूल चाटनेकी इच्छा हुई; पर खारी जमीनका चाटनेमें उसे अधिक मज़ा आता। ठूकटों और मेंड़ोंपर दूबके कुल्लोंपर भी वह मुँह मारता और बड़े चावसे उन्हें खाता। एक दिन उसकी मा उसे सायंकालके झुटपुटेमें गाँवके क़रीब ज्वार चुगानेके लिए ले गई। चारेकी खातिर एक काश्तकारने जेठके महीनेमें ही अगाऊ चरी बो दी थी। एक-एक बालिश्तके लहलहाते हुए पौधोंने एक बीघे खेतको क़ालीन-सा बना रखा था। आसपासकी तप्त व गंजी भूमिमें एक बीघेका वह हरा-भरा टुकड़ा मरुभूमिमें पाये जानेवाली शाद्वल भूमिके समान था। खेत की ऊँची मेंड़को हिरनीने एक ही कुलांचमें पार कर लिया, और हरे पौधोंको उन्होंने चरना शुरू किया। बातकी बातमें हिरन आधे खेतको चौपट कर गये; पर चौधरीको ज्वारके छोटे पौधे चरनेमें इतना मज़ा आया कि वह माके दूधको भी भूल गया। किसान खाना खाकर जो लौटा, तो हिरन उसकी पैछर पाते ही रफ़ूचक्कर हो गये। जब सुबह किसानने खेतपर नज़र डाली; तब क्रोध में उसने हिरनोंको गालियाँ दीं और मन मसोसकर रह गया। अगले दिनसे

उसने गोबरको पानीमें घोलकर एक बीघे खेतमें छिड़का। दो-चार बार हिरनोंने चरीके चरनेकी चेष्टा की; पर गोबर छिड़कनेके कारण वे खेतपर मुँह न डाल सके। चौधरीको इस प्रकार चरी न खाने का पछतावा रहा।

उन दिनों पानीकी भी बड़ी कमी थी। आसपास न तो कोई ताल था और न कोई नहर या बम्बा। इसलिए हिरनोंकी टोली आकके कोमल पत्तोंको खाकर ही अपनी प्यास बुझाती।

एक दिन चौधरी अपनी माकी बगलमें चर रहा था। हिरन भी इधर-उधर फैले हुए चर रहे थे। क़रीब १५० सौ गज़पर एक बैलगाड़ी धीरे-धीरे हिरनोंके बराबर जा रही थी। उस गाड़ीको ओर टोलीके अधिकांश हिरनों व हिरनियोंने देखा। मुँह में तिनका दाबे, कनौती किये और पूँछ हिलाते हुए कौतूहलवश बैलगाड़ीकी तरफ़ वे देखते और फिर चरने लगते। चौधरीकी माने संकेत द्वारा उसे बता दिया कि बैलगाड़ीसे किसी भयकी आशंका नहीं है। ये तो हिरन—जीवन की साधारण-सी बातें हैं। आदमीसे दूर रहना तो ठीक है ही; पर देहातियोंकी वेश-भूषा तो कोई विशेष आपत्तिजनक नहीं। घास काटते, हल जोतते, चरस चलाते अथवा कुत्ता हुलकारते वे देखे ही जाते हैं; पर फिर भी क़दम-क़दमपर सतर्क रहना हिरन जातिका स्वभाव होना चाहिए, क्योंकि इनका बड़ा भारी हथियार दौड़ना ही है। चौधरीको इसी प्रकार प्रतिदिन ट्रेनिंग मिलती। बैलगाड़ीको देखकर उसने भी समझा कि कोई किसान अपने कामसे जा रहा है। हिरन गाड़ीकी तरफ़ देखकर चरने लगते। थोड़ी ही देरमें बैलगाड़ी रुकी और उसमें से एक नली-सी उनकी ओरको झुकी। बायें बाज़ूके

साथ चौधरीके क़रीब खड़ा हुआ एक हिरन ज़मीनपर गिरकर पैर पटकने लगा। टोलीमें आतंक छा गया। घबराकर सब-के-सब बेत-हाशा भागने लगे। एक बार धायँ और हुई, एक दूसरा हिरन लँगड़ा हो गया। टोलीसे फुट्टैल होकर वह भागने लगा। बैलगाड़ीसे उतरकर दो आदमी उसके पीछे पड़े। हिरनकी टोली बातकी बातमें तीन-चार मील दूर चली गई। चौधरीके जीवनमें यह नया ही अनुभव था। अपनी माके पास डरसे चौकन्ना वह खड़ा था। उसकी माने समझाया कि सीधे-सादे देहातीसे सचेत रहना चाहिए, उससे कोई विशेष डरनेकी बात नहीं; पर जिसके हाथमें या कंधेपर काली-कलूटी डंडे-सी कोई चीज़ हो, जिसके कपड़े देहातियोंके कपड़ोंसे भिन्न हों, धोखेके लिए खाकी कपड़े पहने हो या सिरपर जिसके खाकी बड़ी टोपी हो, वह रुककर और घात लगाकर चले, तो समझ लेना कि वह हिरनोंकी जानका गाहक है। अपने डंडेमें से वह ऐसी गरम गोली फेंकता है कि जिसकी चाल हमारी चालसे भी बीसगुनी है।

उस दिन चौधरी बहुत घबराता रहा; पर शाम तक टोली फिर मिल गई और अगले दिन फिर अपने पुराने स्थान पर चरती-चराती आई।

* * * *

महीनोंके तापके बाद, एक दिन विरहिन धरनीकी पुकारकी सुनवाई हुई। शरमसे सूरजने मुँह छिपाया और लूने श्वास-प्रश्वास खींचा। भूतलके क्लेशसे द्रवित प्रकृति असंख्य आँसू बहाने लगी। फलस्वरूप दुनिया बदल गई। झील-पोखरे लबालब हो गये। किसानोंने हल सँभाले और खरीफ़की बुवाई शुरू हुई और एक सप्ताहके भीतर ही पावस-

कुमारी धानी साड़ी पहने विचरने लगी। हिरनकी टोली जलराशिसे बचकर पूठोंकी ओरको रहने लगी।

यों तो वर्षा वर्षकी जान है ; पर ऊँटों, बकरियों और हिरनोंको अधिक बारिश अखरती है। हिरनोंकी तो खास तौरसे आफ़त आ जाती है। कुत्तोंको लेकर मांसाहारी लोग हिरनोंका पीछा करते हैं और घेरकर एकाध हिरनको झील-झिलारे स्थानोंमें रपटाते हैं। हिरन जितनी ही ऊँची छलांग मारता है उतना ही गीली ज़मीनमें अपनी वह टाँगें फँसाता है। दो-चार फर्लांगों में ही वह थक जाता है, और लोग उसे पकड़ लेते हैं। कभी-कभी पानी में भी हिरन पकड़ लिया जाता है। चौधरीकी टोलीके कई हिरनों और हिरनियोंने इसी प्रकार अपनी जानें गँवाई थीं।

बरसातमें एक दिन पूठेपर एक झाड़ीके क़रीब चौधरी हरी दूब चर रहा था कि एकदम उसके ओठमें तेज़ सुई-सी चुभी। उछलकर वह एकदम दूर खड़ा हो गया और लगा होठको ज़मीनपर रगड़ने ; पर उसकी परेशानी बहुत देर तक बढ़ती ही गई। उसे बिच्छूने काट लिया था। चारों ओर चक्कर काटता, धौंसता और बार-बार मुँहको ज़मीनपर रगड़ता। उस दिन उसने कुछ नहीं खाया।

भादों और कुँआरके महीनोंमें तो हिरनोंकी मौज ही हो गई। दिन को खेतोंमें घुसकर मूँग, रमास और खुरतीकी फलियां खाते और रातको खुले मैदानमें आ जाते। पर कभी-कभी फ़सलकी आड़से शिकारियोंको भी उनके मारनेमें सुविधा रहती।

*　　*　　*　　*　　*

दिवालीके क़रीब खरीफ़की फ़स्ल तो कट गई और रब्बीकी बुवाई

शुरू हुई; अरहरके लहलहाते खेतोंमें हिरनोंकी टोली मौज करती। एक दिन मूँगके कटे एक पूलेपर चौधरीने जैसे ही मुँह मारा, वैसे ही उसमें से एक भयंकर फुसकार हुई। जाड़ेसे बचनेके लिए एक काला सांप उसमें आ छिपा था। खैर ही हो गई। काले सांपने फन तो मारा; पर मूँगके डंठलने उसके वेगको रोक लिया और आधी इंचसे चौधरीके ओठ बच गये। अगर कहीं काला सांप चौधरीको काट पाता तो घंटोंमें ही वह ठंडा हो जाता।

जाड़ेके प्रकोपसे दिन ठिठुरने लगे और रातें पेंग बढ़ाने लगीं। माकी ममता चौधरीकी ओरसे कम होती जाती थी और वह अपनी साथिन हिरनियोंसे अधिक हिल-मिल रहा था। दो-एक बार उसने टोलीके गुर्रे हिरनोंके अधिक निकट जानेकी धृष्टता की। उनकी एक टक्करसे उसे अपनी मूर्खताका ज्ञान हो गया, और फिर वह हिरनोंसे बचता ही रहता। जब कभी वह टोलीके नेता काले हिरनकी मस्त चाल देखता, तभी वह मंत्रमुग्ध हो जाता। एक दिन तो उसने अपने झुंडके एक नए पट्ठे और नेताकी लड़ाई घंटों देखी, नेताको परास्त होकर बहिष्कृत होते भी उसने देखा और विजयी हिरनकी मद-भरी चालकी उसने दाद भी दी।

माघके आते-आते उसे अपनी माका मोह छोड़ना पड़ा। एक तो स्वयं उसे ही माके नेतृत्वकी आवश्यकता नहीं थी और दूसरे वह भी चौधरीकी उपेक्षा करने लगी थी। चौधरीकी अब उसे तनिक भी चिन्ता नहीं थी। जंगली पशु एक बातमें तो मनुष्यसे बढ़े-चढ़े हैं। अपनी संतानको वे शिक्षा-दीक्षामें अपने समान कर देते हैं। मानव-समाजमें माता-पिता या तो अपने बच्चोंको अपनेसे अच्छा बना देंगे या फिर वे उनसे खराब रहेंगे;

पर चौधरीकी माने उसे हिरन-जीवन-शिक्षाकी टकसालमें ढाल-सा दिया था। दुबारा जेठ आने तक चौधरीने जवानीकी ओर क़दम बढ़ाये। उसके शरीरमें जवानीका खून तेज़ी पकड़ने लगा। दो छोटे-छोटे सींग भी उसके निकल आये थे और झुंडके हम-उमर हिरनोंसे वह दो-चार जड़ें रोज़ लेता और प्रत्येकको हराता। दौड़में तो उसकी उमरका कोई हिरन उसे नहीं पाता; पर अभी अधिक बड़े हिरनोंके सामने उसकी कुछ न चलती। एक बार अपने जोममें एक पट्ठे हिरनसे वह उलझ पड़ा था और दूसरी टक्करमें उसके सामने ज़मीन घूमने-सी लगी थी। थोड़ी-सी मूर्च्छाके बाद उसने माकी ओर देखा; पर उधरसे क्या, कहींसे भी उसे सहानुभूति न मिली। और फिर उसकी माकी देख-भालमें तो एक नया शावक आ चुका था।

* * * *

यों तो डेढ़-दो वर्षमें ही चौधरीका पुरुषत्व जाग गया था और हिरनियोंकी ओर उसे स्वाभाविक आकर्षण हो गया था। तीन-चार वर्षकी उमरमें तो वह टोलीके नायक हिरनका कुछ सामना भी कर जाता था; पर लड़ाईमें वह टिक न पाता था। हाँ, दौड़में उसे कोई न पाता था। जीवन के पाँचवें वर्षमें चौधरीका हुलिया ही बदल गया रंग काला हो गया और सींग भी काफ़ी बड़े हो गये। गर्दन उठा और पूँछ ऊँची करके मस्त चालसे जब वह किसी हिरनी पर अपना प्रेम प्रदर्शन करता तब टोलीका नायक उससे कुढ़ जाता और क्रोधानिल में भुनकर उसकी ओर आता। दो-चार टक्करें दोनों की हो जातीं और चौधरी कुछ सहमकर लड़ाईको अधिक न बढ़ाता; पर अब वह उससे डरता ज़रा भी न था। एक दिन चौधरीने एक हिरनीपर
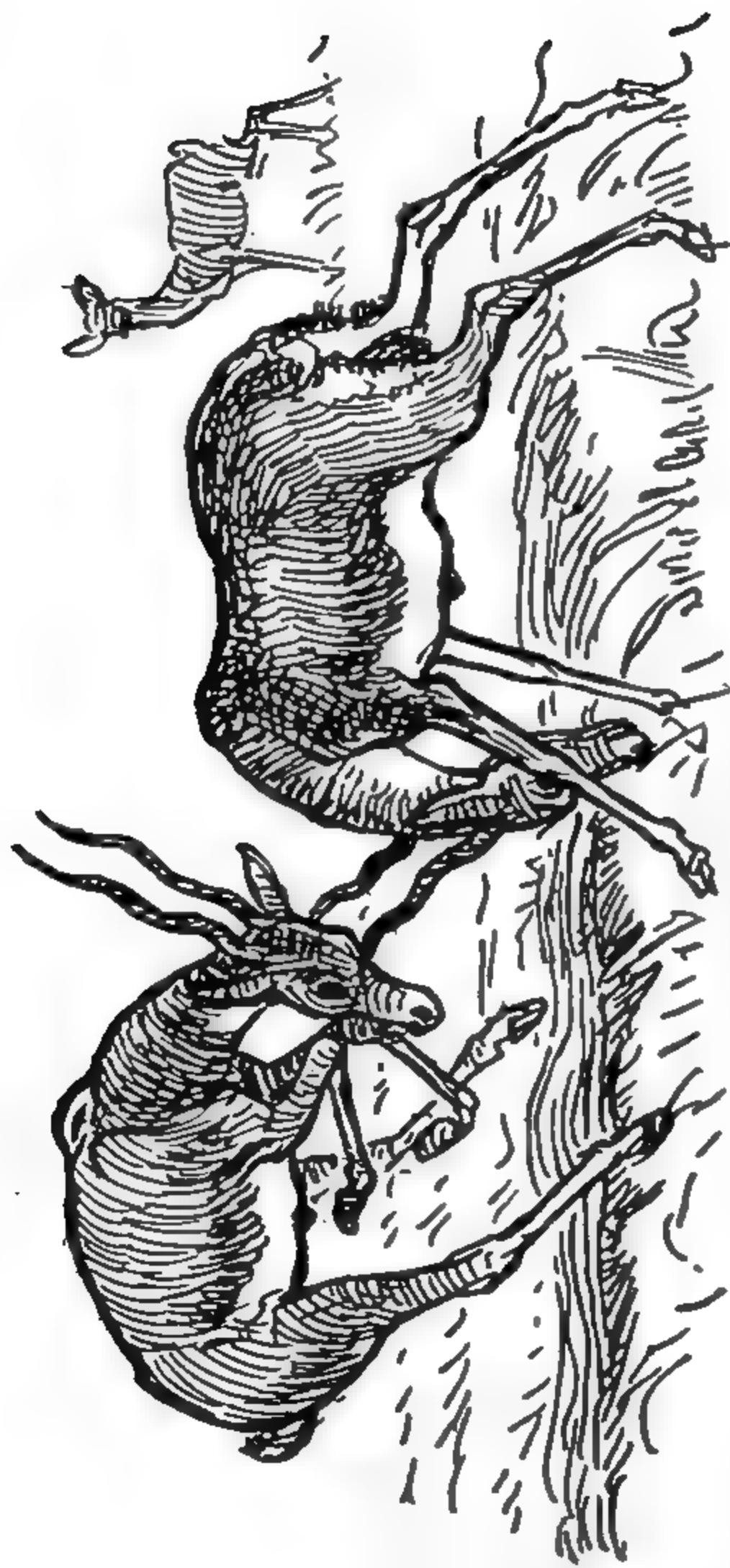
“दोनों हिरनोंमें ठन गई” पृ० १५

अधिक स्नेह प्रकट किया। नायककी मदाखलत उसे पसन्द नहीं आई; और बिगड़कर उसने उससे मोरचा लिया। दोनों हिरनोंमें ठन गई। हिरनियाँ दूर खड़ी उस द्वन्द्वको देखती रहीं। पीछे हटकर दोनोंने गति लेकर टक्करें लीं। सींगोंसे सींग भिड़ाए; कभी घुटना टेककर और कभी खड़े होकर दोनों लड़ने लगे। ऊसरमें अखाड़ा-सा बन गया। किसान भी खेतोंसे लड़ाई देखनेमें मज़ा लेने लगे। कनौती किये हिरनियाँ देख रही थीं कि विजय-श्री किसके हाथ रहती है। बच्चे सहमे-दुबके खड़े थे। पट्ठ हिरनोंको प्रणयकेलिका अवसर मिला था। दोनों पहलवान अभी जुटे हुए थे। दोनोंकी इज्ज़त और नेतृत्वका मामला था। टोलीमें एक ही नेता रह सकता था, और नेतृत्वकी कसौटी थी शक्ति-प्रदर्शन। टोलीके नायकने अपने अनुभवसे काम लिया। अपने सींगोंको तनिक ढील देकर वह एक ओरको हुआ, चौधरी धक्केसे आगे बढ़ा और नायकने अवसर पाकर चौधरीके पुट्ठेमें वह टक्कर दी कि वह गिरते-गिरते बचा; पर नायकके अनुभवके मुक़ाबिलेमें चौधरीकी दीवानी जवानी, पुष्ट पुट्ठे और मजबूत टाँगें थीं। सँभलकर रोषमें आकर चौधरी फिर भिड़ा और नायकके उस पेंचपर नहीं आया। घंटे-भरकी लड़ाईके बाद बढ़ती उमरने चढ़ती उमरके सामने कमज़ोरी दिखाई। नायकने अन्तिम ज़ोर लगाया; पर चौधरी तो अभी गरमाया ही था। नायककी थकावट उसकी साँसोंसे प्रकट हो रही थी, और उसे बचावकी फ़िक्र थी। थकावट आने-पर अवसर पाकर मैदान छोड़कर वह भाग गया। चौधरी विजयी वीरकी भाँति मद-भरे नयनोंसे कभी हिरनियोंकी ओर देखता और कभी अपने विजित प्रतिद्वन्द्वीकी ओर, जो टोलीको छोड़कर दो-तीन फ़र्लांगकी दूरीपर

जा खड़ा हुआ था। विजयी चौधरीका नेतृत्व टोलीने स्वीकार किया और पुराने नायककी उपेक्षा की।

*   *   *

चौधरीने टोलीका नेतृत्व बड़ी शानसे किया। अपने नेतृत्वके दूसरे ही वर्षमें एक दूसरी टोलीके हिरनने उसका मुक़ाबिला किया; पर चौधरीने दस मिनटमें उसे इतना खदेड़ा और उसके ऐसी टक्कर मारी कि हिरन पीछे हटनेमें एक कुएँमें जा गिरा। कुत्तों और भेड़ियोंसे बचनेके लिए चौधरी हमेशा ऐसा मार्ग पकड़ता, जिससे टोलीके सब सदस्य उसके नेतृत्व की प्रशंसा करते।

*   *   *

चौधरीके मुटापे, उसके लम्बे सींगों और चिकनी बढ़िया खालके कारण बहुतोंके मुँहमें पानी भर आया। शिकारियोंने बीसों बार प्रयत्न किये—बैलगाड़ीमें बैठकर, फ़स्लकी आड़ लेकर, उसपर निशाना लेनेकी कोशिश की; पर चौधरीने सबको झाँसा दिया। जब कभी वह किसी बैलगाड़ीको देखता अथवा ठिठककर चलनेवाले व्यक्तिको देखता तो वह नौ-दो-ग्यारह हो जाता और उसकी टोली भी भाग जाती

जाड़ेके दिनोंमें कंजर लोग उसे पकड़नेकी कोशिश करते। एक ओर फ़र्लांग लम्बा जाल लगाते और दूसरी ओरसे चौधरीको घेरकर लाते; पर जालके पास आते ही बीस फुट लम्बी कुलाँच मारकर वह साफ़ निकल जाता। कंजर और अन्य शिकारी हाथ मलते रह जाते।

जाड़ेके दिनोंमें अपनी प्रणय-केलिमें प्रातःकालके समय वह 'औंभ' 'औंभ' करके अपने यौवनका प्रदर्शन करता, तब खेतोंपर सोनेवाले रखवाले समझ जाते कि चौधरी मस्तीपर है।

"चौधरीने…उसके ऐसी टक्कर मारी…" पृ० १६

“भेड़िएने एक हिरनीको धर दबोचा। उसका छोटा बच्चा घबराकर रुक गया और इतनेमें दूसरे भेड़िएने उसे भी आ पकड़ा।” पृ० १७

गरमियोंमें एक दिन शामके समय जब चौधरीकी टोली आकोंको चर रही थी, तब एकदम एक भेड़िएने टोलीपर धावा बोल दिया। दौड़नेमें भेड़िया हिरनोंको क्या पा सकता था; पर भेड़िएने एक ओरसे इस प्रकार हमला किया कि हिरनोंको पूरबकी ओर भागना पड़ा। टोली में भिरू पड़ा। चौधरी बेतहाशा दौड़ा और उसके पीछे दौड़े टोलीवाले अन्य सदस्य। तीन फ़र्लांगकी दूरीपर जब टोली तीस मीलकी गतिसे दौड़ रही थी, तब मार्गमें छिपे एक दूसरे भेड़िएने आक्रमण किया। चौधरी की गति में ब्रेक नहीं लगा, वरन् वह एकदम एक ओरको उछल गया और भेड़िए की गिरफ्त से निकल गया। भेड़िएने एक हिरनीको धर दबोचा। उसका छोटा बच्चा घबराकर रुक गया और इतनेमें दूसरे भेड़िएने उसे भी आ पकड़ा। भेड़ियोंके आक्रमणोंसे घबराकर चौधरी अपनी टोलीको वहाँसे सात-आठ मीलकी दूरीपर ले गया और जाड़ेके दिनों में उधर नहीं आया।

मनुष्यों के कृत्रिम जीवन में नेतृत्व का भार बड़े-बूढ़ों और बुद्धिमान व्यक्तियों पर होता है; पर पशु-जगतमें, जहां बढ़िया नसल की रक्षा का सवाल है, नेतृत्व बलिष्ट और जबरदस्त सदस्य ही करता है। बुढ़ापे में नायकको पदच्युत कर दिया जाता है। अन्तमें चौधरी के नेतृत्व का अन्त भी उसी प्रकार हुआ, जिस प्रकार उसने अपनी टोली के हिरन का किया था।

* * *

हिरनियों से उपेक्षित और टोली से बहिष्कृत चौधरी एकाकी हो गया। दिनको वह खेतोंमें छिपा रहता और रातको पूठोंपर आकर विश्राम करता। दोपहर को कभी-कभी अकेला किसी बबूल के नीचे बैठा-बैठा अपनी टोली-पर हसरत-भरी नजर से देखा करता। यह बात न थी कि वह शिथिल

हो गया था ; पर प्रकृति के विधान से उसमें इतनी शक्ति न थी, जो अपने प्रतिद्वन्द्वी को हराकर हिरनियों को रिझा सकता। जुगाली करते समय उसे अपने पुराने मधुमास के दिन याद आते ; पर मन मसोस कर रह जाता।

आदमियों की सूरत से वह बहुत घबराता, इसीलिए वह किसी के हाथ न चढ़ता। पर एक चतुर शिकारी ने एक सप्ताह उसकी टोहमें बिताया। एक दिन चार बजे ही वह एक झाड़ी की ओटमें जाकर बैठ गया। सूर्य क्षीण रश्मियों से क्षितिज को रक्त वर्ण कर रहा था। पेड़ योगियों की भाँति शान्त मुद्रामें खड़े थे और विरक्त चौधरी धीरे-धीरे वर्षों का बोझ लादे अपने शयन-स्थान की ओर सचेत चला आ रहा था। झाड़ी से पचास गजकी दूरीपर वह रुका कि कहीं कोई धोखा-धड़ी न हो ; पर उसके खड़े होने के आधे मिनट बाद 'धायँ' शब्द हुआ। रैमिंगटन की गोली कलेजा पार कर गई। खूनका फव्वारा चला। धरती पर पड़ा चौधरी चारों पैरोंसे उस शक्ति की प्रार्थना कर रहा था, जिसने उसे जन्म दिया था। जन्म के समय धरती माता ने उसे अपनी गोदमें लिया था और मौतके समय भी धरती माता की गोदमें ही वह सो गया।

रेमिंगटनकी गोली कलेजा पार कर गई। खूनका फव्वारा चला। पृष्ठ १८

बघेरा : खून का प्यासा

बघेरा : खूनका प्यासा

टिहरी (गढ़वाल) में होलीका उत्सव मनाया जा रहा था। शीतकालकी दबी हुई स्फूर्ति प्रस्फुटित हो रही थी। बड़े और बूढ़े, बालक और जवान, गरीब और अमीर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्षरूपसे ऋतुराज वसन्त का स्वागत ही नहीं कर रहे थे; वरन् उसके प्रभाव-रस में पगे हुए थे। पेड़ों और पहाड़ों, लताओं और बल्लरियों, पशुओं और पक्षियों में यौवन-मद स्रवित हो रहा था। टिहरी से सवा मील दूर शिमलासु बागमें खड़े सैमल के पेड़ पर से तो जवानी की लाली बरस रही थी। सैंगल के लाल फूल—पेड़के दिल्के उद्गारोंका रूप बने—जोशे-जवानी में अपने गरम खूनका सुबूत दे रहे थे। सड़क से ऊपर लताएँ शृंगार किये, फूलोंकी बेंदी लगाये, पत्तों के बीच खाली गोलाकार वृत्त की नथ पहने, नव पल्लवों से अलंकृत, शीलभार से कुछ झुकी, मुस्कान-पूरित अधरों और तिरछी नजरों से टहलनेवालों को लुभाती हुईं अपने प्रेमी पेड़ों से मिल रही थीं। झाड़ियों के बन्दनवारों में अनेक बल्लरियाँ वासक-सज्जा बनी बैठी थीं और प्रगल्भ-वचना वसन्ता (Green Barbet) की 'ठुक'-'ठुक'-'ठुक' ध्वनि उसके हृदयोल्लास का पता दे रही थी। कलचिराह की चहक और घुघती (पिंडक) की मस्त रागिनी 'तू कहाँ, तू कहाँ' हृदय में हूक उठाती थी। आस-पास के गिरि-शिखरों ने भी अँगड़ाई-सी ली, और शीत-निद्रा से जागकर प्रकृति ने जँभाई तो बहुत ले ली थी। भागीरथी और उसकी सहायिका भिलंगना को

गति में भी कुछ बाँकपन आ गया था। चट्टानों और पत्थरों से वे ठठोली करती हुई जाने लगीं और उनकी हिलोरें चट्टानों को आगे बढ़कर गुदगुदाने लगी थीं। अभिप्राय यह कि सर्वत्र ऋतुराज की सेना पड़ी हुई थी। टिहरी के चारों ओर, प्रकृति के रोम-रोम से, बसन्त की छटा छिटक रही थी। नए और जवान पेड़ों में तो यौवन-मद था ही; पर बड़े और बूढ़े पेड़ों ने भी अपना कायाकल्प करके पट्ठों से होड़ लगाई थी, और इसीलिए भागरथी के पुलके निकट खड़े पुराने पीपल के पेड़, अपने नए जामे में, वायुकी सिहरन से हँस-से पड़ते और कहते, "हम जब तक जीवित हैं, तब तक बसन्त में जवान रहेंगे और मदभरी आँखों से मनुष्यों की उपेक्षा करेंगे, जो अपनी जवानी इतनी जल्दी खो बैठते हैं।"

पर शिमलासू के क़रीब चूड़ीगदने नाले के ऊपर, झाड़ियों से घिरी एक चट्टान की बगल में एक गुफ़ाके द्वारपर पड़ी एक बघेरिन—चंचला—पीड़ा से परेशान थी। गत सायंकाल से ही वह अनमनी थी और इसीलिए अपने साथी बघेरे—बांगड़ू के साथ, शिकार को भी नहीं गई थी। सड़क से नीचे भिलंगना के कल-कल निनाद, पचास गज़पर बोलनेवाले काकड़ (Barking Deer) और भिलंगना पार रँभानेवाले बछड़े की ओर तनिक भी उसका ध्यान नहीं था। यदि उसकी तबीयत ठीक होती, तो वह काकड़ का गरम खून पीनेकी कोशिश ज़रूर करती। गुफ़ा के दरवाज़ेपर वह घंटों लोटी-पोटी और प्रातःकाल सात बजे तक चार गोल-मटोल चितकबरे पीले-से बच्चे उसके थनों से चिपटे दूध पीने लगे। अपने अगले पँजो को बघेरिनकी बगलमें, थनोंसे ऊपर सटाये और पिछले पञ्जों को ज़मीनपर टेके वे अपनी माका दूध पीने में व्यस्त थे। मा लम्बी पसरी,

सिर ऊपर को उठाये, अधखुली आँखों से सुख और आनन्द की मुद्रा में बच्चों को दूध पिला रही थी।

दोपहर को तनिक गरमी बढ़ी। जब कभी वह झाड़ियों के पार देखने की चेष्टा करती, तब उसे चौंध लगती और घसियारों की आवाजें भी थोड़ी-थोड़ी देर में उसे चौकन्ना करतीं और मन्द गुर्राहट से वह अपना रोष प्रकट करती, पर बघेरा जातिजन्य सुलभ चातुर्य से, मनुष्यों की नजर से बचने के लिए और अपने बच्चों की रक्षा के खयाल से, उसने एक-एक बच्चे को पोले मुँह से दाबकर उठाया और गुफ़ा के अन्दर ले गई। बच्चों को लेकर वह भीतर बैठी ही थी कि बांगड़ू दबे पांव उधर आया और गुफ़ा के दरवाजे पर रुका और उत्सुकता की आकृति से उसने अपनी थूथन सूँघने के खयाल से आगे बढ़ाई। बस, चंचला फट ही तो पड़ी और गुर्राहट के साथ उसने एक थाप बांगड़ू पर चलाई। बांगड़ू ने एकदम झुककर और पीछे हटकर वार बचाया। चंचला ने अपनी गुर्राहट से बांगड़ू को चेतावनी दी कि उसका वहाँ जाना अनधिकार चेष्टा करना था।

उन चार बच्चों में जो पहले हुआ था, उसको हम बनाफर कहेंगे। बनाफर के जन्म के आधे घण्टे बाद एक बहन हुई और फिर दो भाई और जन्मे थे; पर बनाफर डीलडौल में अपने शेष भाई-बहनों से बढ़ा-चढ़ा था।

बनाफर और उसके भाई-बहनों की आँखें बन्द थीं। दूध पीकर वे गुड़ी-मुड़ी-से बने अपनी मा—चंचलाके पेट से लगकर सो रहे। चंचला चारों बच्चों को चाटती और कभी अपना पंजा चाटकर अपने मुँहपर फेरती। उसे भूख भी लग रही थी; पर बच्चों को छोड़कर उस जलती हुई दोपहरी में कहीं जाना उसे पसन्द न था।

सायंकाल के ६ बजे के करीब बांगड़ू गुफा की ओर आया और चंचलाकी ओर एक नज़र देखकर चला गया, मानो एक दूसरे ने इशारों से ही समझ लिया कि बांगड़ू को चंचला के भोजन की कुछ फ़िकर करनी चाहिए; पर जंगली जीवन में भोजन-सामग्री को महीनों या हफ्तों पहले नहीं जुटाया जा सकता, और यदि यह सम्भव भी हो— यदि मांस रखने के लिए कोई सुरक्षित स्थान भी हो सके, तो वैज्ञानिक ढंगों के बिना मांस अधिक दिनों रखा नहीं जा सकता।

बांगड़ू शिकार पर निकला और उधर चंचला भूखसे कुलबुला रही थी। चूड़ीगदनेके ऊपरका स्थानउसका प्रसूति-घर ऐसा सुरक्षित भी नहीं था; पर पेट की आग बुझाने के लिए उसे कुछ उपाय करना ही था। आस-पास के इलाके से चंचला अच्छी तरह परिचित थी। लम्बुगढ़ी में रहनेवाले चमारों के बकरों का उसे पता था। शिमलासू के सुपरिन्टेन्डेन्ट-बागात की बछियों का भी उसे ध्यान था; पर वे उस समय मकान के भीतर बँधनेवाली होंगी। टिहरी लौटनेवाली, झुण्ड से पीछे रहनेवाली गायको दबोचने का चंचला उस दिन साहस नहीं करती थी। सीधी-सी बात जो वह कर सकती थी और जिससे उसे सेर दो सेर भोजन मिल सकता था, वह थी खरगोश और कुकड़े (जंगली मुरगे) पकड़ने की कोशिश। चूड़ीगदनेकी सड़कपर सटे जो पेड़ खड़ेहैं,उनपर मुरगे प्रायः बसेरा लेते हैं। जाड़े के दिनों में तो टहलनेवालों को चूड़ीगदनेवाले पेड़ोंपर मुरगा और मुर्गियाँ बैठी मिलती हैं और शामकोक क क,कु कु कु, चि चि चि चि चि' की ध्वनि झाड़ियों के पीछे सुनाई पड़ती है, जहाँ से मुरगा अपने सारे रनवास को शयन के लिए बुलाता है।

चंचला चुपके से उस झाड़ी की ओर चली, जहाँ मुरगे और मुर्गियाँ एकत्रहोकर पेड़ों पर बैठते थे। चंचला बहुत पहले ही झाड़ी में जा छिपी थी। अपने पीले रंग और काले धब्बों के कारण वह झाड़ी के भीतर बैठी झाड़ी का एक भाग-सा प्रतीत होती थी। आधे घण्टे बाद उधर मुर्गे-मुर्गियाँ निकले। झाड़ी के क़रीब मुर्गे ने अपने पंजों से पत्तों और कंकड़ों को कुरेदा और एक कीड़े को पकड़कर गले के नीचे उतारा। बड़े गर्वसे वह मुर्गियों की ओर देख ही रहा था कि 'झम' से उस पर बिजली सी गिरी। चंचला ने एक थाप में उसका भुरता बना दिया और क़रीबवाली मुर्गी को भी ले दबोचा। मुर्गी घबराकर झाड़ी की ओर भागी, कि इतने में चंचलाने एक थाप उसके भी रसीद की। 'कौं कौं कौं' की ध्वनि के साथ मुर्गे का शेष रनवास भागा और उड़ गया।

मुँहमें दोनों चिड़ियों को दबाकर चंचला गुफ़ाकी ओर आई। बातको बातमें स्वादिष्ट मांस उसने अपने पेटमें डाला और करीबके गदने (नाले) में पानी पिया। पेटकी आग बुझी तो नहीं; पर थोड़ी रोक-थाम जरूर हो गई। लौटकर वह बच्चोंके पास गई, और उसने अपना प्रेम-भार बच्चों को दूध पिलाकर हल्का किया। कुछ रात बीतने पर वह फिर खानेकी तालाश में निकली, और घात लगाकर उसने दो खेलते खरगोशोंमें से एकको पकड़ लिया।

उधर बांगड़ू ने टिहरी के क़रीब भादूकी मगरी के पास एक लेंडी कुत्ते को धर दबोचा था। कुत्तेके मुँहसे बस दबी एक चीख—कीं—निकली थी। कुत्तेका खून तो बांगड़ूने टिपरी गाँवकी चढ़ाई पर ही पी लिया था। सेटिलमेण्ट दफ्तरके क़रीब उसने एक कुत्ता पहले ही मार रखा था, इसलिए

जैसे ही पूर्वकी ओर उषाने अँगड़ाई ली और रात अपना अंचल समेटने लगी, वैसे ही मुँहमें कुत्ते को दबाये पौ फटते ही बांगड़ू गुफ़ाके सामने आ खड़ा हुआ। नखरे के साथ चंचला उठी। कुत्तेको लेकर वह एक झाड़ीमें चली गई और बातकी बातमें उसे साफ़ कर गई। बांगड़ू अधखुले नेत्रोंसे अपनी कृतियोंको दूरसे देखता रहा। जब चंचला खा-पीकर लौटी, तब बांगड़ू वहाँसे उठकर नाले की एक घनी झाड़ी में लेट गया।

सायंकाल से दोनों साथ-साथ शिकार को जाने लगे। आस-पास के जंगलों के काकड़ों और दूसरे शिकारों को तो आदमियों ने मार खाया था, इसलिए चंचला और बांगड़ू को पालतू बकरे, गाय, बैल, कुत्ते आदि को पकड़ने की चिन्ता रहती। हरामख़ोरी और तपस्या मानव-जीवन में सम्भव हैं; पर जंगली जीवों को अपनी रोज़ी के लिए घोर परिश्रम करना पड़ता है। चंचला और बांगड़ू को भी टिहरी के क़रीब अपने भोजन की प्राप्ति में बेहद परिश्रम करना पड़ता। किसी-किसी दिन तो उन्हें फ़ाक़ा हो जाता और उनकी तबीयत किसी घसियारिन को पकड़ने के लिए ललचा उठती।

* * * *

अपने जन्म के आठवें दिन जैसे ही बनाफरने चंचला के स्तन से दूध पीकर अपना सिर उठाया, वैसे ही उसे पहले-पहल कुछ सुझाई पड़ा। उसकी आँखें उस दिन खुलीं। चंचला और बांगड़ू शिकार की मुहिमसे लौटे थे। चंचला ने बच्चों को दूध पिलाना शुरू किया, और अब्बाजान बांगड़ू स्त्रैण पति की भाँति दूर बैठे चंचला की ओर निहार रहे थे। जैसे ही बनाफर को दुनिया दिखाई पड़ने लगी, वैसे ही विस्मय से उसने बांगड़ू की ओर निहारा और धीरे-धीरे वह उस ओर गया। बांगड़ू ने स्नेह-भरी आँखों से

मुँहमें कुत्तेको दबाये पौ फटते ही बाँगड़ू गुफाके सामने आ खड़ा हुआ" पृ० २६

उसे देखा; पर चंचला ने कुछ बिगड़ कर तनिक भर्त्सना की गुर्राहट की।

बांगड़ू के पास से लौटकर बनाफर ने अपने भाई-बहनों की ओर देखा और उनकी बेबसी का उसे कोई आभास नहीं हुआ; पर उसकी तबीयत कुछ खेलने को कर रही थी, इसलिए कभी वह किसी बच्चे की पूँछपर पंजे रखता और कभी किसी बच्चे की बगल से अपनी बगल रगड़ता। उस दिन तो उसको अपनी मा के सिवाय और कोई अच्छा न लगा; पर अगले ही दिन उसके भाई-बहनों की आँखें भी खुल गईं। जब तक उसको इस बात का भान हुआ, तब तक उसने अपने पिता के पास पड़े बकरे की गर्दन पर अपनी नाक रख दी। कितनी मनोमोहक थी वह गंध! नाक रखने के बाद बकरे के गले के घाव पर बनाफर की जीभ ऐसे जा लगी, जैसे दियासलाई छुआते ही पेट्रोल जलने लगता है। बस, उसी दिन से बनाफर की दाढ़ में खून लग गया। सगर्व नेत्रों से बनाफर ने अपनी मा की ओर निहारा, और अधखुली आँखों से उसके बहन-भाइयों ने बनाफर को देखा।

दिन-भर बनाफर अपने बहन-भाइयों के साथ अपनी मा के सामने खेलता। कभी वह दूध पीता, कभी मा की पूँछ खींचता, कभी पंजों से कंकड़ों को पकड़ता और कभी बहन-भाइयों से गुथकर खेलता। सायंकाल को जब उनकी मा बांगड़ू के साथ शिकार को जाती, तब चलते समय वह घुर-घुर और गुर्र-गुर्र करके उन्हें सचेत कर जाती कि वे गुफ़ा से बाहर दूर न जायँ।

होते-होते एक महीना होने आया। एक दिन चंचला को आने में देर हो गई। चारों बच्चे कुछ बेचैन होकर, गुफ़ा से बाहर निकलकर, प्रतीक्षा करने लगे। यों चंचला और बांगड़ू के साथ उन्होंने गुफ़ा के आस-पास

दस-दस गज़ के व्यास के क्षेत्र को देख लिया था; पर अकेले वे गुफ़ा के दरवाज़े तक ही आते थे। गुफा के दरवाज़े पर चारों कान लगाये बैठे थे कि सामने से एक काला सांप उधर आता दिखाई दिया। बनाफर के भाई की नज़र उस पर पहले पड़ी और तिरछा मुंह करके उसने सांप को कौतूहल की दृष्टि से देखा। फिर बड़े कौतूहल से वह सांप की ओर बढ़ा। पत्थर के सहारेजैसेही सांप एक ओर को अपने मार्ग पर निकला, वैसे ही बनाफर के भाईको उसने एकदम अपने पास पाया। फन फुलाकर फुसकारके साथ सांपने वार किया और बच्चे की बग़ल में सांप के कीले उसमें उलझ गये। धीमी गुर्राहट से बच्चे के दोनों पंजे स्वभावतः सांप पर लगे और वह बच्चे को काटकर उलट गया था। बनाफर और उसके भाई-बहन उस दुर्घटना को देखकर उस ओर आये; पर कोई पास न गया। इतने ही में चंचला और वांगड़ू घटनास्थल पर पहुंच गये। चंचला ने दौड़कर सांप की गर्दन पर एक चपत मारी। सांप का भुर्ता-सा बन गया, और वह बल खाता हुआ गुंजलकें मार-मारकर वहीं मर गया। बनाफर का भाई भी थोड़ी देर बाद नशे की हालत में होकर गिर गया और फिर उसे होश नहीं आया। चंचलाने गुर्राहट से बच्चों को फटकारा, मानो कहा—'गधे कहीं के! तुम्हें अभी जंगल का ज़रा भी अनुभव नहीं है। मौत से खेलने तुम काहे को गुफा से इतनी दूर आये? चलो यहां से। ख़बरदार फिर कभी जो ऐसी मूर्खता की!' बच्चे फ़ौरन ही गुफ़ामें चले गये और मा का दूध पीने लगे। थोड़ी देर बाद आसमान पर एक चील मंडराई और मरे हुए सांप को चंगुल में दबाकर उड़ गई। कुछ देर बाद दो तीन गिद्ध झप्प-झप्प करते उतरे और मरे बच्चे को खाने लगे। उनके लड़ने-

की आहट पाकर बांगड़ू दबे पाँव उधर आया और गिद्धोंपर लपका। बस, तीन इंच से ही गिद्ध बच गया और बांगड़ू के पंजों ने हवा को ही खरोंचा।

गुफा में पड़ी चंचला बच्चों की शिक्षा-दीक्षा और रक्षा का ख़याल कर रही थी। बच्चे बड़े हो रहे थे। खिलकौरियाँ करते हुए कहीं दूर निकल गये, या सड़क पर जा भटके, तो न-जाने उन पर क्या मुसीबत आजाय। उसका एक बच्चा तो मर ही चुका था। शेष तीन बच्चोंपर कोई नई मुसीबत न आय, इसीलिए रात भीगते ही बांगड़ू के साथ वह उन्हें वहाँ से ले चली। आगे-आगे बांगड़ू चलता था स्काउट की भाँति और उससे दस क़दम पीछे चंचला थी। और उसके अगल-बगल तीनों बच्चे। जब कभी कोई बच्चा ज़रा भी इधर-उधर होता, तभी चंचला मीठी घुड़की से उन्हें राहे रास्ता पर लाती। बड़ी सावधानी और दबक छिप कर बच्चों को शिमलासूके नीचे भिलंगना के किनारे एक गुफा में ले गई। वह स्थान मनुष्यों के लिए अगम्य-सा था। भिलंगना के किनारे से कोई तीस गज़ ऊपर एक बड़ीचट्टान के नीचे उसने बच्चों के रहने के लिए स्थान निश्चित किया। चट्टान से भिलंगना पार तकका दृश्य साफ़ दिखाई पड़ता था। वहाँ से सायंकाल को चंचला और बांगड़ू शिकार की मुहिमपर जाते और टिपरी, लम्पुंगड़ी और पीखाल तक धावा मारते। कुत्ते, बकरे और बछड़े उन्हें मिल ही जाते; पर उनकी रक्त-लिपसा कभी शान्त न होती, इसीलिए उनकी खूनी आँखें शिकारपर लगी ही रहतीं।

प्रतिदिन सूर्योदय से पहले चंचला और बांगड़ू अपने बच्चोंके लिए मांस लाते। बच्चे जब ढाई-तीन महीने के हुए, तब वे चंचला और बांगड़ू के

साथ शिकार पर भी जाने लगे ; पर किसी शिकार को मारने से पहले चंचला बच्चोंका झाड़ीमें छिपा देती। बांगडू और चंचला घेर-घारकर शिकार को पकड़ लेते, तब गर्दन के बाल फुलाये और ज़रा गुर्राते हुए बच्चे आगे बढ़ते और खून पीते ; फिर हाऊँ-फाऊँ करके बघेरों का कुटुम्ब मांस-भक्षण में लगता।

एक दिन सायंकाल को शिकार की खोजपर चलने के लिए बांगडू ने अँगड़ाई ली, वैसे ही ठीक-नीचे उसे बन्दरों का एक झुंड मिलंगना के किनारे पानी पीना दिखाई दिया। बन्दरों की टोलीमें शोरो-गुल होना स्वाभाविक है। कुछ बन्दर पानी पी रहे थे और कुछ बन्दरियां अपने छौनोंको झिड़क रही थीं। दो-चार बन्दर क़रीब के पेड़ोंपर चढ़ने की तैयारी कर रहे थे। चंचलाने भी उन्हें देखा, और दोनों झाड़ियों की आड़में चुपचाप बन्दरों की घात में निकले। बनाफरने भी चट्टानों के किनारे से बन्दरों को देखा और उनके मांसका ख़याल करके उसके मुँहमें पानी भर आया। चंचला और बांगडू जैसे ही एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी की ओर गये, वैसे ही पेड़ से एक बन्दर ने उन्हें देख लिया। बस, फिर क्या था ! 'खौ-खौ-खौं' करके बन्दर ने अलार्म दिया। गर्दनके बाल फुलाकर वह बघेरे के जोड़ेपर घुड़की देने लगा और एक डालसे दूसरी डालपर कूदा-फांदी करने लगा। बांगडू और चंचला ने बड़ी गुर्राहट से उसे कोसा। चंचला वहीं छिपकर रह गई। बांगडू बन्दरों की टोलीकी ओर भागा। अलार्म को सुनकर बन्दरों की टोली में कुहराम मच गया। बन्दर किनारे की पहाड़ी पर के पेड़ों की ओर बेतहाशा भागे ; पर चूँकि चंचला और बांगडू पहाड़ी के किनारे पर थे और बन्दर नीचे, इसीलिए जैसे ही एक भारी-भरकम बन्दर—बन्दरों के अधि-

ष्ठाताने—पेड़के तनेपर छलांग मरी, वैसे ही चंचला भी उसपर उछली। पंजोंके नाखून और दाँतों ने अधिष्ठाता को तुरन्त ही लाश बना डाला। बांगड़ू ने एक बन्दरिया का पीछा पेड़पर भी किया। पेड़ छोटा था और उससे लगा कोई और पेड़ न था, इसलिए बन्दरिया जैसे ही नीचे कूदी, वैसे ही बांगड़ू की बन आई।
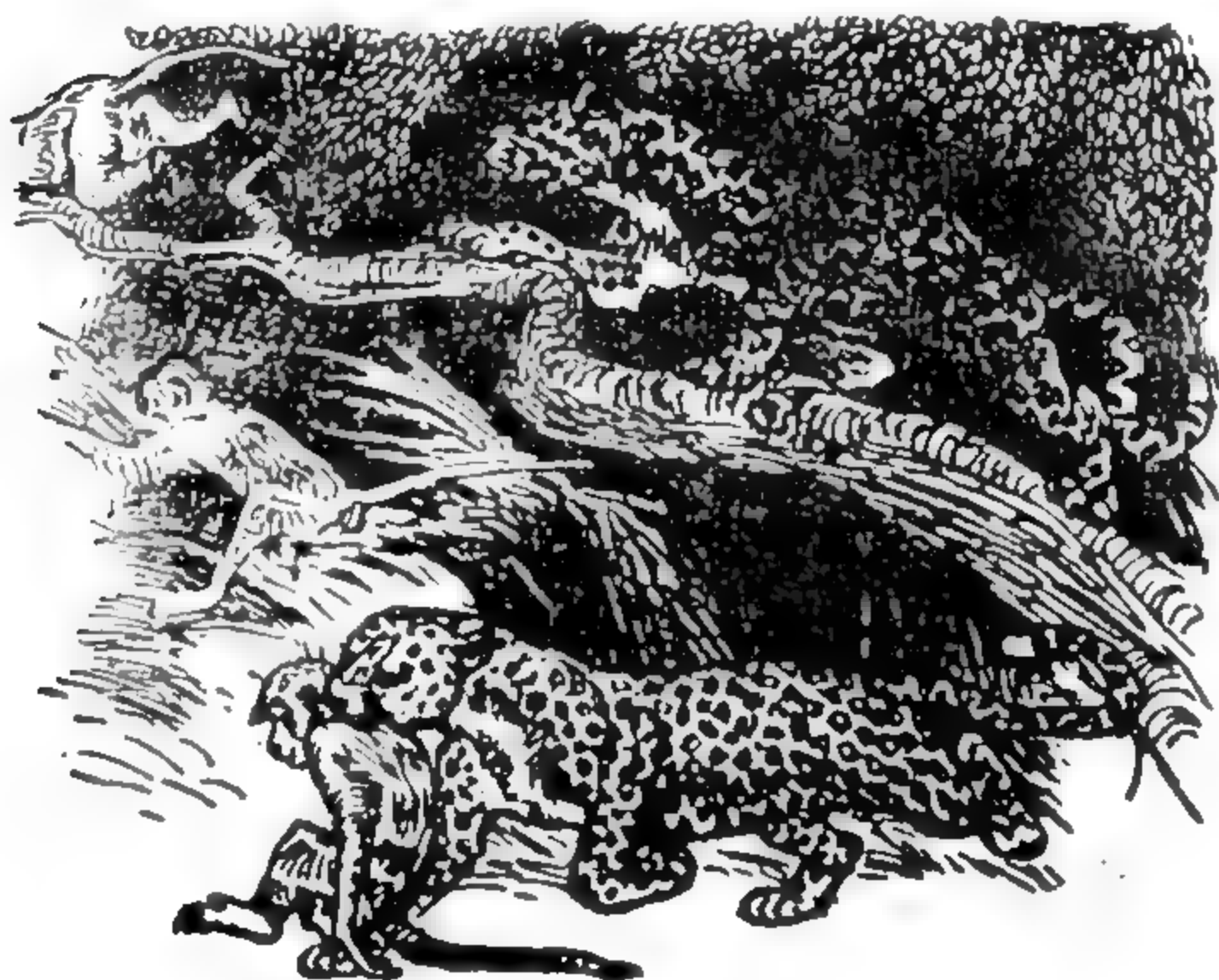
"बांगड़ूने एक बंदरिया का पीछा पेड़पर भी किया।"

चंचला और बांगड़ू ने बन्दरों का टटका खून तो वहीं पी लिया फिर चंचला बच्चों को वहीं बुला लाई और बहुत जल्दी बन्दरों की तिक्का-बोटी हो गई। फिर वे पाँचों शिकारकी खोजमें निकले और अगले दिन सूर्योदय

से पहले अपने स्थान पर आ गये। भिलंगना के किनारे एक चट्टान पर बैठकर चंचला दूसरी चट्टान पर कूदी और बच्चों को भी कूदने के लिए प्रोत्साहित किया। बनाफर तो फौरन ही कूद गया परन्तु उसके भाई-बहन कुछ झिझके। दुबारा प्रोत्साहन देने पर वे भी कूद गये। इस बीच बनाफरने पेड़ों पर चढ़ना भी सीखा। बनाफरको तो अब दिनमें गुफ़ामें सोनेकी अपेक्षा पेड़ों पर ही सोना अधिक भाता था।

पर अपने भोजनको कमी बघेरे महसूस करते थे और बन्दर भी उनके हाथ सहज नहीं चढ़ते थे। एक बार तो लगातार दो दिन तक उन्हें कुछ खाने को नहीं मिला। स्थिति भयंकर हो रही थी। खरगोशों से काम नहीं चलता था और धोखे से खरगोश भी हाथ भी नहीं आ रहे थे। खाली पेट भूखसे व्याकुल चंचला और बांगड़ू बैठे हुए थे कि शिमलासूके बगीचेकी ओर से बिछड़ी हुई एक गाय क़रीब चार बजे पानी पीने भिलंगना की ओर आई। उसे देखते ही चंचला और बांगड़ू जमीन से मिल गये और उसकी घातमें वे दोनों चले। भिलंगना की किनारे वाली ढांग पर जैसे ही गाय पहुंची, वैसे ही बांगड़ूने झपटकर गायको नीचे ढकेल दिया। पन्द्रह फुट की ऊँचाईसे पत्थरों पर जैसे ही गाय गिरी, वैसे ही बांगड़ू के जबड़े गाय की गर्दन में घुस गये और चारों पंजों के नाखून भी उसमें गड़ गये। चंचला भी आ गई और उसकी पूँछसे चिपट गई। गायका काम तमाम हो गया। बघेरोंने डटके खून पिया और ठूँस-ठूँसकर अपने पेट भरे। बनाफर और उसके भाई-बहनने भी तबीयत भरके खाया। उसके बाद उन्होंने पानी पिया और एक चट्टानके क़रीब आराम करने लेट गये।

सुबह तीन बजेके करीब दो तीन गीदड़ उधर आ निकले और मांसकी गन्ध

"सबने डटकर खून पिया और ठूँस ठूँसकर अपने पेट भरे।" पृ० ३२

पाकर उधर बढ़े। गायकी लाशसे दस-पन्द्रह फुटसे गर्दन उठाकर उन्होंने चारों ओर देखा। बघेरोंने भी उन्हें देखा और बांगडू आक्रमणकी घातमें जम गया। गीदड़ एक क़दम ही आगे बढ़े थे कि बघेरा उन पर दौड़ पड़ा। गीदड़ दुम दबाकर भागे। बघेरोंने फिर खाना शुरू किया। लगभग साढ़े चार बजे तक वे लाशसे जुटे रहे। अन्तमें बची खुची लाशको उन्होंने घसीटकर घासमें छिपा दिया। पानी पीकर वे मांदकी ओर लौटे। उनका पेट इतना भरा हुआ था कि चलनेमें उन्हें कठिनाई होती थी।

शामको सूरजके डूबते ही बघेरे मांद से निकले और उन्हें अपने रखे हुए भोजनकी याद आई। बड़ी सावधानीसे वे उस ओर बढ़े। बच्चोंने उस ओर जानेको कुछ जल्दी-सी की, तो चंचलाने उन्हें गुर्राहटसे घुड़की दी। बच्चे पीछे हो लिये। लाश से १०-१५ गजकी दूरीपर बांगडू रुका, और पेड़ों और पासकी जमीनको बड़ी सतर्कतासे उसने देखा। फिर उसने छिपी लाशके चारों ओर चक्कर लगाये और धीरे-धीरे घेरोंको कम करके जैसे ही वह करीब आया, तो उसे मालूम हुआ कि शवावशेष वहाँ नहीं है। इतने ही में चंचला और बच्चे भी वहाँ आ गये। बच्चोंके उद्दण्डतापूर्वक उत्साह को रोकना पड़ा। थोड़ी देरमें ही बघेरोंने मालूम कर लिया कि लाशका बक़ाया उस जगहपर है, जहाँ बांगडूने गायको मारा था। बांगडूको कुछ डर-सा मालूम हुआ, पर सम्हलकर वह उधर गया। करीब पहुंचा ही था कि उसके पीछे बनाफरकी बहन उत्सुकतासे बढ़ गई। एक चमक, बांगडू का क्रोध और कष्टपूर्ण 'आँ३उ' और धायँ। पांच भ्राफ (SG) बांगडूके कन्धेमें पड़े। तड़पकर वह गिरा और बनाफरकी बहनकी कमरपर उसने क्रोध में ऐसी थाप रसीद की कि वह टूट गई। चंचला, बनाफर और उसका भाई

घटनास्थलसे दुम दबाकर भागे। गायके मालिकने शिकारियोंको खबर कर दी थी, जिन्होंने गायकी बची-खुची लाशको खुले मैदानमें रखकर अपने छिपे स्थानसे बाँगड़ूपर फायर किया था।

चंचला, बनाफर और उसका भाई शिमलासूसे चलकर चन्द्रवदनी की ओर बढ़े और घूमते-घामते चम्बा,कोटीगाड़ नैलवागी आदि होते हुए कौड़िया के जंगलमें रहने लगे। कौड़ियाके आस-पास खानेकी कमी न थी। घुड़ड़ (Mountain goat), जड़ाऊ (Stag) के बच्चे, करीबके गाँवोंके लैंडी कुत्ते और कभी-कभी गाय-भैंसके बछड़े तथा पड़रे उनके हाथ लगते। बनाफरकी उमर एक सालके करीब थी, जब उसने पहले-पहले घुड़ड़को पछाड़ा। यों खरगोशोंको उसने कई बार मारा था। एक दिन चंचला बनाफर और उसके भाईके साथ शिकारको निकली। बनाफरकी नजर एक घुड़ड़पर पड़ी, और वह ठिठक गया। चंचला और बनाफरका भाई उसे देख कर दूसरी ओर हो गये। बनाफरने देखा कि घुड़ड़ पचास गजकी दूरीपर चर रहा है और उसका मुँह उसीकी ओर है। स्थान खुला था। धोखा-धड़ीसे काम नहीं चल सकता था, और शिकारकी जान है धोखा-धड़ी ही। एक अनुमानपर बनाफरने बाजी लगा दी। बांझ (Oak) के पेड़पर वह चढ़ गया और लगभग पन्द्रह फुटकी ऊँचाईपर एक दुफंकी शाखापर घात लगाकर बैठ गया। अगर घुड़ड़ कहीं उधर घासके कोमल कुल्ले चरने आ गया, तो उसकी चाल चल जायगी, नहीं तो शिकारीकी मनचीती तो हमेशा नहीं होती और न प्रतिदिन उसकी चालाकी ही चलती है।

घुड़ड़को रात बितानेके लिए एक अगम्य चट्टानपर जाना था। दिन भरका थका-धा सूर्य आँखोंसे ओझल हो रहा था और रक्त-रंजित किरणें दिनके

अन्तिम मिलनमें भीमकाय चट्टानोंका चुम्बन कर रहीं थीं। चट्टानें थी छजीली-सी खड़ी थीं। घुड़ चरते-चरते पेड़के नीचे आया तो घासमेंसे बनाफर उसपर टूटा। उसके दाँतोंने घुड़की रक्तवाहिनी नलियोंको (Jagular Veins) जकड़ लिया। पंजोंकी नुकीली नोकें घुड़के शरीरमें घुस गईं। घासके कुल्ले आधे बाहर और आधे भीतर ज्यों-के-त्यों दबे रह गये। एक-दो बार वह तड़पा और फिर उसके शरीरकी गति बन्द हो गई। आँखें नीली पड़ गईं। बनाफरने खून पीना शुरू किया। चंचला और उसका भाई भी वहाँ आ गये। बेटेकी कमाई पहले ही दिन उसने खाई। उस दिनसे साल भरके बनाफरमें आत्म विश्वासकी मात्रा बहुत बढ़ गई।

एक दिन शिकारकी टोहमें वह एक ओरको चला और चंचला दूसरी ओरको। इतनेमें ही उसने देखा कि सूअरोंकी एक टोली उसका रास्ता काट कर जा रही है। ज़मीनपर एकदम वह छिपक गया और घात लगाकर टोलीकी ओर बढ़ा। उसमें से उसने एक घेंटे (सूअरके बच्चे) को धर दबोचा। घेंटेकी चीं-चीं सुनकर टोलीका नायक दँतैल सूअर 'हो' करके लौट पड़ा, और बनाफरके उसने ऐसी टक्कर मारी कि वह एक गज़से ज्यादा ऊपरको फिंक गया और सूअरकी एक कीप उसकी बगलमें घुस गई। टक्कर से उसे मूर्छा-सी आ गई। ऐसी करारी मार उसपर अब तक नहीं पड़ी थी। खीं-खीं करता हुआ बनाफर नीचे गिरा और पूरी ताकत लगाकर उसने एक पेड़की ओर छलांग भरी। दूसरी छलांगमें ही वह बाँझके पेड़के तनेसे, जड़से ६-७ फुट ऊपर, जा चिपका और कुछ ऊपर चढ़कर अपना घाव चाटने लगा। क्रोधित सूअर अपनी थूथनी ऊपर किये जबड़े खोलता और बन्द करता मानो बनाफर को नीचे उतरनेकी चुनौती दे रहा था। उधर

जान बची लाखों पायेवाली मनोवृत्तिसे बनाफर ऊपरसे फ़ा-फ़ू मात्र कर रहा था। विजयी सूअर टोलीमें आ मिला। खटका पाकर चंचला उधर आई। बनाफर ने नीचे उतर कर प्यारसे घुर घुर करते हुए अपनी देह उससे रगड़ी। बनाफरकी मा को मदद की याद आई।

* * *

इन्हीं दिनों बनाफरके जीवनमें एक घटना घटी। सायंकालको जब चंचला बनाफर और उसके भाई के साथ एक नालेमें पानी पी रही थी, तब नालेके दूसरी ओरसे घरर सररकी-सी आवाज़ आई, मानो कोई भारी से लकड़ी चीर रहा हो। चंचला ने उधर कान किये और थोड़ी ही देर में एक बड़ा-सा बघेरा दिखाई दिया। आँखें चार हुईं। बघेरा उधर बढ़ा और चंचला ने उसका प्रणय स्वीकार किया। बनाफर और उसके भाईको नवागन्तुक अच्छा नहीं लगा। नए बड़े बघेरेने उन्हें तिरस्कारकी दृष्टिसे देखा। चंचलाने उसकी इस दृष्टिका कुछ खयाल नहीं किया, पर बनाफर और उसका भाई नए बघेरे से कुछ दूरी पर रहते। पन्द्रह बीस दिन बाद शामको शिकार पर चलनेसे पहले बनाफर अपनी मा की ओर बढ़ा और घुर घुर करके जैसे ही उसने प्यार किया, वैसे ही नया बघेरा बनाफर पर टूट पड़ा। एक ही थाप में उसने बनाफरको दूर फेंक दिया। बनाफर से वह अपमान सहा न गया ओठोंको ऊपर सिकोड़कर क्रोध और उपेक्षाकी गुर्राहटसे उसने नए बघेरेका साथ छोड़ दिया। वह और उसका भाई वहांसे दक्षिणकी ओर चल पड़े। उस दिन वे खडक्याल गाँवके क़रीब जंगलमें रहे; परन्तु वहां शिकारकी कमी थी। खैर रातमें गाँवसे वे एक कुत्ता पकड़ लाये। कौड़ियाके जंगलकी लानत बोली जा चुकी थी, इसलिए बनाफर अपने भाईके साथ दक्षिणकी ओर

बढ़ता ही गया। वे दोनों नागिनीके करीब रहने लगे। भेड़, बकरी, काकड़, घुइड़ आदि उन्हें इतनी इफ़रात से मिले कि दोनों बघेरे मुटाने लगे।

मांसकी उनके लिए वहां कमी न थी। आस-पास दस बारह मीलकी परिधिमें भोजनका बाहुल्य था; पर मांस खानेकी अपेक्षा उन्हें खून पीनेमें अधिक मज़ा आता था। एक दिन वे एक गड़रियाके बाड़ेमें मकानकी छत पर होकर घुस गये। प्रातःकाल बीस भेड़ें मरी पड़ी थीं और दस बारह घायल हो गई थीं। बघेरोंने न तो कोई भेड़ खाई और न बकरी। उन्होंने सिर्फ खून पिया और मारनेमें मजा लिया। गड़रिया रोया-धोया और बघेरों को उसने सैकड़ों गालियां दीं; पर हिंसकवृत्तिके जीवोंको कोसने, गाली देने अथवा मनानेके मानी हैं किसी पेड़से बातें करना या पत्थरसे कुछ कहना।

बनाफरकी उमर अब लगभग दो वर्षकी थी। वह और उसका भाई चर-चरके मोटे हो रहे थे। जंगली मुरये, पालतू मुरये, काकड़, घुइड़, गाय, पड़िया और पड़रे उन्हें मिल जाते; पर जब कभी वे किसी कुत्तेकी भूँक सुनते, तब उनके मुँहमें पानी भर आता और चौथे-पांचवें दिन वे आस-पास के गांवसे किसी कुत्तेको पकड़ लाते। क़रीबके एक गांवमें एक रातको उन्होंने बीस-तीस बकरियोंको और मारा। गांववालोंने एक उपाय सोचा। क़रीब के जंगलमें पत्थरोंका एक कठघरा (पथरघरा) बनाया। एक कुत्ता पकड़कर एक खानेमें रखा और एक खाना खुला रखा गया। लोगोंके जाते ही कुत्तेने कायँ कायँ करके जंगल गुंजा दिया। गश्त पर जाते हुए बघेरोंके कानमें भी उनके रसगुल्ले—कुत्ते—की आवाज़ पड़ी। बघेरोंकी देहमें चर्बी बढ़ रही थी। शिकार की तलाशमें उन्हें बहुत परिश्रम न करना पड़ता था, इसलिए

उनमें कुछ काहिलजूदी आ गई थी। आवाज़ सुनकर वे ठिठके और जांच करनेकी गरज़से उधर गये। झाड़ीमें से उन्होंने छोटा-सा पत्थरका चबूतरा देखा। एक ओर खुला द्वार भी दिखाई दिया। दस-बारह मिनटकी देख भाल के बाद बघेरे उस चबूतरेके करीब आये। उन्हें देखकर कुत्तेकी तो नानी ही मर गई। अति भयसे वह कुछ डरी ध्वनिमें गुर्राया, भयसे स्नायु ढीले हो गये और रोम-रोम उसका कांप गया। पेशाब और पाखाना भी खता हो गए। बनाफरने एक ओरसे उस चबूतरेकी जांच की, इतनेमें उसका भाई दरवाजेकी ओर बढ़ा, और भीतर घुसते ही जैसे ही उसका बोझा तख्ते पर पड़ा, वैसे ही सटाकसे एक तख्ता ऊपरसे गिरा और द्वार बन्द हो गया। सटाक शब्दसे बिदककर बनाफर भागने लगा कि इतनेमें भीतरसे उसे अपने भाईकी गुर्राहट सुनाई दी। बनाफर लौटा और भाईको कैद पाया। बनाफरने पंजोंसे दरवाजेको बहुत खरोंचा, पर सब व्यर्थ। सुबह तक वह वहीं बैठा रहा। धूप चढ़ते ही आदमियोंकी पैछर सुनाई दी तो बनाफर वहांसे रफूचक्कर हुआ। वह मुश्किलसे एक फर्लांग गया होगा कि बन्दूककी आवाज़ उसके कानमें आई। एक धीमी गुर्राहटसे उसने असन्तोष प्रकट किया, और अपनी मांदकी ओर बढ़ा। गांववाले अपने साथ एक ठस्सा बन्दूक लाये थे, और छेदमें नाल डालकर उन्होंने बघेरे पर फ़ायर किया था। बनाफर-का भाई कराहते हुए वहीं गिर गया।

जीवनमें बनाफरने अपने आपको अकेला पाया। उसकी उमर क़रीब दो वर्षकी हो गई थी। जीवन-यात्राकी कठिनाइयोंको भुगतने की उसमें शक्ति आ गई थी। जंगल-विज्ञानको भी वह खूब समझने लगा था।

यों तो बघेरे अपना एक इलाक़ा-सा बना लेते हैं, पर ज़रूरत पड़नेपर

बघेरा : खूनका प्यासा

"अधखुली आंखोंसे सुख और आनन्दकी मुद्रामें बच्चोंको दूध पिला रही थी" पृ० २३

वे कोसों दूर चले जाते हैं। बनाफरको अपने भाईकी मौतसे कुछ डरसा लगा। उसने नागिनीके क़रीबका जंगल छोड़कर दक्षिणका मार्ग पकड़ा और अगले चार पांच दिन जाजलके क़रीब बिताये। फिर घूमता-फिरता जंगली सूअर, कुक्कड़ और काकड़ खाता हुआ फकोटके डाकबँगलेके नीचे नालेमें आकर उसने अपने रहनेका स्थान चुना। फकोट और आगरखालके बीच-जाजल तक उसने अपने गश्तकी हद रखी।

फकोटके आस-पास रहते हुए उसे तीन-चार महीने हो गए। जाड़ेके दिनोंमें एक दिन जब वह शिकारकी टोहमें एक चट्टानकी बगलमें बैठा था तब अचानक एक बघेरिन उधरसे आ निकली। बनाफर उसे देखकर खड़ा हुआ, और प्रेमभरी नज़रसे निरखने-परखने लगा। एकने दूसरेको पह-चाना। बघेरिन—भम्बो—ने ज़रा निगाह नीची की। बनाफर समझ गया कि—

'सब कुछ है और कुछ नहीं नीची निगाहमें।'

बनाफर पीठके बल लेट गया और घुर-घुर शब्दसे उसने नई नवेली का स्वागत किया। दो-तीन मिनटके टनगनके बाद भम्बोने भी उससे खेलना शुरू किया। अब वे साथ-साथ रहने लगे। बनाफरका घर आबाद हो गया।

एक दिन बनाफर और भम्बो शिकारकी खोजमें जा रहे थे कि दूसरे बघेरेसे उनकी भेंट हो गई। उसने भम्बोपर कुदृष्टि डाली। नया बघेरा कुछ बड़ा ज़रूर था, पर बनाफरकी तूफ़ानी जवानी थी। गुर्राहटके साथ दोनों 'मर्द' भिड़ पड़े। दो तीन मिनटमें ही बनाफरने अपने प्रतिद्वन्द्वीको पछाड़ दिया और विजय-मदसे भम्बोका स्वागत किया।

कुछ महीनों बाद एक दिन भम्बो बनाफरके साथ शिकारको नहीं गई।

अगले दिन बनाफरने काकड़को लाश रखकर झाड़ीमें से मम्बोकी ओर देखा, दो तीन बच्चे मम्बोके पेटसे चिपटे दूध पी रहे थे। बनाफर जैसे ही मम्बो की ओर बढ़ा, वैसे ही मम्बो उससे बिगड़ बैठी और बैठे ही बैठे उसने एक थाप उसपर चलाई। बनाफरने बार बचाया और क़रीबकी झाड़ीमें जा लेटा। मम्बोने काकड़को खाया। दो-तीन दिन बाद फिर वे दोनों साथ-साथ शिकारपर जाने लगे।

बनाफर और मम्बो एक शामको शिकारपर जा रहे थे। आठ-आठ मासके बच्चे भी उनके साथ थे। आगरखालके नीचे नालेमें पानी पीने जैसे ही बनाफरका कुटुम्ब पहुंचा, वैसे ही झाऊझप्प एक काला भालू उधरसे आ निकला। मम्बो और बनाफरको बच्चोंका खयाल था। फ़ौरन ही वहीं अखाड़ा बन गया। गुर्राकर बनाफर भालूपर टूट पड़ा। भो-भो और हो-हो करके भालू भी पिछले पैरोंपर खड़ा हो गया और लम्बी थूथनसे झाग सा फेंकता हुआ मैदानमें डट गया। पहली चपेटमें लुढ़कते-लुढ़कते दोनों दस गज चले गये। बनाफर भालूको गर्दनपर वार करना चाहता था और उसके पेटमें बनाफरके पिछले पंजोंके नाख़ून घुस गये थे। भालूने भी बनाफरके पुट्ठेमें अपने दांत गाड़ दिये थे और नाख़ूनोंसे बनाफर की खालमें खरोंचें बना दी थीं। पत्थरसे टकराकर दोनों उठे, इतनेमें मम्बो भी बनाफरकी मददको आ गई, और दम्पतिने मिलकर भालूको बुरी तरह घेरा। भालू कुछ डरा और भागने की चेष्टा जैसे ही उसने की, वैसे ही बनाफर उसकी पीठपर चढ़ बैठा और मम्बोने भालूकी टांग पकड़ ली। बनाफरके मुंहमें तो भालूके बाल भर गये और अक्खा-त्था करके वह अपनी जीभको भीतर-बाहर निकालता हुआ दूर हट गया, पर मम्बोके कीलोंसे भालूकी टांग घायल हो गई। भालू भी

डट गया, और अपने पंजोंसे उसने भम्बोको खरोंचा। भम्बोने बनाफरको अलग समझ भालूको छोड़ दिया। रोता-चिल्लाता और नालेमें कुहराम मचाता भालू भाग गया। बघेरोंने भी अपने घाव चाटे और वे अपनी शिकारकी खोजमें चले गये।

बनाफर अब भम्बोके साथ हमेशा न रहता। तीन-तीन और चार-चार दिनके नागेसे वह उसके पास आता। और एक बार जो वह गया, तो चार-पाँच महीने तक न लौटा; पर भम्बोने फकोटका इलाका न छोड़ा। उसकी पशु-बुद्धि वहीं रहनेमें प्रेरक थी, और हुआ भी ऐसा ही। आगरखालसे आगे सायंकालके झुटपुटेमें जब वह अपने बच्चोंके साथ शिकारपर आ रही थी, तब रन्दे और आरेकी-सी ध्वनि 'ऊहाँ-ऊहाँ खर्रर-सर्रर' उसके कानोंमें पड़ी। थोड़ी देरमें बनाफर एक नई बघेरिनके साथ उसकी ओर बढ़ा। बिछुड़ोंका मिलन हुआ; पर बच्चोंको मौसीका आना अच्छा नहीं लगा। भम्बोने अपनी सौतका बुरा नहीं माना। छहों बघेरे साथ रहने लगे। एक दिन भम्बोकी सौत शिकारको नहीं गई। प्रातःकाल बघेरोंकी टोलीने आकर अपने कुटुम्बकी वृद्धि देखी। भम्बोके जवान बच्चोंने कौतूहलपूर्ण दृष्टिसे बच्चोंको क़रीबसे देखना चाहा; पर भम्बोकी सौत एकपर टूट पड़ी और भम्बोके जवान बच्चे अपनी मौसीपर झपटे। बनाफरने एकदम आगे बढ़कर बीच-बिचाव कर दिया। उनके उसने दो-एक पंजे ऐसे कसके जमाये कि वे कराहते हुए वहाँसे चले गये। भम्बोने उनकी ज़रा भी मदद नहीं की।

बनाफर, भम्बो और उसकी सौत मज़ेसे रहने लगे, पर जाड़ेके दिनोंमें बनाफरने जंगलमें चरनेवाली कई गायोंको मार डाला। गाँववालोंने अफसरोंसे फरियाद की। साथ ही गायोंके साथ उन्होंने होशियार रखवाला रखा।

सुबहके वक्त उसने एक गुफाके दरवाजेपर तीन बच्चोंको खेलते देखा और उनकी माको धूप लेते। चुपचाप उसने गाँववालों को खबर की। चालीस पचास आदमी भाले, हँसिये, कुल्हाड़ियाँ, तलवारें और एक ठस्सा बन्दूक लेकर आये। यों तो बघेरा बहुत चालाक होता है पर जैसे ही बनाफर और भम्भोने कोलाहल सुना, वैसे ही वे तो दबककर वहाँसे खिसक गये; पर छोटे बच्चोंवाली बघेरिन वहाँसे मोहवश न जा सकी। जैसे ही हो-हल्ला करते हुए आदमियोंने माँदको घेरा, वैसे ही बघेरिन वहाँसे लपककर एक झाड़ीमें जा बैठी; पर बन्दूकचीने ताककर निशाना लिया। उसकी अगली टाँग टूट गई और गरम-गरम गोली और छर्रे उसकी बगलमें घुस गये। बस, बारूद में आग ही तो लग गई। दहाड़ती हुई बघेरिन गई, आदमियोंपर टूट पड़ी और एक आदमी की गर्दन से चिपट गई। पंजोंने आदमीका पेट फाड़ दिया। उसकी आँतें निकल पड़ीं ; पर थोड़ी ही देरमें तू चल और मैं चलकी ध्वनिमें बघेरिनके इतने भाले चुभ गये कि वह एक भयानक सेही-सी मालूम पड़ने लगी। माँदके अन्दरसे बच्चे निकाले गये और रियासतमें भेजे गये। प्रदर्शनके लिए बघेरिनकी लाश गाँव ले जाई गई; पर गाँववालोंको क्या मालूम कि असली मुजरिम बनाफर तो वहाँसे कई मील दूर था।

बनाफर और भम्भो फकोटके इलाकेसे चलकर दक्षिणकी ओर बढ़े और भूखे-प्यासे नरेन्द्रनगर के नीचे गंगाके किनारेके करीब रहने लगे। पहले दो—तीन दिनों तक तो उन्होंने लंगूरों और बन्दरोंपर बिताये। फिर वहाँ उनको चीतल, सूअर, गधे और घोड़े भी मिलने लगे। लोग लादनेवाले घोड़ों और खच्चरोंको जंगलमें चरनेके लिए छोड़ देते और पेड़परसे बनाफर उनपर टूट पड़ता। गायको तो वह खड्डमें गिराकर

ही खत्म कर देता। इस जगह आकर बनाफर में चर्बी बढ़ने लगी। साधारण परिश्रमसे उसे भोजन मिल जाता, इसी आलसके कारण उसने एक विपत्ति मोल ले ली।

बनाफर और मम्बो एक दिन पेड़की घनी पत्तियोंवाली शाखापर सो रहे थे कि तीन-चार बन्दर उस पेड़ पर आये। बन्दर नीची डालपर बैठे जूँ देख रहे थे, कि बनाफरने मम्बोक ओर देखा। इशारोंसे ही वे एक दूसरेको समझ गये। मम्बो धड़ामसे एक बन्दरपर कूदी। घबराकर एक बन्दर शाखाके ऊपरको भागा कि सारंग (शहदकी) मक्खीके छत्तेमें खोंटी हो गई। फिर क्या था ! शिवजीकी सेना बिगड़ पड़ी। भनभन और झमझमकी आवाज पेड़के चारों ओर छा गई। मालूम होता था, प्रेतोंकी सेनाने चढ़ाई कर दी हो। बन्दरों और बघेरोंकी शामत आ गई। बन्दरोंकी कीं खीखी और बघेरोंकी फूं-फां गू-गां होने लगी। दस-बारह मक्खियां बनाफरपर टूट पड़ीं और उसके कानसे चिपट गईं। मक्खियोंके डंक जो चुभे, तो बनाफर झाड़ियोंमें भागा और पासकी एक गुफामें उसने शरण ली; पर मम्बो झाड़ियों और घासमें लोटती फिरी। कभी वह एक-दो फर्लांग भागती ; पर कान और नाकके पास डंक खाकर और गुर्राकर वह रुक जाती और दोनों पंजोंसे कानों और आँखोंपर लगी मक्खियोंको छुड़ाती कि इतने ही में मक्खियां उसके मखमली पंजोंमें डंक गाड़ देतीं। पत्थरों, घास, झाड़ियों और पेड़ोंसे अपनी देह रगड़ते। मम्बो बिजलीकी भांति लपकती फिरी ; पर मक्खियोंने उसका पीछा न छोड़ा। आखिरमें थककर गिर गई। जहर भी असर कर रहा था। नई मक्खियों का प्रहार जारी था। सिसक-सिसककर मम्बो बेहोश हो गई और अन्तमें इस दुनियासे कूच कर गई।

बनाफरने वहाँसे फिर कूच किया और ऋषीकेशका पुल पारकर स्वर्गाश्रमके क़रीब रहने लगा। वहाँपर उसे चार-पाँच वर्षोंमें कई अन्य साथिनें मिलीं, जिनसे उसके वंशकी वृद्धि हुई।

* * * *

प्रकृतिका नियम है कि चढ़ावके बाद उतार और उतारके बाद चढ़ाव आता है। बचपनमें जवानीकी जड़ें हैं और जवानीमें बुढ़ापेकी। जन्म है तो मौत है, मौतके बाद फिर जन्म—

'पस्ती है तो बलन्दी है, राज़बलन्दी पस्ती है।'

बनाफरकी ढलती उमरमें वह कस न था, जो जवानीमें था। फ़िर एक रातको एक सूअरसे लड़ाई लड़नेमें उसके अगले पंजेके दो नाख़ून गिर गये थे। दाँतोंका रंग भी कुछ पीला पड़ गया था। उसके कीले भी घिस गये थे। बदनमें इतना कस न था कि स्प्रिंगकी भाँति वह पेड़परसे कूद पड़ता। अब वह कुत्तों, खरगोशों और बकरोंको ही पकड़ पाता। अपने स्वास्थ्यको देख अपनेसे बलशाली बघेरोंके भयसे भी वह दूर रहने लगा। एक बार तो उसने दो गीदड़ोंसे छीनकर माँस खाया। एक गीदड़को तो उसने मार ही डाला। एक दिन सतर्क होकर वह मांस खा रहा था कि सामनेसे एक शक्ति-पुंज शेर आता दिखाई दिया। बनाफरके होश उड़ गये। घबराकर, क़रीबके पेड़पर चढ़कर उसने अपनी जान बचाई।

बनाफरकी उमर बढ़ी और शक्ति क्षीण हुई। बकरी और कुत्तोंतक अब उसकी पहुँच न होती। तीन-चार दिनकी फाकेकशीसे उसमें कुछ अधिक उदण्डता आ गई। एक मोड़के किनारे वह खरगोशोंकी तलाशमें बैठा था कि उधरसे एक घसियारिन निकली। उसकी भूख-ज्वाला चलते जीवको

देखकर और भी प्रज्वलित हो गई। पहले तो बनाफर डरा; पर भूखसे तिलमिलाया हुआ घात लगाकर बैठ गया और थोड़ी ही देरमें घसियारिन का खून पीने लगा। लाशको खचेड़कर वह एक झाड़ीमें ले गया और पेट भरकर उसे खाया। गंगाजलसे प्यास बुझाई और उसके मनमें मनुष्योंके प्रति जो भय था, वह निकल गया।

फिर तो बनाफरके आतंकसे उदयपुरपट्टी काँप गई। जंगलमें घास और लकड़ीके लिए जाना मौतका निमन्त्रण था। सरकारकी ओरसे बनाफरके मारनेके लिए इनाम रक्खा गया—पर कई वर्ष तक वह किसीके हाथ नहीं चढ़ा। अन्तमें सात दिनके लिए जंगलमें जाना बन्द किया गया और दो तीन स्थानोंमें औरतोंकी पुतलियाँ बनाकर रखी गईं और शिकारी घातमें बैठे। बनाफर भूखसे बेचैन था। एक स्त्रीकी पुतलीको उसने बैठी स्त्री समझा, छपककर उधर बढ़ा, और 'धायँ' शब्दके साथ उसी लोकको चला गया, जहाँसे आया था।

———
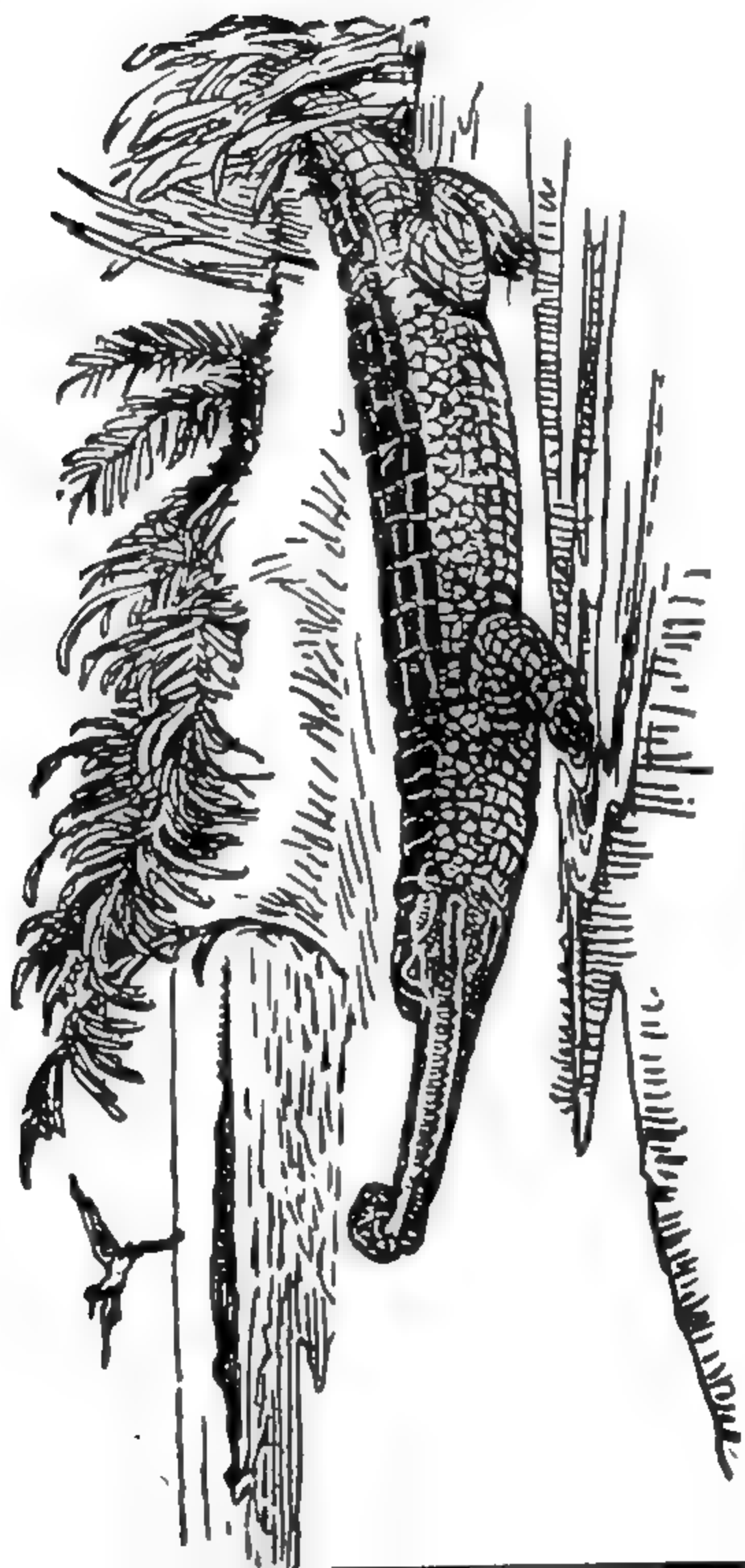
घड़ियाल : खूनी

घड़ियाल : खूनी

घड़ियाल : खूनी

जून सन् १८५७ ई० का अन्तिम सप्ताह। स्थान हरदोई जिलेके खसौरा गांवके निकट रामगंगाके किनारेकी रेतिया, जिसके दूसरी ओर—नदीका किनारा—पहाड़ी सी खड़ी थी। देशमें राजनीतिक और सैनिक भूचाल आया हुआ था, जिसके कारण युद्धाग्निकी लपटें चारों ओर फैल रही थीं। गोरों और कालोंमें ठनी हुई थी। कुछ भयभीत गोरे जान बचाकर कालोंकी शरण ले रहे थे। देशकी सैन्य-शक्तिमें हड़कम्प-सा आ गया था। लोग ब्रिटिश साम्राज्यके जुएको उतार फेंकनेमें लगे थे। युक्तप्रान्तके अधिकांशमें उथल-पुथल मची हुई थी। खसौरेके क़रीब राम-गंगाकी रेतियापर भूकम्प सा आनेवाला था। एक बड़ी गोह (Long nosed female crocodile) गुमसुम पड़ी थी। जाड़ेमें वह वहां तो प्रायः दोपहरके वक्त धूप लेनेके लिए आती थी ; पर गर्मियोंमें सुबह और शामको ही निकलती थी। रेतियाके स्थानसे उसे कुछ मोह सा हो गया था। शामको एक दिन एक गीदड़ उस रेतियापर आकर रुका और जैसे ही उसकी थूथन गोहके लेटनेके स्थानको ओर हुई, वैसे ही क़रीबके पानीमें से दो आंखें चमकीं और भारी भरकम गोह फुसकार मारती हुई गीदड़पर विद्युत वेगसे झपटी। गीदड़के कोई भाग्य ही थे, जो बच गया।

गोह रातभर वहीं पड़ी रही और अगले दिन दस-बारह बजे तक वहांसे नहीं हटी। यों तो पन्द्रह-बीस दिनोंसे वह रातभर उसी स्थानपर पड़ी रहती थी और धूप निकलते ही पानीमें चली जाती थी ; पर उस

दिन न जाने क्यों वह वहाँसे नहीं हटी। ठीक दोपहरीमें उसके पेटके नीचे और दोनों बगलोंकी ओर एक भूकम्प-सा आया। रेतिया कुछ हिली-डुली, और उसके भीतरसे तीन-चार बच्चे निकले—छिपकलीसे कुछ बड़े। थोड़ी-थोड़ी देरके बाद गोहके अगल-बगलकी ज़मीन हिलती और कुछ बच्चे निकल पड़ते। ज़मीनसे निकलते ही बच्चे अपने भोंडे शरीरोंको लड़खड़ाते हुए अपनी माकी पीठपर चढ़ाने लगे। कुल जमा पचानवे बच्चे निकले। जब सब बच्चे गोहकी पीठपर चढ़ गये, तब गोहने अपनी थूथन उठाई, और मुड़कर वह धारके समानान्तर हो गई। इतनी-सी गतिसे कुछ बच्चे लुढ़क-पढ़र गिर पड़े। आठ बच्चे गोहकी बाईं ओरको गिरे और नीचे आ जानेसे दबकर मर गये। दाईं ओर जो बच्चे गिरे थे, वे फिर उसकी पीठपर चढ़ गये। पीठपर स्थान पानेके प्रयत्नमें कुछ बच्चे गोहकी पूँछकी ओर खिसक गये। इस प्रकार गोहके माथेसे लगाकर पूँछतक सतासी बच्चे जुड़े हुए थे। फिर धीरे-धीरे गोह बाईं ओरको मुड़ी, और उसने नदीके किनारेसे समकोण बनाया। गोहके हिलनेसे बच्चोंको उसकी पीठ और पूँछपर चिपटे रहनेमें काफ़ी श्रम पड़ा। पानीतक पहुंचनेमें चार-पांच गज़की ही दूरी थी, सो गोहने धीरे-धीरे वह फ़ासला तय किया। अपने बच्चोंको पीठपर लादे जैसे ही वह पानीमें उतरी वैसे ही बच्चे भड़भड़ाकर पानीमें तैरने लगे। गोहने एक नज़र उनकी ओर देखी और फिर गोता मारकर कहीं चली गई। मातृ-कर्तव्यसे उसको मुक्ति मिली।

स्वावलम्बन और आत्म-रक्षाके कारण बच्चे गहरे पानीसे किनारेकी ओर तैरे। मगरके सतासी बच्चोंसे नदीका दो-तीन गज तकका पानी चल-पिंडला हो गया। तैरते, गोते लगाते और पानीका आनन्द लेते बच्चोंका झुंड

तितर-बितर होने लगा। कई कछुओंने उन्हें छोटी मछलियाँ समझा और उनपर मुँह मारे। दस-बारह बच्चे कछुओंके पेटमें आ पहुँचे। बच्चोंका झुंड धारके साथ बहने लगा। खसौरा और दिउसीपुरके बीच दो नाके मछलीके शिकारमें व्यस्त थे। एक झुंडके छः-सात बच्चोंको एक नाका (Snub nosed crocodile) हड़प गया और सात-आठ बच्चे एक दूसरे नाकेके ग्रास बने।

दिउसीपुरतक पहुँचते-पहुँचते सतासी बच्चोंमें से केवल तीस बचे, और इन बचनेवालोंमें एक नर भी था, जिसे यमदाढ़के नामसे सम्बोधित किया जायगा। दिउसीपुरसे ऊपर रामगंगामें एक नाला आकर मिला था। यमदाढ़ और उसके भाई-बहन उथले पानीकी खातिर नालेकी ओर बढ़े; पर नाले और रामगंगाके मिलानपर एक गोहने उनपर मुँह मारा, और उस झुंडकी संख्या पन्द्रहसे दस ही रह गई। भाग्यवश यमदाढ़ गोहके पेटके नीचे होकर दूसरी ओर जा निकला, और अपने कई साथियोंके साथ नालेके किनारे एक झाऊके पेड़के सहारे सूखी जमीनपर पहुँच गया। उसने एक अधमरे झींगुरको पकड़कर अपने मुँहमें डाला और झाऊकी जड़ोंसे चिपटे कीड़े-मकोड़ोंको भी खाना शुरू किया। झुंडके अन्य बच्चे धर्मपुर, शेखापुर, रमपुरा, दिउरनिया, गढ़िया, दयालपुर, महदाहन, घटवासा, छीछपुर और दुमुहाने तक गये। इतने बच्चोंमेंसे अधिकांश मौतके घाट उतरे, केवल दस-बारह बच पाये।

* * * *

यमदाढ़के जन्मके सातवें दिन बालरविके पूर्वाभासने जैसे ही रात्रि-रमणीका सुहाग-लूटा, वैसे ही नीलाम्बरमें भाग-दौड़-सी मची। न-जाने कहाँसे कई स्थानोंमें रूईके गाले नमूदार हुए। पारस्परिक आकर्षणसे वे दोनों

मिल गये। इसी प्रकार और भी गाले बने और उनकी कानाफूँसी हुई। दौड़ें लगीं, और उन्होंने सारे आकाशको ढक लिया। क्षितिजसे कुछ काली घटाएँ उठीं। पावस सुन्दरीने अपनी लम्बी-लम्बी लटें फैलाईं। उसे शृंगार करता देख सूर्य्य पुरुषकी भाँति ओटमें हो गया। पावसकी परिचारिकाओं—पुरवैया और बदरियों—ने कनातें-सी खड़ी कर दीं। लटोंको पावस-सुन्दरीने सुनहरी कोड़ेसे झाड़ना शुरू किया। तड़ित-कोदण्ड-प्रहारसे लटोंसे घंटों पानी झरा। भूतलपर विरहाकुल सरिताओंमें पुलकावलि हुई। खुशीसे उनका गात फूला, और अपनी मस्तीमें वे झूमने लगीं। बयारकी सिहरन और पावसके प्रभावसे रामगंगा उद्वेलित हो उठी और अपने मार्गसे हटकर थिरकने लगी। आस-पासके खेतों और तालाबोंतक उसका गात बढ़ा। झाऊ वृक्षों और टीलों, खेती और बंजरों तथा किनारेके गाँवोंमें रामगंगाके प्रवाहकी धाक थी। नाकों, गोहों और घड़ियालोंने अपने रहनेके अस्थायी स्थान बनाये। छोटे-से यमदाढ़को भी खसोरेसे ऊपर उथले पानीमें शरण मिली। झाउओंकी झाड़ियाँ थीं और उनसे लगी छोटी-छोटी घास। यमदाढ़ अपने पाँच साथियोंके साथ वहीं रहता। घासपर बैठे गुबरीले, कीड़े और अन्य सड़ी चीज़ोंके अवशेष उसे खानेको मिलते।

मगरका जीवन क्रूरता और नृशंसतासे ओत-प्रोत है। बिना इनके उसके जीवनकी कल्पना ही नहीं की जा सकती। प्राकृतिक जीवन जहाँ सरल और आडम्बरहीन है, वहाँ वह कठोर और नृशंस भी होता है। जहाँपर मौतके दूतोंका घेरा पड़ा हो, वहाँ बड़े-बड़ोंके छक्के छूट जाते हैं, बच्चोंका तो कहना ही क्या। इसीलिए मगरके बच्चोंकी मौतें भी बहुत होती हैं, और शायद प्रकृतिदेवी उसकी नस्लको क़ायम रखनेके

लिए ही मगरोंको इतनी संख्यामें पैदा करती है कि हताहतोंकी संख्या इतनी अधिक होनेपर भी नस्ल नष्ट नहीं हो पाती। एक-एक मादा मगर डेढ़-डेढ़ दो-दो सौ अंडे देती है। कितने ही अंडोंको गीदड़ खा जाते हैं और अनेक अंडोंको गाँववाले हँसी-खेलमें नष्ट कर देते हैं; पर फिर भी वे इतने अधिक होते हैं कि यदि एक स्थानके अंडोंसे निकले सब बच्चे जवानी तक जीवित रहें, तो नदीमें ऊधम-सा मच जाय।

डेढ़ महीने बाद जब रामगंगाका पानी घटा, जब उसका यौवन-मद शान्त हुआ, तब यमदाढ़ भी नीचेको सरक आया और खसौरेसे एक फर्लांग ऊपर एक छोटे-से नालेमें अपने संगी-साथियोंके साथ रहने लगा। भोजनके लिए उसे छोटी मछलियां, मेंढकियां, सड़े मांसके टुकड़े और मुर्दोंके अवशेष मिलते थे।

एक दिन दिवालीके क़रीब एक कहार उस नालेमें बंसी डाल रहा था। कांटेमें मांसका टुकड़ा लगा था। बंसीका कांटा ठीक वहां गिरा, जहां यमदाढ़ पानीके भीतर किसी सड़ी चीज़के पानेकी घातमें तैर रहा था। यमदाढ़ कांटेपर लगे मांसपर मुँह मारना ही चाहता था कि इतने हीमें उसपर उसके एक साथीने मुँह मारा। मांस उसके दांतोंकी पंक्तियोंमें फँस गया। तरारा-तिरकिन्ना (float) डूबा। बंसीवालेने बंसीको हाथके झटकेसे ऊपर खींचकर खेतकी ओर फेंका, तो थप्पसे मगरका बच्चा आ गिरा। कहारने पकड़कर देखा, तो उस लम्बी थूथनके छोटे-से छिपकलीनुमा मगरके बच्चेके आलपीन-जैसे बीसों छोटे और पैने दांत थे ऊपर और नीचे। कहारने क्रोधसे गाली देते हुए उस बच्चेको खेतमें दूर फेंक दिया। इसी समय एक चीलने झपट्टा मारा, और वह अपने चंगुलमें दाबकर उसे ले गई। यमदाढ़ने अपने साथीको पानीसे बाहर खिंचते देख अपना रास्ता नापा और एक दूसरे

नालेमें रहनेका स्थान बनाया ; पर नए नालेमें भी संकटोंने उसका पीछा न छोड़ा। एक दिन कुछ लोग उस नालेमें भी जाल डालने आये और जालमें यमदाढ़ अपने साथी सहित फँस गया। एक आदमीने यमदाढ़के साथीको
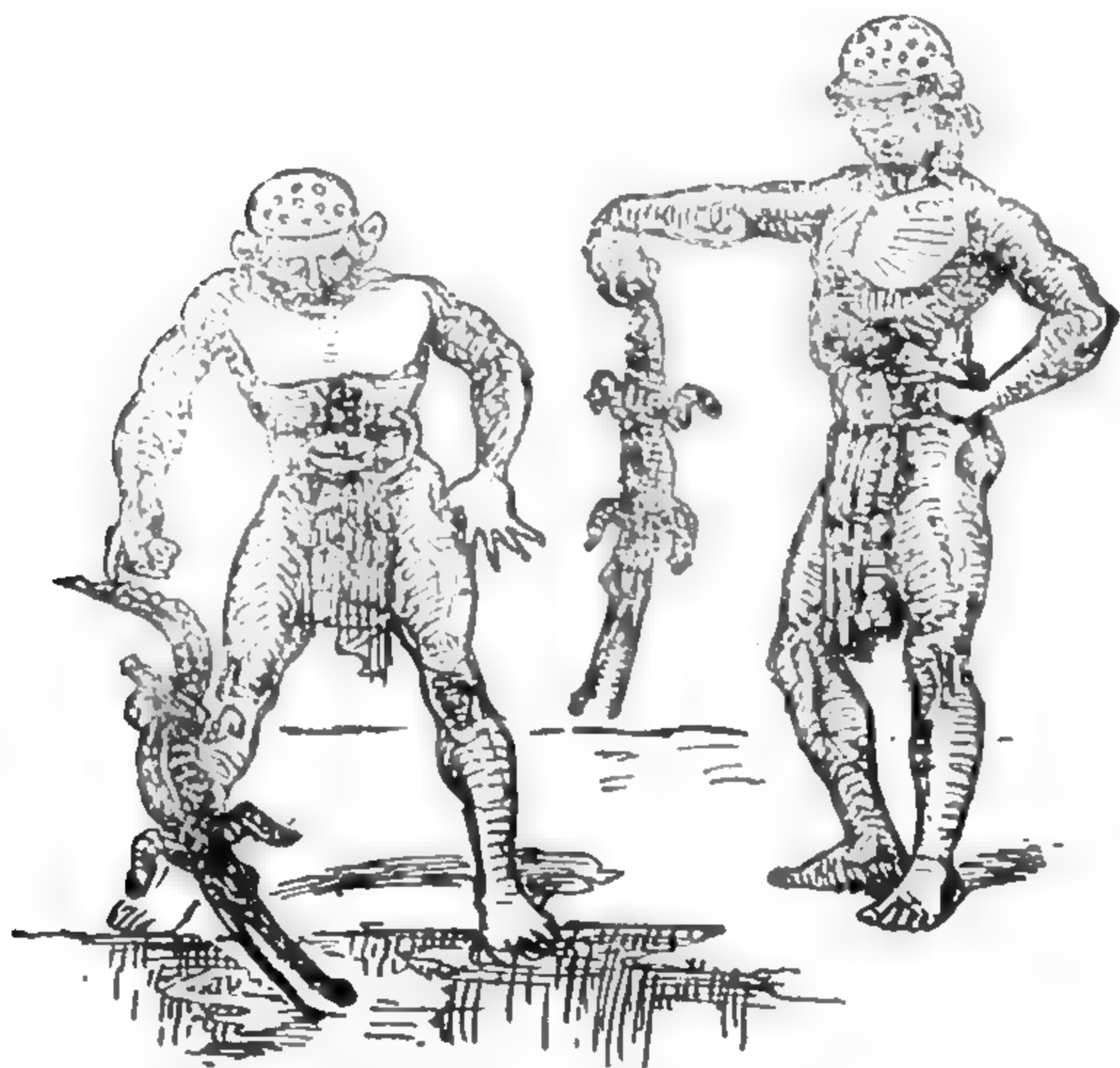
"यमदाढ़ मछुएके हाथसे छूट पड़ा और पानीमें भाग गया।"

पूँछ पकड़कर ऊपर उठाया और दूसरेने यमदाढ़को पेटसे पकड़ लिया। यमदाढ़ने मुड़कर जो थूथन उस ओर की, तो मछुएके उसके दाँत लगे। बस, तुरन्त यमदाढ़ मछुएके हाथसे छूट पड़ा और पानीमें भाग गया।

होते-होते बीस वर्ष बीते। दिउमीपुरके घाटसे दो फर्लांगकी दूरीपर एक दहमें यमदाढ़ने अपना अड्डा बना लिया था। बरसातमें वह क़रीबके एक नालेमें चला जाता और पानीके ढलते ही फिर वह उस दहमें आ जाता। इन बीस वर्षोंमें उसकी लम्बाई लगभग दस फुट हो गई थी। अब वह स्वच्छन्दता-पूर्वक नदीकी धारमें विचरता और मछलियोंके शिकारमें अपने दहसे दो-तीन मीलतक धारके ऊपर या नीचे चला जाता।

अधजले या जलप्रवाह किये गये मुर्दोंको पकड़कर वह अपनी दहमें बनी एक गुफ़ामें रख देता और जब लाशमें सड़ांद आती, तब उसे बड़े स्वादसे खाता। उमर और लम्बाईके साथ उसकी भूख भी बढ़ रही थी, और भूखके साथ अपने भोजनकी भिन्नताकी ओर भी उसका ध्यान था। मुर्दों, मछलियों और गोबरमें पड़े दानों के खाने अथवा गोबरके चखनेसे उसकी तृप्ति नहीं होती थी। सुबह और शाम मछलीके शिकारपर जब वह निकलता, तब टारपीडोकी भाँति चलकर वह बीच धारमें अचल पलराता। उस समय डाँडकी भाँति उसकी पूँछ इधर-उधर पानीकी गतिको रोकती रहती। उसके कभी-कभी पैर भी कुछ हिलते ; पर ये सब गतियाँ ध्यानसे देखनेवालोंको ही दिखाई देतीं। वैसे वह एक चौड़े और लम्बे शहतीरके समान अचल पड़ा प्रतीत होता - अधडूबा हुआ। उस मुद्रामें उसकी अधखुली खूनी आँखें मछलियोंकी देख-रेखमें रहतीं। जब कभी कोई मछली उसकी मारकी दूरीमें आ जाती, तब वह टारपीडोकी भाँति उसपर टूट पड़ता और दाँतोंसे उसे पकड़कर अपनी थूथनको ऊपर उठाता और दो-तीन झटके देकर उसे निगल जाता। जब कभी कोई बड़ी मछली उसके पल्ले पड़ती, तब वह उसे मुँहमें दबाकर नदीके किनारे लाता और दाएँ-बाएँ पटककर मार डालता और फिर

निगल जाता। कभी-कभी नदीकी धारमें पड़ा हुआ वह मछलीको गेंदकी भाँति ऊपर उछालता। मछली ऊपर फिंककर उसके दाँतोंमें खचसे फँस जाती। कई बार ऐसा करनेसे मछली मर जाती, तब वह उसे दो-तीन झटकोंमें ही निगल जाता। पर इन सब प्रयोगोंसे उसकी बढ़ती हुई भूख-ज्वाला न बुझती।

सन् १८७७ ई० में दिल्लीमें लार्ड लिटनका दरबार हो रहा था। ब्रिटिश सत्ताका वह प्रदर्शन था। उधर दिउलीपुरके क़रीब अपनी दहमें यमदाढ़ अपनी शक्तिके प्रदर्शनमें तल्लीन था। उस दहमें राजे महाराजे याचनाके अवतार बने, चिरौरी-सी करते, अपने दिमागोंको लार्ड लिटनके सम्मुख अर्पण नहीं कर रहे थे, वरन उस दहके छोटे क्षेत्रमें जल-जीवोंका क्रम दाँव-घातसे चल रहा था। कछुए मुँड़ी चमकाकर साँस लेते और दहका विहंगावलोकन-सा करके पानीमें विलीयमान हो जाते। मछलियोंकी जीवन-यापनकी क्रियाएँ उनकी तेज दौड़, खिलकौरियाँ और उछल-कूद जारी थीं। दहके आस-पासका वातावरण शान्त था। सूरजकी अन्तिम साँस-सी चल रही थी। बकरियोंका एक झुंड पानी पीने दहकी ओर आ रहा था। उस दिन अपनी सत्ताका प्रदर्शन करनेके लिए यमदाढ़ उथले पानीमें छिपकर बैठ गया। कुछ बकरियोंने घुटने टेककर और कुछ खड़े-ही-खड़े अपने मुँह पानीसे लगाये ही थे कि बकरियोंके क़रीब दहका दिल दहला, और यमदाढ़ने एक बकरीकी थूथन पकड़कर अपनी पूँछका वह झपेटा मारा कि ग़रीब बकरीके पैर उखड़ गये, और फचसे वह पानीमें जा गिरी। बकरीके मुँहसे बस एक दबी मुक-मुक मैं की ध्वनि निकली। उसे धारमें ले जाकर यमदाढ़ नीचे बैठ गया और डुबोकर मार डाला और अपनी खोहमें ले जाकर रख दिया। दहके किनारे

“बकरीके मुँहसे बस एक दबी मुक्-मुक मैं की ध्वनि निकली।” पृ० ५६

घुटने टेके दरबारी भागे। बच्चोंके मिमियाने और बकरियोंके भागनेसे एक कुहराम-सा मच गया; पर गड़रियेको अपनी बकरीकी कमी घरपर मालूम हुई, क्योंकि पानी पिलाने वह नदी तक न आया था। नदी-तटसे कुछ दूरीपर वह एक किसानके यहाँ तमाखू पीता रह गया था। अगले दिन गड़रियेने करीबके सब खेत और झाड़ियाँ तलाश कर डाले कि कहीं भटकी बकरी मिल जाय। उसे इस बातकी तनिक भी आशंका नहीं थी कि उसकी बकरी यमदाढ़का शिकार हो चुकी है। पर तीसरे ही दिन बकरीके खोनेका रहस्य खुल गया, जब गड़रिया अपनी बकरियोंको पानी पिलाने उधर लाया। जैसे ही बकरियोंने पानी पीना शुरू किया, वैसे ही यमदाढ़ पानीमें से लपका और एक बकरीको पकड़कर घसीट ले गया। गड़रियेने बहुत-कुछ हो-हल्ला मचाया; पर यमदाढ़ने बकरीको न छोड़ा। गड़रिया यमदाढ़से रिश्ता लगाता और बक-झक करता घरकी ओर गया। उस दिनसे फिर वह अपनी बकरियोंको वहाँ पानी पिलाने न लाया। उसने आस-पासके लोगोंसे भी कह दिया कि एक लागू घड़ियाल उस दहमें रहता है।

देहातमें बीमारीकी छूत उतनी तेजीसे नहीं फैलती, जितनी कि अफ़वाहें और सनसनीदार खबरें। बेतारके तारके समान बातकी बातमें खबरें गाँवोंमें फैल जाती हैं और फैलती हैं नमक-मिर्च लगकर। बस, दो-तीन दिनमें यमदाढ़ खूनी घोषित कर दिया गया। 'दिउसीपुरकी दहमें अठारह हाथका एक घड़ियाल आ गया है। उसने जयराम गड़रियाकी बकरीको जयरामके हाथसे छीन लिया। फतेहगढ़के एक अंगरेज़ने उसके चार गोलियाँ मारीं; पर उसका कुछ न हुआ। कई गाएँ भी वह खा चुका है',—ऐसी किम्वदन्तियाँ यमदाढ़के विषय में फैल गईं। फलस्वरूप दिउसीपुरके उस दहका घेरा-सा पड़

गया । कोई अकेला जानवर दहके आस-पास पानी पीने नहीं जाने दिया जाता था । कहनेको यमदाढ़ने अभी दो ही बकरियाँ पकड़ी थीं ; पर बदनामी उसकी काफ़ी हुई । आस-पासके शिकारियोंसे यमदाढ़के मारनेकी चर्चा की गई । शिकारी आये भी । एक शिकारीने ताककर उसके गोली मारी, जो उसकी बगलमें पड़ी । जाड़ेके दिन थे । यमदाढ़ रेतियापर पड़ा धूप ले रहा था कि गरमागरम सीसा उसके बगलमें घुस गया । प्रहारसे यमदाढ़को कुछ बेहोशी-सी आई । दो सेकण्डके बाद उसने अपना मुँह बाया, और एक झटकेके साथ पानी में कूद पड़ा । एक दूसरी गोली उसपर और छोड़ी गयी ; पर वह लगी नहीं । यमदाढ़ पीड़ासे परेशान था । खूनके चिह्नोंसे कछुओंने यमदाढ़को जा घेरा ; पर अपनी गर्दन मोड़कर उसने कछुओंपर प्रहार किया, और वे दूर भाग गये । यमदाढ़ अपनी खोहमें जाकर बैठ गया, फिर कछुओंकी वहाँपर एक न चली । शिकारी और गडरियेने नावें मँगाकर दहको लग्गियोंसे छान मारा ; पर यमदाढ़का पता न चला । पता चलता भी कैसे ? यमदाढ़ तो अपनी खोहमें पड़ा अपनी जल-चिकित्सा कर रहा था । बात यह थी कि गोली यमदाढ़की खालको फाड़कर हृदयसे तीन इंच दूर चर्बीमें जा अटकी थी । तिलमिला तो गया था वह ; पर चोट उसे घातक नहीं लगी थी । चार-पाँच दिनोंमें यमदाढ़का घाव पुर गया । इस बीच वह बस साँस लेने पानीके ऊपर आया और सो भी रातमें । चार-पाँच दिनोंके उपवाससे उसे काफ़ी कमजोरी आ गई थी और भूखकी आग भी भड़क रही थी । तैरनेमें जोर न पड़े, इस लिए वह धारके सहारे नदीमें बहने लगा । दो-चार मछलियाँ उसे मिलीं ; पर उनकी आहुतिसे तो भूख ज्वाला और भी प्रदीप्त हो गई । धर्मपुरके शिवालयके पास उसे एक मुर्दा मिला, उसे खाकर वह शिवालयसे चार

"दो सैकिण्डके बाद उसने अपना मुँह बाया" पृ० ५८

फर्लांग दूर नदीके किनारे एक टीलेपर आराम करने लगा। गोली खाकर आदमियोंसे वह बहुत डरता था। हरदम उसे यही आशंका बनी रहती कि कहीं फिर कोई उसके गरम-गरम सीसा न फेंक मारे। उससे पहले वह मनुष्योंको दो पैरका सीधा सादा जीव ही समझता था।

धर्मपुरके शिवालयसे चलकर यमदाढ़ कुछ दिनों दिउरनियाके करीब रहा। वहांपर उसने एक गीदड़, एक हिरन और एक पड़रेको पकड़ा। लोगोंकी पैछर लिये वह पानीमें अधडूबा पड़ा रहता और जब कभी उधरसे किसी आदमीको निकलते देखता, तभी गोता मारकर दूर निकल जाता।

दिउरनियासे चलकर वह दयालपुर, ढूंढ़पुर और दुमुहानेपर पहुँचा। दुमुहानेपर उसे और भी कई घड़ियाल मिले; पर यमदाढ़ उनसे दूर ही रहता।

कानपुरके शिकारी एक बार उधर नावोंसे आये, और उन्होंने एक घड़ियाल और दो नाक मारे। पानीमें कूदते समय यमदाढ़पर भी गोली दागी गई थी; पर वह उसकी पीठपर खुरसट बनाकर रेतियामें घुस गई। यमदाढ़ने फिर अपना रुख गंगाजीकी ओर किया। और वह गंगाजीकी धारको चीरता-फाड़ता चियासरके घाटसे पूर्वकी ओर चार फर्लांगकी दूरी पर रहने लगा। चियासरमें गंगाके दाएँ किनारे लगी खड़ी पहाड़ी है और पहाड़ीसे लगा जंगल, जिसमें सूअर, नीलगाय और चर्ख रहते हैं। जंगलसे गंगाजीकी धारके लिए पगडंडियाँ हैं; जिनसे जानवर गंगाजल पीने आते हैं। यमदाढ़की यहांपर मौजसे कटती। मछलियां तो खानेको गंगाजीमें उसे मिलतीं ही; मरघट भी करीब था, जहांपर लोग मुर्दोंको गंगाजीमें सिरा जाते। कछुओंसे लाशें छीनकर यमदाढ़ अपने अधिकारमें करता और सायंकाल अपनी इच्छानुसार जंगली सूअरों, गीदड़ों और चर्खोंको भी

दबोच बैठता। कभी-कभी गाय और भैंसके पड़रों, पड़ियों, बछड़ों और बछियोंको भी गंगाजलमें डुबोकर खाता। सुख और चैनसे यमदाढ़पर चर्बी चढ़ रही थी।

चियासरमें एक विशेष बात यह हुई कि यमदाढ़ स्मरबाणका निशाना बना था। एक समवयस्क गोहपर वह मुग्ध हो गया। होलीके दिन थे। जंगलके पेड़ोंने जवानीका जामा पहना था। सेमर लाल फूलोंसे सुर्ख होकर यमदाढ़पर फब्तियाँ कस रहा था। नीनर, मुर्ग और बतख प्रेम-पयोधिमें गोते लगा रहे थे। प्रणयका नशा यमदाढ़को भी चढ़ा। गोहके सामीप्यसे अनंग-बाण और भी विषाक्त हो गये थे। पर जंगली जीवनमें ऊपरी ढोंग और टीमटामसे काम नहीं चलता। लोकसत्ता (Democracy) के नामपर, पैसोंकी करामातसे, कनवेसिंग नहीं होता। सौंदर्य, आकर्षण और पुण्यका एकमात्र साधन है शक्ति और-शक्ति-पूजा। यमदाढ़को तीन-चार दिनों बाद एक विकट प्रतिद्वन्द्वीसे पाला पड़ा। पचास-साठ वर्षका सोलहफुटा घड़ियाल वहाँ आ गया और यमदाढ़की रँगरेलियोंपर उसकी नजर पड़ी। तेजीसे वह उधर बढ़ा और यमदाढ़को चैलेंज किया। रातका समय था। बस, दोनोंकी एक ही पकड़ हुई, और सोलहफुटे घड़ियालकी पूँछके एक ही प्रहारसे यमदाढ़की प्रेम-लीला ठंडी हो गई। भागकर उसने अपनी जान बचाई। अब खिसियाकर वह वहाँसे चला और दुमुहानेकी ओर होता हुआ रामगंगामें आ पहुँचा। ढूंढपुर और घटवासेके पास उसने कई वर्ष काटे। शिकारी उसकी तलाशमें चक्कर काटते और छिपकर बैठते; पर यमदाढ़ धूप लेनेके लिए ऐसी जगह निकलता, जहाँपर निशाना लेना असम्भव होता। हाँ, गर्मियोंके दिनोंमें सुबह और शाम पनडुब्बी नावकी भाँति वह अधडूबा

चलता दिखाई पड़ता और उसकी थूथनपर तूंबा तो तैरती हुई सुरंगकी भाँति दीखता। सी ५ (पांच मात्रा) की सीटी नदीके किनारे सुनाई पड़ती। दंडपुरकी दहमें जब वह सूंस (Dolphin) को पकड़ता, तब देहातवालोंको खासा तमाशा दिखता। सूंसको अपने दाँतोंमें दाबकर वह किनारे की ओर आता और सूंस यमदाढ़के मृत्यु-पाशमें फँसी तड़फड़ाती। बीसों जगहोंसे खूनके फव्वारे छूटते। मछलियाँ और कछुए यमदाढ़की ओर लपकते : पर वे उससे इतनी दूर रहते जितनी दूर लाश खाते शेरसे गीदड़। किनारे पहुंचकर यमदाढ़ सूंसको एक ऐसा झटका देता जैसे धोबी कपड़ेको फट-कारता है। एक ही झटकेमें सूंसके अंजर-पंजर ढीले हो जाते और यमदाढ़ उसे दो-तीन गपकोंमें ही साबित निगल जाता।

सन् १९०१, लार्ड कार्ज़नका जमाना। लार्ड कर्ज़नने हिन्दुस्तानी रईसोंके नाथ-सी डाल रखी थी। ब्रिटिश सत्ताको ताज़ा खुराक देनेके लिए कर्ज़न साहबने एक दरबारका आयोजन किया। इधर यमदाढ़ भी अब चवालीस वर्षका हो गया था। लम्बाई उसकी पन्द्रह फुटके करीब होगी। मनों मछलियोंसे भी उसका पेट नहीं भरता। घूम-घाम और प्रणय-पाशमें फँसकर यमदाढ़ने मुरचेमें अपना क्रीड़ा-क्षेत्र बनाया। यमदाढ़को अपनी शक्तिका मान था, और शक्तिसे अधिक मान था उसे अपनी भूखका। भूख क्रान्ति और पतनकी ओर ले जानेवाली है। भुक्खड़को खून, चोरी, चाटुकारी ढोंग और सनसनीदार योजनाएँ सूझती हैं। कुछेक लोगोंको भूखकी आगमें कर्त्तव्यनिष्ठा, आदर्श और नए विचार सूझते हैं ; पर पशुओं और खूनी जीवोंमें भूखकी आग बुझानेकी खातिर मर-मिटनेकी प्रवृत्ति पैदा होती है। भय और सतर्कताकी सीमाका उल्लंघनकर भूखे प्राणी आगे बढ़ते हैं।

यमदाढ़ दो दिनसे भूखकी भट्ठीमें जल रहा था। साथ ही प्रणय-केलिसे भी उसे अवकाश नहीं मिलता था। अपने एक प्रतिद्वन्द्वीको भी उसने दस घंटे पहले हराया था। इसलिए सायंकालको भूख और प्रणयको अग्नियोंमें से भूख-ज्वालाका प्रकोप उसपर अपेक्षाकृत अधिक हुआ। इसी समय उसने एक फर्लाङ्ग दूर नदीके किनारे एक बैलको पानीकी ओर आते देखा। डेढ़ गज लम्बी थूथन उठाकर उसने पानीमें डुबकी लगाई और पानीके भीतर—सो भी धार को ओर-बीस-पचीस मील प्रति घंटेकी चालसे बढ़ा। बैलके पानी पीनेकी जगहसे वह लगभग पचास गजकी दूरीपर रुका, और धीरेसे उसने पानीके ऊपर अपनी आँखें निकालीं। आँखोंसे डेढ़ गज आगे तूँबा सुरंगकी भांति दिखाई पड़ा; पर बैल और अनुभवहीन लोग क्या जानें कि उस लकड़ीके ठूँठ और दो काले काले अस्पष्ट पर बड़ बिन्दुओंके पीछे एक भयंकर घड़ियालकी हस्ती है। बैलने अभी पानीसे मुँह लगाया ही था, अभी उसके सूखे गलेमें दो-तीन घूँट ही पानी गया था कि यमदाढ़ने विद्युत-गति से आक्रमण किया। बैलके नथुनों और होठोंमें दांत घुस गये। बिदककर बैल पीछेको हटा ही था कि यमदाढ़की कांटेदार पूँछका वार हुआ—उस पूँछका, जिसके पीछे लगभग पच्चीस मनका बोझ था और गति थी कोई साठ मील फी-घंटेकी। फलस्वरूप बैलके पैर उखड़ गये। यमदाढ़ने बैलके तनिक ऊपर उठकर गिरनेकी क्रियामें एक ज़ोरका झटका दिया, और फचाकसे बैल पानीमें जा गिरा। यमदाढ़ झटोके मारकर बैलको गहरे पानीमें ले जाने लगा। चोट खाकर भी बैलने यमदाढ़की गिरफ्तसे मुक्त होनेकी कोशिश की। पानीमें बैलके पैर भी टिके; पर हर झटकेमें बैलको पानीकी गहराईकी ओर खिंचना पड़ा। लोगोंने दूरसे बैलको घड़ियालके चंगुलमें देखा, तो वे नदी-किनारे भागे आये; पर
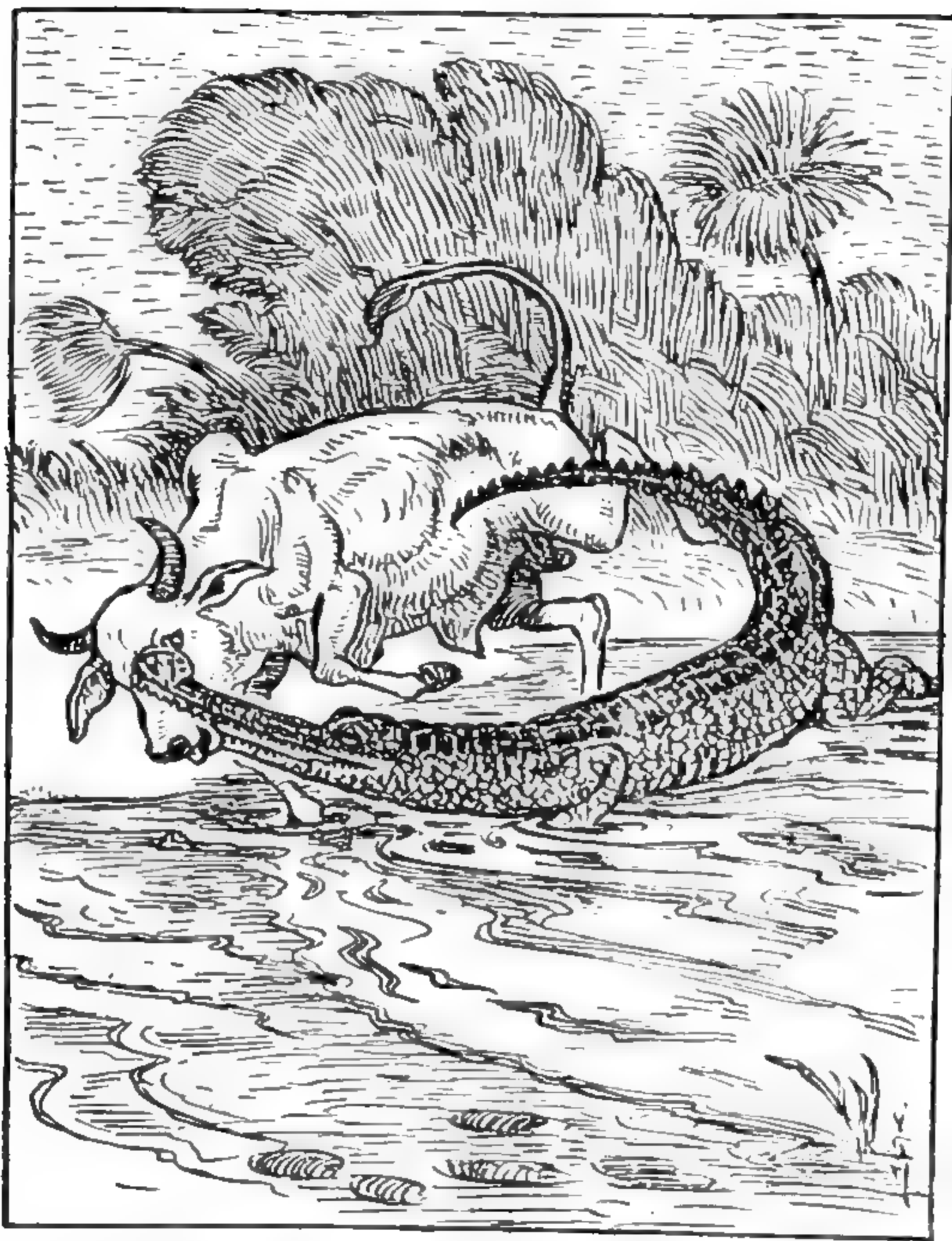
"यमदाढ़ने विद्युत गतिसे आक्रमण किया। बैलके नथुनों और होंठोंमें दाँत घुस गये" पृ० ६२

उनके आने तक यमदाढ़ उसे गहरे पानीमें खींच ले गया था। बैल अब बिल्कुल बेबस था। यमदाढ़ उसे धारकी ओर लिये जा रहा था। कभी-कभी बैलका कान, सींग और कभी कोई अन्य अङ्ग-प्रत्यङ्ग दिखाई पड़ जाते। थोड़ी देरमें बैलको यमदाढ़ने गायब कर दिया। उसे लेकर वह नदीकी धारके धरातलमें बैठ गया। बैलको डुबोकर उसने मार डाला और अपने किसी कोठारमें सड़नेके लिए छोड़ दिया। फिर उसने मजेसे उसे खाया।

यों तो घड़ियालकी सूरतसे लोग घबराते हैं, और फिर लागू घड़ियाल तो साक्षात् मौत ही है। कायरता, मक्कारी और क्रूरतामें ताज़े पानीके जानवरोंमें घड़ियालको कोई दूसरा जानवर नहीं पा सकता। आस-पासके सभी घाटोंपर एलार्म-घंटी-सी बज गई। लोगोंने रामगंगाका पाँक उतरना भी छोड़ दिया। पर खेती-बारी और जीवनकी अन्य समस्याओंके कारण लोगोंको नदीके आर-पार जाना ही पड़ता। पाँकपर लोग टोली बनाकर निकलते। जानवरोंको उथले स्थानोंपर पानी पिलाते समय वे सावधान होकर लाठी लेकर खड़े हो जाते। यमदाढ़ इन सब बन्धनोंका खयाल न करता और दस-बारह मील दूर निकलकर अपनी घात लगाता।

यमदाढ़की उमर बढ़ रही थी और उसके साथ बढ़ रही थी उसकी भूख। भारी और बड़े बायलरके लिए अपेक्षाकृत अधिक कोयलेकी ज़रूरत पड़ती है। बड़ी मोटरोंमें छोटी मोटरोंकी अपेक्षा अधिक पेट्रोल जलता है। उसी प्रकार यमदाढ़के पेटकी भट्ठीके लिए मनों मांसकी ज़रूरत थी। एक स्वस्थ घड़ियालके लिए भोजन तलाश न करना कल्पनातीत है। यमदाढ़ तलाशेमाशमें बीसों मीलका चक्कर काटता और गाय, भैंस, जंगली सूअर, नीलगाय और इक्के-दुक्के आदमीको पकड़कर खा जाता।

सन् १९१९ के भयंकर युद्ध-ज्वरमें यू० पी० के लाखों मनुष्य मर गये। गाँवके गाँव उजाड़ हो गये। किन्हीं-किन्हीं घरोंका तो दीया ही बुझ गया। मा एक कोनेमें पड़ी पीड़ासे तड़प रही है, तो बहू एक ओर घूंटभर पानीको बिलखती है और बेटेकी जान दरवाजेपर निकल रही है। एक दूसरेको किसीका कुछ पता नहीं। घरोंमें लाशें सड़ने लगीं। कोई दाग लगानेवाला तक न था। लाशोंको गाड़ियोंमें, भरकर फेंक दिया जाता था। मरघटोंमें चिता बनानेके लिए स्थान नहीं रह गया था। लाशोंपर लाशें चली आती थीं। मुर्दे ढोते-ढोते लोग परेशान थे। नदियोंमें नर-मुण्ड पड़े दिखाई पड़ते थे। कछुओं, मछलियों, नाकों, घड़ियालों और गिद्धोंकी बन आई थी। यमदाढ़को इकसठ वर्षकी उमरमें खानेका जो सुख मिला, सो पहले कभी नहीं मिला। मनुष्य परमात्मासे याचना करते थे कि प्रलय कालका अन्त हो, और उसी परमात्माकी बदौलत यमदाढ़ और उसकी बिरादरीवाले संतोषकी सांस लेते थे। भोजनका इतना बाहुल्य था कि यमदाढ़को किसी गाय, बैल या आदमीके पकड़नेकी आवश्यकता ही न थी।

पर युद्ध-ज्वरके बाद -- लगभग दो महीने पश्चात् यमदाढ़के लिए भोजन-प्राप्तिकी समस्या फिर विषम हो गई, और उसे अपने पुराने हथकण्डोंका फिर प्रयोग करना पड़ा। एक दिन ज्वराक्रान्त एक व्यक्ति नदी-किनारे शौचके लिए आया और कराहकर जैसे ही वह बैठा, वैसे ही यमदाढ़का वार हुआ। टाँग पकड़कर यमदाढ़ उसे पानीमें घसीट ले गया। क़रीब ही गहरी दह थी और उससे लगी खड़ी पहाड़ी। दहके किनारेसे यमदाढ़ने रोगी आदमीको ऊपर फेंका मछलीकी भांति और अपना मुँह बाया उसे पकड़नेके लिए। पर आदमी बजाय सीधा फिंकनेके ४५ डिग्रीपर फिंका और खड़े किनारेके ऊपर।

जा पड़ा। यमदाढ़ क्रोधमें किनारेकी ओर बहुत तड़पा। आदमी आध घंटे तक वहीं बेहोश पड़ा रहा। होश आनेपर चीखा। चारपाईपर रखकर उसे अस्पताल पहुंचाया गया।

एकके बाद एक करके वर्ष बीतने लगे। सन् १८५७ ई० के गदरके बाद गांधीजी की मुल्कमें सत्याग्रह संग्राम छिड़ा। भारतकी नैतिक गुलामीका अन्त हुआ। इस बीच यमदाढ़के जीवनमें अनेक घटनाएँ घटीं। खूनी तो वह घोषित कर ही दिया गया था, और पेट-पूजाकी खातिर वह खूनी हो भी गया था। दूसरा कोई भी चारा न था। अपनी भूखकी तृप्ति तो उसे करनी ही थी। जानवरों और मनुष्योंकी पकड़-धकड़ जारी थी। शिकारियोंके प्रयत्न भी जारी थे; पर वे सब अब तक असफल ही रहे। एक बार पंखिया लोग नावों और जालोंसे मगर पकड़ रहे थे। यों तो वे हर साल मगर पकड़ने आते थे और दस-बारहफुटे मगरोंको पकड़ लेते थे। बड़े मगर प्रायः न फँसा करते थे; पर एक बार यमदाढ़ उनके जालमें फँस गया। जैसे ही उन्होंने यमदाढ़को खींचना शुरू किया, वैसे ही उसने अपनी शक्तिका प्रदर्शन किया। तड़पकर वह बिगड़ा और पंखियोंका जाल टूटा। यमदाढ़की तड़पनके धक्केसे दो-तीन पंखिये पानीमें गिर पड़े।

* * * * *

मार्च सन् १९३५। यमदाढ़की उमर अठहत्तर वर्षकी होने आई। लम्बाईमें वह अठारह फ़ीटके क़रीब हो गया था। मुटाईका तो उसका ठिकाना ही न था। उसका तूँबा खासा बड़ा था। उसके भारी-भरकम शरीरको देखकर अन्य मगर और घड़ियाल घबराते थे। नदी-किनारेके लोग हमेशा यमदाढ़के आतंकसे चिन्तित रहते थे। पर यमदाढ़की जीवन-नौका खिंच रही थी। पनडुब्बी नावकी भाँति छुप-छिपकर वह अपने शत्रुओंपर आक्रमण

करता। पर मधु और मीनकेतन बड़े-बड़े मानवी खूनियोंको फंसा देते हैं और अकेला कन्दर्प बड़े-बड़े खूनी जानवरोंकी सतर्कताको भगा देता है। कामुकताकी अग्नि मनुष्योंका ही नहीं, वरन् पशुओंका भी कभी-कभी अन्त कर देती है। उसका नशा शराबके नशेसे भयंकर है। नियम और संयम, शिष्टाचार और संस्कृति सबपर उससे पानी फिर जाता है और कामुक जीव पागलकी भाँति विचरने लगता है।

अठहत्तर वर्षकी उमरमें दिउसीपुर के क़रीब एक रातको तड़ातड़ और झड़ाझड़की ध्वनि होती रही। प्रातःकाल लोगोंने यमदाढ़ और एक दूसरे घड़ियालको रेतियापर लड़ते देखा। दोनों घड़ियाल थूथनें फाड़कर एक दूसरेपर आक्रमण करते। वे गजों ऊँचे खड़े हो जाते। खुली थूथनोंके वार खाली जाते, तो कुल्हाड़ियाँ-सी चलती सुनाई पड़तीं। पूंछोंके प्रहार भी होते। यमदाढ़ने एक बार मौका पाकर अपने प्रतिद्वन्द्वीकी गर्दनपर दांत जमा दिये और कमर मोड़कर पूंछका वह प्रहार किया कि प्रतिद्वन्द्वी बेहोश सा हो गया और थोड़ी देर बाद हार मानकर वह पानीमें गोता लगाकर भाग गया। पानीके पर्देने उसकी हार और अभिलाषा को छिपा लिया। यमदाढ़ करीब ही पड़ी गोहके आतुरताके लिए बढ़ा, पर गोह गुमसुम पड़ी रही, और यमदाढ़ भी पानीमें चला गया। थोड़ी देर बाद गोहकी बेचैनी-सी बढ़ी, और ऐसा प्रतीत हुआ, मानो वह यमदाढ़के प्रति अपनी उपेक्षाके लिए पछता रही हो—प्रौढ़ा कलहान्तरिता नायिकाके समान।

सायंकाल लोगोंने यमदाढ़ और गोहको रेतियापर पड़े देखा। कई लोग उधर होकर निकले; पर गोहके आकर्षणके कारण वह वहीं पड़ा रहा।

कुछ झुटपुटा होनेपर यमदाढ़ और गोह पानीमें सरक गये। प्रणय-

,,एक समवयस्क गोह पर मुग्ध हो गया था''
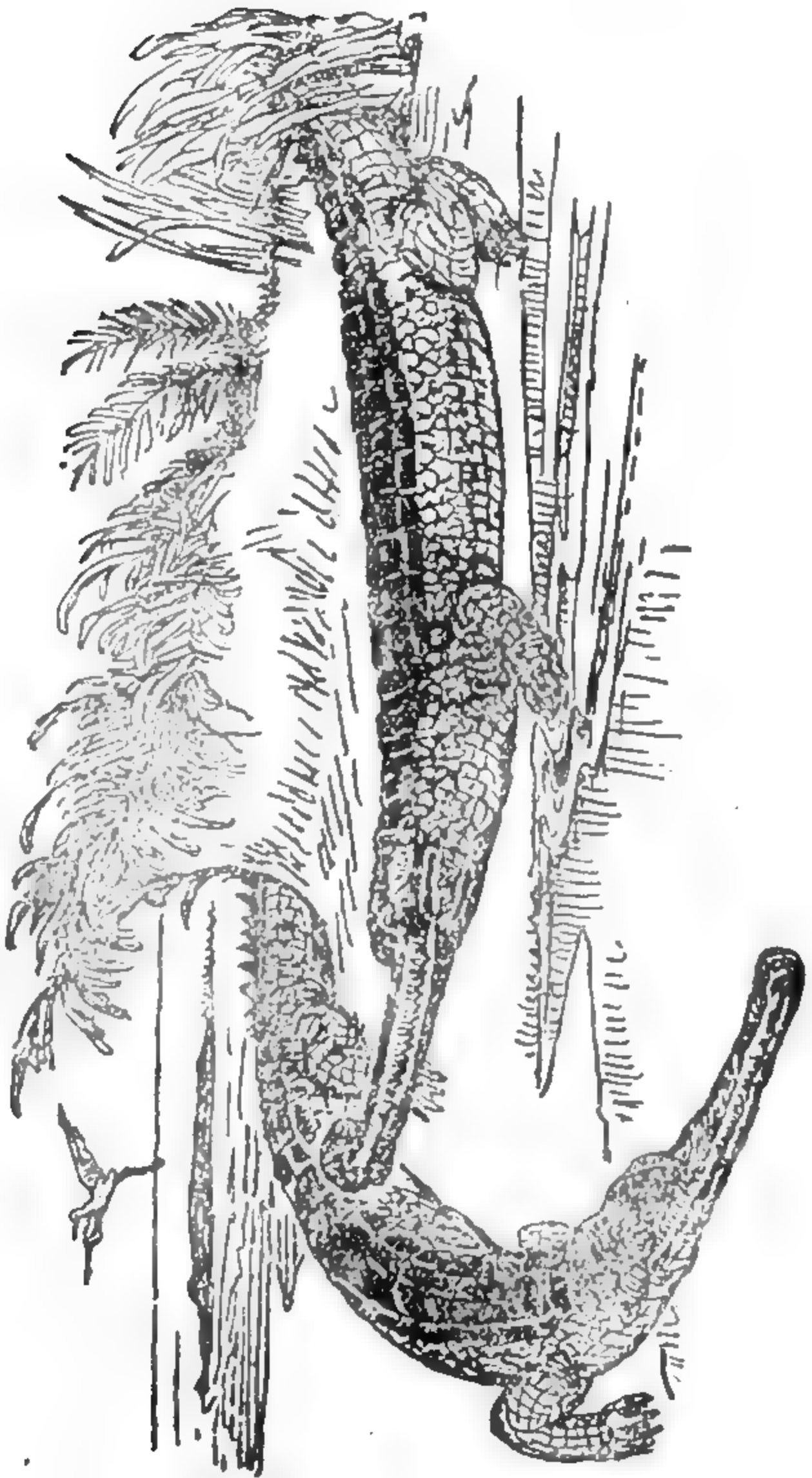
लीलाके साथ भोजनका भी प्रबन्ध करना था। उसने सतर्कता और मक्कारीको तर्क कर दिया। दिउसीपुरके घाटपर आदमी या बकरीको घातमें घाटके किनारे वह आ लगा। नदी-किनारे उसकी अधमकपकी आँखें ही दिखाई पड़ती थीं। उन दो शिकारियोंको, जो अपने भाग्यकी परीक्षामें वहां पहलेसे ही छिपे बैठे थे। जैसे ही घड़ियालकी आँखें दिखाई पड़ीं वैसे ही दो गोलियां उसकी खोपड़ी पर पड़ीं। एक गज ऊँची खूनकी धार उठी, और यमदाढ़ कई युगोंके बाद यमकी दाढ़में जा पहुँचा।

*   *   *   *   *

पच्चीस-तीस आदमियोंने उसे रस्सोंसे बांधकर खींचा। आसपासके गाँवोंके आदमी यमदाढ़की लाश देखने आये। कोई उसे गाली देता था और कोई उसके आकारपर आश्चर्य प्रकट करता था। उसकी लाश स्तब्ध और गुमगुम पड़ी मानो कह रही थी :—

"सब जीते-जीके झगड़े हैं, सच पूछो तो क्या खाक हुए।
जब मौतसे आकर काम पड़ा, सब क़िस्से क़जिए पाक हुए॥

———

शेर : शक्तिपुंज

भोर : झिलमुंज

जाड़ेके दिन और उत्तरी भारतमें ऋषीकेशके आसपासका इलाका। कड़ाकेकी सर्दी पड़ रही थी। गंगाजी ठिठुर-सी रही थीं। सुबह और शाम जंगलके चारों ओर गंगाजी के वक्षस्थलपर कुहरेका श्वेत दुकूल–सा फैल जाता, मानो तूफानी जवानी —बरसात— के बाद उन्होंने अपने मटमैले और रंगीले वसनको उतार निर्मल वस्त्र धारण कर लिया हो। गंगा-जल भी महीनोंकी तपस्याके उपरान्त शुद्ध और पवित्र हो गया था। आकाश और पृथ्वीके बीच कुहरा ऐसा प्रतीत होता था, मानो प्रकृतिने एक सफेद चादर तान दी हो, ताकि आकाश मार्गसे वनवासियोंकी दशा सायंकाल से लगाकर प्रातःकाल तक कोई न देख पाये। सन्ध्या-वेलामें दूरवर्ती हिमालयकी चोटियाँ गर्दनें उठाकर हसरतभरी नज़रोंसे तराई तक देखनेकी चेष्टा करतीं; पर कुहरेका श्वेत बुर्का वनवासियों की प्रत्येक प्रगतिको छिपा देता।

सुबहके चार बजेके करीब उत्तरकी ओरसे कुहराम-सा मचता—हिमालय के शिखर शीतसे घबराकर एक दीर्घ निश्वास छोड़ते। साल वृक्षोंकी ऊँची चोटियोंके दिल काँप जाते, घबराकर वे हाय-हाय-सी करने लगतीं। बाँसों के झुरमुट उस स्पन्दनसे झूमने लगते, मानो भैरवीके स्वरोंने उन्हें मस्त बना दिया हो। फिर कई घंटों तक वह राग जमता। डाढ़ * चलता। डाढ़ रागमें

---

* हरद्वार और ऋषीकेशके करीब प्रतिदिन प्रातःकाल चार बजे तीन-चार घंटे तक हिमालयकी ओर से चलने वाली तेज़ हवा को 'डाढ़' कहते हैं।

द्रुमदल और बझरियां ऐसे मस्त होते कि रात भरके जमा मोतियोंको वे अपने शरीरों से फेंक देते। वे मोती बिखरकर या तो यों ही पत्थरोंपर गिर पड़ते, या नीचे धरती उनको निगल लेती।

शीत के आतंक से सांप और बिच्छू बिलों और कूड़े के ढेरों में छिपे पड़े थे। चीतलों और सांभरों, कुकड़ों और चकोरों तथा अन्य वनवासियोंने अपने ऊपर चर्बीका एक पुट चढ़ा लिया था। यों तो ठंडसे जीव-जन्तु सिकुड़े से प्रतीत होते ही थे; पर उनकी जीवन-शक्ति भी सिकुड़कर केन्द्रीभूत हो गई थी। हां, सूर्य-तापमें बुढ़ापा-सा जरूर प्रतीत होता था। प्रातःकाल सूर्य निकलता, तो कंपता हुआ-सा। दिनभर वह अपने तेजपुंजको जंगलके भीतर फेंकता; पर उसकी एक न बसाती। जड़ी-बूटियोंकी मूर्च्छाको वह जगा न सकता। हां, घंटोंके परिश्रमसे वह कुहरेको उड़ा सकता और कहीं-कहीं जमे तुषारको पिघला पाता।

अपनी दैनिक यात्रामें सूर्य तराईके जंगलोंपर घूरता रहता। जंगल शान्त और निर्मम खड़ा रहता। प्रातःकाल हिरन और पक्षी धूप लेनेकी खातिर टीलोंपर या मैदानोंमें खड़े हो जाते। मृग-शावक सिमटे-सुकड़े अपनी माताओंकी बगलमें खड़े रहते। हाथियोंके झुण्ड भी प्रातःकाल होते जंगलके सघन स्थानोंकी ओर चल पड़ते। पेड़ और अनेक जीव शान्त भावसे खड़े ऐसे मालूम होते; मानो वे सूर्य भगवानकी स्तुति करनेमें मग्न हों। जंगलके अनेक नाले जो बरसातमें अगम्य थे, और जिनमें होकर हिमालय और जंगलकी जान कट-कटकर बहती थी, मूर्छित-से पड़े थे। उनके बीचमें कहीं-कहीं स्वच्छ जल-राशियाँ बहुत गहरी थीं, जिनमें मछलियां किलोलें कर रही थीं। नालोंके किनारोंपर अनेक स्थानोंमें झरबेरियोंकी

सघन झाड़ियां थीं, जिनपर पके बेर मूंगे-से प्रतीत हो रहे थे। ऊपर आकाशसे घास-पात-परिवेष्ठित ये नाले और छोटी जल-धाराएँ तराईकी रक्त संचारिणी धमनियों-सी प्रतीत होती थीं।

सायंकालको जब घसियारे अपने गट्ठरोंको सिरपर लादकर बस्तियोंको ओर चलते, चरवाहे अपने पशुओंको समेटकर घंटेकी टन-टन ध्वनिमें घरकी ओर लौटते और लादनेके घोड़े कुद्दुर-कुद्दर चालसे जल्दी-जल्दी जंगली मार्ग पार करने लगते, तब सूर्यका गोला पश्चिममें कुछ रुका-सा दिखाई पड़ता और अपनी दिनभर की यात्रापर दार्शनिक की भांति कुछ विचारता। इसी समय पहाड़ोंकी ओरसे एक सिहरन-सी होती और जल-तरंगकी भांति वह प्रकृति-परीसे अठखेलियां कर जाती। नालोंकी घास और पेड़ोंकी फुनगियों में एक हिलोरें-सी उठती।

ठीक ऐसे ही समय एक नालेमें वायुकी सिहरन हुई। नालेके बीच एक ऊँचे, पर घने और अगम्य स्थानमें, जो सालके बड़े पेड़ों और घास तथा झरबेरीकी झालरोंसे एक टापू-सा बना हुआ था, तीन छोटे-छोटे बच्चे एक खुले गोलाकार स्थानसे उठे और अपने डगमगाते, पर बलिष्ठ, पैरोंसे चल-फिरकर 'क्याऊँ, क्याऊँ' करने लगे। थे तो वे असहाय ; पर उनका पीला रँग, अपेक्षाकृत मज़बूत पंजे, बड़े कान शरीरपर काली धारें और मटक-धूंधरी आंखें उनके कुलको जतानेको काफ़ी थीं। क़रीब ही ९ फुट २ इंच लम्बी और कन्धोंके पास ३ फुट ऊँची उनकी मा अधखुली आँखोंसे अपने बच्चोंको सगर्व तथा सतर्क देख रही थी। सायंकालकी वायुकी सिहरन, बच्चोंकी मांग और रात्रि-आगमनके चिह्नोंको देखकर वह उठी। पिछले पंजोंपर शरीरका बोझ डालकर और अगले पंजोंके बीच अपना सिर रखकर अपने साफ़ दांत दिखाकर

उसने अंगड़ाई ली, और नाज़नीकी भाँति वह बच्चोंकी ओर चली। तीनों बच्चोंको लेकर वह पसरकर बैठ गई। तीनों बच्चे दूध पीनेमें लग गये। चप्प-चप्प-चप्प और घुर्र-घुर्र-घुर्र शब्दोंके साथ मातृ-दुग्धपान-प्रतियोगितामें वे जुटे, और शेरनीने अपनी जीभसे चाट-चाट कर उनकी सफ़ाई भी की।

अपने दुग्ध-भारको हल्काकर और अपने बच्चोंकी भूख बुझाकर शक्ति-स्वरूपा वह शेरनी उठ खड़ी हुई। सन्तोष प्रकट करनेके लिए उसने अपने होंठ पीछे खींचे और एक धीमी गुर्राहट की। एक क्षण उसने इधर-उधर
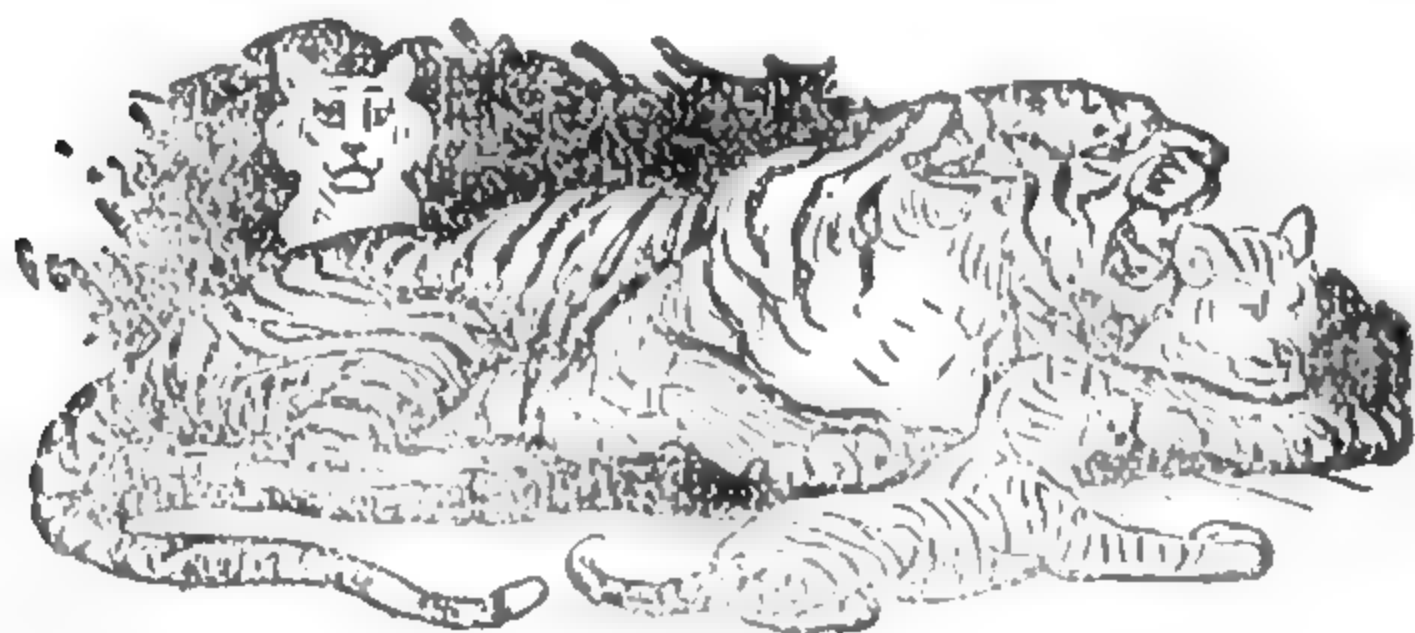
"उसने होंठ पीछे खींचकर चेतावनी दी कि आगे न बढ़ो"

देखा, फिर पीले मुँह एक-एक बच्चेको अपने मुँहमें दबाकर उठाया और पास ही पड़े एक भीमकाय सालके पेड़के खोखलेमें उन्हें रख दिया। तनिक खड़ा होकर उसने चारों ओर देखा। फिर रातके अन्धकारमें वह इस प्रकार प्रवेश कर गई, जिस प्रकार क्रौंच पानीमें गोता लगाता है। बच्चोंकी भूख बुझाकर शेरनी अपनी भूख बुझानेकी ख़ातिर शिकारपर निकली। नालेके किनारे-किनारे वह आध मील तक गई और फिर एक नए सूखे नालेमें अपनी

दाहिनी ओरकी पगडंडीपर पड़ी। झाड़ियों और पेड़ोंके सहारे, नपी तुली चालसे, बिना किसी प्रकारकी आहट किये अपने कानोंसे जंगलकी प्रत्येक गतिको समझती हुई वह आगे बढ़ने लगी। जब कभी बाँसोंकी रगड़ या वायुसे कुछ खड़खड़ाहट होती, तब फौरन ही वह घातके आसनपर जम-सी जाती और कनौती करके अपनी आँखोंको इधर-उधर फेरती कि कहीं कोई जंगली जानवर तो वहां नहीं है। स्थिति समझकर वह अपनी गतिपर फिर चलने लगती। मार्गमें दो-एक बार कई खरगोश फुदकते हुए मिले जो शेरनीको देखकर बेतहाशा भागने लगे। शेरनीने, जिसे हम बिन्दो कहेंगे, उनकी ओर
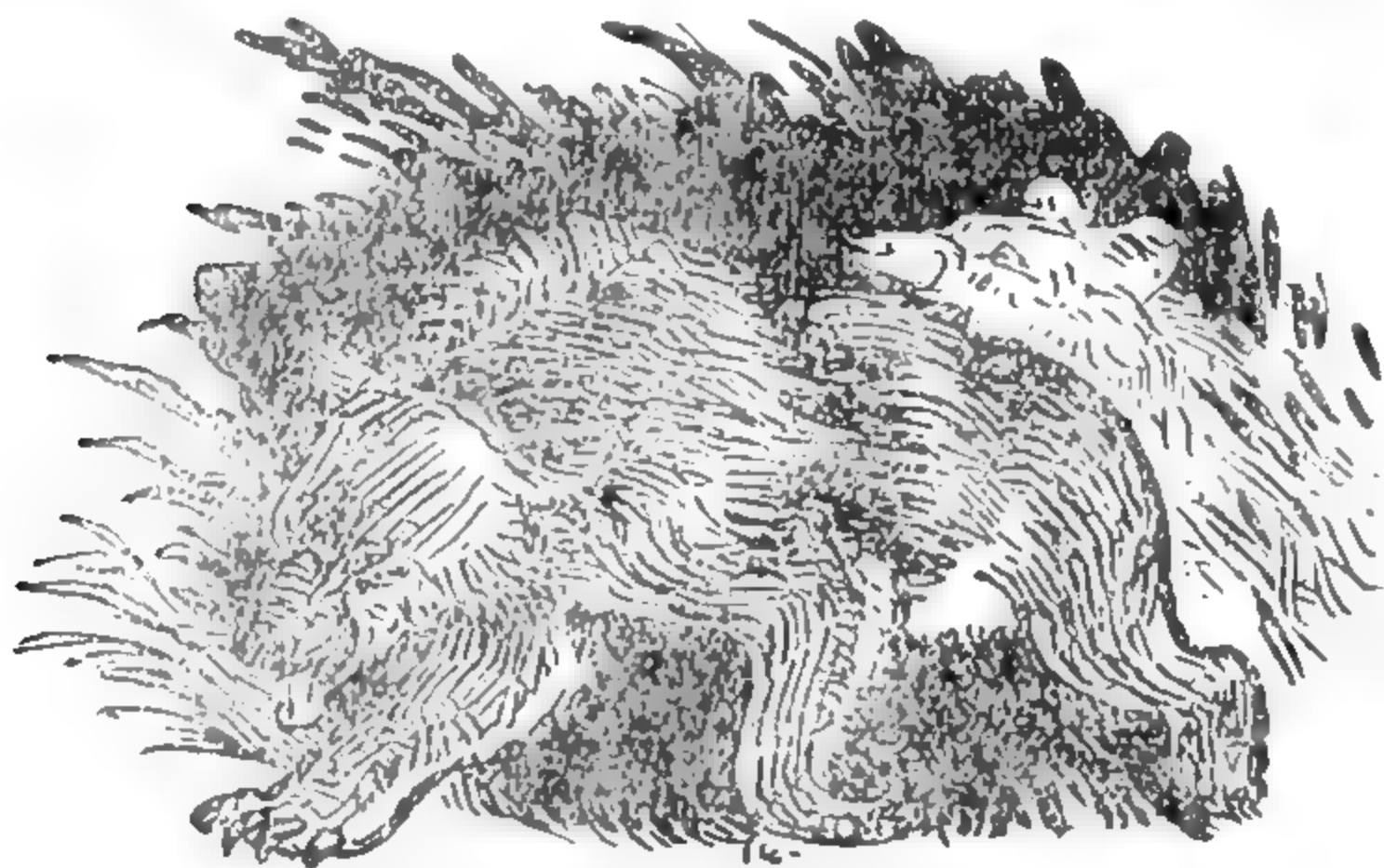
"वे शोरगुल करते, दीमकों को छोड़कर लदर-पदर भाग गये"

उपेक्षाकी दृष्टिसे देखा। भूखसे वह परेशान थी। देख-भाल और घातकी चालमें उसे घूमते-घामते लगभग दो घंटे हो गये थे। भालुका एक जोड़ा वहां ज़रूर था — लगभग तीस गजकी दूरीपर ; पर हवा बिन्दोकी ओरसे

चल रही थी। वायुने बिन्दोकी गन्धको भालुओंकी थूथन तक पहुँचाया। वे शोर-गुल करते, दीमकोंको छोड़कर, लदर-पदर भाग गये। करीबके अन्य जानवरोंको भी उन्होंने चौकन्ना कर दिया।

भूखसे बेचैन बिन्दोने अपनी दाईं ओरका मार्ग पकड़ा। एक मील दूरपर, एक खुले मैदानके क़रीब, शिकार पानेकी अभिलाषासे वह उधर चली। भूखसे पीड़ित बिन्दोका क्रोध बढ़ रहा था और बेचैनी भी उसे कम नहीं थी; पर भोजनके लिए उसे दांव-पेच लगाने थे। कुछ ही दूर जानेपर उसे किसी जानवरके पैरकी आहट सुनाई दी और पेड़से खींचकर पत्ते तोड़नेका भी गुमान उसे हुआ। घासकी सरसराहट, पत्तोंकी तोड़न और पैरोंकी आहटसे उसे अनुमान हुआ कि कोई सांभर अपनी भूख बुझाने में जुटा है। बस, एकदम बिन्दो जमीनपर लग गई। और वह अपनी पूंछका अन्तिम सिरा हालके मरे सांपकी भांति इधर-उधर पटकने लगी—बिना किसी शब्दके। सौभाग्यसे वायु बिन्दोके पक्षमें थी—आहटके स्थानसे बिन्दो की ओर ही हवा चल रही थी, इसलिए उसे यह जाननेमें कठिनाई नहीं हुई कि आहट सांभरकी थी। सूअर, सेही और हाथीकी आहट वह हो नहीं सकती थी, क्योंकि सेहीकी आहट कुतर-कुतर और सरर सरर होती है। सूअरकी आवाज जमीन खोदनेकी-सी घसर-घसरके साथ होनी चाहिए थी अगर हाथी चरते होते, तो बड़ी-बड़ी शाखोंके तोड़नेका शब्द होता। धीरे-धीरे छपक-छपककर बिन्दो आगे बढ़ी; पर जैसे ही वह सांभरके करीब पहुँची और वह बीस गज रह गई वैसे ही उसके पेटके नीचे दबकर एक लकड़ी कड़ाकसे टूट गई। मुँहमें पत्ता दबाये, बड़े-बड़े सींगोंको ऊपर

करके और पूँछ हिलाकर साँभर एकदम 'राइट एबाउट टर्न' हुआ और भाग कर तीस गज उधर खड़ा हुआ जिधर हवा खड़केकी ओरसे चल रही थी। साँभरके नथनोंने शेरकी गन्धको रोम-रोममें दौड़ा दिया। बस, फिर तो साँभर (मद्दा) सिरपर पैर रखकर भागा और आध मील तक तो वह रुका ही नहीं। बिन्दोने अपने भाग्यको कोसा। गुर्राहट और परेशानीसे मन मसोसकर वह फिर शिकारकी टोहमें चली और आध मील चलकर एक टीलेपर जा बैठी, ताकि चारों ओरकी स्थितिका विहंगावलोकन कर सके। कृष्णपक्षकी अष्टमीका चाँद आकाशमें सागरमें बिछुड़ी हुई नौकाकी भाँति उद्वेलित हो रहा था। बिन्दोकी परेशानी और हिरनोंकी चिन्ताके कारण वह धनुषाकारमें तना खड़ा था। नालेमें एक ओर पेड़ोंकी छाया पड़ रही थी और दूसरी ओर चन्द्रिका छिटक रही थी। दोनोंकी सीमापर ऐसा प्रतीत होता था मानो किसीने सफ़ेद चादरसे भिड़ाकर काली चादर बिछा दी हो और कल-कलकर बहनेवाली नालेकी क्षीण धार भीमकाय अजगरकी ऐंठन अथवा चाल मालूम होती थी।

बिन्दोने देखा कि वहाँसे सौ गज़पर साँभरोंका झुंड नालेमें चर रहा है। झुंडका नेता नालेके किनारे खड़ा सन्तरीका काम कर रहा है। उसके कुछ ही आगे एक अधेड़ मादा साँभर (मद्दी) नालेकी ररक (Slope) पर खड़ी चारों ओर देख रही है। सामने भोजनकी अपार राशिको देखकर बिन्दोकी आँखोंमें भूखकी ज्वाला प्रज्वलित हो उठी; पर उसे भोजन प्राप्तिके लिए परिश्रम करना था। कुछ देर बैठकर बिन्दो टीलेसे नीचे उतरी और चक्कर काटकर उसने साँभर (मद्दा) पर घात लगाई; पर जैसे ही वह साँभरके करीब पहुँची लगभग पन्द्रह फुटके, वैसे ही

मादा-साँभर टरकके ऊपर आई, और उसने झुंडके नेताके करीब साक्षात् मौतको बढ़ते देखा—उछलकर दबोचनेकी घातपर। बिन्दोको देखते ही मादा साँभरने जोरसे 'हाँक'की आवाज की। नालेमें भिरू पड़ गया, मानो भूकम्पसे पृथ्वी घबरा गई हो। नेताने आव गिना न ताव, नालेकी ओर उसने छलाँग भरी, और हक्का-बक्का होकर वह भागा। बिन्दोने भी झपट्टा मारा; पर एक सेकेंडकी देरीसे। फलस्वरूप वह धम्मसे जमीनपर आ गिरी, वह जंगलके चप्पे-चप्पेसे परिचित थी, इसलिए पटख खाकर उठी और मैदानको चीरती हुई नालेके ढलावकी ओर भागी। नाला मैदानके तीन ओर किनारे-किनारे था। यदि साँभरका झुण्ड या झुण्डमें से कोई नालेसे बाहर निकलनेकी कोशिश करेगा, तो उसी ओरसे, जिधरसे बिन्दोने उनके आनेका अनुमान किया था। बिन्दोको मैदानमें होकर केवल सौ गज जाना था और साँभरके झुण्डको कम-से-कम ६००-७०० गज। उधर नर-साँभर पोइया और दुल्की चालसे बिन्दोके अनुमानित स्थानपर आकर निकला। वह मैदानके किनारे खड़ा ही हुआ था कि उसपर बिजली गिरी। धूल, कंकड़ों और पत्थरोंमें लुढ़कते-पुढ़कते साँभर और बिन्दो नालेकी तलहटीमें पहुँचे। साँभरकी गर्दन टूट चुकी थी। बिन्दो अपने शिकारके पास कुछ देर छपकी बैठी रही और फिर क्रोधसे भन्नाती हुई उठी। दचोकोंसे उसके शरीरमें पीड़ा हो रही थी। अपनेसे दूने वजनके जानवरको उसने धर दबोचा था। उसकी गर्दन पर वह तब तक चिपकी रही, जब तक उसने उसे तोड़ नहीं डाला। धीमी गुर्राहटके साथ वह उठी और साँभरकी गर्दनको उसने मुँहमें दबाकर इतने जोरसे झकझोरा कि उस साँभरके सींग खटाखट पत्थरोंपर बजने लगे।

"करीबके पेड़ोंपर बैठे बन्दरोंके पेटमें पानी हो गया" पृ० ७९.

फटी आँखोंसे साँभर सृष्टिकर्ताकी ओर देख रहा था, और चन्द्रमा मानो उसकी मूक याचनापर लज्जित होकर काँप रहा था।

साँभरको घसीटकर बिन्दो झाड़ीकी ओटमें ले गई। हड्डियोंकी टूटन, मांसकी खरोचन और सन्तोषकी गुर्राहटके साथ बिन्दोने डटकर अपना पेट भरा और फिर लप-लप करके पानी पिया। शीघ्र ही उसने थोड़ी थोड़ी देरीसे—लगभग डेढ़ मिनटकी देरीसे—तीन-चार दहाड़ें लगाईं, मानो वह अपनी विजयका ढिंढोरा पीट रही हो। नालेकी-सी सुरंगके ऊपर वायुमें होकर वे दिल दहलानेवाली दहाड़ें कँपाती, थिरकती और भयानक होती हुई फैल गईं। करीबके पेड़ोंपर बैठे बन्दरोंके पेटमें पानी हो गया। खी-खी करके उन्होंने खीसें काढ़ीं। बँदरियोंने अपने छौओंको ताड़नाके रूपमें नोचा और समझाया कि निपूता सुनते नहीं, बनराजकी दहाड़ ऐसी होती है। खबरदार बिना समझे-बूझे पेड़से नीचे उतरे तो। मोरोंने आतंक-स्वरमें कुहक भरी। पड़ोसके झाँकों और सुअरोंने भी 'शोओ' और 'गुर्र'के शब्दोंसे अपनी सतर्कता प्रकट की।

तीसरी-चौथी दहाड़के उपरान्त बिन्दोको अपने जोड़के शेर—चम्बूकाट—की दहाड़ सुनाई पड़ी। दहाड़ें जंगलकी नीरवतामें प्रतिध्वनित होती हुई दूर जाकर विलीयमान हो गईं। बिन्दो अधखुयी साँभरकी लाशके पास बैठी अपने पंजोंपर थूक लगाकर अपने सिरका शृंगार-सा कर रही थी कि नालेकी दूसरी ओर चम्बूकाट आ खड़ा हुआ। अपेक्षाकृत उसका सिर और शरीर बहुत बड़ा था। नीचे उतरकर बिन्दोके करीब आकर उसने धीमी 'खी' की ध्वनिसे उसका स्वागत किया। बिन्दो भी कुछ लजाई-सी उठी, मानो संकेतसे वह कह रही थी कि मैंने तुम्हारे लिए कबसे भोजन तैयार कर रखा है। आओ, खाओ। मैं जाती हूं।

सीधे मार्गसे सुअरों और हिरनोंके झुण्डोंको उपेक्षा-दृष्टिसे देखती बिन्दो अपनी ठाहरपर आई। सूरज निकल आया था। ठाढ़का वेग अभी कम नहीं हुआ था। सालके खोखलेके भीतर बच्चोंके जागने और उनकी भूखकी व्याकुलताकी चीं-चीं सुनाई पड़ रही थी। बिन्दोने अपनी बोलीमें उन्हें पुचकारा और बाहर आनेको कहा। तीनों बच्चे एक-एक करके बाहर निकल आये। चढ़ती धूपमें उसने उन्हें लेटकर दूध पिलाया। बच्चोंने दूध पीकर आपसमें खेलना शुरू किया। उन तीनों बच्चोंमें जो सबसे पहले जन्मा था और जो अपने भाई-बहनसे कुछ हट्टा-कट्टा था, उसे जांबाज़ कहा जायगा। जांबाज़के भाईको प्राणसोख और उसकी बहनको धसक्को सम्बोधित किया जायगा।

जांबाज़, प्राणसोख और धसक्को एक दूसरेसे गुत्थमगुत्था करते और कभी अपनी मा बिन्दोकी पूंछको पंजों और मुँहसे पकड़ते और कभी खोखले सालके आसपास आंखमिचौनी खेलते। अभी उनका खेल बन्द नहीं हुआ था कि बम्बूकाटका भारी शरीर भी उन्हें दिखाई पड़ा। उसे देखकर प्राणसोख और धसक्को तो बिन्दोकी ओर चले आये ; पर जांबाज़ कुतूहलपूर्ण दृष्टिसे कभी बम्बूकाटको देखता और कभी अपनी माको। बिन्दोने जो बम्बूकाटकी ओर अधखुली आंखोंसे देखा तो वह बैठ गई और भर्त्सनापूर्ण गुर्राहटसे बम्बूकाटको सचेत किया कि इतने छोटे बच्चोंके लालन-पालनमें उसे (बम्बूकाटको) शरीक नहीं होना चाहिए—उसे बच्चोंसे दूर रहना चाहिए। कुछ खिसियानपटके साथ बम्बूकाटने चेतावनीको हृदयंगम किया और कुछ दूरपर सालके पेड़के नीचे वह लेट गया। बिन्दोने बच्चोंको सालके खोखले में ले जाकर रख दिया। प्राणसोख और धसक्को तो खोखले में लेट रहे ; पर जांबाज़ खोखलेसे अपना सिर चमकाता रहा।

दोपहरके उपरान्त तीनों बच्चे खोखलेमें कुनमुनाने लगे। बिन्दोने आह्वानकी गुर्राहटसे उन्हें बुला लिया। दूध पीकर तीनों ढलती धूपमें गुड़ी-मुड़ी होकर माके पास लेट गये। सायंकालको वे फिर भूखसे कुल-बुलाने लगे; बिन्दोने उन्हें फिर दूध पिलाया।

सूर्यके अस्त होते ही जंगलके रंगमंचपर जैसे ही रजनीने अपनी काली लटें बिखेरीं, वैसे ही उसके मरू बिन्दो और बम्बूकाट आखेटको निकले। बड़े परिश्रमसे उन्होंने एक झांक (Spotted male deer) को मारा। जब सूर्यने पूर्वमें आँख खोलनेकी चेष्टा की, तब रात्रिने अपना अंचल समेट लिया, और बिन्दो अपनी ठाहरपर आ गई।

दो-तीन महीनों तक इसी क्रमसे बिन्दोके कुटुम्बकी प्रगति चलती रही। इसी बीच उसके बच्चोंने अपनी ठाहरके करीबके भूगोलसे भी काफी परिचय प्राप्त कर लिया। बिन्दोके चले जानेके बाद वे करीबकी घासमें खिलकौरियाँ करते, आंख मिचौनी खेलते और दाँव-घात लगाकर एक दूसरेपर दिखावटी हमला करते। जब कभी कोई जंगली मुर्ग--कुकड़ा—अपनी टोलीके साथ उधर सालकी सूखी पत्तियोंमें कीड़े तलाश करता आ निकलता; तब जांबाज़ घात लगाकर बैठ जाता और कभी-कभी उनकी ओर बढ़ता भी। कुकड़ोंका झुण्ड उन्हें देखते ही भाग जाता।

होते-होते सर्दीकी सत्ता घटी, और गर्मीने अपनी जवानीकी ओर पैंग बढ़ाई। बिन्दोको उस इलाक़ेमें शिकारकी कठिनाई होने लगी। घासकी कमीसे चीतल और सांभर स्थान छोड़ गये थे। सूअरोंने भी गर्मियोंके लिए और स्थान चुन लिया था। एक बड़ी कठिनाई यह भी हो गई थी कि आसपासके जंगलके जीवोंको मालूम हो गया था कि वहां शेरोंका कुटुम्बका

कुटुम्ब रहता है। कौओंने जो एक बार बच्चोंको देख पाया, तो रोज़ाना सुबह-शाम ऊपर मँडराकर जंगल-भरमें ढिंढोरा पीटते थे कि सावधान ; शेरोंका एक समूह वहां रहता है। एक दिन बन्दरोंका एक दल उधर आ निकला इस खयालसे कि घने साल वृक्षोंमें दुपहरी बिरमा ली जाय ; पर जैसे ही बंदर उधर होकर निकले, वैसे ही बिन्दो और बम्बूकाट उनपर पिल पड़े। तीन-चार बन्दरोंको उन्होंने धर घसीटा। शेष टोली घबराकर पेड़ोंपर चढ़ गई, दिनभर पेड़ोंकी शाखोंसे शेरोंको गाली-गलौज करती रही और बड़ी कठिनाई तथा चालाकीसे वहांसे निकल सकी। शेरोंको सबसे भारी कठिनाई थी भोजन प्राप्ति की। बच्चोंकी भूख बढ़ रही थी और शिकार की कमी थी। गरीबी और भोजनकी कमीसे मनुष्योंके कुटुम्बोंमें ही मन-मुटाव नहीं हो जाता, वरन् जंगली जानवरोंके जोड़ोंमें भी मार-पीट और छीना-झपटी हो जाती है। शिकारकी कमीके कारण बिन्दो और बम्बूकाटको कभी-कभी यों ही लौटना पड़ता। कई बार तो ऐसा हुआ कि बिन्दोके मारे सूअरको बम्बूकाट छीनकर खा गया और बिन्दोको मोर और कुकड़पर ही गुज़ारा करना पड़ा। इसलिए चैतके खत्म होनेसे पहले ही बिन्दो अपने बच्चोंको लेकर उत्तरकी ओर बढ़ी और छः सात मीलकी दूरीपर उस दिन सुबह होते ही पेड़ोंसे ढकी एक गुफाके करीब रुकी। बच्चे तीन-चार महीनेके थे ; पर अभी उनके पुट्ठे इस योग्य नहीं थे कि बीस-पचीस मीलका लम्बा सफर करते, और फिर बिन्दोके दूधकी मात्रा भी नाममात्रका रह गई थी। शिकारका खून बच्चोंकी दाढ़ोंको लग चुका था। जबतक उनके पेटमें हड्डी मिला मांस न जाता, तब तक वे ऐसा महसूस करते, मानो उन्होंने कुछ खाया ही नहीं। उस दिन रातके सफरमें ६-७ मीलकी दूरीमें

चक्कर काटनेसे १०-१२ मीलका फैसला पड़ा होगा। फिर मार्गमें एक सेही और एक सूअर ही बिन्दो मार सकी, जिसमें से अधिकांशको वही खा गई। झांकको मारनेकी उसने कोशिश की। अपने बच्चोंको वह एक झाड़ीमें छिपा भी गई; पर प्राणसोख और धसको वहांसे निकलकर बाहर कनौती करके बैठ गये। झांकने उन्हें देख लिया, और बिन्दोका वार खाली गया। बिन्दोने लौटकर प्राणसोख और धसकोको बहुत फटकारा।

गुफ़ाके पास जाकर बच्चे थके-मांदे बैठे ही थे—और बिन्दो तो सोनेके लिए लम्बी पड़ भी गई थी—कि टीलेपर चीतलोंकी एक टोली घब-राई-सी जाती दिखाई पड़ी। दक्षिण-पूर्वकी ओरसे कोई चार सौ गजकी दूरीपर धुआं और आगकी लपटें भी दिखाई पड़ीं। बिन्दोने जो खड़े होकर देखा, तो उसे जंगलमें आग लगनेकी आशंका हुई; पर आग अभी दूर थी और शायद वहां तक न आ पाती, इसलिए उसे पेट की भाग बुझानेके लिए किसी चीतलको पकड़नेका प्रोत्साहन मिला। टोलीसे पिछड़े हुए एक झांकने बिन्दोंके कुटुम्बकी गन्ध ले ली, इसलिए चीतलोंका झुण्ड घबराकर आगे भाग गया। अब बिन्दोको वहीं गुफ़ाके क़रीब दिन बितानेको मजबूर होना पड़ा। पर दोपहर होते होते धुएं के बादलोंने जोर पकड़ा और आग की लपटें—गजों लम्बी लपलपाती जीभें—पेड़ोंके ऊपर दिखाई देने लगीं। घासके अधजले टुकड़े वायुके वेगसे ऊपर फिंक जाते; मानो अग्नि देवता उस तुच्छ भेंटको ऊपर फेंक देता हो। विशाल साल वृक्षोंमें आगकी लपटें लगतीं, तो पहले उसके पत्ते मुरझा जाते और लपटें कुछ झुंझलाई-सी लौट जातीं, पर उनका प्रहार फिर होता। पेड़ आगकी लपटोंमें लिपट जाता और आगकी वे जीभें पेड़की हरियालीको बातकी बातमें चाट लेतीं। जलकर

पेड़ गिरते, नीचे सूखी पत्तियां चटखतीं, कुक्कड़े और मोर भागते, तथा गीदड़, खरहा, सांप और सांभर भागकर गुफ़ाके आसपास होकर निकलते। आग के प्रकोप से बिन्दो और उसके बच्चे भी घबराये। उनकी भूख तो आगके आतंकसे ही भाग गई। जान बचाने का सवाल पेश था। पहले तो बिन्दो घबराहटमें बच्चोंको छोड़कर दस-बीस क़दम आगे बढ़ी, पर बच्चोंका मोह उसे खींच लाया। बच्चे डरकर पहले तो गुफ़ामें जा छिपे, पर जब बिन्दोने धसक्कोको मुंहमें उठाया, तब प्राणसोख और जांबाज़ उसके साथ हो लिये। आगकी लपटोंने गुफाके समीपवर्ती पेड़ोंको भी अपनी सीमा के अन्दर कर लिया। आग बढ़ रही थी, मानो बिन्दो और उसके बच्चोंको वह पकड़ना चाहती हो। पचास गज चलकर बिन्दोने धसक्कोको ज़मीनपर रख दिया और पीछे जो मुड़कर देखा, तो दस गज़पर प्राणसोख थककर बैठ गया था। धसक्कोको रखकर बिन्दो प्राणसोखको लेने गई। उसे भी लाकर उसने धसक्कोके पास रखा और भयंकर आगको तूफानकी तरह बढ़ते देखा। फिर उसने बच्चोंको आगे बढ़नेके लिए प्रोत्साहित किया। कभी वह प्राणसोखको मुँहमें लेकर चलती और कभी धसक्कोको ; पर जांबाज़ गिरता-पड़ता अपने आप चला आ रहा था। गर्मीसे वे सब हांफ रहे थे। शामके ६ बजे वे नदीके किनारे पहुँचे, जिसके किनारोंसे लेकर पानीकी धार तक—एक फर्लांग तक सफेद और गोल-मटोल पत्थर बिछे थे। आठ-दस हाथ चौड़ी धार बह रही थी। वहां पहुँचकर बिन्दोने बम्बूकाटको देखा। बिन्दो और बच्चे भागकर नदीकी धारकी ओर गये और पानीमें जाकर बैठ गये। नदीके किनारे सांभर, चीतल, सूअर और गीदड़ थोड़ी-थोड़ी दूरपर खड़े थे। आग जंगलके सभी जीव-जन्तुओंकी शत्रु है, इसलिए अपने भयंकर शत्रुके सामने, आत्म-रक्षा

की खातिर, सब जीवोंने अपनी शत्रुता भुला दी थी। उनमें क्षणिक सन्धि-सी हो गई थी। चीतलोंके बच्चे सिमटे-सिकड़े अपनी माताओंके पेटसे सटे या पेटके नीचे खड़े थे। आतुर और कातर आँखोंसे कभी वे शेरों और सूअरों की ओर देखते और कभी भभ्भराती हुई बढ़ती आगको। आग बढ़कर नदीके किनारों तक आ गई थी। बचे-खुचे पेड़ काँप रहे थे ; पर आगकी पन्द्रह-बीस गज़ लम्बी लपटोंने उनपर भी छापा मारा, और बात-की-बात में अपना लहराता यौवन गँवाकर पेड़ ठूंठ हो गये। हहर-हहरकर कुछ तो खड़े-खड़े जलने लगे और कुछ धराशायी हो गये। आसमानमें धुएँ के ऊपर भुजंग, नीलकण्ठ और कौए आगसे भागकर उड़नेवाले कीड़ोंको झपट्टा मार-कर पकड़ने लगे।

उस दिन रात भर आग जलती रही। अगले दिन प्रातःकाल आगका प्रकोप कम हुआ, क्योंकि वहाँपर जो कुछ था ; वह उसकी भेंट चढ़ चुका था। जंगलको तहस-नहस करती हुई आग आगे बढ़ रही थी, और पीछे जले-भुने पेड़ उच्छ्वास छोड़ रहे थे। पेड़ोंके तनों और लकड़ीके ढेरोंमें वह घायल नागिनकी भाँति छिपी पड़ी थी।

आगका प्रकोप कम होते ही नदीके शरणागत जीव धीरे-धीरे नदीकी तलहटीमें ऊपर नीचेकी ओर बढ़ने लगे ; पर बिन्दोका कुटुम्ब वहाँसे सबसे आखीरमें चला। धसको तो इतनी घबरा गई थी कि वहाँसे वह उठना ही नहीं चाहती थी ; पर बहुत समझाने और धमकानेके बाद बिन्दो का कुटुम्ब दो मील ऊपर जाकर नदी-किनारे सघन पेड़ोंके एक झुरमुट में रुका। उस स्थान पर नदीमें एक नाला मिला था, जो गर्मियोंमें सूख गया था। नालेके किनारोंके ऊपर पेड़ों और बल्लरियोंका वितान-सा-तना था। वहाँ घनी छाया थी और

करीब ही नदीका पानी था। आदमियोंकी पहुंच वहाँ नहीं थी। हाँ, नालेमें होकर सुअर, सियार और कुत्ते नदीका पानी पीने आते थे, बस, वहाँ एक ही खराबी थी, और वह यह कि वहांसे एक गाँव करीब था—कोई एक मीलके लगभग। पर गर्मियोंमें शेरोंके लिए वह स्थान आदर्श था।

उस दिन शेरोंके भाग्यसे गांवकी एक भैंस नालेमें चरती-चरती वहाँ आ गई। भूखे शेरोंकी जो नजर उस पर पड़ी ; तो उनकी भूखकी ज्वाला और भी प्रज्ज्वलित हो गई। कनूफाट दबकर घातके स्थानमें पहुँचा और छलांग भरकर भैंस की गर्दनपर धक्का देता हुआ कूदा। शेरके वजन, धक्के के जोर और दांतों तथा नखोंकी प्रहारसे बेखबर भैंसकी गर्दन गिरते ही टूट गई। शेरने तीन चार झटोके उसकी गर्दन पकड़कर और दिये। सींग पत्थरोंसे खड़खड़ाये। भैंसकी आखिरी कराह निकली और आँखोंमें से आंसू टपक पड़े। हांफता हुआ शेर क्रोधमें मचलाता कुछ देर बैठा रहा। फिर उसने भैंस को पीछेसे खाना शुरू किया। दो तीन मुंह मारनेके उपरांत उसने भैंस की पूँछको तोड़कर अलग फेंक दिया। अच्छी तरह मांस खानेके पश्चात् शेर तो पानी पीने चला गया और बिन्दो मय अपने बच्चोंके वहां आ गई। भगवानकी कृपासे उन्हें उस दिन इतना भोजन मिला कि शामको वे खा भी न पाये। मांससे पेट-भरकर बिन्दो और उसके बच्चोंने नदीमें पानी पिया। पानीमें खूब कलोल कलोल कर बिन्दोका कुटुम्ब बालू पर जा लेटा और रात भर वहीं पड़ा रहा। जांबाज, भसको और प्राणसोखने घंटों अपने खेल खेले। प्रातःकालसे कुछ पहले शेरोंने भैंसके शेषांशमें से भी बहुत कुछ ठूँसा और पानी पीकर शीतल छायामें वे सो रहे। शामको फिर दुर्गन्धपूर्ण मांसको उन्होंने खाया, और कहीं शिकारको नहीं गये। गांववालोंने भैंसको तलाश नहीं किया उन्होंने समझा कि भैंस कहीं जंगलकी आगमें जलकर मर गई।

"बम्बूकाट भैंसकी गर्दनपर धक्का देता हुआ कूदा।" पृ० ८६

शेरोंके कुटुम्बको जब शिकारपर जाना पड़ा, तब नियमित रूपसे अपनी ठाहरपर रोज नहीं आते थे। जंगल जल जानेके बाद नई घासकी कोंपल जो निकल आई थी, पर आड़ कम हो गई थी ; इसलिए शेरोंको शिकार पकड़नेमें बड़ी कठिनाई होती। बम्बूकाट तो कभी-कभी दो-दो तीन-तीन दिन गैरहाजिर रहता ; पर न जाने कौन-सी प्रेरकशक्तिके कारण वह बिन्दो से आ ही मिलता।

ग्रीष्म ऋतुकी समाप्तिपर वर्षाका आधिपत्य हुआ। नदी-नाले सब भर गये। जंगलमें पावस रानी धानी साड़ी पहन कर थिरकने लगी। इन दिनों जाँबाज, प्राणसोख और धसक्को भी अवसरानुसार शिकार खेलने लगे पर वे अभी मा की छत्रछायामें ही रहते। एक बार जाँबाजने एक सेही पर आक्रमण कर दिया। खरखराहटके साथ सेहीने अपने काँटे तीरकी भांति छोड़े, जो जाँबाजके शरीरमें घुस गये। इसपर जाँबाजकी माने उसे व्यावहारिक पाठ पढ़ाया कि सेहीको मारनेके लिए उसके मुंहपर एक थाप मारनेसे ही काम चल जाता है।

तीनों बच्चोंकी शिक्षा-दीक्षा जारी थी। फिर शीतकाल होने आया। शेरोंका दल उत्तरकी ओरसे दक्षिणको—चंडी पहाड़की ओर—उतरा। एक दिन सायंकालको जब शेरोंका कुटुम्ब शिकारके लिए निकला, तब एक टीलेकी बगलमें उन्हें हाथियोंका झुण्ड जंगलके किनारे चरता दिखाई पड़ा। बम्बूकाट और बिन्दोने सोचा कि अगर कहीं झुण्डसे भटका कोई हाथीका बच्चा मिल जाय, तो खूब काम बने। हाथीके बच्चेकी टोहमें बम्बूकाट और बिन्दो चले। जाँबाज, प्राणसोख और-धसक्कोको उन्होंने दूर एक झाड़ी की ओटमें छोड़ा। दोनोंने जाकर देखा, तो झुण्डका नायक अलग खड़ा सूँड उठा-

उठाकर हवाकी गन्ध ले रहा था। हथिनियां चर रही थीं। दो-एक बच्चे भी थे, जो उनकी निगाहसे परे न थे। बम्बूकाटने एक झाड़ीके सहारे बैठकर परिस्थितिपर विचार किया। अगर दंतैल हाथीकी एक भी ठोकर लग गई, तो उसका भुर्ता हो जायगा, और दंतैल नायक जंगलमें शेरसे डरता नहीं। वैसे शेर और हाथी एक दूसरेको तरह जरूर देते हैं; पर हाथीके हमलेके सामने शेर टिक नहीं पाता। हां, घायल शेरकी बात दूसरी है। घायल शेर जब आक्रमण करनेपर तुल जाता है, तब हाथीकी गत बनाता है—दहाड़ और गुर्राहटके साथ हाथीका सेरों मांस नोंच डालता है। हाथीके बड़े बड़े दांत और विशालकाय शरीर बम्बूकाटके दिलमें भय उत्पन्न कर रहे थे। हाथी झुण्डसे कुछ दूर खड़ा सूँड़को उठा-उठाकर आसपासकी गन्ध ले रहा था कि कहीं कोई खतरा तो नहीं है। थोड़ी ही देरमें उसने एक चिंघाड़ मारी, जिससे सारा जंगल हाथियोंकी भगदड़ और चिंघाड़ोंसे कांप गया। झुण्डको छोड़ हाथी बम्बूकाटकी ओर दौड़ा।, बम्बूकाट भी दौड़ती हुई चट्टानके समान हाथीको अपनी ओर आता देख नौ-दो ग्यारह हुआ। बिन्दो और जांबाज़ भी एक ओर भागे; पर प्राणसोख और धसक्को कई घंटे बाद भी नहीं आये। बात यह हुई कि जिस जगहपर तीनों बच्चोंको बिन्दोने छोड़ा था, वहांसे प्राणसोख और धसक्को कुछ पूर्वकी ओरको चले गये। जब हाथियोंके झुण्डमें भगदड़ मची, तब प्राणसोख और धसक्को हाथियोंके अधिक क़रीब थे। उनके जीवनमें यह पहली ही घटना थी, इसलिए भगदड़ और चिंघाड़से घबराकर वे भागे और अपनी ठाहरपर जा निकले। कुछ दम लेकर वे नदी किनारे पानी पीनेके लिए गये। प्राणसोख तो फ़ौरन ही नदीकी धारपर चला गया; पर धसक्को घबराई-सी नदी तटपर एक टीलेके किनारे

खड़ी रही। टीलेसे लगी एक भाटमें एक सोलह फुटका अजगर पड़ा था। धसक्कोकी हिलती-डुलती पूँछसे वह समझ गया कि शिकार क़रीब ही है। पासके पेड़से अजगर अभी हालही में उतरा था। धसक्कोको देखकर अजगरकी जीभ लपलपाने लगी, और बिजलीकी भाँति वह उसपर गिरा। सेकेंडोंमें उसने धसक्कोको अपनी गुँजलकोंमें बाँधकर मार डाला। धसक्को बस कराह सकी। उसका एक पंजा थोड़ी-सी खरोंच ही अजगरके कर सका। प्राणसोख जो ऊपर आया, तो वहाँपर हिलता-डुलता गुँजलकोंका एक समूह ही दिखाई पड़ा।

अगले दिन प्राणसोख बिन्दोसे आ मिला। जाड़े खत्म होनेसे पहले बिन्दोके दो बच्चे और हुए। अब बिन्दोकी उदासीनता जाँबाज़ और प्राणसोखके प्रति और बढ़ गई थी। पर प्राणसोख और जाँबाज़ने खेल-कूदके नए ढंग निकाल लिये थे। वे रातमें अकेले चले जाते, और जब कभी उन्हें भालू मिल जाता, तब उसको परेशान करनेमें उन्हें बड़ा मज़ा आता। घायल चीतलको पकड़कर परेशान करनेमें उन्हें आनन्द मिलता।

जाँबाज़की डेढ़ वर्षकी उमरमें उसके कुटुम्बपर एक और विपत्ति आई। गर्मी ज़ोरोंपर थी। नालोंमें पानीकी धार पतली हो गई थी। हिरनों और सूअरोंने अपने स्थान बदल दिये थे। बम्बूकाटने दो दिनके फ़ाकेके बाद एक बड़ी भैंस मारी। जाँबाज़ और प्राणसोखने क़रीब ही एक ओसरको धर पटका। सबने मिल डटकर पेट भरा। वे पानी पीकर क़रीबकी घनी झाड़ियोंमें सो गये। लगभग ग्यारह बजेके क़रीब एकदम दो-तीन फ़र्लांगपर शोरगुल मचना शुरू हुआ, और धीरे-धीरे वह उनकी ओर बढ़ा। बम्बूकाट, बिन्दो, प्राणसोख और जाँबाज़ बैठ गये और कान लगाकर सुनने

लगे ; पर प्रतिक्षण हो-हल्ला और फैरोंकी आवाज़ें वनकी आगकी भाँति बढ़ती आ रही थीं। धीमी गुर्राहटसे बम्बूकाट उठा और नालेमें होकर चलने लगा। दस-बारह हाथ पीछे प्राणसोख, जाँबाज़, बिन्दो और उसके छोटे बच्चे थे। बम्बूकाटने एक ओर होकर नाला पार करना चाहा कि पेड़ोंपर से आवाज़ हुई 'खट-खट'। एक आदमीने, जो रोक (stop) का काम कर रहा था, कुल्हाड़ीसे आवाज़ की थी, ताकि शेर उधर होकर निकलने न पायँ। खट-खटकी आवाज़ सुनकर बम्बूकाट धीमी गुर्राहटके साथ लौटकर फिर नालेमें चलने लगा। पीछे हाँकेकी आवाज़को तेजीसे आती समझ उसने चालमें तेज़ी की ; पर जंगलके किनारेपर पहुंचकर वह एक दूसरे नालेकी ओर जैसे ही बढ़ा, वैसे ही धायँसे फ़ायर हुआ और बम्बूकाट धाँउकी आवाज़से उछलकर गिर पड़ा। थोड़ी देरमें एक और फ़ायर हुआ और प्राणसोखके भी प्राण निकल गये।

बिन्दो और जाँबाज़ घबराकर लौट पड़े और हाँका करनेवालोंकी ओर झपके। उन्हें देखकर लोग घबराये। बिन्दोने ज़रा-सी देरमें एक आदमीकी खोपड़ीका भुर्ता कर दिया। लाइन फट जाने और आदमियोंके भाग जानेसे बिन्दो और जाँबाज़ मय दो छोटे बच्चोंके भाग गये। फिर वे उस इलाक़ेसे दस-बारह मील दूर उत्तरकी ओर रहने लगे।

जाँबाज़की उमर जब दो वर्षकी होने आई, तब एक दिन सायंकालको मार्गमें उसे एक बड़ा शेर मिला। उसे देखकर जाँबाज़ एक ओर हट गया, और बिन्दोने उसको लजीली आँखोंसे देखा। बम्बूकाटके स्थानकी पूर्ति नए शेरने की ; पर जाँबाज़की ओर वह घृणाकी दृष्टिसे देखता। एक दिन तो वह जाँबाजंपर इतनी बुरी तरह टूट पड़ा कि यदि जाँबाज़ अपनी फुर्तीके-

बूते बगलकी ओरको न भाग जाता, तो नया शेर उसे जहन्नुम रसीद कर देता। जाँबाज़का क़सूर यह था कि वह अपनी माके अधिक क़रीब चला गया था।

क्रोध और भयसे भन्नाकर जाँबाज़ने उस स्थानपर लानत बोली, और वहाँसे वह चल निकला। दुपहरीकी गर्मीमें तो वह आराम करनेके लिए एक झाड़ीमें लेट गया, वरना उस दिन वह चलता ही रहा। बीस-पचीस मील चलनेके बाद भूखने उसे बहुत सताया। वहाँपर उसे कोई बड़ी चीज़ नहीं मिली। हाँ दो-एक ख़रगोशों, चूहों और मेंढकोंको ही उसने मुँहमें डाला; पर उनसे उसकी तुष्टि कैसे हो सकती थी। रात होते ही वह फिर बढ़ा। थोड़ी दूर जानेके बाद उसने देखा कि एक दिमौरमें एक भालू फँसा हुआ है। उसकी पिछली टाँगें और आधा शरीर ऊपर आसमानकी ओर उठा हुआ है। पहले तो जाँबाज़ उस दृश्यको देखकर घबराया; पर फ़ौरन ही भालूकी थूथनसे भुल भुलकी ध्वनि हुई, और दिमौरके भीतरसे भालूने दीमकोंको खींचा और अपने शरीरको बाहर निकालकर दीमकोंका स्वाद लेने लगा। भालूने थूथनको इधर-उधर करके कुछ सूँघा और हाउ-हाउ करके भागने लगा कि जाँबाज़ने उसका रास्ता रोक लिया। भालू पिछले पैरोंपर बैठ गया। उसके मुँहसे झाग निकलने लगे। भूखसे पीड़ित जाँबाज़ उसपर टूट पड़ा। भालू जाँबाज़के दो एक-गहरी खरोंचें ही मार सका कि इतनेमें ही उसने उसका डेलडन्नुआ कर दिया और जाँबाज़ने अपना पेट भरा। वहाँसे चलकर छः-सात मीलपर एक घने जंगलके टुकड़ेमें जाँबाज़ने अपनी ठाहर बनाई। शामको ही उसने गाँवकी ओर जाती गायों और भैंसोंका एक झुण्ड देखा। भूखा तो वह था ही। दुल्की चालसे जाकर उसने गायके एक बछड़ेको दे मारा। बचेवाली

गायको अपने बच्चेसे जितना मोह होता है, उतना शेरनीको अपने बच्चेसे नहीं होता। धम्मकी आवाज़ जो गायने सुनी, तो रँभाती हुई उधर दौड़ पड़ी। जाँबाज़ उसपर भी पिल पड़ा। और गायें और भैंसें भी वहाँपर दौड़ आईं। एक भैंसकी टाँगको भी उसने तोड़ा। जंगलमें भगदड़ मची। रँभाने और घंटोंकी आवाज़से क़रीबके झोंपड़ोंके आदमी भी दौड़ आये और जाँबाज़ को खिसियानपनके साथ वहाँसे भागना पड़ा।

अगले दिन नौ बजेके क़रीब जब वह एक घनी झाड़ीमें सो रहा था, तब चालीस-पचास गज़की दूरीपर सरसराहटकी आवाज़ मालूम हुई। अधखुली आँखोंसे उसने देखा, तो एक दँतैल हाथी नपे-तुले क़दमपर उधर आ रहा था। ऊपर हौदेमें दो आदमी बैठे थे, जो उँगलीसे इशारा करके फ़ीलवानको बताते थे कि घासके अमुक स्थानको देखा जाय और अमुक झाड़ीको तलाश किया जाय। परेशान होकर जाँबाज़ खड़ा हुआ और लम्बी घासमें होकर निकल चला; पर हाथीने कावा काटकर उसका रास्ता रोका, अतः वह एक झाड़ीमें जा बैठा। हाथी उधर आया। जंगली हाथियोंका अनुभव उसे एक बार हुआ था; पर आदमीको पीठकर लादे हाथीका अनुभव नहीं था। झाड़ीमें से उसने ग़ुर्राना शुरू किया। फ़ीलवानने हाथीके सिरमें अंकुश गड़ाते हुए कहा—"मल, मल।" हाथी कुछ आगे बढ़ा। जाँबाज़ झाड़ीकी दूसरी ओर होकर भागा कि इतनेमें एक फ़ायर हुआ। जांबाज़को ऐसा मालूम हुआ मानो उसके पुट्ठेमें किसीने तकुए भोंक दिये हों। क्रोधसे पागल हो वह लौटा और पन्द्रह फुटकी एक छलांग भरकर हाथीकी गर्दनपर जा चिपका। फ़ीलवानको तो उसने एक ही थापमें खतम कर दिया। दो फ़ायर और हुए। एकसे तो जांबाज़की पूँछमें कुछ खुर्चट हो गई, जिससे

उसका क्रोध और भी प्रबल हो गया। दूसरी गोली हाथीकी गर्दनकी खालको पार करती हुई निकल गई।

इस दुर्घटनासे हाथी बिगड़कर भागा। जाँबाज़ हाथीसे चिपटा दाँतों और नखोंसे उसे फाड़ रहा था और हौदेमें बैठनेवालोंके औसान खता थे। एक आदमीकी बन्दूक तो नीचे गिर गई और दूसरेको ऊपर सँभलकर बैठनेमें ही कठिनाई हो रही थी। पचास-साठ गज़की दौड़के बाद हौदा पेड़से टकराया और जाँबाज कूदकर एक ओर गिरा और हौदा दूसरी ओर। लँगड़ाता हुआ जाँबाज आगे बढ़ा। एक नालेमें घुसकर उसने पानी पिया और दिन–रात पीड़ासे कराहता रहा; पर उसे इन दुर्घटनाओंसे काफी अनुभव प्राप्त हुआ। आदमियोंके जानवरों और आदमियोंसे छेड़खानी करना खतरे से खाली नहीं।

दो-तीन दिनोंमें अच्छा होकर जाँबाज फिर आगे बढ़ा। यहाँसे कुछ ही मील दूर उसने अपने रहनेका स्थान चुना। एक तो वह अपनी यात्रामें पहाड़ोंके अंचलोंमें आ गया था, जहाँपर अपेक्षाकृत मौसम और भी ठंडा था दूसरे जो स्थान उसने अपने रहनेके लिए चुना था, वहाँसे चार फर्लांगकी दूरीपर ही एक झरना था। इस आशासे कि पानी की जगहपर उसको कदाचित् घुड़ल या साँभर मिल जाय, जाँबाज वहीं छिपकर बैठा। थोड़ी देरमें क्या देखता है कि दस-बारह सूअर पानी पीने आये। कुछ तो पानीमें लोटने लगे और कुछ करीब ही जड़ें खोदकर खाने लगे। एक बड़ा सूअर, जिसकी सफेद काँपें चन्द्राकार बाहर निकली हुई थीं, झरनेके किनारे खड़ा होकर चारों ओर देखने लगा। जाँबाजने सोचा कि झुण्डके नेतापर ही हाथ साफ करना चाहिए, ताकि

भर पेट भोजन मिले। इसलिए झाड़ीसे निकलकर वह एक पेड़की ओर बढ़ा ; पर सूअरने उसे देख लिया और 'खु' करके पैंतरा बदला। डरसे सब सूअर तो भाग गये ; पर उनका नायक वहीं रहा। फिर उसने चीड़के पेड़से अपनी कापें रगड़ीं; मानो जाँबाजको चुनौती दी कि आओ, अगर दम रखते हो, मैं अपने पैने हथियारों से तैयार हूं।

सूअरकी इस हरकतसे जाँबाजको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने खयाल किया था कि उसकी सूरत देखकर सूअर भाग खड़ा होगा और वह उसे दबोच लेगा ; पर सूअर तो उससे मुठभेड़ करनेको तैयार था। क्रोधमें आकर जाँबाजने उसकी ओर, डरानेकी गरजसे, दस कदमकी दौड़ सी लगाई। सूअरने चैलेंजके साथ चीड़के पेड़की ओर पीठ की और वह खड़ा हो गया। जाँबाजने उछलकर उसकी गर्दनपर कूदना चाहा ; पर वह सूअर की बगलमें गिरा। एक पंजा सूअरके पुट्ठेपर पड़ा जिससे सूअरका कोई सेर भर मांस नुच आया ; पर जाँबाजके भी सूअरने वह टक्कर दी कि उसे छठी तकका दूध याद आ गया। उसकी बगलमें सूअरकी कापें घुस गईं, जिससे खूनका झरना-सा बहने लगा। अगर जाँबाज फौरन ही दस-बारह फुटकी छलांग न मारता तो सूअर उसका पेट फाड़ देता।

पहली कुश्ती खत्म हो गई थी, और वह बराबर छुटी थी। जाँबाज छपककर बैठा। सारी रात सूअर और शेरके दाँव-घात होते रहे। शेरने मौका पाकर एक हाथ सूअरपर और मारा, जिससे सूअर भिरभिड़ाकर गिरा ; पर फौरन उठ खड़ा हुआ। पीछेसे वार करनेका मौका सूअर नहीं देता था। जैसे ही शेर पेड़का चक्कर कटता, वैसे ही सूअर भी पैंतरा बदलता। होते-होते सुबह होने आई और सूअरके रोषकी मात्रा बहुत

बढ़ी। उषाकालमें सूअरने बिगड़कर शेरपर आक्रमण किया। शेरने उछल कर वार बचाया और पीछेसे वह उसकी कमरपर चढ़ बैठा। बोझे और धक्के, दाँतों और नखोंके प्रहारसे सूअर पिछले पैरोंके बल झुक गया। शेरने बातकी बातमें उसे मार डाला। घसीटकर वह उसे एक झाड़ीमें ले गया और डटकर खाया।

पन्द्रह-बीस दिनोंके भीतर ही जाँबाज इस इलाकेसे भलीभाँति परिचित हो गया। परिश्रम और उचित भोजनकी प्राप्तिसे वह चार वर्षकी उम्रमें दस फुटके करीब लम्बा हो गया और कन्धोंपर साढ़े तीन फुटके करीब ऊँचा और वजनमें साढ़े पाँच मन। लगभग डेढ़ वर्ष उस इलाकेमें रहनेके बाद जाड़ेके प्रारम्भमें उसने तराईकी ओर यात्रा की और चडो पहाड़के करीब अपनी ठाहर बनाई। एक दिन सायंकाल शिकारकी खोजमें वह मस्त चालसे चला जा रहा था कि नालेके एक मोड़पर उसे एक शेर और शेरनी उधर आते दिखाई पड़े। जाँबाज कनौती करके खड़ा हो गया। नए शेरने जैसे ही जाँबाजको देखा, वैसे ही उसने अपने कान पीछेको किये और शेरनी—जमालो—की ओर देखकर। एक धीमी गुर्राहट की। जाँबाजने भी अपने कान पीछे करके गुर्राहट की। जमालोने जब जाँबाजकी शोखी देखी, तब वह एक ओर रेतमें बैठ गई और मर्दों-मर्दों में जो ठननेवाली थी, उसका तमाशा देखनेको आतुर हुई।

जाँबाजका प्रतिद्वन्द्वी कोई कम न था। दोनों दाँव-घातसे भिड़ गये और परस्पर इस प्रयत्नमें थे कि अपने प्रतिद्वन्द्वीकी गर्दनको पकड़ लें। आठ-दस मिनट तक दोनोंमें गुत्थमगुत्था होता रहा। एक बार जैसे ही जाँबाज नीचेको हुआ, वैसे ही उसने अपने पिछले पंजे अपने प्रति-

द्वन्द्वीके पेटमें अड़ा दिये और पेट फाड़ डाला। फिर फौरन ही उसकी गर्दनमें कीलें गड़ाकर उसे मार डाला। एक दीर्घ निःश्वासके साथ प्रतिद्वन्द्वी लम्बा लेट रहा। फिर क्या था जाँबाजने प्रणय-भावसे जमालो का स्वागत किया। वे दोनों साथ ही साथ शिकार खेलते। प्रथम प्रणयमें
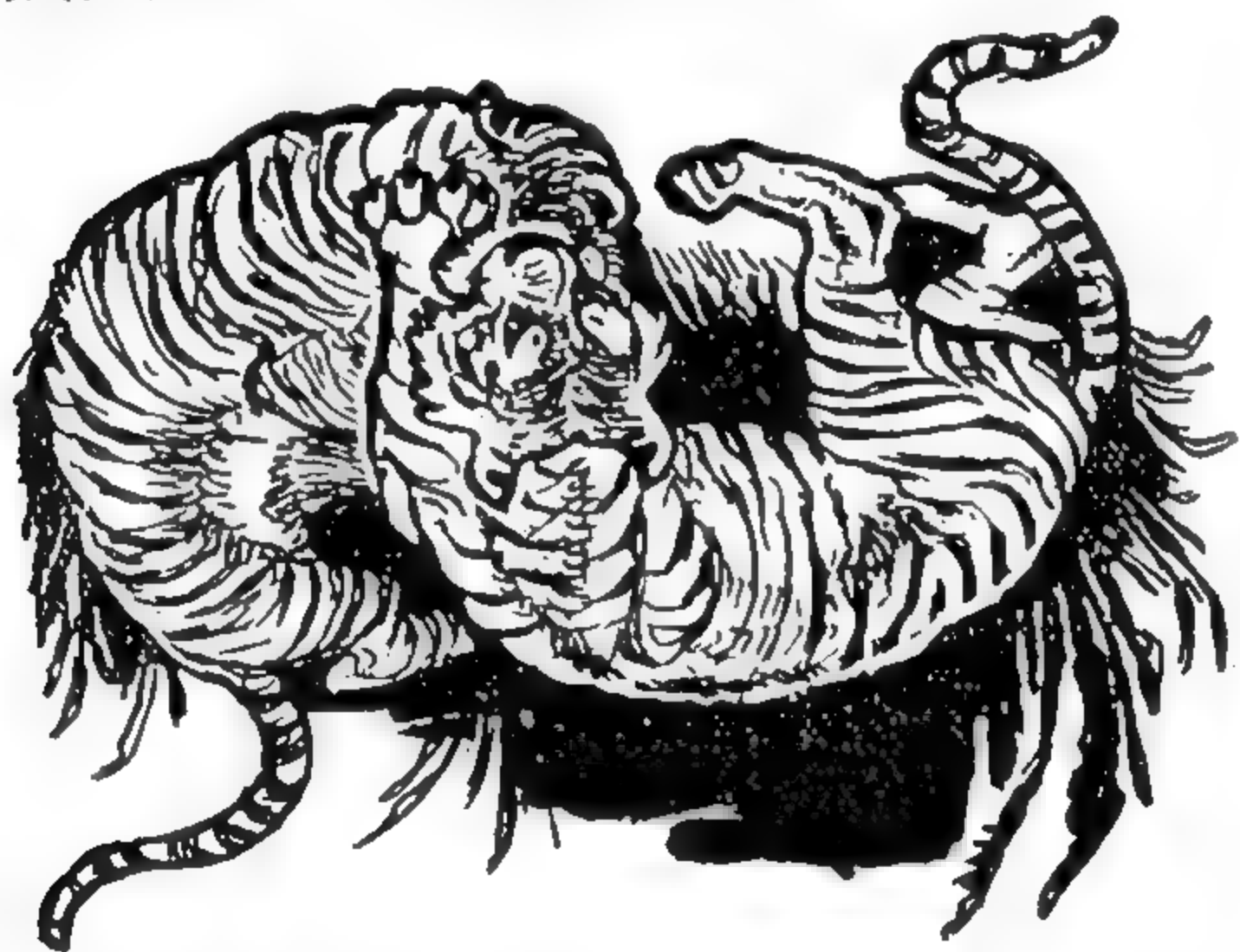
जाँबाज का प्रतिद्वन्दी कोई कम न था। दोनों दाव-घात से भिड़ गये

आकर्षण स्वाभाविक है, इसलिए वे कभी भी अलग नहीं होते थे। इसी बीच अपने जौहर दिखानेके लिए एक दिन जाँबाजने हाथीके तीन महीनेके एक बच्चेको मारा। हाथियोंके हमला करनेपर शेर-शेरनी भाग गये, और फिर रात होते ही उन्होंने उसे आकर खाया।

चैत के प्रारम्भ में एक दिन जाँबाज़ शिकार से लौटकर आया, तो उसे जमालो गुफ़ाके द्वारपर बैठी मिली। शेर की सूरत देखते ही उसने होठ-

पीछे खींचकर चेतावनी दी कि आगे न बढ़ो। जांबाज़को कई दिन बाद मालूम हुआ कि जमालोके दो बच्चे हुए हैं। कुछ दिनों बाद बच्चे जांबाज़ से भी खेलने लगे। जब उसकी तबीयत बच्चोंसे ऊब जाती, तब वह एक धीमी धमकी देकर दूर हट जाता।

दो-तीन वर्ष तक जांबाज़ और जमालोका जीवन बिन्दो और बन्धूकाट का सा रहा। पकड़-धकड़, शिकारका परिश्रम, फाकेकशी और अन्य जंगली जीवनजन्य कठिनाइयोंका वे सामना करते रहे। उनके बच्चे बड़े होकर स्वतन्त्र भी हो गये और नए तीन बच्चे और आ गए थे। एक दिन जब नए तीन बच्चे चार महीने के हो गये थे, तब जमालो ने देहात की एक भैंस और मार डाली। बच्चों के साथ पेट भर के उसे खाया। दो दिन से जांबाज लौटकर नहीं आया था, और जब लौटकर आया, तब उसने घबराये हुए तीन बच्चों को पाया। दुबारा जब मांस खाने जमालो बच्चों के साथ भैंस की ओर गई, तब उसने सावधानी का पाठ पढ़ाने को खातिर बच्चों को झाड़ीकी ओटमें छोड़ दिया और स्वयं भैंस की बची-खुची लाश की ओर बढ़ी, परन्तु वहां वह एक क्षण खड़ी हो पाई थी कि क़रीबकी चट्टान से लगातार दो फ़ायर हुए और जमालो वहीं लोट-पोट हो गई। बच्चे घबराकर ठाहर की ओर आये। जब उन्होंने जांबाज़ को आते देखा, तब वे उससे अपनी देह रगड़ने लगे।

जमालोके विरह में जांबाज़ बहुत परेशान हुआ और तीन बच्चों को लेकर चल दिया। अगर जमालो की घटना दो मास पूर्व घटी होती, तो बच्चे भूख से तड़प-तड़प कर मर जाते। अपनी यात्रा में एक दिन दस बजे के करीब जांबाज़ एक नदी में बैठा स्नान कर रहा था और बच्चे क़रीब ही नदी-किनारे खड़े थे। पेड़ के ऊपर से एकदम एक अजगर तड़पा और एक बच्चेको लपेटकर ऊपर उठानेवाला ही था कि जांबाज़ने वहीं से एक ऐसी छलांग भरी कि वह लटकते हुए अजगर पर ही आ गिरा। दांतों और पंजों से उसने अजगर को फाड़ डाला। पेड़ से लगी और बच्चे से चिपटी गुंज-

लके ढीली पड़ीं और थोड़ी देर में चौदह फुट अजगरका आधा हिस्सा धड़ाम से नीचे गिरा और शेरका बच्चा हाँफते हुए आगे खड़ा हो गया। लगभग डेढ़ वर्ष तक ये तीनों बच्चे जाँबाज़ के साथ रहे। जब वह एक नई शेरनी के प्रेम-पाशमें फंसा, तब बच्चों का अपना स्वतन्त्र जीवन बितानेको बाध्य होना पड़ा।

बुढ़ापे और खोये हुए अवसरों पर हम कितना ही झींके, पर उनका तो हमें सामना करना ही पड़ता है, और मांसाहारी जीवोंमें तो शक्तिकी क्षीणता मुसीबतों का पहाड़ है। जाँबाज़की जवानी ढली। उसके पुट्ठोंमें वह लोच नहीं रहा था, उसके जबड़ोंमें वह दम नहीं था और न उसकी छलांग ही में वह तेजी थी, जो कभी उसकी चेरी बनी रहती थी।

बड़ी भैंस और बड़े सूअरसे जाँबाज़ दूर ही रहता। भूखसे पीड़ित होकर उसने एक दिन एक स्त्रीको पकड़ खाया। उसी दिन से जाँबाज़ बागी घोषित किया गया। चोर और उचक्केकी भांति वह जब कभी किसी स्त्रीको पकड़ पाता, तब जितनी भी वह उससे खाई जाती, उतनी खाता और शेषको छोड़कर गंगा जल पान करके झुरमुटों और गुफाओंमें पड़ा रहता। भालुओं को दिक्क करने, हाथियोंको डराने और उनसे भिड़ने की अब उसमें ताब नहीं थी। यों वह आदमियोंको भी पकड़ता। पर गरीब घसियारोंकी अपेक्षा ग़रीब घसियारिनोंके प्रकृतिके नियमोंके अनुसार नितम्ब भागमें अधिक मांस मिलता, इसलिए वह स्त्रियोंको ही अधिकतर मारता।

दो वर्ष के परिश्रमके पश्चात् जाँबाज़ एक दिन एक शिकारीकी गोलीका निशाना बना। गोली खाकर वह हिला भी नहीं। बस, एक कराह के साथ उसने अपने जीवन से तोबा की। उसके शरीर को देखकर और परमात्माकी सृष्टि का खयाल करके सहसा मुँह से यही निकलता—'नाहम् हन्ति न हन्यते।'

—o—

हाथी : समझदार

हाथी : समझदार

हरद्वार से गंगापार चंडी पहाड़से डेढ़-दो मील दूर गहन जंगल। कुआर मासका आरम्भ था और समय सायंकाल। बारिश बिदा हो रही थी। बस अन्तिम भेंटके लिए उसने अपनी विशाल गोरी बाहें फैलाई आकाश में—सफ़ेद बदरियोंके रूपमें। कुछ देर बाद वर्षा-वधूका दिल भर आया। धीमी हिलकियोंके बाद उसने रोना शुरू किया और रात-भर रोती रही। प्रातःकाल होनेसे पूर्व वह बिदा हो गई। जंगलों और खेतोंमें वह अपना स्मृति-चिह्न छोड़ गई। यों तो रात-भरकी बारिशके कारण जंगलसे अधिकांश जीवोंने पानीसे बचनेके लिए चट्टानों और पेड़ोंकी आड़ ली थी; पर हाथियोंके झुण्डने वर्षा-वधूके रोने-धोनेका कुछ खयाल नहीं किया और वह चार-पाँच मीलकी दूरीपर बराबर एक गाँवमें धानके खेतोंको खाता रहा। मेंहके कारण खेतोंपर रखवाले भी नहीं थे, इसलिए हाथियोंका झुण्ड अबाध रूपसे चरता रहा। खेतोंमें हाथी चट्टानोंकी भाँति अचलसे खड़े हो जाते। अपनी सूँड़ोंसे हवाकी जाँच करते कि कहीं कोई खतरेकी गन्ध तो नहीं आ रही। उसके बाद अपनी लम्बीली सूँड़ोंको आगे बढ़ाकर पके धानोंका मूठा उखाड़ते और झटकेसे पौधोंकी जड़ोंसे लगी मिट्टीको झाड़कर मूठेको मुँहमें रख लेते। उनकी पूँछे तीन-चार गजकी चापमें हिलती-डुलती रहती मानों बिजलीके सहारे किसी मशीनकी मालें चल रही हों।

प्रातःकाल होनेसे पूर्व हाथियोंका झुण्ड एकके पीछे एक जंगलकी ओर बढ़ा। नेतृत्व था एक बड़ी बूढ़ी हथिनीके अधीन जो नपे-तुले कदमोंसे

जंगलकी ओर बढ़ी और उसके पीछे चले झुण्डके अन्य हाथी बच्चे, पट्ठे और युवावस्था प्राप्त हथिनियाँ। कुछ हथिनियोंके पीछे थे चार-चार और पाँच-पाँच महीनेके बच्चे। झूमते-झामते वे सब जंगलकी ओर बढ़ रहे थे। पंक्तिमें सबसे पीछे था झुण्डका चौधरी—बहुत बड़ा दँतैल हाथी—जो झुण्डसे तीस-चालीस गज दूर गर्व-गतिसे पीछे आ रहा था।

हाथियोंका झुण्ड अगुआ हाथीके बने पद-चिह्नोंपर अपने पैर रखता और उन्हें देखकर अनुभवहीन लोगोंको यही ज्ञात होता, मानो एक ही हाथी उस मार्गसे गया हो। हाँ, बच्चोंकी डगें कम दूरपर पड़तीं और उनके खोज अलग मालूम देते थे।

लगभग दो मील आनेके बाद हाथियोंका झुण्ड एक पहाड़ीपर चढ़ा और नीचेकी घाटीमें उतरनेसे पहले अगुआने अपनी सूँडको ऊपर उठाया और हवाको जाँचा और फिर यह झुण्ड नीचे उतरकर जंगलके एक सघन भागमें पहुँच बाँस और साल-वृक्षोंकी छायामें जा खड़ा हुआ। एक पट्ठे हाथीने बाँसके एक झुरमुटसे अपने शरीरका पिछला भाग लगाकर ठेल दिया, जिससे बाँसका झुरमुट चरचराकर गिर गया और बाँसोंकी पत्तियोंको हाथीने तोड़-तोड़ तथा सूँत-सातकर मुँहमें डालना शुरू किया। कई हाथियोंने साल-वृक्षोंकी शाखाओंसे फुनगियाँ तोड़ीं और उन्हें सूँडमें पकड़कर चँवरकी भाँति ढोरने लगे—मक्खियाँ और अन्य कीड़ोंको मार भगानेके लिए। सूँडें और पूँछें हिलाते हाथी, साल और बाँस वृक्षोंसे खड़े एक अद्भुत दृश्य उपस्थित कर रहे थे। ऐसा मालूम होता था, मानो भीमकाय चट्टानें सजीव हो गई हों और साल और बांस-वृक्ष उन चट्टानोंके सहारे बढ़कर ऊपर आकाशकी ओर साँस लेनेके लिए अपना सिर उठा रहे हों।

आध घंटेके उपरान्त झुण्डका स्वामी—दँतैल-हाथी—गजराज विहंगावलोकन करता हुआ झुण्डकी ओर आया। झुण्डके बीचोबीच पहुँचकर गज-

राजने अपनी सूंड़ ऊपरको उठाई और शक्ति-सूचक चिंघाड़ लगाई। जंगलके आस-पासके जीव समझ गये कि गजराज अपने झुण्ड-सहित धूपसे बचनेके लिए जंगलमें आ गया। करीबके रहनेवाले शेरों और बघेरोंने भी हाथियोंके निकटत्वको जाना और वे सावधान हो गए। हां, चीतलों और काकड़ोंने हाथियोंसे किसी प्रकारके डरकी आशंका नहीं की। अपने झुण्डको देखते हुए

"गजराज और रानी झुंड से अलग होकर चलने लगे।"
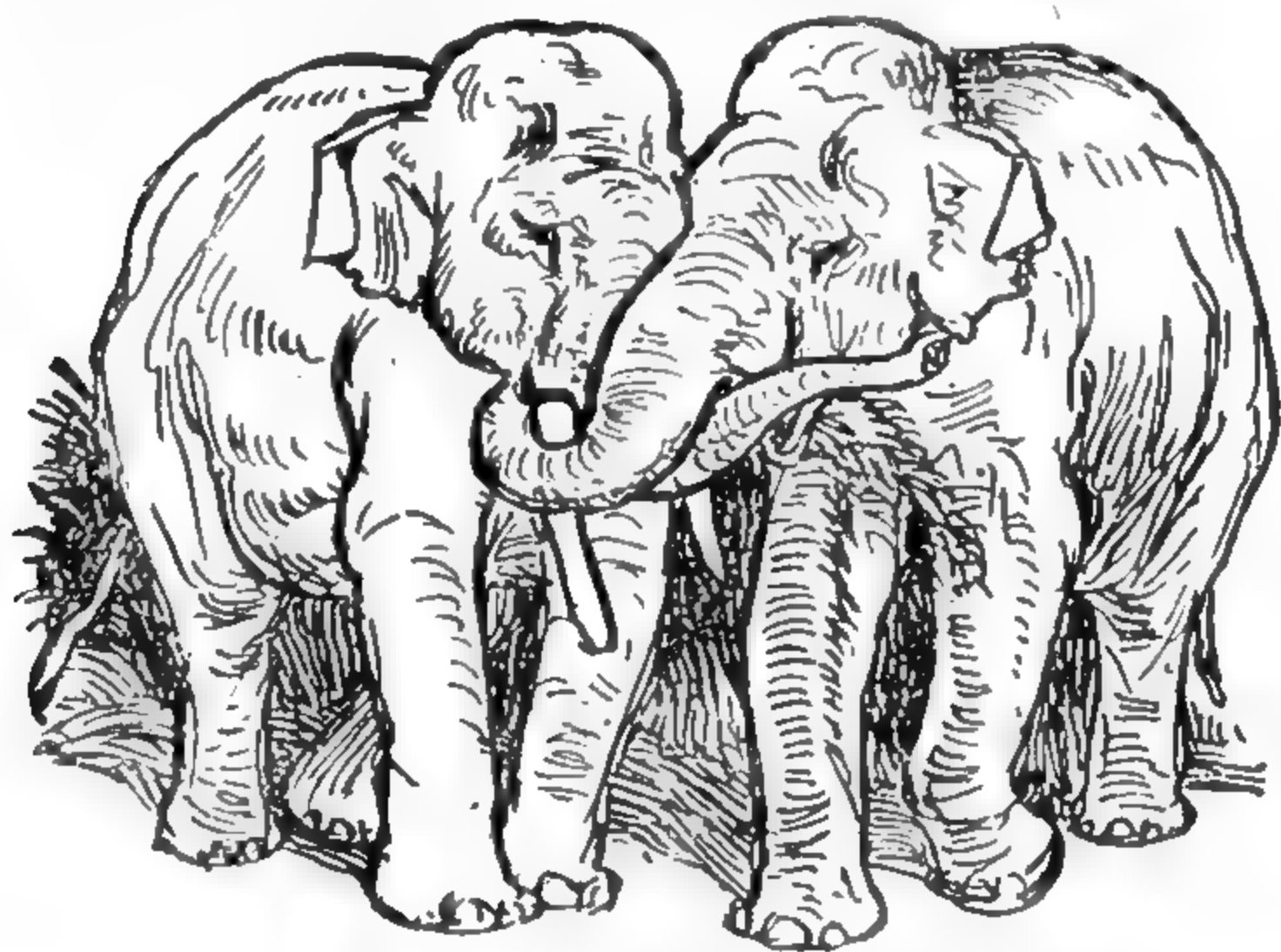
गजराजकी नज़र एक जवान हथिनीपर पड़ी। हथिनीने भी उसे लजीली आँखोंसे देखा। गजराजने तब विचित्र ध्वनिसे पेटको कुछ घरघराते हुए उस वयस्क हथिनीका—जिसे हम रानी कहेंगे—आह्वान किया। कई डगों आगे बढ़कर गजराजने अपनी सूंड़ उठाई और रानीकी सूंड़को जड़से उसे लगा दिया। उस स्पर्शने रानीपर जादू कर दिया और वह गजराजके साथ हो ली। गजराज और रानी झुण्डसे अलग होकर चलने लगे। रानी

तब उसकी ओर बढ़नेवाली हवाकी विरुद्ध दिशासे एक शेर और एक शेरनी उधर आए। झाड़ियोंकी ओटसे उन्होंने सिंहपछाड़को बैठा देखा और उसके निकट पहाड़की एक चट्टानके समान रानीको खड़ी देखा। शेरोंने रानीकी आँखोंकी सतर्कताको भाँपा और उसकी शक्तिका भी अनुमान किया। पर अपनी और अपने बच्चोंकी भूख बुझानेके लिए उन्होंने रानीके मासूम बच्चेपर आँखें डाली। जंगलके कानूनसे यह सब न्याययुक्त था। शेरनीको दो दिनसे कुछ शिकार नहीं मिला था। उसके बच्चे दूध और मांसके अभावमें तड़प रहे थे। परमात्माकी सृष्टि वे भी थे और सिंहपछाड़की रक्षाके लिए रानी काली-स्वरूपा बनी वहीं खड़ी थी। रानीको अपने बच्चेकी रक्षा करनी थी और शेरनीको अपनोंको। ब्रह्ममय शेरनी और ब्रह्ममय रानी ब्रह्मके दो रूपोंका संघर्ष सा दिखाई पड़ता था। शेरनीकी रानीसे सीधी लड़ाईमें कुछ बसियानी नहीं थी। यदि वह सीधा हमला करती, तो रानीके एक ही प्रहारमें अपना कचूमर बनवा लेती और भूखसे अपने कुटुम्बको बचानेके स्थानमें खुद मारी जाती। शेर और शेरनीने एक-दूसरेकी ओर देखा और आक्रमणकी योजना बन गई। चक्कर काटकर शेर रानीकी ओर गया और शेरनी दूसरी ओर। उनकी चाल यह थी कि रानीको सिंहपछाड़से किसी प्रकार अलग कर दिया जाय और सिंहपछाड़को इस बीच शेर या शेरनी मार डाले। रानी सिंहपछाड़की लाशको दो-चार घंटोंमें छोड़ ही देगी और तब मजेसे वे उसके नरम मांसको स्वादसे खा सकेंगे। इसलिए एक ओरसे शेरने रानीको आक्रमणकी धमकी दी। बिजलीकी भाँति रानी शेरकी ओर घूमी और उसकी ओर बढ़ने ही वाली थी कि दूसरी ओरसे शेरनीकी गुर्राहट भी कानोंमें पड़ी। दो ओरके
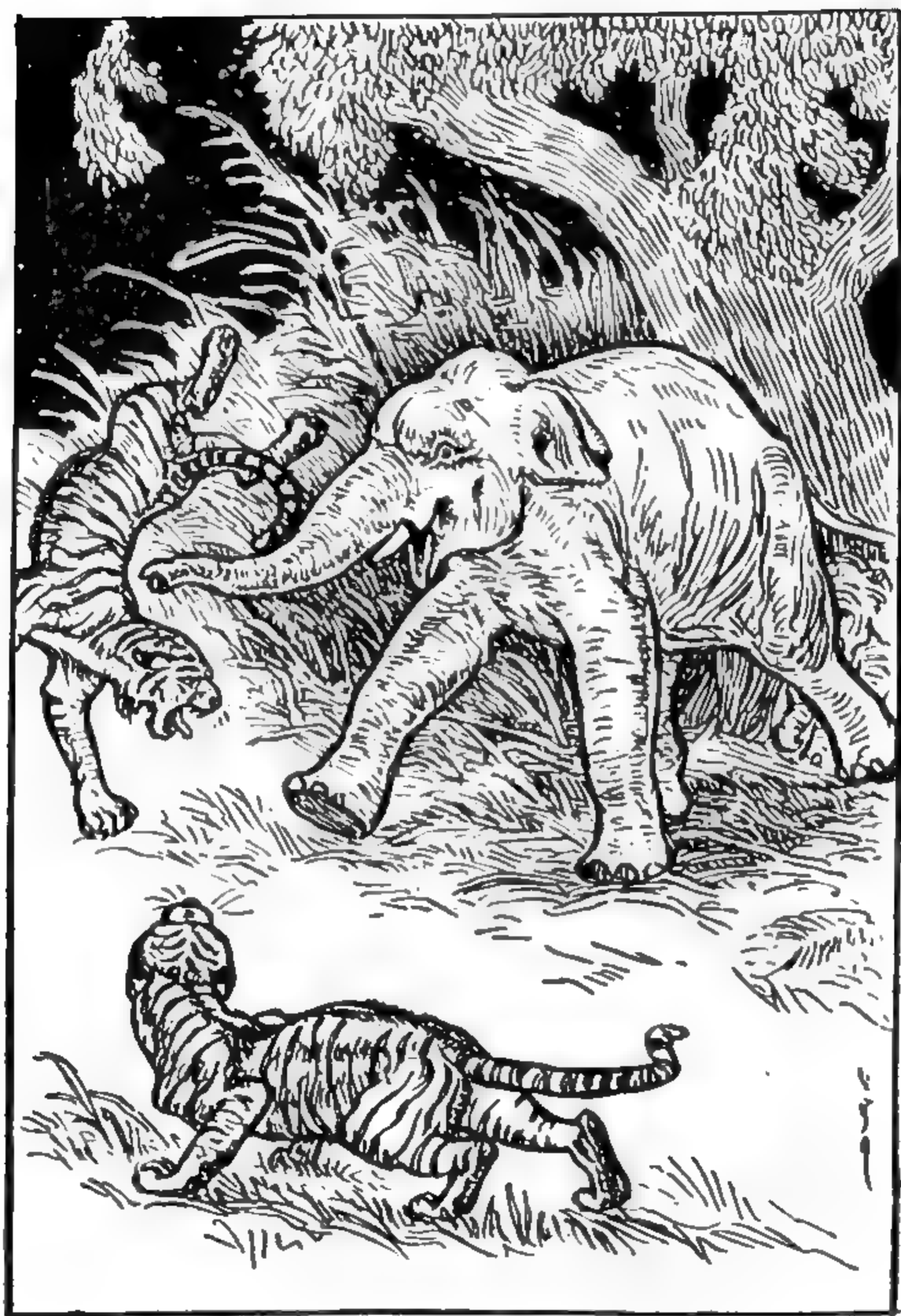
"रानीने विद्युत गतिसे एक पैरकी वह ठोकर दी।" पृ० १०७

आक्रमणोंसे रानी पहले तो घबराई, सूंड़को इकट्ठाकर उसने अपने मुँहमें रखा। जैसे ही शेर उसकी ओर बढ़ता, वैसे ही वह उसकी तरफ मुड़ती; पर उसका पीछा करने आगे नहीं जाती, क्योंकि दूसरी ओरसे उसे शेरनी के आक्रमणका डर था; क्रोध तथा आतंकसे रानी काँपी और फिर वह चण्डमुण्ड-महिषासुर-खंडिनी-सी अपने शिशु सिंहपछाड़की रक्षामें जम गई। रानी इस बातको समझ गई कि अगर वह चार-पाँच गज भी वहाँसे हटी तो शेर या शेरनी सिंहपछाड़को मार डालेंगे। पन्द्रह मिनट तक शेर और शेरनीकी ये धमकियाँ चलती रहीं। उसके बाद उन्होंने रानीसे दस गजकी दूरीपर चक्कर काटना शुरू किया। रानीको केन्द्र-बिन्दु बनाकर शेर और शेरनी दस गजके अर्धव्याससे वृत्ताकार घेरेमें घूमने लगे। रानी भी घबराहट, सतर्कता और क्रोधकी मूर्ति बनी अपने पैंतरे बदलती रही। सिंहपछाड़को अकेला छोड़कर वह हमला करनेके लिए आगे नहीं बढ़ी। सिंहपछाड़से रानीको दूर ले जानेकी चाल जब नहीं सफल हुई, तब शेर-शेरनीने परेशान होकर अपनी गति-विधि बदली। शेर पहले तो गुर्राया, फिर दो-तीन सपाटे लगाकर उछला और रानीके माथेसे जा चिपका। अगले पंजोंसे उसने रानीके कानोंके करीबका मांस नोचा और अपने कीले उसने सूँड़की जड़में गाड़ दिये और पिछले पंजोंसे उसने रानीकी गर्दनका मांस नोंचा। रानीने एक चिंघाड़ मारी और वह एकदम घुटना गई तथा अपना माथा उसने जमीनसे रगड़ा। शेर अपनी गिरफ्तको छोड़ एक ओरको कूदना ही चाहता था कि उसका आधा शरीर हथिनीके सिर और जमीनके बीचमें आ गया। उसकी कमर टूट गई और बलखाता हुआ फूँ-फाँ करके वह गुर्राने लगा। इतने ही में रानीने विद्युतगतिसे एक पैरकी वह ठोकर दी कि शेर बस

फुटबालकी भाँति दूर फिंक गया और धक्केसे उसके प्राण निकल गये। शेरकी इस दुर्गतिसे भूखी शेरनीको भी ताव आया और वह रानीपर टूट कर उसकी खोपड़ीपर चिपट गई। चिंघाड़ती हुई रानी शेरनीको लेकर कुछ हटी और उसे भी वह जमीनपर डालना चाहती थी कि शेरनी एक ओरको कूद गई। हथिनीकी लातसे वह दूर फिंक गई और लँगड़ाती तथा खाँसे काढ़ती हुई दुम दबाकर भाग गई। रानीकी क्रोधाग्निमें शेरनीके वारने एक नई आहुतिका काम किया और बिगड़कर वह शेरकी लाश पर जा जुटी। लाशको उसने इतना रौंदा कि वह पलस्तर बन गई। किसी तरहसे रानीने अपने घावोंपर कीचड़ लपेटी और सालकी एक फुनगी तोड़कर मक्खियोंको हटाना शुरू किया।

जन्मके छठवें दिन सिंहपछाड़ने अपने-आपको झुंडमें पाया। पहले तो वह झुंडको देखकर बहुत सहमा ; पर थोड़ी देर बाद ही वह अपने समवयस्क साथियोंसे खिलकौरियाँ करने लगा। कई दिनों तक रानी झुंडके साथ रानमें नहीं गई और सिंहपछाड़की देखभालमें रही। उसीके साथ वह इधर-उधर चरती और प्रातःकाल झुंडमें जा मिलती।

दोपहरीमें जब झुंडके कुछ हाथी खड़े-खड़े आराम करते, तब सिंहपछाड़ हाथियोंके अन्य बच्चोंके साथ खेलता तथा भागकर अपनी माके पास जाता और दूध पीने लगता। सूँड़से अभी वह ऊपरका काम नहीं ले सकता था। झुंडके वयस्क सदस्य बच्चोंका बहुत खयाल रखते, क्योंकि उनकी रक्षाका प्रश्न झुंडकी रक्षाका प्रश्न था।

अपने जीवनके तीसरे सप्ताहमें सिंहपछाड़ने झुण्डके साथ जाना शुरू किया। जिस समय सिंहपछाड़ झुण्डमें अपनी माके साथ चलता, उस समय

वह झुण्ड-जीवनके नियमोंका भरसक पालन करता। रानीकी सतर्कता उसके प्रति अब भी ढीली नहीं पड़ी थी। मार्गसे जब कभी वह इधर-उधर होता, तो आतंकसूचक ध्वनिसे वह उसे सचेत करती। गंगाजीमें पानी पीना तो हाथियोंका प्रति दिनका काम था — विशेषकर गर्मियोंमें। रानी सिंहपछाड़को नदी-किनारे ले जाकर स्नान कराती। अपनी सूँड़में पानी भरकर बड़े ज़ोरसे वह उसपर फव्वारे-से छोड़ती। प्रोत्साहन पाकर सिंहपछाड़ पानीमें प्रवेश करता और रानी अपनी सूँड़से उसे सहारा देती और कभी-कभी गहरे पानीमें ले जाकर उसे तैरना सिखाती तथा सूँड़के सहारे उसे टेके रहती।

पहले तीन-चार महीनोंमें सिंहपछाड़की देख-भाल बड़ी सावधानीसे की गई। इस बीच उसे आतंकसूचक और आनन्द-प्रमोदसूचक ध्वनियोंका ज्ञान कराया गया। अपनी खिलकौरियोंमें सिंहपछाड़ कभी-कभी यों ही आतंकसूचक शब्द करता और रानी भी घबराकर सतर्क हो जाती। दोपहरके समय जब झुंड विश्रामके लिए घने जंगलमें चला जाता, तब सिंहपछाड़को अपने समवयस्क साथियोंके साथ खेलनेका बहुत अवसर मिलता। दिनमें विश्राम-स्थानके पास जब कोई हाथी अपने खानेके लिए बाँसोंके बिरेको गिराता, तब सिंहपछाड़ और उसके साथी बाँसकी कोमल पत्तियाँ खाने चले जाते। हथिनियाँ और बड़े हाथी तो बच्चोंके इस प्रकारके हस्तक्षेपको बुरा न मानते; पर पट्ठे हाथियोंको बच्चोंकी हरकत पसन्द न आती और इसीलिए कभी-कभी बच्चोंको उनकी मार खानी पड़ती और सूँड़के साधारण प्रहारके पड़ते ही वे भाग जाते। सिंहपछाड़ने बस एक बार ही ऐसी मार खाई थी। उसके बाद जब कभी कोई पट्ठा हाथी बाँसके बिरेको गिराता, तो वह उसके पास कभी न जाता।

एक बार बरसातमें झुण्डको बहुत बड़ा नाला पार करना पड़ा और जब पानीमें घुसनेसे सिंहपछाड़ झिझका, तब रानीने अपनी सूंड़से उसे धक्का देकर भीतर कर दिया और सूँड़के सहारे उसे साधती हुई अन्य हाथियोंके साथ लगभग एक मील दूर नालेके पार जा लगी। सुविधा और मौसमके अनुसार हाथियोंका झुण्ड अपने स्थान बदलता रहता। रातमें जब कभी वह किसी गाँवके क़रीब पहुँचता, तो सिंहपछाड़ अन्य हाथियोंके समान केलोंके पेड़ोंको बड़े स्वादसे खाता और गन्ने तथा धानोंपर तो मुग्ध ही था। रातमें हाथियोंकी पैछर पाकर जब किसान मशालें और जलती लकड़ियाँ लेकर बाहर आते, तब सिंहपछाड़ बहुत बेचैन हो जाता। यों तो आग देखकर सभी हाथियोंको बेचैनी होती, पर छोटे बच्चोंमें तो और भी आतंक बढ़ जाता। ढाढ़स बँधाते हुए रानी सिंहपछाड़को जंगलकी ओर ले जाती, फिर बिखरा हुआ झुण्ड एकत्र होता और जंगलमें अपने विश्राम-स्थानको जाता।

पहाड़की ररकपर उतरनेका अभ्यास भी सिंहपछाड़को कराया गया। घुटनोंके बल बैठकर और आगे सूंड़का सहारा लेते हुए जब हाथी किसी ररकपर से उतरते, तो सिंहपछाड़ पहले तो कुछ डरता ; पर माके आग्रहसे वह घुटनोंके बल बैठ जाता और सरक-सरककर फर्लांगों लम्बी ररक (slope) पार करता। सूँड़ और पैरोंसे वह एक वर्षके बाद अधिक काम लेने लगा। उसके मुँहकी खाल अब कुछ अधिक कड़ी हो गई थी ; पर अपने जीवनके दो-ढाई वर्ष तक उसे अपनी माकी संरक्षताकी बड़ी ज़रूरत थी। सिंहपछाड़के जन्मके तीन-चार महीने बाद रानी आठ-दस घंटोंके लिए फिर ग़ायब हो गई, और जब सिंहपछाड़ दो बरस एक महीनेका था, तब उसके एक बहन हुई। रानी अब सिंहपछाड़की ज्यादा परवा न करती थी, पर

अपनी उमरके तीन वर्ष तक वह रानीके आसपास ही रहता। उन तीन वर्षोंमें उसने हाथी-जीवनके जितने भी अनुभव थे, उन्हें शक्ति-भर प्राप्त कर सका। दल्दलमें फँसनेसे कैसे बचा जा सकता है, कमज़ोर ज़मीनपर चलनेसे पहले सूँड़ और पांवसे उसे कैसे जांचा जाय, टांगसे प्रहार कैसे होता है, बांसके घिरेको किस प्रकार गिराया जाता है और आतंक-गंधको कैसे पहचाना जाता है—इत्यादि सब शिक्षाएँ उसने प्राप्त कर ली थीं ! इसलिए जब उसकी माने उसकी उपेक्षा-सी की—उसकी बहनके कारण तथा यह समझकर कि अब सिंहपछाड़ स्वयं अपनी रक्षा कर सकता है—तब सिंहपछाड़ भी स्वतन्त्र हो गया। पर वह झुण्ड-जीवनके सहयोगसे परे नहीं था। उसके लिए अभी यह भी सम्भव नहीं था कि वह अकेला शेरका मुकाबिला कर ले जाता; पर अकेले शेरसे भिड़नेका उसे अभी अवसर भी नहीं था। शेर उसपर हमला कर ही नहीं सकता था, क्योंकि झुण्डसे वह दूर नहीं जाता था और अगर चालीस-पचास गज़की दूरीपर कभी गल्तीसे रह भी जाता, तो उसकी एक ही चिंघाड़से सहायताके लिए बड़े-बड़े-हाथी आ सकते थे।

होनहार बिरवाके समान सिंहपछाड़ बढ़ने लगा। जब कालचक्रने उसके जीवनके तीस धागे अपने चक्रकी परिधिमें लपेटे, तब सिंहपछाड़की चढ़ती जवानीका आलोक उसके अंग-प्रत्यंगसे फूटने लगा था। एक-एक फुटके सफ़ेद दांत उसकी जवानीका विज्ञापन करनेको बाहर निकल आये थे। उसकी सूँड़में वह लचीलापन आ गया, जो किसी अच्छे फिकैतके पुट्ठोंमें होता है। रंग उसका गहरा काला होता जाता था। सबसे बड़ी बात यह थी कि उसमें अब स्वावलम्बन और आत्म-विश्वासकी मात्रा तेजीसे बढ़ रही थी। यों वह अपने झुण्डमें रहता, झुण्ड-जीवनके नियमोंका पालन भी करता; फिर भी

वह झुण्डके स्वामी दँतैल हाथीसे कुछ कतराता और उसे तरह देना ही उसे अधिक अच्छा लगता। वह अपने एक समवयस्क पट्ठे हाथी—भीमराजके साथ झुण्डसे कुछ दूर ही अधिक रहता। इन तीस वर्षोंमें हाथियोंके झुण्डमें जीवन-समस्याकी घटनाएं चलती रहीं। हां, इस बीच एक महत्त्वपूर्ण बात यह जरूर हुई थी कि झुण्डका नेतृत्व एक दूसरे दँतैल हाथीके अधीन हुआ था। नेतृत्वकी बागडोर नए हाथीके भाग्यमें भयंकर द्वन्द्वके पश्चात् आई थी। सिंहपछाड़ और भीमराजने दूरसे ही उस लड़ाईको देखा था। विजयी हाथीने अपनी जीतमें क्रोध शान्त करनेके लिए सिंहपछाड़के भी एक टक्कर जमा दी थी। टक्करके प्रहारसे सिंहपछाड़को छठी तकका दूध याद आ गया। खैर इतनी हुई कि सिंहपछाड़ जमीनपर नहीं गिरा, वर्ना विजयी हाथीके दांत उसके शरीरमें प्रवेश कर जाते। टक्कर लगते ही सिंहपछाड़ कुछ आगेको फिंक गया। सँभलकर वह आगे भागा और दो-तीन फलांगकी दूरीपर जाकर रुका। उस दिनसे वह दँतैल नेतासे सतर्क रहता; पर दँतैल नेताने उसकी उपेक्षा की। उस दिन तो वह क्रोधसे उन्मत्त था और सिंहपछाड़ उसके मार्गमें यों ही आ गया था। पर जंगल-जीवनमें किसी नस्लके क़ायम रखनेके लिए यह आवश्यक है कि शक्तिके अधिकारका ही प्राधान्य रहे और निर्जीव तथा निस्तेजका अस्तित्व यदि न भी मिटे, तो उससे अपनी जातिके प्राणियोंकी उपयोगिता जरूर छीन ली जाय। इस जीवन-युद्धमें जवानीका जोर ही शक्ति-स्थापनामें सहायक होता है और उसीसे बहादुरी और सहिष्णुताकी दुधारी तलवार पैनी होती है। जवानीकी गरमी ठंडी होनेपर बहादुरी और सहिष्णुताकी दुधारी तलवार भोंथरी पड़कर विशेष उपयोगी नहीं रहती।

हाथियोंके झुण्डमें भी झुण्डका नेता तभी तक झुंडका स्वामी रहता है, जब तक उसका कोई सबल प्रतिद्वन्द्वी न खड़ा हो जाय। सिंहपछाड़के झुंडका स्वामी साठ वर्षका था। उसका भारी-भरकम शरीर, लम्बे-लम्बे सफेद दांत और उसकी पूर्वसंचित शक्ति-प्रतिष्ठा सिंहपछाड़ जैसे नए पट्ठेको डरानेके लिए काफ़ी थे; फिर भी सिंहपछाड़में जवानीकी बिजली दौड़ रही थी और दौड़ रही थी बड़ी तेज़ीसे।

प्रकृति सिंहपछाड़को यौवन-दान देनेपर तुली हुई थी। प्रातःकाल सूर्य अपनी किरणोंसे उसमें अल्ट्रावायलेट (ultra-violet) किरणें प्रवेश करता। घास, पात और जंगलका वातावरण उसे आवश्यक विटामीन देते और चन्द्रमाकी रुपहली किरणें उसमें स्नेह भरतीं। इसलिए उसके प्रत्येक क़दमसे मस्ती टपकती। होते-होते सिंहपछाड़ने अपनी चालीसवीं वर्षगांठ मनाई।

एक दिन सायंकालसे कुछ पूर्व सिंहपछाड़ और भीमराज झुंडसे कुछ दूर चर रहे थे। झुंडका स्वामी दूसरी ओर कोई पचास गज़की दूरीपर खड़ा अपने झुंडको गर्वसे देख रहा था। कभी-कभी वह सालके पेड़से अपनी देह रगड़ता और फिर चुप खड़ा होकर सन्तोष और गर्वकी दृष्टि झुंडपर डालता। सिंहपछाड़ने अपनी पिछाई लगाकर बांसका एक बिरा अभी गिराया ही था कि एक हथिनीकी नज़र उस बिरे और सिंहपछाड़पर पड़ी। शायद बांसोंका बिरा तो उसकी आंखोंसे निकल गया; पर सिंहपछाड़ आंखोंमें बसा रहा। सिंहपछाड़की भी आंखें उस पर लग गईं। जैसे ही सिंहपछाड़ हथिनीकी ओर बढ़ा, वैसे ही हथिनीने अपनी आंखें नीचे कीं; पर स्वामीकी आंखोंमें सिंह-पछाड़ चुभा। झुंडके स्वामीके होते किसी दूसरे हाथीका किसी हथिनीपर इस

प्रकार आँखें लगाना स्वामीके लिए अपमानजनक था, और उसे इसलिए सिंहपछाड़को दण्डित करना था। झुंडके स्वामीने त्यौरी बदली और सिंहपछाड़ को दंड देने के लिए आगे बढ़ा। हथिनीके करीब आकर उसने सिंहपछाड़को ललकारा। कान फैलाकर जैसे ही वह लपका, वैसे ही उसने सिंहपछाड़को कुछ दूर मोर्चे पर जमे पाया। झुंडके स्वामीको आशा थी कि उसकी ललकार और क्रोध-मुद्रासे सिंहपछाड़ भाग जायगा; पर वह डटा खड़ा था और उसकी आँखोंसे रोष बरस रहा था। झुंडके स्वामीने आगे बढ़कर उसके एक धक्का मारा। धक्का खाकर सिंहपछाड़ पीछे हट गया। और सिर झुकाकर सूँडको समेट कर झुंडके स्वामीका मुकाबिला करने लगा। बर्फ से सफेद दांत, गुडी-मुड़ी सूँड, झुका हुआ सिर, मदभरी आँखें और इन सबके पिछे जवानीका 'डायनमो'-इसबातके द्योतक थे कि सिंहपछाड़ने झुंडके स्वामीको चैलेंज किया था। स्वामीके साथ अनुभव था और था भारी वज़न। पुरानी धाक और दाव-घात उसके साथ थे; पर सिंहपछाड़के साथ थी फुरती। फुरतीका मुकाबिला तो वज़न और दावपेचसे आसानीसे हो सकता था; पर एक हथियार उसके पास था, जिसके बूते वह स्वामीसे भिड़नेको तैयार हो गया। उस हथियारका प्रयोग उसने अपने झुंडके स्वामीके विरुद्ध अभी नहीं किया था। यों वह झुंडके स्वामीसे भिड़ता भी नहीं; पर अकस्मात् उस दिन एक हथिनी से प्रेमाधिक्य प्रकट करनेमें उसकी ठन गई थी। झुंडका स्वामी सिंहपछाड़की ओर बढ़ा। एक धक्केके साथ दोनों भिड़ गये और एक-दूसरे को ज़मीनपर पटकनेके प्रयत्नमें लग गये। सूँड से सूँड भिड़ाकर माथोंसे एक-दूसरेको ठेलनेमें जुट पड़े। झुंडके स्वामीने यह प्रयत्न किया कि यदि किसी प्रकार वह सिंह-पछाड़की बगलको आ जाय या सिंहपछाड़को भगानेमें सफल हो सके, तो वह

"दूर खड़े उस द्वन्दको देखते रहे।" पृ० ११५

अपने दांत उसके गाड़ दे और गिराकर उसे मार डाले। एकदम भागनेमें गहरे घाव लगने और गिरनेमें जानसे हाथ धोनेकी आशंका थी। इसलिए दोनो प्रतिद्वन्द्वी सावधानी, पर रोषसे, भिड़ रहे। इस द्वन्द्वका अर्थ यह तो स्पष्ट ही था कि झुंडमें अब या तो झुंडका वर्तमान स्वामी ही रह सकेगा या सिंहपछाड़ ही। वर्षोंका साथ अब छूटनेवाला थी। तनिक-सी बातसे द्वन्द्व शुरू हुआ था; पर शीघ्र ही उनके लिए जीवन-मरणका प्रश्न बन गया। क्रोध और आवेशमें दोनों एक-दूसरेको आगे-पीछे ठेलते। पशुता और पशु-बुद्धिजन्य सतर्कतासे घंटो एक-दूसरेको ठेलते रहे। उस रातको झुंडके अन्य सदस्य चरने नहीं गये, वरन् दूर खड़े उस द्वन्द्वको देखते रहे। झुंड के नेतृत्वका सवाल था—उनके झुंड-जीवनकी एक बड़ी समस्या हल होने जा रही थी। सिंहपछाड़ नेता बनेगा या पराजित होकर मारा जायगा, अथवा मौका पाकर भाग जायगा औरफलस्वरूप उस झुंडसे उसका निष्कासन होगा—यह मसला तय होना था। भीमराजको-इस बीच झुंडकी हथिनियोंसे सामीप्यका अवसर मिला; पर सबकी आंखें तुमुल युद्धपर लगी हुई थीं।

दोनो प्रतिद्वन्द्वी ठेले जाने पर गजों पीछे हटते। पहले कई घंटे तक तो झुंडका स्वामी तगड़ा पड़ता रहा और सिंहपछाड़ टक्करोंके मारे परेशान रहा। जब बड़ा हाथी रेला मारता, सिंहपछाड़ उसका ज़ोर रोकनेके लिए अपनी सारी ताक़त लगा देता। उसका शरीर इकट्ठा होकर इस तरह खिचता, जिस तरह बहुत ज़ोरसे खिंचनेपर कोई रस्सी तन जाती है। लड़ाईकी इस रेल-पेलमें कई घंटे बीत गये। एक बार तो सिंहपछाड़ने अगले पैरोंसे घुटना गया और अपने प्रतिद्वन्द्वीके ठेलों को बड़ी कठिनाईसे रोक पाया; पर इस बचावमें सिंहपछाड़के गलेके नीचे उसके प्रतिद्वन्द्वीका दांत एक इंच गहरा घुस

गया और जीवन-रस रक्त-रूपमें बहने लगा। यदि सिंहपछाड़में फुर्तीकी कमी होती और उसमें जीवटका अभाव होता, तो अपने प्रतिद्वन्द्वीके वारसे वह गिर पड़ा होता और जानसे हाथ धो बैठता। परन्तु संभल और बिगड़कर सिंहपछाड़ने जोर लगाया और अपने प्रतिद्वन्द्वीको वह तीस-चालीस गज़ तक ठेलता चला गया।

दोनों हाथियोंके लड़नेसे ज़मीन भी काँप-सी रही थी। घास और छोटे पौधे कुचल और दबकर मिट्टीमें मिल गये थे। ज़मीन धँस गई थी और खूनकी बूँदें पसीनेसे मिलकर टपक रही थीं और घबराई हुई धरती खूनके पानीको फौरन ही चूस लेती थी।

आधी रातके क़रीब दोनों लड़ाके कुछ अलग हुए और एक दूसरेकी ओर देखने लगे। दोनों ही लड़ते-लड़ते थकसे गये थे। दम फूलनेसे दोनों की कोखें फूलतीं और बैठतीं और उनके मुँहसे भापके बादलसे उठते। नस-नस और पुट्ठे-पुट्ठेमें लड़ाईका प्रभाव प्रतीत होता था। हाथी भाग भी सकते थे; पर आत्म-रक्षा और स्वाभिमानका प्रश्न था। मरो या मारोके अलावा और कोई चारा नहीं था। इसलिए कुछ ही मिनट बाद दोनों लड़ाके फिर जुट गये—सिरोंको झुकाकर और सूँड़ोंको समेटकर लड़ने लगे और उनके दाँत भी तेज़ीके साथ एक दूसरेके गलेमें जा लगे, जिनसे गहरी चोटें आईं और छातियों तथा कन्धोंसे खून बहने लगा।

पैरोंके पुट्ठे और मोटी खालके नीचे छिपी नसें भी तनकर दिखाई देने लगीं। गहरी साँसोंसे सिरोंके ऊपर कुहरा-सा छाने लगा और खूनकी बूँदोंसे शक्ति क्षीण होने लगी। घास, फल और फूलके रूपमें उन्होंने धरती मातासे जो पाया था और जिसका रासायनिक क्रियासे खून बना था, वही सूखेरू होकर

धरती माताकी गोदमें शरणार्थ आ रहा था। चन्द-किरणोंमें दोनों लड़ाकोंका आकार कई गुना बड़ा मालूम होता था। दो श्याम-शिखर लड़ते प्रतीत होते थे अथवा अतीतकालके दो दानव। उनकी छाया तो और भी डरावनी मालूम देती थी। इसी प्रकार रातभर दोनों योद्धा लड़ते रहे और प्रातःकाल जैसे ही सूर्यने उनपर निगाह डाली, वैसे ही सिंहपछाड़ और उसके प्रतिद्वन्द्वी के शरीर खून और मिट्टीसे लथपथ दिखाई पड़े। उनके माथेकी खाल बिल्कुल छिल गई थी। बस, मस्तककी हड्डी साफ़ दिखाई देती थी। कन्धों और गलोंसे फटी खालें लटक रही थीं और खूनकी नालियाँ-सी बह रह थीं। नीचे पसीने और खूनसे कीचड़ हो गई थी। दोनों ही हाथी बेदम हो गये थे। झुण्डका नेता तो थकावट और कमज़ोरीसे बेहाल था। सिंहपछाड़की भी कोई अच्छी हालत न थी; पर जवानीके कारण उसमें अपेक्षाकृत दम अधिक था।

नेताके पैर कुछ लड़खड़ाये। उसने जीवनकी बाज़ी लगाकर अपनी बची-खुची शक्तिका संचार किया और आखिरी दाव लगानेकी ठानी। इसके अतिरिक्त और कोई चारा न था। जब समझौतेका कोई चारा न हो, तब अन्तिम वार करनेके लिए तैयार होना ठीक ही है। नेताने भी ऐसा ही किया। कँपते हुए शरीरको सँभालकर और पुट्ठोंमें संचारित शक्तिका आह्वानकर उसने ज़ोर लगाया और सिंहपछाड़को ठेला। दस-बीस गज़ तक घबराया और थका हुआ सिंहपछाड़ धकेला गया। एक बार तो वह लड़खड़ा भी गया; पर उसने भी ज़ोर लगाकर अपने प्रतिद्वन्दीका वेग रोका। पूरी ताक़तसे उसने भी अख़ीरी-सा वार किया। उसके प्रतिद्वन्द्वीकी शक्ति-ज्योति भड़ककर बुझने-सी लगी थी, परन्तु सिंहपछाड़में जवानीका रूप, सहिष्णुता और दम

शेष थे। बस, सिंहपछाड़ने जो रौंदा दिया, तो उसके प्रतिद्वन्द्वीके शरीरने जवाब दे दिया। लड़खड़ाकर वह पीछे हटा और सिरको एक ओर करके धड़ामसे धरती माताकी गोदमें गिर पड़ा। जन्मके समय उसकी माने उसकी रक्षा और सेवा की थी और अब सिंहपछाड़ने अपने दांत उसकी बगलमें घुसेड़कर उसे पंचभूतका एक ढेर बना दिया। विजय-मदसे उन्मत्त सिंहपछाड़ने अपने प्रतिद्वन्द्वीको तब तक नहीं छोड़ा, जब तक उसे यह विश्वास नहीं हो गया कि अब उसमें जान नहीं है। प्रतिद्वन्द्वीको परास्तकर सिंहपछाड़ने आरामकी सांस ली। फिर सूंड़को तुरईनुमाकर अपनी जीतकी घोषणाकी और अपने नेतृत्वका प्रदर्शन उसने झुण्डकी ओर मस्ताने ढंगसे चलकर किया। भीमराज तो सिंहपछाड़की सूरत देखकर घबरा गया और दुम दबाकर भागा। उस दिन सिंहपछाड़ने अपने शरीरपर कीचड़ और मिट्टी लपेटी, ताकि मक्खियों और कीड़ोंसे बचाव हो सके। पन्द्रह-बीस दिनमें सिंहपछाड़ बिलकुल ठीक हो गया।

सिंहपछाड़ने झुण्डका नेतृत्व बड़ी शानसे किया। दो-तीन बार तो उसने तीन-तीन महीनोंके बच्चोंको शेरोंके हमलोंसे बचाया। एक बच्चा चरते-चरते अपनी मासे दूर हो गया और दो शेरोंने उसपर आक्रमण किया। बच्चेकी चिंघाड़ सुनकर उसकी मा तो उधर आई ही; पर उससे पहले आया सिंहपछाड़। सिंहपछाड़की एक ही ठोकरसे शेरकी आंतें निकल पड़ी और शेर का पलस्तर बना दिया गया।

जब कभी जंगलमें आग लगती, तब सिंहपछाड़ अपनी सूंड़ उठाकर दिशाका पता चलाता और झुण्डको सुरक्षित स्थानमें ले जाता। हाथियोंके झुण्डका जीवन सिंहपछाड़की अधीनतामें चलता रहा और सिंहपछाड़पर

मांस और चर्बीकी परतें चढ़ने लगीं। होते-होते सिंहपछाड़की जवानीका सूर्य ढलने लगा और अब उसकी उमर सत्तरकी होने आई।

जंगल-जीवन-धाराकी प्रगति उसी प्रकार चलती रही। नदीकी धारके चढ़ाव-उतारके समान गर्मी, वर्षा और शरद ऋतुओंके दौर चलते रहे। एक दिन सिंहपछाड़के नेतृत्वका चैलेंज एक जवान हाथीने किया। सिंह-पछाड़ घंटों अपने नवीन प्रतिद्वन्द्वीका मुकाबिला करता रहा, अन्तमें अपनी जान लेकर भागा। उसके नेतृत्वका खात्मा प्रकृतिके इस अटल नियमके अनुसार हुआ कि जंगली और प्राकृतिक जीवनमें बलिष्ठ और वीर ही टिक पाते हैं। अच्छी नस्ल कायम रखनेके लिए यह ज़रूरी है कि मरियल और बूढ़े अलग कर दिये जायँ, और अगर वे अलग न हों, तो प्रतिद्वन्द्वी द्वारा मार दिये जायँ। सिंहपछाड़ इसी नियमके अनुसार झुंडका नेता बना था और इसी नियमके अनुसार अपनी ढलती जवानीमें नेतृत्वसे च्युत कर दिया गया। खैर यही हुई कि वह अपनी जान लेकर भाग गया। अगर कहीं वह लड़ते समय गिर पड़ता, तो मौतके घाट उतार दिया जाता।

झुंडसे भागकर सिंहपछाड़ छह-सात मीलकी दूरीपर एक तालाबमें घुसा और और अपने घावोंपर उसने मिट्टी लपेटी। फिर दिन-भर घने पेड़ोंके बीच आराम करता रहा। सायंकालको वहाँसे चला। उसने अपनी भूख करीबके जंगलसे ही बुझाई। दस-बारह दिनों तक उसका बदन दुखता रहा। झुंड-जीवनकी याद जब उसे आती, जब वह अपने रनिवासका खयाल करता और जब झुंडके साथ बीते अपने सत्तर-पचहत्तर वर्षके जीवनकी उसे याद आती—कम-से-कम अपने नेतृत्वकी—तब उसे झुंडकी ओर जानेकी हुड़क लगती। यद्यपि उसकी उमर अभी पचहत्तरके करीब थी, तो भी

उसमें अभी पौरुष था, वह हथनियोंकी ओर आकर्षित होता प्रतीत होता ; पर उसे अपने विजयी प्रतिद्वन्द्वीका डर लगता और मन मसोसकर रह जाता।

एक दिन उसने अपने पुराने झुंडको दो सौ गज़की दूरीसे देखा। झुंडकी ओर उसके कदम उठने ही वाले थे कि उसके पीछे उसे अपने विजेताके विशाल दाँत दिखाई पड़े। सिंहपछाड़के शरीरमें क्रोध और भयका संचार हुआ। बिगड़कर उसने पेड़ोंकी शाखाओंको तोड़ा। अपने क्रोधको और किसपर उतारता ? उस समय यदि कोई मनुष्य या कोई गाय-भैंस उसके क़रीब होते, तो वह उन्हें बिना मारे न छोड़ता। थोड़ी देर बाद बूढ़े हाथीका क्रोध शान्त हुआ और उसने हसरत भरी निगाहसे झुंडकी ओर देखा। झुंड के सब सदस्य आँखोंसे ओझल हो चुके थे और वह गुमसुम खड़ा अपने अनिवार्य निष्कासन-रूपी दण्ड पर मानो वह क़रीब के वातावरणसे कह रहा था—

न पूछो कफ़समें गुज़रती है क्योंकर,
नज़र तीलियों पर है दिल है चमन में।

पर वायु ने उसकी इस विरह-व्यथाकी उपेक्षा की और पत्तियों की सरसराहट द्वारा वायुने व्यंग्य रूप मानो जवाब दिया—मज़ा है कुढ़नमें मज़ा है मरनमें।

सिंहपछाड़ इस प्रकार इकड़ हो गया। न वह रातमें जंगल छोड़कर बाहर जाता था और न उसे अब झुंडके बच्चों अथवा किसी और सदस्यकी रक्षा ही करनी थी ; और न उससे अब किसी हथिनीके प्रेमपाशमें ही फँसना था। हाँ, पानी पीने और स्नान करनेके लिए वह गंगाजी ज़रूर जाता था। कभी-कभी स्वाद और भोजन-परिवर्तनके विचारसे वह क़रीबके देहातोंमें जाकर धान और गन्ने खा आता था। तन्दुरुस्ती क़ायम रखनेके लिए वह चरपरे पत्ते और छाल भी खाता। इसी प्रकार उसने अपने एकान्तवासी जीवनके दस-बारह वर्ष बिताये।

पचासी वर्षके क़रीब उसने अपने शरीरमें काफ़ी शिथिलता महसूस की। उसके दाँत अब कड़ी छालों और कड़ी फुनगियोंको भलीभाँति न चबा पाते थे। चूंकि यथेष्ट भोजन उसे नहीं मिल पाता था, इसलिए शरीरकी कड़ी खालमें ढिलाई आ गई थी। माथे, पीठ और बगलकी हड्डियाँ दिखाई पड़ने लगी थीं। उसकी चालमें भी वह तेज़ी न रही थी। इसलिए जीवन-निर्वाहके लिए उसे प्रतिदिन गाँवोंकी ओर जाना पड़ता, ताकि उसे धान, केला और गन्ना प्रचुर मात्रामें मिल सकें—ऐसा भोजन जिसे वह आसानीसे प्राप्त कर सके और सरलतासे खा-चबा सके। छाल छीलने और कड़ी शाखोंके तोड़ने तथा चबानेमें उसे बड़ी कठिनाई होती थी। गाँववाले सिंहपछाड़के हमलोंसे परेशान थे, और सिंहपछाड़को अपनी भूख बुझानेके लिए किसानोंके खेतोंपर हमला करना ही पड़ता था। किसान हाथीको भगानेके लिए रतजगा करते और वह झाँसा देनेके लिए अपने हमलोंका समय बदला करता। कभी सायंकालको आता तो कभी आधी रातको और कभी-कभी प्रातःकाल चार बजे आता।

दो-तीन वर्षोंकी जद्दोजहदमें सिंहपछाड़ आदमियोंसे अभ्यस्त-सा हो गया। वह कभी-कभी सुबह आठ बजे तक खेतोंमें चिपटा रहता। आग जलाकर और भाले लेकर लोग उसको भगाते और कभी फेंककर भाले मारते भी; पर सिंहपछाड़ चिंघाड़कर लोगोंको डरा देता और एकाध भाला खाकर जंगलकी ओर लपक जाता। खेतवाले परेशान थे, इसलिए उन्होंने अपने एक रिश्तेदार बन्दूक़चीको बुलाया। नाकाबन्दी करके लोग खड़े हुए और बारह नम्बरकी बन्दूक़के दो फ़ायर कर दिये गये। दोनों गोलियाँ सिंहपछाड़की बगलमें लगीं। वह पीड़ासे भन्ना गया और आदमियोंपर टूट पड़ा। भगदड़में दो आदमियोंको उसने पकड़ लिया। एक को सूँड़में पकड़कर उसने इतने ज़ोरसे फेंका कि वह समीपके बबूलसे टकराकर फ़ौरनमर गया। दूसरेकी एक टाँग सूंडसे पकड़ी और दूसरी पैरसे दाबी, बातकी बातमें उसे चीरकर फेंक दिया। अन्ततः जंगलकी ओर कराहता-सा चला गया।

उस दिनसे सिंहपछाड़ खूनी घोषित कर दिया गया और उसके मारनेके लिए इनाम नियत हुआ। सिंहपछाड़ भी काफी चौकन्ना हो गया। वहां से वह पन्द्रह मील की दूरी पर चला गया और मनुष्यों के प्रति उसमें घृणा की ज्वाला धधकने लगी। एक बार उसने एक लकड़हारे को एक छोटे पेड़ पर जा घेरा और पेड़ को गिराकर लकड़हारे को उसने इतना रौंदा कि उसका कचूमर बन गया। बुढ़ापे और निर्बलता के कारण वह अपनी गुज़र जंगल में नहीं कर सकता था और गांव वालों से उसकी ठन गई थी। यदि और कोई ओछा-पूरा जानवर होता, तो शेर, बघेरा, चरखा या सियार उसे तोड़ डालते; पर वह तो था हाथी। बस, कुछ दिनों तक सिंहपछाड़ का युद्ध देहातवालो से चलता रहा। आदमी की पैंछर पाकर वह झाड़ियों की आड़ में छिप जाता और क़रीब आते ही उसपर टूट पड़ता। इस प्रकार कुल मिलाकर उसने पन्द्रह आदमियों की जानें लीं।

जनवरी के महीने में चार शिकारी सिंहपछाड़ की खोज पर निकले। दो तो खोज देखते और दो सिंहपछाड़ की पैंछ पर थे। आठ-दस मील की दूरीपर उन्हें हाथी के ताज़ा खोज मिले। चौकन्ने होकर वे देखने लगे। पचास गज़ की दूरी पर बांसके भिरेके पीछे सिंहपछाड़ दिखाई दिया। सिंहपछाड़ने उन्हें बहुत पहले देख लिया था और आक्रमण करने के लिए वह तैयार खड़ा था। शीघ्र ही तीन फ़ायर हुए और सिंहपछाड़ पछाड़ खाकर अपना सिर धुनने लगा, और इस प्रकार लगभग सौ वर्ष की आयु में उसकी जीवन लीला समाप्त हो गई!

जंगली सूअर : सूरमा

जंगली सूअर : सूरमा

फागुनकी पूर्णिमा थी। होलीके त्योहारमें देहातके लोग जुटे थे। घरोंकी लिपाई-पुताईके बाद अपनी-अपनी हैसियतके अनुसार स्त्रियाँ पकवान बनानेमें व्यस्त थीं। पुजापा तैयार हो रहा था। लोग ढप, ढोलक और मजीरे सँभाल रहे थे। बाहर खेतों और वनोंमें वसन्त-सेना पग जमाए खड़ी थी। उत्साह और यौवनकी लहरमें प्रकृति बह रही थी। खेतोंमें गेहूँ और जौके पौधे लाखों मन अन्न-कणोंको अंजलियोंमें लिए वसन्तका स्वागत कर रहे थे। आमोंके द्रुमदल झूम-झूमकर भीनी-भीनी सुगन्ध छोड़ रहे थे। ढाक और सेमरके वृक्षोंमें तो जवानीके खूनकी वह तेज़ी थी कि वे सुर्खरू होकर बुड्ढे शीतका खुलेआम उपहास कर रहे थे। अनेक पक्षियों और पौधोंके रग-पुट्ठोंमें एक नवीन जीवन संचारित हो रहा था। यों समझिए कि ठिठुरी वसुन्धराने वसन्तकी बिजलीसे शक्ति पाकर अँगड़ाई लेते हुए जँभाई ली और उसकी एक चितवनसे ही शीत धराशायी-सा होकर कन्दराओं और पर्वत-शिखरोंकी ओर सरक गया।

पूर्णचन्द्रके निकलते ही धरातलपर एक रुपहली चादर-सी तन गई, मानो शीतपर कफ़न डाल दिया हो। हर गाँवमें शीतकी प्रतिमा—होली—में आग लगाई गई। ढपों और ढोलोंने वसन्त-दुन्दुभी बजाई। वसन्त-सेनाकी विजयश्रीकी हुँकार मुखरित होकर थलचरों, नभचरों और जलचरोंमें प्रस्फुटित होने लगी और ब्रजके एक गाँवसे राग उठा :—

बिरछुल अलकन्द बकेरिय रे।

और फ़र्रुखाबाद जिलेके चियासर गाँवके गंगा-तटवर्ती जंगलके सामने गंगाजीकी रेतियामें पन्द्रह बीस सूअरोंकी एक टोली परिधि-सी बनाए खड़ी थी। रातके आठ बजे होंगे। परिधिके बीचमें दो दँतैल सूअर पैंतरोंपर खड़े थे। पचास गजकी दूरीपर दो उन्मत्त घड़ियाल अपनी शक्तिके प्रदर्शनमें लगे थे और करीब एक बड़ी गोह (मादा मगर) आँखें

"सूअरोंकी एक टोली ...... खड़ी थी"

झपकाए गंगा-किनारे पड़ी थी, मानो वह गंगाकी शपथ-सी खा रही थी कि मैं विजयीको ही वरूँगी। रेतियापर जो अखाड़ा जमा था, उसकी जलचरोंको कोई परवा न थी। गाँववाले फागमें मस्त थे। सूअरोंकी टोलीमें उस दिन, वसन्तकी प्रेरणासे, इस बातपर ठन गई थी कि टोलीका नेतृत्व कैसे हो—टोलीके विभाजनमें कौन-से दँतैलके संरक्षणमें कितनी और कौन-सी सुअरियाँ आयँ। असलमें एक युवती सुअरियाको लेकर दोनों दँतैल शक्तिकी होली खेलनेपर उतारू हो गए थे। झगड़ा दो मर्दोंका था, और दोनों दँतैल सूअरोंने जानकी बाजी लगा दी थी। दर्शकोंने—झुंडके सदस्योंने—उनके झगड़ेमें न तो हस्तक्षेप करना ठीक समझा और न किसीमें इतना ताव था कि उस झगड़ेमें कोई पड़ता।

चाँदनी रातमें पैंतरोंपर खड़े दोनों सूअरोंकी कांपें चमचमा रही थीं। लगभग छह-छह इंच लम्बी दूधके रंगकी कांपें अर्द्धचन्द्राकारमें बाहर निकली

हुई थीं। बाल खड़े हुए थे। दोनों सूअर एकदम भिड़नेकी अपेक्षा पिचैतीसे काम ले रहे थे। दोनोंके पास एक-से हथियार थे। दांव-पेच भी एक-से ही थे, जो दोनोंको मालूम थे। मौका पाकर वे अपनी पैनी कांपोंको अपने प्रतिद्वन्द्वीकी बगलमें घुसेड़नेकी घातमें थे। पहल्वानोंकी भांति पहले तो उन्होंने पैंतरे बदले—थूथड़ियोंका खयाल रखते हुए। घूम-घूमकर अर्द्ध वृत्तमें थूथड़ीको थूथड़ीसे मिलाए हुए, वे पटेबाजोंकी भांति कुछ सिकुड़े हुए घूमे और घुर्र शब्द करके एक दँतैल्ने टक्कर मारी पर उसके प्रतिद्वन्द्वीने आक्रमणकारीपर वैसा ही प्रत्याक्रमण करके हमलेके जोरको कम कर दिया। बस, दोनोंके जबड़ोंके पास गहरी खुरसटें आईं। बजाय इसके कि वे पशु-बलका प्रयोग करके एक दूसरेसे भिड़ पड़ते, वे पैंतरेबाजीसे, सुकड़-सुकड़कर और घूम-घूमकर, काम ले रहे थे। कभी-कभी तो वे अपनी थूथनोंको भिड़ाकर, अपनी कांपोंको कटकटाकर बजाते और ठेलमठेला भी करते; पर जोड़ बराबरका था। लगभग साढ़े तीन मनके सजीव टैंकका मुकाबिला उतने ही भारी सजीव टैंकसे था। यों तो उनमें से प्रत्येक अपने अर्द्धचन्द्रमाओंकी जोड़ी—कांपों—के बलबूते किसीसे भिड़नेको तैयार था; पर बराबरीका मुकाबिला बुरा होता है। घंटे भर तक उनकी पिचैती होती रही। ऊपर आकाशसे चन्द्रमाने अपने बाल-रूपको सूअरोंके जबड़ोंसे निकलता देख विस्मयपूर्वक उन सूअरोंकी जोड़ीकी ओर देखा। उन चार चांदोंसे क्षपाकरकी छटामें मानो चार चांद लग गए।

इस प्रकारकी घंटे-भरकी पैंतरेबाजीके बाद सूअरोंने कुछ अधिक तेजी दिखाई। एक सूअरने बिगड़कर आक्रमण किया—टक्कर मारकर बगली-सी मारी; पर दूसरे सूअरने बचकर वही पेच अपने आक्रमणकारीपर चलाया।

तलवारें जैसे आपसमें टकराकर रुक जाती हैं, उसी प्रकार दोनोंके वार हुए। बस, बगलमें दोनोंके दो-दो इंच गहरा और चार इंच लम्बा घाव हो गया,- मानो हलके फालेसे किसीने चीरा लगाया हो। चर्बी मिला मांस लटक पड़ा। खूनके फव्वारे-से छूट निकले; पर सूअरोंने मैदान नहीं छोड़ा। लगभग चार बजे दोनोंकी लड़ाई समाप्त हुई। लोहू-लुहान होकर वे हट गए और गंगाजीमें पानी पीनेके लिए घुस गए। एक घायल सूअर गंगाजीकी एक दहकी ओर गया। जैसे ही वह तनिक गहरेमें घुसा, वैसे ही शान्त जल एकदम फटा और एक भारी घड़ियालके खूनी दाँतोंने सूअरको पकड़ा। स्टील-जैसे मजबूत जबड़ोंमें बँधकर घायल सूअर जलमग्न हो गया। हौं-२ और कीं-२ की ध्वनिसे सूअरको टोली बिदककर पीछे हटी और फिर उसकी सहायताको बढ़ी। पर सूअरको सुरसरिने समूचा निगल लिया था और जलकी धरातलकी गति ऐसी प्रतीत होती थी, मानो दह अपने पाप-कर्मसे आँखें बचानेकी फिक्रमें हो।

बँटा हुआ झुण्ड फिर एक हो गया। रात भर जो लड़ाई चली थी, उससे उस झुंडका विभाजन कोई दो घंटोंके लिए ही हुआ। प्रातःकाल होते-होते वह झुंड दँतैल सूअरके नेतृत्वमें गंगाजी पार करके बियासरसे तीन फर्लांग दूर पूर्वकी ओर गंगा-तटसे लगी करौंदोंकी घनी झाड़ियोंमें, सेमर-वृक्षके समीप, आ लेटा। दँतैल उस सूअरियाके करीब पड़ा सो रहा था, जिसके ऊपर उसकी पिछली रात लड़ाई हुई थी। उसने घावपर मिट्टी लपेट ली थी और सारी देहको भी कीचड़से ढँक लिया था। दोनों टाँगोंके बीच अपनी थूथन रखे वह पड़ा था। बड़ी-बड़ी सफेद काँसें शक्ति-सम्पन्न पहरेदारकी भाँति सतर्क सीधी खड़ी थीं। सेमरके पेड़पर लगे लाल फूलोंने

जंगलमें मानो सैनोंसे सूचना दे दी कि उसकी छायामें युवती सूअरिया—ढ्रो--एक नए कुटुम्बकी आशामें वहां आकर टिकी थी। प्रातःकालसे कौओं, गलगलों और तोतोंने सेमरके फूलोंसे अपना नशा पिया और बसन्ता (Barbet) ने घंटों ढ्रोके सुहागपर ठौंक-ठौंककी ध्वनिसे खुशी मनाई। गलगलने बिगड़कर बसन्तापर चोंच मारनेकी कोशिश की। वह तो गोता-सा लगाकर शाखाके नीचेवाले अपने खोंतेमें जा छिपा। शाम होते ही दँतैल ढ्रोके साथ उठा और सारी हार गंगाजल पान करके भोजनकी खोजमें झाउओंके झाड़ोंमें चली गई और अगले दिन सुबह फिर सेमरके पेड़के निकट आ गई।

"बसन्ताने घंटों ढ्रोके सुहागपर ठौंक-ठौंककी ध्वनिसे खुशी मनाई।"

असाढ़के उतरते ही ढ्रोने एक नालेमें एक मांद-सी बनाई। सरकंडोंको काटकर उसने इस प्रकार सजाया कि उनकी जड़ोंकी ओरका भाग जमीनमें गड़ गया और एक फैली-सी छतरी नालेमें बन गई। नालेके ऊपरी भागमें पानीके सम्भावित मार्गसे हटकर सघन झाड़ियोंमें ढ्रोने प्रसूति-गृह
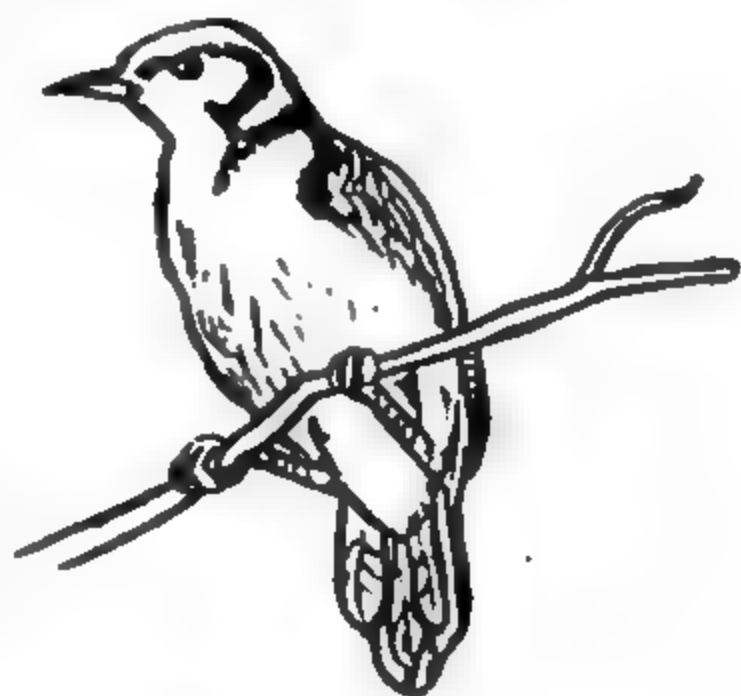
बनाया। एक दिन ढ्यो अनमनी-सी लेटी रही और टोलीके साथ शामको भोजनकी तलाशमें नहीं गई। प्रातःकाल जब दंतैल प्रसूति-गृहकी ओर गया, तब ढ्योने उसे तनिक दपटा। कनखियोंसे दंतैलने देखा कि ढ्यो छह घेंटोंकी

'कनखियोंसे दंतैलने देखा।'

मा बनी पड़ी है और छह घेंटे उसके थनोंसे जुटे दूध पी रहे हैं। घेंटे तीन नर थे और तीन मादा। सुविधाके लिए नर बच्चोंको सट्टमोंगरा, खुदमुद और

काँदिल कहा जायगा और मादा बच्चोंको ललकिया, पिरनिया और झबिया। सबसे पहले ललकियाका जन्म हुआ था और उसके बाद सट्टमोंगराका। बादको क्रमशः पिरनिया, खुड्मुड्, झबिया और काँदिलने यह दुनिया देखी। सब बच्चोंमें सट्टमोंगरा और ललकिया अपेक्षाकृत बड़े और मजबूत थे। सबके ऊपर पड़ी लकीरें थीं और रंग था सबका काला। गोल-मटोल असहाय बच्चे ढङ्गीके शरीरसे लगे ऐसे प्रतीत होते थे, मानो किसी काली शिलामें किसीने छह गोल-मटोल पत्थर लगा दिये हों।

* * * *

दूध पिलाकर ढङ्गीने बच्चोंको सरकंडोंके नीचे माँदमें अपनी थूथनसे कर दिया और क़रीब ही वह दूबकी जड़ें खोदकर खाने लगी। एक घंटे बाद वह चारों ओर देखकर कि कहीं कोई गीदड़ या चरख तो नहीं है, गंगाजीकी ओर गई और पन्द्रह मिनटमें पानी पीकर तथा लोरकर लौट आई।

ढङ्गीके जच्चा होनेके तीसरे ही दिन घंटों मूसलधार पानी गिरा और मेंढकी खुशामद और कीड़े-मकोड़ोंकी स्तुतिसे धरतीका दिल पसीजा। करुण रससे भूतल द्रवीभूत हुआ। चार-पाँच दिनोंके भीतर ही घास और पौधोंके कल्ले नज़र आने लगे, मानो पावस-सेनाकी बर्छियोंकी नोंकें ग्रीष्म-ऋतुको बेधकर बाहर निकल आई हों। खेतोंमें बुवाई हो गई। नदियोंकी क्षीण धाराएँ पावस-सहयोगसे पीन-पयोधरा हो गईं। ढङ्गीको भी बारिशसे कम आराम नहीं पहुँचा। अपने बच्चोंको लुका-छिपाकर ले जाने और रखनेमें उसे कोई कठिनाई न रही, मानो सूअरोंकी वंश-रक्षाके लिए ही बारिश प्रारम्भ होती है।

बारिशसे दो दिन पहले दँतैलकी टोली तीन भागोंमें बँट गई थी। कई

अन्य दँतैल सूअरों और ढ्ड्रोके दँतैलमें एक बार फिर कई सूअरियोंके कारण झगड़ा हुआ था और उस बड़ी डारके तीन भाग बन गए थे। अब ढ्ड्रोके बच्चोंको मिलाकर दँतैलकी टोलीमें कुल दस सदस्य थे। सायंकाल ढ्ड्रो अपने बच्चोंके साथ निकलती, तनिक-सा खटका होनेपर सतर्क होकर रुक जाती और सब घेंटे एकदम स्तब्ध होकर जमीनसे लग जाते। आत्म-रक्षाके मूल सिद्धान्तों—अपने-आपको छिपानेकी कला—का पाठ उन्हें ढ्ड्रो तो सिखाती ही थी; पर इस प्रकार बचनेके तरीके उनके खूनमें भी थे। जब जंगलका कोई खुला टुकड़ा आता, तब घेंटे बाहर आनेसे पहले झाड़ीके किनारे रुककर कीं-कीं करते और ढ्ड्रोके आश्वासन दिलाने, घुड़-घुड़की ध्वनि करनेपर वे बाहर निकलते; पर ढ्ड्रोकी टाँगोंके बीच पेटके नीचे रहनेमें उन्हें अधिक अच्छा लगता। खेतमें पहुँचकर ढ्ड्रो जड़ें खोदने-खानेमें लग जाती और घेंटे अपनी छोटी थूथनोंसे गीली मिट्टीको उँडेलते और मोथाकी जड़ें मिलनेपर उन्हें स्वादसे खाते। ललकिया और सट्टमोंगरा शुरूसे ही ढीठ थे। ये दोनों खुबमुब, कांदिल, पिरनिया और झबियाको परेशान करते। छुछी खेलते, एक-दूसरेके टूलें मारते और खूब भाग-दौड़ करते।

एक दिन प्रातःकाल ढ्ड्रो जंगलके एक गड्ढेमें लोर रही थी। बच्चोंको भी उसने पानीमें लानेकी चेष्टा की। कीं-२ करके सभी बच्चे उधर आए; पर ललकिया और खुबमुब गड्ढेकी ओर नहीं बढ़े और ढ्ड्रोकी नजरोंमें ही वे गड्ढेके ऊपर खेलते रहे। घेंटोंकी कीं-२ कीं-२ सुनकर अपनी माँदको जानेवाले दो चरखे कौतूहलवश उधर मुड़ पड़े। माँदमें जानेसे पूर्व उन्हें कुछ खानेको मिल जाय, तो क्या कहने! लुककर जैसे

ही एक झाड़ीसे ललकिया और खुड़मुड़पर उनकी नजर पड़ी, वैसे ही उनके मुँहमें पानी भर आया। दो गुदकारे घेंटे गड्ढेके पास खेल रहे थे; पर क़रीब ही ढ्ढो गड्ढेमें लोर रही थी। यदि उन्होंने घेंटोंपर हमला किया, तो ढ्ढोंकी टक्कर उनपर पड़ेगी। एक ही टक्करमें चरखोंकी आँतें बाहर निकल पड़ेंगी। पर इतना स्वादिष्ट और मुलायम मांस छोड़ा भी कैसे जाता? खुला हमला करनेमें काफ़ी जोखिम थी। इसलिए चरखोंने चालबाज़ीसे काम लिया। चक्कर काटकर एक चरखा गड्ढेके पूर्वकी झाड़ोंमें गया और दूसरा वहीं जमा रहा; पर ढ्ढोको गन्ध आ गई। वह हो करके खड़ी हो गई और उसके बच्चे चीं-२ कीं-२ करते हुए उसके पेटके नीचे सिमट-सुकड़कर खड़े हो गए। ललकिया और सट्टमोंगरा ढ्ढोकी अगली टाँगोंसे अपनी छोटी-छोटी थूथनें निकालकर गन्ध लेनेकी कोशिश करते थे। ढ्ढोकी देख-रेखमें बच्चोंकी टोली अपने शयन-स्थानकी ओर चली। बच्चे एक दूसरेसे सटे, छोटी पूंछोंमें एक फन्दा-सा बनाए, बिसूरती सूरत लिए झाड़ियोंमें बढ़े। चरखोंने छिपकर उनका पीछा किया। ढ्ढोके निवास-स्थानके पास एक दँतैल सूअर और अन्य कई सूअरोंको देखकर चरखोंके पैर आगे न पड़े। अकेली ढ्ढोसे ही भिड़नेको उनका साहस न होता था। इतने सूअरोंमें तो बघेरेकी भी हिम्मत न पड़ती कि वह आक्रमण करके किसीको पकड़ पाता। चरखे मन मसोसकर लौट गए; पर उन्होंने ढ्ढोके रहनेका स्थान देख लिया। कौन जाने कभी उनका दाँव लग जाय! वहाँसे एक फ़र्लांगकी दूरीपर ही चरखोंकी माँद थी।

सायंकालको चरखे निकले अपने शिकारपर और ढ्ढो निकली अपने कुटुम्बके साथ भोजनकी तलाशमें। झाउओंकी झाड़ियोंमें घासकी मीठी

जड़ें और कीड़े-मकोड़े भी थे। उन्हींकी खोजमें ढड्डो कई दिनोंसे आ रही थी। चरखोंने पहलेसे ही नालेके उतारकी बगलमें बैठकर घात लगाई थी। कुछ सूअर उस मार्गसे निकल गए। उनकी गन्ध पाकर और आहट सुनकर चरखोंने अपना मोर्चा जमा लिया था। जैसे ही ढड्डो नालेमें उतरी, वैसे ही ललकिया और सट्टमोंगरा नालेपर रुके और उनके पीछे खुड़मुड़ और पिरनिया ठिठके। बिजलीकी भाँति चरखोंने खुड़मुड़ और पिरनियापर अपने इस्पाती जबड़े कस दिए और उनको उठाकर वे करौंदेकी झाड़ीमें बढ़ गए। बच्चोंकी चीखसे ढड्डो खौ-हौ-हु करके ऊपर भाग आई और क्रोधित सिंहनीकी भाँति पिरनिया और खुड़मुड़की चीत्कारकी ओर लपकी। पर जैसे ही वह करौंदेकी झाड़ीमें कूदी, वैसे ही उसके अन्य बच्चोंने डरकर रोना-धोना-सा मचाया। उसके पीछे भागकर वे चीं-२ कीं-२ करने लगे। काँदिल तो ललकिया और सट्टमोंगराके धक्केसे गिर गया और रोने लगा। क्रोधित ढड्डो अपने चिल्लाते बच्चोंकी ओर मुड़ी और लौटकर उनको सुरक्षित पाया। सट्टमोंगरा, ललकिया, काँदिल और झबिया चीखते हुए माके पेटके नीचे खड़े हो गए। ढड्डोने फिर खुड़मुड़ और पिरनियाके अस्पष्ट चीत्कारकी ओर जानेकी कोशिश की; पर उसके शेष बच्चोंकी करुणापूर्ण कीं-चींने उसे आगे न बढ़ने दिया। हाँ, उसके दिलमें रह-रहकर हूक उठती और खौ-हौ करके कनौती बदले वह आगे बढ़ती और फिर रुक जाती। शोरोगुल सुनकर दँतैल और दो-तीन सूअरियाँ उधर आए; पर उस समय तक चरखे चार फ़र्लांग निकल चुके थे। एक नालेमें उन्होंने पिरनिया और खुड़मुड़का स्वादिष्ट नरम मांस खाया और साथमें नकी हड्डियाँ भी चबाईं।

उस रात ढ़ुंगी खूब सतर्क रही और बड़ी कठिनाईसे अपने बच्चोंका डर दूर कर सकी। सुबह वह गुरगुजपुरके पड़ोसकी झाड़ियोंमें जाकर रही। सारी बरसात उसने वहीं काटी। ज्वार, बाजरा और मक्ईके खेत लहलहा रहे थे। उसके बच्चे अब खूब दौड़ सकते थे। मक्काके खेतोंमें वे भुट्टे तोड़कर भी खाने लगे थे। उनकी थुथड़ियाँ भी काफ़ी मजबूत हो गई थीं। लट्टमोंगरा उनमें सबसे ज्यादा मजबूत था। उसकी पट्टी धारियाँ भी अब फीकी-सी पड़ रही थीं। उधर ढ़ुंगीकी एक साथिनने क़रीब ही चार बच्चे दिए थे।

शीतकालके प्रारम्भमें, जुआर और बाजरा कट जानेपर, ढ़ुंगी अपने बच्चोंके साथ ईख और अरहरके खेतोंमें दिन बिताती और रात होते ही शकरकन्द और जुआरके झुओंसे जुआर खाती। अरहरके खेतमें अरहरके पेड़ोंको काटकर उसने तथा अन्य सूअरोंने एक गट्ठर-सा बनाया और जमीन खोदकर जाड़ोंमें उसीके नीचे सोते। अधपकी अरहर और शकरकन्द खाकर चर्बीका पुट और भी मोटा चढ़ गया था।

जाड़ेके ऋतुमें एक दिन लगभग दस बजे जब ढ़ुंगी, दँतैल, लछकिया, लट्टमोंगरा, झबिया और कादिल अरहरके खेतमें पड़े सो रहे थे और एक सूअरिया अपने तीन-तीन महीनोंके बच्चोंको दूध पिला रही थी तथा कई अन्य पट्ठे सूअर और सूअरियाँ भी आँखें झपकाए पड़े थे, एक ओरसे हो-होकी आवाज आई। अरहरके खेतमें आदमी घुस पड़े। साथमें उनके कुत्ते भी थे। बल्लमों और लाठियोंसे अरहरके पौधोंको झूरते वे आगे बढ़े। पहले ही खटकेपर दँतैल उठा और उसके साथ ढ़ुंगी भी उठी। छोटे बच्चोंवाली सूअरिया पूर्वकी ओर बढ़ी। कुत्ते दँतैलपर टूटे। दँतैलने

हो करके कुत्तोंको धमकाया। चार-पाँच लेंडी कुत्ते तो डरकर पीछे हट गये और भूकने लगे ; पर दो शिकारी कुत्तोंने दँतैलको आ घेरा। एक कुत्ता आगे बढ़ा और एक पीछेसे उसकी ओर बढ़ा। दो बल्लमबाज भी उधर आ पहुंचे। वहाँ अखाड़ा-सा जम गया। दो आदमियोंको देखकर दँतैलने आगे बढ़नेकी ठानी। जैसे ही एक कुत्तेने उसकी पिछाईपर मुँह मारा, वैसे ही दँतैलने मुड़कर कुत्तेके वह कापें गड़ाईं कि उसकी आँतें निकल पड़ीं और काँय-काँय करके वह गिर पड़ा और छटपटाने लगा। दँतैलने बल्लमवालेको भी दस गजपर देखा। क्रोधसे उसने अपनी पूँछ ऊपरको उठाई और हो करके उसपर टूट पड़ी। बल्लमका वार ओछा पड़ा। पिछाईपर खुरसट मारकर वह पीछेको गई और बल्लमबाज धड़ामसे नीचे गिरा। उसकी दोनों जाँघोंमें अर्द्धचन्द्राकार कापें घुस गईं। दूसरा कुत्ता भाग गया और दँतैल अरहरके खेतसे निकल भागा। पर फौरन ही उसकी बगलमें रायफ़लकी गोली लगी और वह कलामुण्डी खाकर गिर पड़ा। उसकी दस इंच लम्बी कापें बेकार हो गईं। दँतैलकी लड़ाईसे छोटे बच्चोंवाली सूअरिया साफ़ निकल गई। ठर्री, सट्टमोंगरा, झबिया और काँदिल भी गंगामें कूदकर गंगपुरके जंगलमें चले गए। बस, ललकिया खेतमें घिर गई। अभी वह आठ महीनेकी थी ; पर जब उसने बचनेका कोई मौक़ा न पाया, तब वह आदमियोंपर टूट पड़ी। उसने एक टक्कर एक हाँका करनेवालेके मारी, और वह धड़ामसे गिर पड़ा। इतनेमें एक कुत्ता उसपर आ चिपटा और दूसरे कुत्तेने उसका कान पकड़ना चाहा ; पर ललकियाने मुँह मारकर कुत्तेकी टाँग पकड़ ली और उसको उसने बिल्कुल चबा डाला। बल्लमसे ललकियाका ख़ात्मा किया गया।

कटियारी रियासतके आदमी दँतैल और ललकियाको लेकर अपने घर गए।

जब सट्टमोंगरा नौ महीनेका हुआ, तब एक दिन उसके जबड़ेमें दर्द-सा हुआ। थोड़ी सूजन भी आई। कांदिलकी भी यही हालत हुई। दो दिन तक वे अनमनेसे रहे। उनकी कांपें (Tusks) निकल रही थीं। आदमीके मूँछें, हिरनके सींग और सूअरोंकी कांपें तरुणावस्थाके आगमनकी सूचना देते हैं। सट्टमोंगराकी उठनी जवानीके चिह्न भी प्रकट हो गए थे। टोलीकी गन्ध पहचान लेना, आदमी तथा अपने अन्य दुश्मनोंकी गन्ध और उनकी चालोंको समझना, ढुंड़ो तथा टोलीसे अधिक सम्बन्ध न रखना और स्वावलम्बनके पथपर अग्रसर होना— ये सब बातें सट्टमोंगरामें आ रही थीं। ढुंड़ोको तो अब अपने बच्चोंपर मोह टोलीके नाते था। माकी हैसियतसे तो उसे अपनी भावी सन्तानका ख़याल था।

असाढ़के आनेपर ढुंड़ोने पांच बच्चे और दिए। सट्टमोंगराने एक बार अपनी मांकी ओर जानेकी कोशिश की, जब वह खड़ी-खड़ी घेंटोंको दूध पिला रही थी। ढुंड़ोकी एक ही घुड़कीसे सट्टमोंगरा वहांसे हट गया। फिर तो वह अन्य सूअरियोंसे ही अधिक मिला-जुला रहता। कुआरके महीनेमें उसने अपनी टोलीकी सहयोग-वृत्तिका एक ज्वलन्त उदाहरण दिया। एक दिन ढुंड़ो अपने बच्चोंके साथ पानी पीने गई। जैसे ही वह गंगाजीके किनारे ढाँडेके नीचे उतरी कि एक नीलगाय एकदम ऊपरसे कूदकर भागी। ढुंड़ो बिदककर गंगाजीके तटकी ओर भागी और घेंटे जंगलकी ओर लौट पड़े। झाड़ीमें क़रीब ही दो सियार बैठे थे। लपककर एक सियारने एक घेंटेको पकड़ लिया। घेंटेकी चीत्कार सुनकर सट्टमोंगरा और ढुंड़ो उधर दौड़ पड़े। सट्टमोंगरा पासकी एक झाड़ीकी ओटमें दूबकी जड़ें खोदकर खा रहा था।

ढ्रोंके आनेसे पहले ही सट्टमोंगराने सियारके वह टक्कर दी और अपनी कांपको इस ढंगसे चलाया कि सियार ऊपरको फिंक गया और नीचे गिरते ही सट्टमोंगराने उसे चबा डाला। दूसरा गीदड़ अपनी जान बचाकर भागा। ढ्रो भी आई और मरे गीदड़को मारकर शाहमदार बनी। घेंटेको अपनी थूथनके सहारे ढ्रो पानीपर ले गई।

* * * *

यों तो जबसे सट्टमोंगराकी कांपोंने जबड़ोंसे चन्द्रमाको झांककर देखा, तभीसे सट्टमोंगराकी मर्दुमीका प्रदर्शन हुआ था; पर उस संघर्षमय जीवनके तीन वर्षमें सट्टमोंगराको काफ़ी अनुभव हो चुका था। पड़ोसके खेतोंकी फ़स्ल, जंगलके रास्ते और गंगपुर और छीछपुरकी कटरीके छिपनेके स्थान उसे सब मालूम थे। दो-चार बार किसी सूअरियाके कारण उसका अपने बराबरके सूअरोंसे झगड़ा भी हो चुका था। कांदिल तो सट्टमोंगरासे कांपता था, इसलिए वह उससे कनराया ही रहता। चियासर और गंगपुरकी कटरीमें उसकी उठानका कोई सूअर न था। जगदीशपुरकी कटरीसे लगाकर गंगपुरकी कटरी और रामगंगासे लगाकर काली नदी तक सट्टमोंगराकी जवानीकी धूम थी। कोई सवाया सूअर उसके सामने टिकता न था। खाने-वाले भी सट्टमोंगराकी तलाशमें थे; पर सट्टमोंगरा फ़स्लके दिनोंमें जंगल में न मिलता। मक्केकी फ़स्लमें वह झाउओंकी झाड़ीमें बैठ जाता। किसी एक स्थानमें न रहता। चियासरके जंगलमें शिकारियोंके अनेक कुत्तोंको उसने तोड़ डाला था, इसलिए शिकारी उसके मारनेकी फ़िक्रमें थे।

ठाकुर नारायणसिंह ददल्यिा गांवके करीब रहते थे। वे सूअरोंके नामी शिकारी थे; पर उनके हाथ भी सट्टमोंगरा न लगता था। ठाकुर

नारायणसिंहने सट्टमोंगराकी खोजमें बहुत-से आदमी लगा दिए थे। एक दिन दोपहरमें एक आदमीने ख़बर दी कि सट्टमोंगरा कुंडाके झाऊके नीचे पड़ा सो रहा है। ठाकुर नारायणसिंह बन्दूक उठाकर फ़ौरन तैयार हुए और कुंडाके किनारे पहुँचे। आदमीने कहा था कि वह पाँच गज़की दूरीसे सूअर को दिखा देगा। बस, घात लगाए, बिना आहटके, जैसे ही नारायणसिंह नियत स्थानपर पहुँचे और उस आदमीने इशारेसे बताया—देखो, वह बैठा है सूअर कि एक 'हौं' की आवाज़से सट्टमोंगराने उनपर आक्रमण कर दिया। ठाकुर नारायणसिंहकी टाँगें आसमानमें दिखाई दीं। सट्टमोंगरा यह गया और वह गया। दो मील दूर जाकर उसने दम लिया। ठाकुर नारायणसिंह हँसकर खड़े हुए। जाँघमें पट्टी बाँधी और लँगड़ाते घर आए।

यों तो सट्टमोंगरा एक टोलीका नेता था; पर होली-दिवालीके क़रीब वह टोलीके साथ ही विशेष रहा करता था। वह इतना सताया गया था और उसपर इतनी गोलियाँ चली थीं कि आदमियोंकी सूरत और गन्धसे वह चौकन्ना रहता। कटियारी रियासतके सूअरोंके नामी शिकारी दफ़ेदारने बल्लमसे सट्टमोंगराको मारनेका बीड़ा उठाया। अस्तबलसे तेज़ घोड़ा लिया, जो सूअरके शिकारपर सधा हुआ था। साथमें हथिनी भी थी, जिस पर से बैठे-बैठे शिकार खेला जा सकता था। हथिनीको इसलिए नहीं लिया गया था कि उससे अच्छा शिकार होगा, वरन् इसलिए कि थोड़ी दूरके सफ़र में हाथी ठीक रहता है और हाथीसे दूर तक देखा जा सकता है।

चियासर जंगलके करीब हथिनी खड़ी की गई। सूअरोंके सम्भावित स्थानोंपर कई शिकारी खड़े किए गए और जंगलका हाँका किया गया। एक शिकारीने बैठकर देखा, तो सट्टमोंगरा हथिनीकी ओर निकलनेको खड़ा था।

हथिनीको देखकर वह ठिठक गया और पीछे लौटने ही वाला था कि पीछेसे चार नम्बरका छर्रा मज़ल्लोडरसे उसपर चला दिया गया। आधे छर्रे सट्ट-मोंगराकी पिछाईपर लगे और क्रोधके मारे वह भन्ना गया। सूअर स्वभावसे ही सूरमा होता है। जब वह बिगड़ता है, तब किसीसे भी लड़नेको तैयार हो जाता है। बस, सट्टमोंगरा हौ-हौ करके हथिनीपर पिल पड़ा। एक टक्कर उसने उसकी अगली टांगोंमें मारी। हथिनीके तनिक खुरसट आई। चट्टानमें चोंच मारकर कौआ चट्टानका कुछ नहीं बिगाड़ पाता। सट्टमोंगराकी टक्करसे हथिनीका भी कुछ न बिगड़ा; पर हथिनीको आश्चर्य ज़रूर हुआ, और उस दिनसे हथिनी सूअरको देखकर घबराने लगी। यदि कहीं हथिनीकी ठोकर लग जाती, या वह उसपर पैर रख पाती, तो सट्ट-मोंगरा मक्खीकी भाँति पिस जाता। सट्टमोंगराकी टक्करसे हथिनी घबराई, जिससे हथिनीकी पीठपरसे फ़ायर न हो सका। सट्टमोंगरा मैदानकी ओरसे काली नदीकी ओर भागा। दफेदारने उसके पीछे घोड़ा डाला। सट्ट-मोंगराने एक नालेकी शरण ली। दफेदारने सूअरकी अगाई काटनेकी खातिर नाला पार करके एक आमके पास जाकर घोड़ा रोका कि कहीं टेढ़े-मेढ़े नालेके बीचसे ही सट्टमोंगरा न निकल पड़े। यदि नालेके बीचसे सूअर निकल पड़ता, तो उसे नालेके अखीरसे दो फर्लांगका दाव (start) काली नदीकी झाड़ियोंके लिए मिल जाता। ऐसा होनेसे उसके भाग जानेकी भी २ शंका थी। इसलिए दफेदारने नाकेबन्दी कर ली थी। दफेदारने जैसे ही घोड़ा रोका, वैसे ही सौ गजपर समकोण बनाता हुआ सट्टमोंगरा अपनी लम्बी कौंपें निकाले और भारी शरीरको लिए नालेमें से निकला। नालेसे जैसे ही पचास गजकी दूरपर वह आया, वैसे दफेदारने घोड़ेकी रास उधर की। घोड़ेको अपनी ओर आता देख सट्टमोंगरा हौ करके रुका

"घोड़ेकी अगली गाँटपर ऐसी कांप मारी कि टांग पेटके जुड़ावसे टूट गई" पृ० १४१

और फिर नालेकी ओर मुड़ा। दफ़ेदारकी चालको उसने बेकार कर दिया। सट्टमोंगरा कायर नहीं था। कोई भी सुअर कायर नहीं होता, पर बहादुरी के मानी नासमझी नहीं हैं। दुनियामें कोरी सचाई और ईमानदारीके विशेष मानी नहीं, यदि सचाई और ईमानदारीके साथ कार्य-पटुता और क्रियात्मक कल्पनाशक्ति न हो। गधेकी ईमानदारी और सचाईमें किसको सन्देह है? दीवारकी तपस्या कौन कम है। उनमें कौशल और प्रेरक बुद्धि नहीं। सट्टमोंगरा भी कम बहादुर नहीं था, पर जान-बूझकर कुएँमें गिरना मूर्खता है, इसलिए बिना अवसरके बल्लमबाजसे भिड़ना उसने ठीक नहीं समझा। वह नालेमें लौट पड़ा। दफ़ेदारने भी घोड़ा उसके पीछे डाला। नालेका एक चक्कर काटकर सट्टमोंगरा ऊपर निकलकर चियासरके जंगलकी ओर भागा; पर उसे आदमियोंकी ताज़ा गन्ध उधर आई, और वह लौट पड़ा। नालेके किनारे वह लौटकर आया ही था कि दफ़ेदारका घोड़ा ऊपर चढ़ता दिखाई दिया। बस, सट्टमोंगराकी आँखोंमें क्रोधकी आग भड़क उठी। बचनेका कोई अवसर न देख वह 'हों-क्षौं'कर घोड़ेपर टूट पड़ा। घोड़ा अभी नालेके ऊपर चढ़ भी न पाया था कि सट्टमोंगराने बाईं ओरसे घोड़ेकी अगली टाँगपर ऐसी काँप मारी कि टाँग पेटके जुड़ावसे टूट गई। दफ़ेदारकी बल्लम भी चली, पर सट्टमोंगराकी पीठपर उसका विशेष असर नहीं पड़ा। चोट खाकर सट्टमोंगराने एक मुँह दफ़ेदारकी पिंडलीमें मारा। फिर घोड़ेके पुट्ठेसे मांस नोंचकर वह नालेमें चला गया। बल्लम आक्रमणके प्रहार और ओछे वारसे ज़मीनपर जा गिरी। घोड़ा तो बेकार हो ही गया और दफ़ेदार मुश्किलसे चियासर तक पहुँचे। ख़ैर यह हुई कि सट्टमोंगराका दूसरा वार घोड़ेके पुट्ठेपर पड़ा। वार तो किया था

उसने दफ़ेदारके पेट पर ; पर घोड़ेके घायल होते ही और हाथसे बल्लम छूट जानेसे दफ़ेदारने घोड़ेकी दूसरी ओर कूदकर बल्लम उठानेका प्रयास किया था। यदि सूअर डटा रहता, तो बल्लम उठानेका मौका दफ़ेदारको शायद ही मिल पाता। सट्टमोंगरा अपने शत्रुओंको परास्त करके काली नदीके झाउओंमें जा छिपा। उसके बाद बहुत दिनों तक वह काली नदीके किनारे रहा। आमोंकी फ़स्लके दिनोंमें वह चियासरके बगीचेमें रातको गिरे पके आमोंको खाता। एक रात चियासरके एक धानुकके सूअरको, जो सूअरियोंके साथ आम या आमकी गुठलियाँ खाने आया था, उसने बुरी तरह घायल किया।

* * *

सट्टमोंगराकी शक्तिके साथ उसके शत्रु भी बढ़े। किसान उससे परेशान थे। शकरकन्दके खेतोंमें तो वह इतनी बुरी तरह जुटता कि हुल्कारनेसे भी नहीं भागता। कुत्तोंका उसे डर नहीं था। झोपड़ी या टाँड़से जब रखवाला उसे हुल्कारता, तब वह नाराज़ होकर ज़रा रुकता और हो करके तनिक हटता, मानो वह चैलेंज देता कि जिसमें दम हो, वह आगे बढ़े। बन्दरघुड़की बच्चोंके लिए हो सकती है। सट्टमोंगरा सतर्क बना क्यारियोंको उँड़ेल-उँड़ेलकर शकरकन्द खाता रहता। पर आत्म-विश्वासकी भी कोई सीमा होती है। चालाकी भी हमेशा नहीं चलती। समय आनेपर हिरन भी चौकड़ी भरना भूल जाता है। भगवान कृष्ण तक अपने पाद-पद्मको एक दिन ऊँचा करके लेटे थे। उनका समय आ गया था। फिर सट्टमोंगरा तो एक सूअर ही था। अपनी अकड़ चालाकीमें उसने एक दूरके शकरकन्दके खेतमें जाना शुरू किया। किसानने दफ़े-दारोंको खबर दी कि सट्टमोंगरा रातको उसके खेतमें शकरकन्द खाने

आता है। दफ़ेदार और अन्य सट्टमोंगराकी टोहमें थे ही। फौरन ही दो आदमी टोपीदार बन्दूक भरकर चल दिए।

रातके दो बजेके करीब सट्टमोंगरा शकरकन्दके खेतमें आया। तनिक परिस्थितिका अवलोकन किया और फिर क्यारियोंको उँड़ेलनेमें लगा। दफ़ेदारने आँखें फाड़कर देखा, तो सुअरकी झाईं मारती थी। अन्धाधुन्ध फ़ायर करनेमें डर यह था कि गोली ओछी पड़नेपर कहीं सट्टमोंगराने आक्रमण कर दिया, तो वह अँधेरेमें दोनों शिकारियोंको चबाकर धर सकता था। कृष्णपक्षकी त्रयोदशी थी, इसलिए प्रातःकालके समय चन्द्रमा निकलनेवाला था।

जैसे ही चन्द्रमा निकला, वैसे ही सट्टमोंगराकी छटा खेतमें खिल गई। श्यामवर्ण शिला क्यारियोंके उँड़ेलमें व्यस्त थी और शकरकन्दें उसके पेटमें चरड़-परड़ करके जा रही थी। अगले कखनेका निशान बाँधकर दोनों नालोंके ग्राफ़ छोड़ दिये गए। शकरकन्दकी बेलके कारण धोखा हुआ। निशाना पेटपर पड़ा। सट्टमोंगरा एक ओर झुका और क्रोधसे चिल्लाया। फिर उसने अपनी मांदका रास्ता लिया। चन्द्रमा उसकी कौंपोंपर अब भी विहँस रहा था।

उषा काल था। प्रभात होते ही चारों ओर चहल-पहल मच गई। सट्टमोंगरा लहू-लुहान भागा चला जा रहा था। एक गाँवके क़रीब होकर निकला, तो गाँवके कुत्ते उसपर टूटे। सट्टमोंगराकी गति धीमी थी; पर उसके शौर्यमें तनिक भी अन्तर नहीं पड़ा। कुत्तोंकी परवाह न कर वह बढ़ता ही रहा; पर दो कुत्तोंने उसपर पीछेसे वार किया। सट्टमोंगरा उनपर पिल पड़ा। एकको पकड़कर उसने पिछाड़ीसे चबचबाना शुरू किया और उसकी थूथनी तक चबा डाली। दूसरे कुत्ते पाँच-छह गज़ आगे फेंक दिया और उसकी कमर तोड़ डाली। कम्बख्तीकी मारी एक भैंस सिर उठाकर उधर आई। सट्टमोंगराने भैंसपर वह वार किया कि उसकी अगली टाँग ऐसे टूट गई, जैसे कोई मूलीको तोड़ देता है। एक

काश्तकारकी १२५) रुपएकी भैंस बेकार हो गई। सट्टमोंगरा रुद्री रूप धारण किए मर-मिटनेको तैयार था। उसने समझ लिया था कि उसके बचनेकी कोई सूरत नहीं, सबसे बढ़िया बचाव आक्रमण था। इसीलिए जो सामने पड़े, जो उससे छेड़खानी करे और उसपर निगाह डाले, उसीपर वह पिल पड़ता।

दफ़ेदार खोजपर थे। भैंसका मालिक और मांसके शौक़ीन भाले लेकर सट्टमोंगराके पीछे पड़े; पर उसके निकट जानेका साहस किसीको न होता। अरहरके एक खेतमें होकर वह निकला कि सामने रास्तेमें उसे हरपालपुरका पोस्टमैन मिला। यमदूत सट्टमोंगराके शरीरमें प्रवेश कर चुका था; पर वह यमदूतसे भी लड़ रहा था। पोस्टमैनपर वह पिल पड़ा और चारों खाने चित्त उसे पलट दिया और उसके थैलेको चबा डाला, मानो मौतका वारण्ट उसीमें था। आगे बढ़कर वह झाऊमें जा बैठा। लोग जमा हो गए। दफ़ेदारके आनेपर कई बन्दूक़वाले भी आए। झाऊमें फ़ायर किया गया। सट्टमोंगरा एकदम उसमें से निकला और लोगोंपर टूट पड़ा। पहले दो फ़ायर खाली गए। तीसरा पीठमें लगा; पर सँभलकर वह खड़ा हुआ। एक आदमीको उसने दे मारा। इतनेमें ही सात भालोंने उसे बेकाबू कर दिया। वेदनासे वह क्रोधकी मूर्ति बना चिल्लाता रहा। वह रोना किसी कायरका रोना न था, वरन् एक सूरमाकी अन्तिम घड़ियाँ थीं। सट्टमोंगरा अपने चीत्कारमें मानो कहता था—"बोटी-बोटी कटि मरे औ तऊ न छाँड़े खेत, सूरा सोई।'

आठ-दस आदमी लादकर उसे ले गए। एक लक्कड़पर टँगे सट्टमोंगराकी थूथनी अब ऊपरकी ओर थी, मानो उसकी ग्यारह-इंची काँपें आकाशमें चन्द्रमाको खोज रही हों।

बया : अद्भुत

कथा : अद्भुत

कई महीनों तक पछुवाने पुरवाको परास्त ही नहीं किया था, वरन् उत्तरी भारतसे उसकी हस्ती तकको मिटा दिया था। नीलाम्बरसे सूर्यने भी ग्रीष्मकी पीठ ठोंकी थी। लूके चपेटोंसे घबराकर पुरवा हिन्द-महासागरमें जा छिपी, और महीनों तक उसने क्षीरशायी भगवानकी स्तुति की। प्रसन्न होकर भगवानने पुरवाको सहायताका वचन दिया, और उनकी सिफ़ारिशसे सुरराज इन्द्रने उसको अपनी सम्पूर्ण शक्ति सौंप दी। जीव-जन्तुओंका खून—रस—चूसनेवाली ग्रीष्मको पदच्युतकर पावस सुन्दरीके आधिपत्य स्थापित होनेकी घोषणा हो गई। पुरवाने सिहर-सिहरकर सबका आलिंगन किया। उस आलिंगनमें कितना मद था! कितनी स्फूर्त्ति थी! उस आलिंगनसे जीवन स्रवित होता था। मुरझाये हुए पौधे उससे कान करने लगे। इन्द्रकी सेनाने सूर्यकी उपेक्षा की, और बात-की-बातमें, न-जाने कहाँसे, आकाशमें चहल-पहल शुरू हो गई। श्वेत तम्बू तने। काले और भूरे यान पूर्वसे पश्चिमकी ओर दौड़ने लगे। कुछ ही देरमें उन्होंने सूर्यके तेजको क्षीण कर दिया, और उसको पावसकी शत्रु ग्रीष्मकी सहायता (abetment) के अपराधमें दिन-भरकी कैदका दण्ड मिला। पावस-आर्डिनेन्सके अनुसार तीन मास तक सूर्यकी निगरानी (Surveillance) का फ़रमान हुआ, और इन्द्रकी सवारी निकलते समय उसके लिए नजरबन्दीका दण्ड तो साधारण-सी बात थी।

आकाशमें मोरचे लग गये। चरखियोंपर तोपें चढ़ गईं। महाभारत

ठन गया। रणभेरी बजी, और समर-यात्राका गान प्रारम्भ हुआ गुड़ुम-गुड़ुम गुम-गूम। थोड़ी ही देरमें भयंकर गोलाबारी शुरू हुई। ऊपरसे तोपें गरजती थीं धररर और नीचेसे पावस-चारण — मयूर—दिगन्तव्यापी जयघोष करते थे। टप-टप और टपाटपकी चोटसे ग्रीष्मको सेनापर आक्रमण हुआ। दिन-भर यही क्रम रहा, और अन्ततः पावस सुन्दरीका सिक्का जम गया। नवीन सम्राज्ञीकी चारों ओरसे वन्दना होने लगी। प्रकृतिने हरी साड़ी पहनी। नदी-नद पूर्ण प्रवाहसे बहने लगे। सभीने अपने जामे बदले। ताल-तलैयां भरी हुई पावस-पुलिसके दस्ते पड़े मालूम होती थीं, ताकि ग्रीष्मके सहायकोंपर कड़ी नज़र रख सकें। नदियाँ मानो पेटरोल-ड्यूटीपर तैनात थीं और पेड़ोंको जड़ों तथा पृथ्वीके गर्भसे ग्रीष्मको निकाल बाहर करनेको आतुर थीं।

गाँवसे दो मीलकी दूरीपर, नदीके किनारे, बबूलके पेड़ोंपर, हवाके झकोरोंसे झूलते हुए सुनहरे जोंज लटक रहे थे। गिनतीमें कई दर्जन थे, और प्रत्येक लगभग फुट-डेढ़-फुट लम्बा था। पेड़को शाखासे पतली गुथी हुई रस्सीसे वे बँधे हुए थे। उन जोंजोंसे सटी हुई नीचेको लगभग दो इंच व्यासकी एक फूँकनी-सी लगी हुई थी, जो आठ-दस इंच लम्बी थी। इन फुँकनियोंमें से भूरी और पीली चिड़ियां निकलतीं और घुसतीं एवं अनवरत रूपसे चीं, चिर-चिरका शब्द करती थीं। हवामें तीरकी तरह उड़कर वे फूँकनी-विशेषकी ओर जाती थीं, और दरवाज़ेपर पहुँचकर पंख बन्द करके जोंजके भीतर चली जाती थीं। पंख बन्द करके ऊपर कूदनेमें वे ज़रा भी गलती न करती थीं। वे पक्षी बया थे, और लटकते हुए सुनहरे तथा भूरे फूँकनीदार जोंज उनके घोंसले थे।

सूफ़ियाने रंगको बड़े और सिर तथा छातीपर बसन्ती रंगसे रँगा छैला बया सजीव ज्योतिकी भाँति पेड़ोंपर उड़कर आते और अपनी गतिको बिना रोके ही संकीर्ण मार्गसे अपने घरके अन्तःपुरमें प्रवेशकर महराबपर बैठ जाते। दो छोटे-छोटे – पंख-विहीन – बच्चे अपनी चोंच खोलते, और बया बड़े अभिमान तथा प्यारके साथ उनकी चोंचोंमें चुग्गा रख देता था। उसको अपने बच्चोंसे बदलेकी भावना —बुढ़ापेमें सन्तानसे भोजन-प्राप्तिकी आशा – न थी। चुग्गा देनेके उपरान्त प्रसन्न माता-पिता अभिमानके साथ अपने बच्चोंकी ओर देखते और वायुके झकोरोंसे दोनों झूलते प्रतीत होते।

यों तो वे गिजगिजे पंख-विहीन बच्चे साधारण-से प्रतीत होते थे; पर धीरे-धीरे उनके आकारमें बड़ी उन्नति हुई, और उनके पंख भी निकले। वे दोनों भाई-बहन किसी भी बयाके जोड़ेसे सौंदर्यमें टक्कर ले सकते थे। उनकी शिक्षा भी शीघ्र ही प्रारम्भ हो गई, क्योंकि उनकी परिपक्व अवस्था जल्दी ही आ जाती है, इसलिए एक क्षण भी फ़ज़ूल नहीं खोना था। उन्हें यह जानना था कि उनके लिए कौन-सा भोजन श्रेष्ठ है और उसकी प्राप्ति कहाँ एवं कैसी हो सकती है। किस प्रकार मनुष्योंके खेतसे अन्न-कण लिये जाते हैं, मनुष्यसे कैसे बच जाता है, उड़ते हुए पतंगों को कैसे पकड़ा जाता है और ज़मीनपर चलनेवाले कीड़े-मकोड़ोंको कैसे दबोचा जाता है--इत्यादि सब पाठ उन्हें सीखने थे। आत्म-रक्षाका पाठ भी कोई कम आवश्यक न था। बया-जातिको बाज़से दिनमें और उल्लूसे रातमें कैसे सावधान रहना चाहिए; पेड़पर बिना आहटके रेंगनेवाले साँप तथा क्रूर बन्दरोंसे और धरातलपर निर्दोष चिड़ियोंको निगलनेवाले साँपसे उन्हें कैसे बचना चाहिए—ये सब समस्याएँ उनके पाठ्यक्रममें थीं। और

सबसे अनोखी बात जो उन्हें सीखनी थी, वह थी उस अद्भुत कलाके प्रारम्भिक ज्ञानकी प्राप्ति, जिससे बया-जातिको सर्वोत्कृष्ट शिल्पकार पक्षी कहा जा सकता है।

चिरौटा और उसकी बहनको अपनी शिक्षाके लिए काफ़ी अवकाश था, क्योंकि उनका जन्म मौनसून—वर्षा-ऋतुमें हुआ था। उनकी व्यावहारिक शिक्षा उस दिन प्रारम्भ हुई, जब बहुत समझाने-बुझाने तथा लाड़-प्यारके बाद बड़ी उत्तेजनाके साथ चिरौटे और उसकी बहनको चोंचसे धक्के देकर जोंज के महराबपर बैठाया गया। पहले तो वे वहाँ बैठने और लटकनेमें काँपे और डरे। पीछे शीघ्र ही उनका आत्म-विश्वास बढ़ा और अपनी सफलता पर उनको अभिमान भी हुआ; पर यह सफलताजन्य अभिमान उस आनन्द और प्रसन्नताकी तुलनामें कुछ भी नहीं था, जो उन्होंने फूँकनी-जैसे द्वारसे निकलकर पहले-पहल उड़कर महसूस किया। अपने पंखोंको फैलाकर चीं-चीं मा-मा कहते हुए संशय और सफलतासे विभोर उड़कर वे पृथ्वीपर बैठे। उनके चिन्तित माता-पिता उनके पास इधर-उधर उड़कर चट-चट-चट करते हुए उन्हें शिक्षा और आदेश देते थे। उस उपनिवेशके अनेक माता-पिता अपने बच्चोंको प्रथम उड़ानकी शिक्षामें उसी प्रकार व्यस्त थे।

एकदम आतंकसूचक सिगनल—चिड़ियोंका भयसूचक शब्द—चट-चट-चटर्र् हुआ। छोटे पक्षियोंका झुण्ड तेजीसे आकाशमें उड़ा, और साँपने अपना घातक सिर ऊपरको उठाया। निराशा और क्रोधयुक्त दृष्टिसे उसने पक्षियोंकी ओर देखा। वह चुपचाप घासमें सरककर आ रहा था। घास के हिलनेसे बया पक्षी उसके आगमनको समझ गये थे। कुछ न पाकर साँप गुँजलकें मारकर कुछ देरके लिए बैठा और फिर पक्षियोंको कोसता

"पहले तो वे वहां बैठने और लटकनेमें कांपे और डरे। पृ० १५०"

हुआ अपने भोजनकी तलाशमें चला गया। वह बड़ा ही विषैला था। जैसे ही सर्प वहाँसे रेंगा, पक्षियोंने अपने बच्चोंको समझाया कि वे उसे खूब पहचान लें और उससे तथा उसकी जातिवालोंसे सर्वदा सचेत रहें।

आधे आश्विनके होते-होते, जब आश्विनकी गरमीसे घबराकर पृथ्वीने पिये हुए पानीको भापके रूपमें लौटाना प्रारम्भ किया, तब चिरौटा और उसकी बहन अपने भोजनके लिए स्वावलम्बी हो चुके थे। अपने सजातियोंके साथ वे झुण्डमें उड़ते और किसानोंके खेतोंसे अन्नके दाने खाते। उड़ते हुए कीड़ोंके लिए वे चलती-फिरती कब्र थे। कीड़ों और चुँडियोंकी संख्याको भी वे कम करने लगे। दीमकको भी वे बड़े स्वादसे खाते थे।

बाल्य काल ही में एक दिन चिरौटेने अपनी शक्तिका प्रदर्शन किया था। पहले दिनकी उड़ानके बाद चिरौटा और उसकी बहन दोनों एक शाखापर बैठे थे कि एक बड़ा चींटा उसकी ओर बढ़ा। पहले तो चिरौटा कुछ घबराया और चीं-चीं करता हुआ हटा; पर उसकी बहनने जो चींटेके मार्गसे काफ़ी दूर थी, उसे प्रोत्साहित किया। अन्तमें साहस करके उसने उसपर चोंच मारी। एक ही चोटमें उसका खात्मा कर दिया। इस विजयसे उत्साहित होकर चिरौटेने कीड़े-मकोड़ोंसे युद्ध छेड़ दिया। अब उसे अन्नकी अपेक्षा शिकारमें ही अधिक आनन्द मिलता था। उपनिवेशके बड़े-बूढ़ोंने उसे कई बार चेतावनी दी कि वह पृथ्वीपर रहनेवाले शत्रुओंसे सावधान रहे; पर युवावस्थामें अदूरदर्शिता स्वाभाविक होती है, और उमंग तथा जोखिमका काम करना युवावस्थाका एक मुख्य चिह्न है। वह युवा चिरौटा उस स्वभावसे शून्य न था, परन्तु शीघ्र ही उसे अपनी

गलतीपर पश्चाताप करना पड़ा। एक दिन वह तीव्रगामी चींटियोंकी पंक्ति से भिड़नेमें व्यस्त था। फुदककर कभी इधर बैठता, तो कभी उधर। कभी इस ओर मोरचा जमाता, कभी उस ओर पहलू बदलता। उसकी चोंचकी चोटोंसे चींटियोंकी पंक्ति टूट रही थी, और उधर वह विषैला सांप उसकी ओर बड़ी सावधानीसे बढ़ रहा था। जब सर्प मारकी दूरीपर आया, तो उसने अपना सिर पीछेको सिकोड़ा और अपने फनको कुछ हिलाते हुए झपट्टा मारनेके आसनपर किया। चिरौटेका अन्त समय आता मालूम दिया। ठीक उसी क्षण उसकी बहनने उसका बचा लिया। बहुत देर तक उसे अपने सजातीय झुण्डमें अपना भाई दिखाई नहीं पड़ा था। उसकी तलाशमें वह इधर-उधर उड़ रही थी। अचानक उसकी नज़र सांपके घातक आसनपर पड़ी। साथ ही अपने भाईको उसने चींटियोंसे युद्धमें व्यस्त देखा। एकदम उसने चट-चट करके आतंक-सिगनल दिया। सचेत होकर चिरौटा एकदम ऊपरको उड़ा। दूसरे ही क्षण उसी स्थानपर सांपका फन धमसे गिरा, मानो किसीने भारी कोड़ा उस जगह मारा हो। भयभीत चिरौटा पासके वृक्षकी शाखापर जा बैठा, और बादको सांपके ऊपर मँडराकर उसने उसको न जाने क्या-क्या सुनाया। वार खाली जानेसे खिसियाता हुआ सांप चुपचाप वहीं पड़ा-पड़ा अपनी जीभको लपर-लपर करते हुए चिरौटेकी ओर देखता रहा। थोड़ी देर बाद वह विषैला सांप अपनी असफलताकी झेंप मिटाता-सा उपेक्षाकी गतिसे किसी दूसरी जगह चला गया।

अन्य बया पक्षियोंने चिरौटेकी बड़ी भर्त्सना की। वे इसके बाल-बाल बचनेपर स्वयं घबराये हुए थे; परन्तु थोड़ी देर बाद वे अपने-अपने काममें लग गये। इस घटनाके बाद बया चिरौटा सांप-जातिसे बड़ी घृणा करने

लगा। जब कभी वह किसी साँपको अपने शिकारपर जाते देखता, तब वह उसके ऊपर मँडराकर और चिल्ला-चिल्लाकर सबको सचेत कर देता। परिणाम-स्वरूप साँपको कुछ न मिल पाता।

उन बबूलोंकी जड़ोंमें कई छिद्र थे। उनमें एक दूसरे प्रकारका साँप रहता था, जिसको 'कौड़िया गड़ायता' (krait) कहते हैं। वह इतना भारी तो न था, जितना धोबिया ('रसल्स वाइपर'); पर कम खतरेकी चीज वह भी न था, क्योंकि पेड़पर चढ़कर वह पक्षियोंके अंडों और छोटे बच्चोंको खा जाया करता था। पक्षी अपने अंडों और बच्चोंको खाते देखकर उसपर मँडराते और एक प्रकारसे उससे दयाकी प्रार्थना भी करते; पर उसके सामने उनकी एक न चलती। मगर बयाके घोंसलेकी बनावटके कारण उसकी पहुँच बयाके अंडों तथा बच्चों तक न होती थी।

चिरौटा उस कौड़िया सर्पको पहचानता था और उससे घृणा भी करता था। जब कभी वह शिकारको जाता, तब चिरौटा उसकी भोजन-प्राप्तिमें बाधक होता। चिल्लाकर और उसके ऊपर मँडराकर वह उसके शिकारको सचेत कर देता। बिगड़कर कौड़िया साँप घृणा और बदलेकी फुसकार मारता; पर वीर चिरौटा उसकी धमकियोंकी कुछ परवा न करता।

वर्षाके उपरान्त शरत्काल आया। रातकी ठंडके कारण सब पक्षी पेड़ोंपर छिपकर सोने लगे। बयोंके घोंसले टूटे-फूटे पेड़ोंपर लटक रहे थे। उनमें अब बया न रहते थे। बच्चे, जिनके लिए वे बनाये गये थे, अब स्वावलम्बी होकर अपना गुजारा स्वयं करते थे। हमारा परिचित चिरौटा प्रायः अन्य चिरौटोंके साथ रहता था। कभी-कभी वह अपनी

बहनके साथ भी रह जाता था ; पर सबसे अधिक उसे अकेला रहना ही पसन्द था। वह अपने दैनिक भोजनकी खोजमें लगा रहता। औरोंकी उसे अब विशेष परवा न थी। औरोंको भी उसकी चिन्ता न थी। स्वयं उसका पिता एक बाज़का शिकार हो चुका था। इसी प्रकार उसके कई अन्य सजातीयोंका भी अन्त हुआ था। इन सब घटनाओंको चिरौटेने एक दार्शनिककी भांति देखा और सहा, क्योंकि जंगलमें यदि कोई चीज़ अपना काम करती रहती है, तो वह है मौत। कीड़ोंका उसकी चोंचमें आना मौतके मुंहमें आना था, और जो उससे बचते थे, उनमें से बहुत मकड़ीके जालोंमें फंस जाते थे। चींटी जो चिरौटेकी नज़र बचाकर पत्तेके नीचे छिप जाती थी, वह छोटेसे गोलाकार गड्ढेमें गिरकर अपनी जान गँवाती थी। उस छोटेसे एक इंच गहरे गड्ढेमें गिरकर उसका निकलना असंभव था। गिरते ही धूलमें छिपा चोर (Ant-lion) ऊपरको उछलता और उसको पकड़कर धूलमें जा बैठता।

चिरौटेको उस नदीके किनारे वे दृश्य देखने न पड़ते थे, जो उसके सजातीयोंको तराई और मध्य-भारतमें देखनेको मिलते हैं। वहां शाखापर बैठे हुए बया पक्षी मदमाती चालसे आते हुए शेरको देखते हैं और अपने भोजनपर जुटे हुए मृगराजकी छटा निहारते हैं। न उस चिरौटेको बघेरेके शिकारका ही कुछ पता था और न उसने भालूको शहदकी मक्खियोंका छत्ता तोड़ते ही देखा था। ये सब दृश्य तो घने जंगलोंके हैं। पर वहां भी इन दृश्योंसे बयाका बाल भी बाँका नहीं होता। शेर और बघेरेसे आदमी और अन्य पशु डरें, बयाको क्या डर। बन्दरकी धूर्ततासे उसे अवश्य सचेत रहना पड़ता था, सो बबूलपर बन्दरकी दाल ही नहीं

गरुती। हाँ, बनबिलारसे उसे डर था। आकाश-मार्गसे सर्वदा आतंक था कि कहीं बाज़ झपट्टा न मार बैठे, इसीलिए उसे बड़ा सचेत रहना पड़ता था।

शीतकालमें चिरौटा और उसकी बहन खूब बढ़े। प्रतिदिन वे जल्दी सो जाते और जल्दी उठ बैठते। जब ग्रीष्मकालकी वायुने उनको गुदगुदाया और बड़े दिन तथा छोटी रातने ग्रीष्मकालके आगमनकी पूर्व घोषणा की, तब दोनों भाई-बहन पूर्णतया परिपक्व हो चुके थे। शीघ्र ही चिरौटेकी सूफ़ियानी पोशाकने वसन्ती रंग धारण किया। प्रकृतिने चिरौटेको दूल्हेकी पोशाकसे विभूषित कर दिया। उसे यह भी महसूस हुआ कि उसकी बहन अब अन्य चिरौटोंमें अधिक लोकप्रिय हो गई है। स्वयं उसको अपनी बहनकी सखीके प्रति खिंचाव-सा प्रतीत होने लगा और उसमें वह असाधारण आकर्षण देखने लगा। सुविधाके लिए हम इसे चिरैया कहेंगे। जान-पहचानकी और चिरैयोंपर दृष्टि डालकर उसने निश्चय किया कि वह अपनी बहनकी सखीको ही अपने प्रेमका भाजन बनायेगा। इसके लिए वह उसके सामने अकड़कर चलता और पर फुलाकर उसको रिझाता, ताकि उसको मालूम हो जाय कि उससे बढ़कर उसे और कोई साथी न मिलेगा।

प्रेमका पंथ प्रत्येकके लिए कण्टकाकीर्ण है। उसे शीघ्र ही भान हुआ कि एक दूसरा चिरौटा भी उसकी प्रेयसीको अपनानेकी फ़िक्रमें है। एक दिन उसके सम्मुख ही उसने प्रणय-प्रदर्शन किया। चिरौटेको भला यह कब सह्य था! आगे बढ़कर उसने युद्धकी घोषणा की और अपनी प्रेयसीके सामने ही अपनी शक्तिका परिचय देना चाहा। दोनों जवान जुट गये।

ऊपर हवामें उड़कर चोंचों और पंखोंकी मार करते हुए वे नीचेको आते, पेड़ोंकी शाखोंमें होकर ऊपरको उड़ते और फिर नीचेको आते। ऐसी पैंतरेबाज़ीसे उनका खूब युद्ध हुआ। अन्तमें विजय-श्री हमारे चिरौटेके ही हाथ रही। उसने बड़े गर्वके साथ अपनी प्रेयसीको बधाइयोंको स्वीकार किया; किन्तु इसके मानी यह न थे कि वह उसकी सहगामिनी भी बन गई थी। प्रेमीको युद्धके अतिरिक्त अपनी प्रेयसीके हृदयपर भी विजय प्राप्त करनी पड़ती है, प्रणय भी करना पड़ता है, इसलिए आसक्त चिरौटेने एक वृक्षकी शाखापर उसके निकट बैठकर उसकी स्तुति प्रारम्भ की और
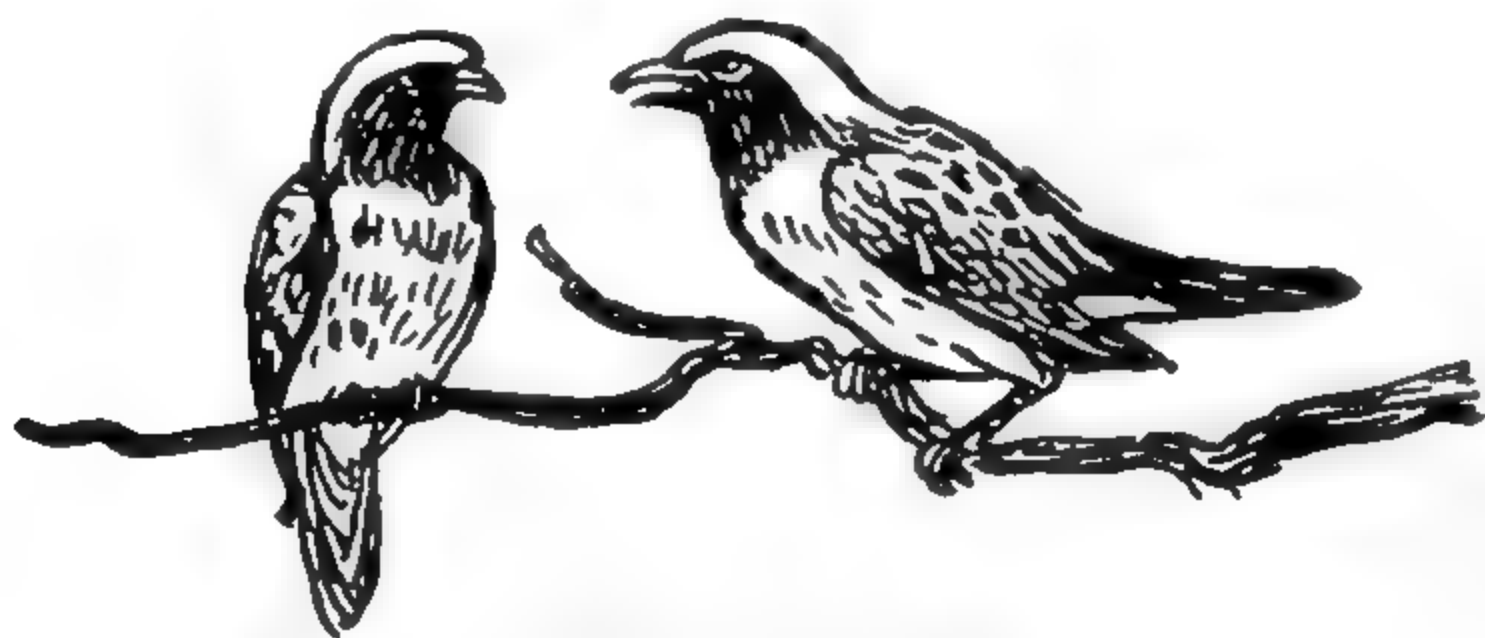
"अपनी गान-विद्याका भी परिचय दिया।"

अपनी गान-विद्याका भी परिचय दिया। अन्तमें लज्जाशील चिरैयाने अपनी स्वीकृति दे दी। अपने प्रतिद्वन्द्वीपर विजय प्राप्तकर उसको इतनी प्रसन्नता न हुई थी, जितनी अपनी प्रेयसीके हृदयपर विजय प्राप्त करके हुई। अपनी इस विजयके समाचारको सुनानेके खयालसे वह सारे उपनिवेशमें इधर-उधर उड़ा; पर किसीने उसकी कुछ न सुनी। अन्य चिरौटे भी तो

उसी क्रियामें लगे हुए थे तथा दूसरी चिरैयां भी अपने लज्जापूर्ण स्वरोंमें आह्लादित हो रही थीं ; पर कोई किसीकी सुनता न था ।

भावी दूल्हेको अपनी दुलहिनके लिए और भावी सन्तानके लिए घरकी चिन्ता करनी पड़ती है । इस कारण बया चिरौटा भी बहुत व्यस्त था । वह उपयुक्त वृक्षकी तलाशमें, जिसपर अपना घोंसला बना सके, इधर-उधर दौड़-धूप करने लगा । जहाँ कहीं वह जाता था, अपने प्रणयकी सफलताका समाचार सब जंगलको सुनाता था । वह कौड़िया सर्पके ऊपर उड़ा, जो गुँजलक मारे नदीके किनारेवाले छेदमें से आधा बाहर पड़ा था । कौड़ियाके ऊपर उड़कर जाते हुए चिरौटा कहा करता—"ऐ-धूर्त ! मेरी प्रसन्नतामें प्रसन्न हो । मेरा विवाह-समय अब बिलकुल निकट है । तेरे ऊपर हँसनेके लिए अब छोटे पक्षी और होंगे ।" कौड़ियाके निवास-स्थानकी ऊपरवाली शाखापर बैठकर चिरौटा कौड़ियाके अर्थहीन क्रोध और फुसकारसे प्रमुदित हुआ करता और मानो कहा करता—"ऐ मेंढक खानेवाले ! तू जानता है, मैं तेरी ओर क्यों देखा करता हूँ ? नहीं जानता, तो ले, मैं बता दूँ । देख, इसी पेड़पर तेरे छेदके ऊपर मैं अपना घर बनाऊँगा, जिससे मेरे बच्चे भी तेरी हँसी उड़ाया करें ।" और ठीक कौड़ियाके छेदके ऊपर बबूलकी उस शाखामें जो नदीकी ओरको सबसे आगे थी, चिरौटे और उसकी सहगामिनीने अपना घोंसला बनाना प्रारम्भ किया । कौड़िया उनको ऊपर उड़ते देखता, और वे दोनों बिना उसे चिढ़ाये उधर होकर कभी न उड़ते । कौड़िया भी इतना खीझा कि वह बदला लेनेका विचार करने लगा ।

बया पक्षी झुण्डमें रहा करते हैं । इस युवा जोड़ने अपने परिचितोंको

अपने घोंसला बनानेकी सूचना दे दी। वहांपर कुछ ही दिनोंमें उनका उपनिवेश बस गया। इस उपनिवेशके कुछ पक्षी सुस्त भी थे, जिन्होंने पिछले वर्षके छोड़े हुए घरोंकी मरम्मत करके ही सन्तोष किया ; पर हमारे चिरौटे और उसकी सहगामिनीने किसी भी उतरी हुई चीजमें हाथ न लगाया, और ईख, मूँज तथा अन्य घासोंसे उन्होंने घर बनानेकी सामग्री लानी प्रारम्भ कर दी। चिरौटा मूँज या घासके पेड़ तक उड़कर जाता और एक मजबूत पत्तेको चुन लेता। फिर अपना सिर नीचा किये हुए पंजोंसे उससे चिपट जाता और आवश्यक चौड़ाईका खयाल रखते हुए पत्तेको चोंचसे चीरता। पीछे यथेष्ट लम्बाईका आन्दाज रखकर वह पत्तेके दोनों सिरोंको काट देता और उसे लेकर चिरैयाके पास आता। अनन्तर दोनों मिलकर घोंसला बनानेमें लगते। बुननेकी भावना बया पक्षीमें इतनी प्रबल होती है कि यदि उसको पिंजड़ेमें बन्द कर दिया जाय और उसमें रुई, घास-फूस तथा अन्य चीजें डाल दी जायँ, तो वह पिंजड़ेकी तीलियोंके आर-पार ऊन, रुई और तिनकोंको सटाकर बुन देता है। नवाब वाजिदअली शाहने अपने पले हुए बयोंके बड़े पिंजड़ोंमें सोनेके बारीक तार डलवा दिये थे। कहते हैं, बयोंने उन्हींसे बहुत बढ़िया जोंज तैयार किये। हमारे चिरौटे और चिरैयाने पहले बबूलकी शाखासे जोंजका बन्द लगाया। वही उस घरकी नींव थी। बन्दसे नीचे गुथी हुई-सी रस्सी लटकने लगी। जब वह आठ-दस इंच लम्बी हो गई, तब वे दोनों पंजोंके सहारे उसपर लटककर चोंचसे घोंसला बनाने लगे। हवामें उनका अधबना घोंसला लटकता था, और वे दोनों अपने काममें व्यस्त थे। जब घासका टुकड़ा समाप्त हो जाता, तब उनमें एक दूसरेके

चोंच मारता। वह उड़कर और सामग्री—घास और मूँजके पतले टुकड़े—लेने चला जाता। बारी-बारीसे कभी चिरौटा जाता और कभी चिरैया। लम्बी रस्सीके बन जानेपर घोंसलेका बनना प्रारम्भ हुआ। पहले-पहल घोंसलेका आकार बड़े नीबूके समान था। उसकी बनावटके विषयमें चिरैयाकी सम्मति ही सर्वोपरि रही। इस निश्चयके उपरान्त उन्होंने अपने घोंसले—जौंजके दो भाग-से किये। घोंसलेके बीचसे एक ओरको—अण्डे रखनेके कोषसे फूँकनीके समान द्वारके बीच उन्होंने एक महराब-सा बनाया। यह महराब पहले माता-पिताके लिए और बादको बच्चोंके लिए बैठनेका स्थान था। एक प्रकारसे वह स्थान उस कुटुम्बका बड़ा कमरा था, जहां माता-पिता और बाल-बच्चे बैठ सकते थे। अब तक तो चिरौटा और चिरैया दोनों ही सामग्री लाते थे; पर जैसे ही महराब बन गया, वैसे ही सामग्री लाना और घोंसलेके बाहरी भागके बनानेका भार चिरौटेपर पड़ा। अपनी चोंचमें घासके टुकड़े लेकर वह आता, अधबने घरपर अपने पंजोंके सहारे लटक जाता और अपनी चोंचसे वह बाहरसे उसे पिरो देता। चिरैया उसको भीतरसे पकड़ लेती और उचित स्थानपर उसे फिर भीतरसे बाहरको पिरो देती। घोंसलेके मुख्य भाग बननेमें काफी समय लगा। इस प्रकार अंडे रखनेका भाग और द्वारका निर्माण हुआ। पर बारीकी और कलापूर्ण काम चिरैयाको अभी करना बाकी था। उसने अण्डे रखनेके स्थान—प्रसूतिका-गृह—को बहुत ही कोमल—रेशमसे भी अधिक कोमल—बनाया।

जब चिरैया घरके भीतरी भागके सँभालनेमें लगी थी, तब चिरौटेको काफी अवकाश मिला। अब वह बाहर बैठा रहता। वह यों ही बाहर

बैठा अपने घोंसलेको वायुके झकोरोंसे इधर-उधर हिलते देखता था कि भीतरसे घरकी मालिकिनने उसकी भर्त्सना की और कहा—"तुमने तो अभीसे काम बन्द कर दिया और निखट्टू बनकर बैठ गये। वायुके झकोरोंसे घोंसला चारों ओरको झूमता फिरता है। ऐसेमें बताओ, मैं घोंसला कैसे ठीक करूँ। तुमसे यह भी नहीं होता कि इन झटकोंको किसी प्रकारसे बन्द करा दो।" उपनिवेशमें घोंसला बनानेवाली सभी चिरैयोंने अपने पतियोंकी इसी प्रकार भर्त्सना की। चिरौटे तथा अन्य भावी पिताओंने इस आदेशको समझा। उन्होंने उस कठिनाईको दूर करनेकी ठानी। चिरौटा एकदम जमीनपर उतरा। गीली मिट्टी अपनी चोंचमें लेकर उड़ गया। कई बार उसने ऐसा किया, और इस प्रकार घोंसलेके भीतर लगभग डेढ़ छटाँक मिट्टी पहुँच जानेसे झुकाव ठीक हो गया। वह फिर सीमित दिशामें ही इधर-से-उधर झूमता। अन्तमें चिरौटे और चिरैयाने लगभग दो इंच व्यासका सात-आठ इंच लम्बा द्वार बनाया। इस प्रकार उन्होंने अपने रम्य गृहका निर्माण किया। घर बना चुकनेके अनन्तर पेट भरके उन्होंने कीड़े-मकोड़े खाये और कौड़ियाकी खिल्ली उड़ाई।

वर्षाऋतुका फिर साम्राज्य हुआ। उस कोमल घोंसलेमें चिरैयाने दो अंडे रखे। जब मेंहकी बौछार और वायुके थपेड़ोंसे कौड़िया साँप और उसके कुटुम्बी घबराये हुए थे, तब चिरैया और चिरौटा अपने घोंसलेमें आनन्दसे बैठे थे। एक दिन तो इतना पानी बरसा कि कौड़ियाके बाल-बच्चे सब बह गये। कौड़ियाने पासके पीपलपर चढ़कर अपनी जान बचाई। चिरौटे और चिरैयाने उसको वहाँ भी न छोड़ा। पेड़से उड़कर वे उसके आसपास मँडराते और इस विरोध-प्रदर्शनमें उनके अन्य सजातीय भी शामिल हो जाते।

बयोंके उस उपनिवेशमें कुछ चोर भी आते थे। वे चोर गिलहरियाँ थीं, जो अपने घोंसले बनानेके लिए बयोंके घोंसलोंको काटकर नीचे गिरा देती थीं और उस घास-फूसको अपने घोंसले बनानेके काममें लाती थीं। गिलहरियाँ उन्हीं घोंसलोंको ऊपरसे काटती थीं, जो नदीके ऊपरवाली शाखाओं को छोड़ अन्य शाखाओंमें लटक रहे थे। हमारे चिरौटे और चिरैयाका घोंसला ठीक नदीकी धारके ऊपर होनेसे गिलहरियोंके मतलबका न था। यदि उसे काटकर गिरातीं भी, तो वह पानीमें बह जाता। जितने भी घोंसले पानीके ऊपर थे, वे सब सुरक्षित थे। गिलहरियाँ जब ऊपर एकाध घोंसलेको काटकर गिरातीं, तो उनमें के अंडे-बच्चे गिर पड़ते और कौड़ियाँ उनको खा जाता।

चिरैया और चिरौटा कौड़ियाको अपमानित करते रहे। अन्तमें उसने बदला लेनेकी ठानी। उसने अभी तक बयोंके घोंसलेपर हमला करनेका साहस नहीं किया था; पर घृणा और भूखने प्रेरित होकर उसने असम्भवको सम्भव करनेकी ठानी। इस बीच चिरौटे और चिरैयाके घोंसलेमें अंडोंसे दो बच्चे भी निकल आये थे। कौड़ियाको यह बात मालूम हो गई थी, क्योंकि चिरैया और चिरौटेने कौड़ियाकी भर्त्सना करनेमें अधिक उत्तेजना प्रकट की थी।

कौड़ियासे अब न रहा गया। वह पेड़पर चढ़ा और सीधे चिरौटेके घोंसलेकी ओर बढ़ा। एकदम उत्तेजित पक्षियोंका झुण्ड उसके चारों ओर उड़ा। अपनी बोलीमें उन्होंने विरोध, चेतावनी, विनय और गालियाँ— सभी कुछ सुनाए। पंख फैलाकर वे शाखासे ऊपर-नीचे उड़ने लगे; पर कौड़ियाने तनिक भी परवा न की। वह घोंसलेके ठीक ऊपर जाकर शाखा पर जा बैठा। अब वह यह सोचने लगा कि किस प्रकार घोंसलेमें घुसा

जाय। घुसनेमें उसे बड़ी कठिनाई मालूम हुई। घोंसलेमें घुसनेके लिए उसे शाखासे नीचे लटकना पड़ेगा और घोंसलेवाली रस्सीमें तथा उभरे हुए महराबमें गुंजलकें मारनी होंगी, तब नीचेसे ऊपरको संकीर्ण शुण्डाकार मार्गमें जाना पड़ेगा। ज़रा-सी चूकसे वह नीचे उमड़ती हुई नदीमें गिर सकता था। पर महीनोंकी ईर्ष्याने कौड़ियाको अग्रसर होनेके लिए बाध्य किया, इसलिए उसने शाखामें गुंजलकें मारीं और नीचेको लटकना प्रारम्भ किया। घोंसलेके भीतर बेचारी चिरैया सहमी-सिकुड़ी अपने बच्चोंको पंखोंमें छिपाये बैठी थी, क्योंकि उसको अपने बाहरी मित्रोंके विरोध-सिगनलसे और घोंसलेपर साँपके लटकनेसे कौड़ियाके आगमनका पता चल गया था। उसने अपने अनुपस्थित पतिको चट-चट करके सहायताके लिए पुकारा। कौड़िया साँप ज्यों ही रस्सीसे लिपटा, घोंसला बेहद हिला। जब चिरैयाने अपने बच्चोंकी मौतको अति निकट आए देखा, तो उसका भय साहसमें बदल गया। वह उनके रक्षार्थ घोंसलेसे बाहर निकली। पागलकी भाँति वह उसके चारों ओर चक्कर लगाती और अपने भयंकर शत्रुपर चोट करनेका अवसर ताकती जाती थी। कौड़ियाने उसका तनिक भी खयाल न किया। इतने ही में चिरौटा भी आ गया। तीव्र स्वर और द्रुत गतिसे उसने भी चिरैयाका साथ दिया। उन्मत्त होकर चिरौटा कौड़ियाके चारों ओर उड़ने और अवसर पाते ही उसपर चोंचसे प्रहार करने लगा। चिड़िया और चिरौटेको इस प्रकार प्रत्याक्रमण करते देख कौड़िया अपने कार्यमें अब उतना सावधान न रह सका। वह भी कुछ उत्तेजित हो गया। शाखा और रस्सीपर की गुँजलकोंको ढीला करके उसने चिरौटेपर ऐसा भयंकर प्रहार किया कि ढीली गुँजलकें खुल गईं, और वह गड़पसे नीचे नदीमें जा गिरा।
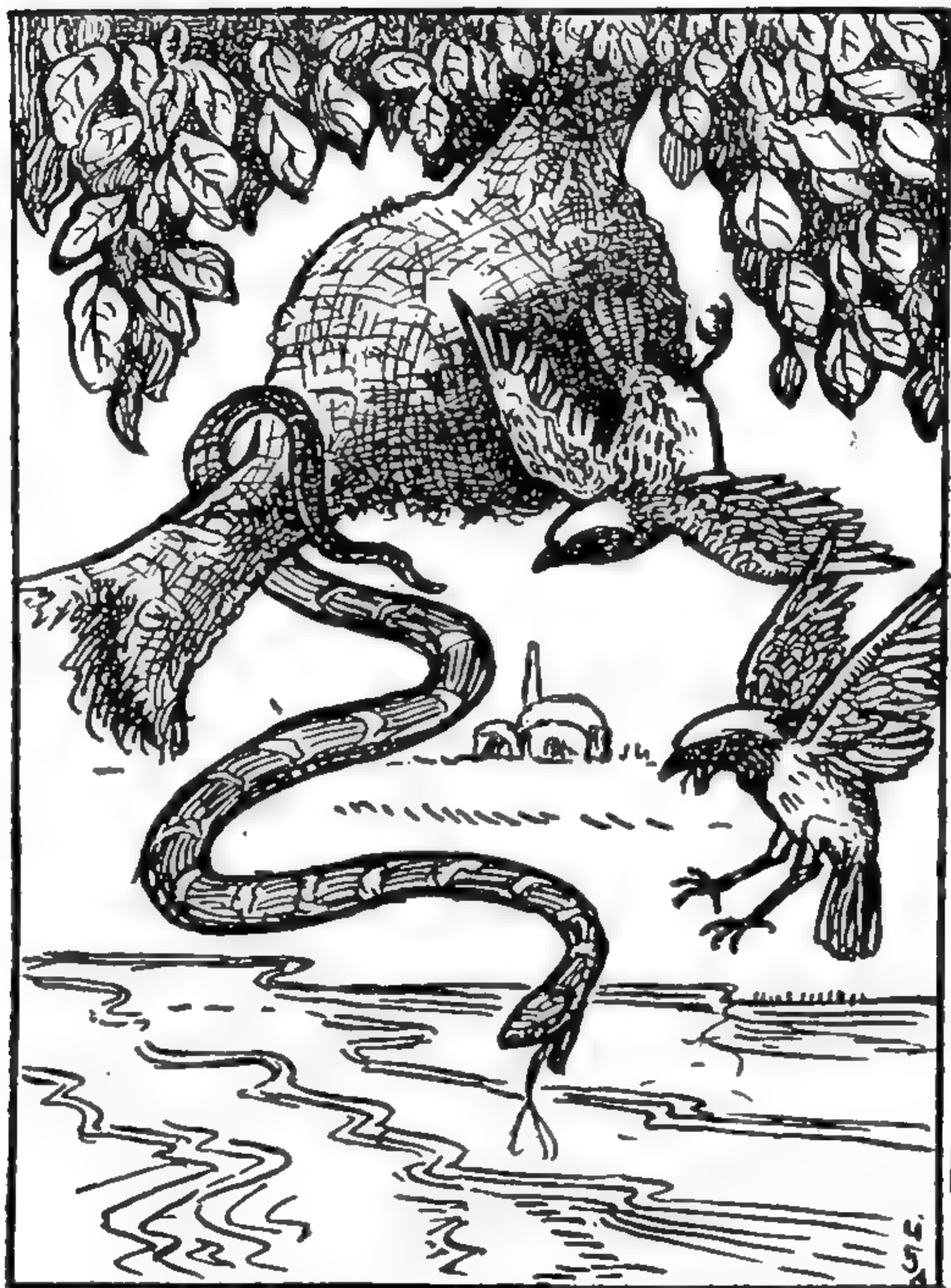
"उसने चिरौटेपर ऐसा भयंकर प्रहार किया कि ढीली गुँजलकें खुल गईं"

घबराया और झल्लाया हुआ कौड़िया सांप धारासे बाहर निकलकर आया ही था कि उसको सामने एक न्यौला दिखाई पड़ा। अब तो कौड़ियाकी सिट्टी गुम हो गई। बातकी बातमें न्यौलेने उसको आ दबोचा, और वह खानेके लिए ज्वारके खेतमें उसे घसीट ले गया।
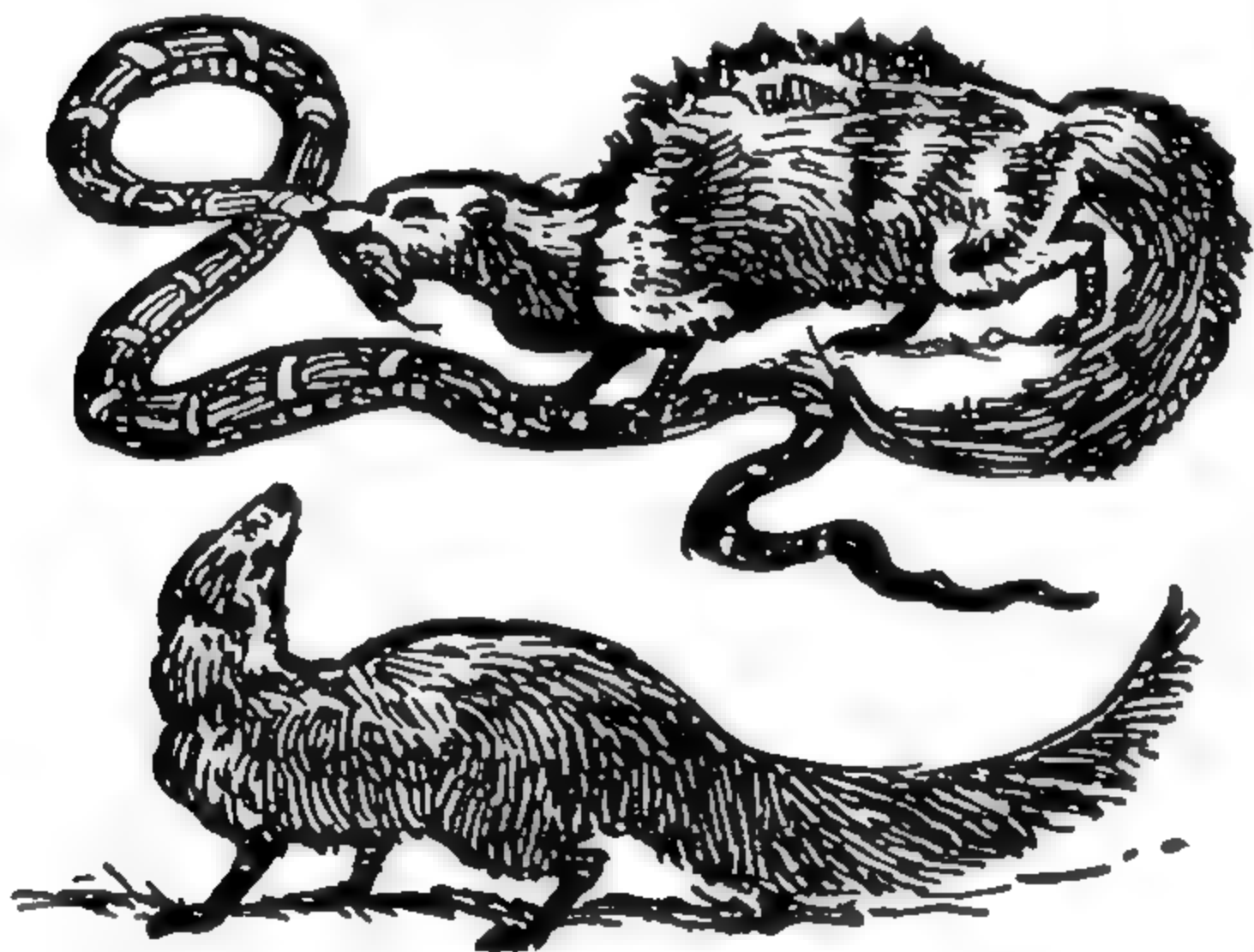
"बातकी बातमें न्यौलेने उसको आ दबोचा"

बया, चिरौटा और चिरैया सुखपूर्वक रहने लगे। उन्होंने अपने बच्चोंको ठीक वैसी ही शिक्षा दी, जैसी कि उनको मिली थी। कई वर्षों तक उनके सुखी गार्हस्थ्य जीवनका क्रम जारी रहा।

* * * *

मौत जीवनकी एक आवश्यक अवस्था है। एक दिन जब चिरौटा शीतकालमें बैठा धूप ले रहा था, तब पीछेसे एक बाजने झपट्टा मारा, और अपने चंगुलमें दबोच उसे उठा ले गया।

सियार : सयाना

सियार : सयाना

होलीके क़रीबके दिन थे। शीत सिमट-सुकड़कर क्षीण हो रहा था। रबीकी फ़सलसे भरे खेत हँस रहे थे। सुहाग-भरी चाँदनी रात अपने सौन्दर्यसे भूतलको देदीप्यमान बना रही थी। शीतल चन्द्रिकाने कुछ ऐसा जादू-सा फैला रखा था कि चलाचल प्राणियोंमें स्फूर्तिकी बिजली दौड़ रही थी। बसन्ती जामेमें खड़े अनेक वृक्ष झूम-से रहे थे। स्नेह-पगे तीतर टीलो-टीलो-पटीलोकी ध्वनिमें मस्त थे। बछड़ेको देखकर जैसे गाय पसुरा जाती है, वैसे ही वसन्त-रूपी बछड़ेको देखकर प्रकृति-रूपी धेनु पसुरा गई थी। नीम और आमके पेड़ कंटकित-से हो गये थे—कोमल पत्तियाँ कठोर शाखोंको बेधकर बाहर निकल रही थीं। किसानोंके गलेसे स्वर फूट रहा था—'बिरहुल अल-कन्द बछेरिय रे!' ढोलककी ढब-ढब रातके शीतल वातावरणमें गीतकी स्वर-लहरीको रहस्यमयी बनाती हुई दूर तक पहुँचा देती। चाँदनी रातमें नील-गाय, सुअर, हिरन, खरगोश और गीदड़ इधर-उधर घूमते किसी दूसरे लोकके प्राणी प्रतीत होते, मानो वे आकाशसे चन्द्र-किरणोंके सहारे भूतलपर उतर आए हों।

अभी आधी रात नहीं हो पाई थी कि कटियारी रियासतके गाँव-बरे-गाँव—के जंगलके करीब एक खेतकी मेड़पर एक सियार (गीदड़) ने अपनी थूथन ऊपरको की और उसे घुरईनुमाकर उसने आवाज़ की—"हू ४ (चारमात्रा) ए!" गीदड़की 'हू ४ ए' सुनकर आसपासके गीदड़ोंने ताईद की—'हू२ए हू२ए हू२ए!' कुछ देर तक हू२एके स्वर चारों ओर फैल गये;

पर जंगलके भीतर एक झाड़ीमें कुण्डा (रामगंगाकी एक शाखा) की ओर एक सियारिन धसक्को अपने तीन बच्चोंको चाट रही थी। बच्चोंमें दो नर थे और एक मादा थी। सबसे पहले जो बच्चा जन्मा था, वह अधिक मजबूत था। उसे यहाँ करटक कहा जायगा और दूसरेको दमनक तथा मादाको मसक्को। धसक्कोका पति खुड़मुड़ जब शामको झाड़ीसे निकलनेको हुआ, तब उसने प्रश्नसूचक आँखोंसे धसक्कोकी ओर देखा; पर धसक्को अनमनी सी वहीं पड़ी रही। अधखुली आंखोंसे उसने खुड़मुड़को अपनी दिलकी बात समझा दी। खुड़मुड़ने खानामन करके जमाई ली, और वह दबे पाँव झाड़ी के बाहर निकला। पेशाब करके उसने अखलारे किये और कुण्डेमें पानी पीकर वह शिकारकी टोहमें जा निकला। आधी रातके समय 'हूऽए' की ध्वनि खुड़मुड़ने ही की थी। प्रातःकाल लौटकर आया, तो एक खरगोशको उसने झाड़ीकी बगलमें रखा और झाड़ीके भीतर थूथन डालकर देखा, तो करटक, दमनक और मसक्कोको धसक्कोके थनोंसे चिपटा पाया। खुड़मुड़को देखकर धसक्कोने मन्द गुर्राहटसे डाटा कि मूर्ख, प्रसूति-गृहमें क्यों प्रवेश करनेका साहस करता है? गुर्राहट सुनते ही खुड़मुड़ पीछे हटा और करीबकी एक झाड़ीके किनारे जा बैठा। थोड़ी देर बाद धसक्को अपनी माँदसे निकली और खरगोशको उठाकर झाड़ीके भीतर ले गई।

दिन-भर धसक्को बच्चोंके साथ रही। दूध पीकर बच्चे गुड़ी-मुड़ी होकर एक दूसरेसे सटे हुए सोते रहे। जब उन्हें भूख लगती, तब कीं-ऊ करके धसक्कोके थनोंसे लग जाते।

सायंकाल जब सूर्यने अपनी किरणोंका ताना-बाना समेटा, तब धसक्कोने जँभाई ली और बच्चोंको दूध पिलाकर और अपनी थूथनसे तीनोंको एक ओर

करके बाहर निकली और कुण्डेमें पानी पीने गई। बड़ेगांव और वनके बीचकी ओर जो उसने अपनी थूथन की, तो मोहक गन्ध उस ओरसे आती हुई मालूम दी। सूँ-सूँ करके उसने गंधको जांचा और उसी ओर वह बढ़ी। तीन-चार सौ गजकी दूरीपर अधखाई भैंसकी लाश पड़ी थी। खुड़मुड़ और कई अन्य गीदड़ उसपर जुटे थे। धसक्को भी उसपर जुट गई और भरपेट खाकर वह वहांसे चली। कुण्डेपर आकर उसने खुड़मुड़के साथ पानी पिया और अपनी मांदवाली झाड़ीके पास आकर वह बैठ गई। थोड़ी दूरपर खुड़मुड़ भी बैठ गया। प्रातःकालके करीब खुड़मुड़ने एक गीदड़की हू४ए सुनकर 'हू२ए 'हू२ए हू२ए' ध्वनि की। उषाकालके पूर्व खुड़मुड़ और धसक्को फिर उठे और कुण्डेके किनारे चहल्कदमी-सी करते रहे। खुड़मुड़ने दो-तीन ठूँठोंको सूँघा और उनपर पेशाब किया और एकपर तो उसने टट्टी भी की। फिर अखलारे करके वह कुण्डेके किनारे सूंघना-सूँघना बढ़ा। धसक्कोने अपनी ओर सूअरोंके एक छोटे झुण्डको आते देखा तो वह जवासेके झाड़की ओटमें दबक गई। जब सूअरोंका झुण्ड उसकी बगलसे होकर निकल गया, तो वह वहांसे उठी और दुल्की चालसे अपनी मांदमें पहुँची। उसके बच्चे पहलेसे ही कुनमुना रहे थे। लेटकर उसने उन्हें दूध पिलाया और सो गई।

छठें-सातवें दिन बच्चोंकी कुछ-कुछ आंखें खुलीं। करटकको तो कई घंटों पहले ही झाईं मारने लगी थी। जब उसने अपनी आंखें खोलीं, तब उसे अपनी मा और अपने भाई-बहनोंके आकारका भान हुआ। लड़खड़ाती टांगोंसे कीं-ऊँ करता हुआ वह मांदमें घूमने लगा और बाहरी प्रकाशसे उसने अपनी आंखोंके प्रकाशको मिलाया। दमनक और मसक्कोने जब अपनी आंखें खोलीं; तब उनकी कौतूहलपूर्ण जिज्ञासा भी बढ़ी। आठ-दस दिन बाद

उनकी आंखोंकी पलकोंने हटकर आंखोंकी पुतलियोंको पूरा स्वतन्त्र कर दिया और तीनोंकी खिलकौरियां होने लगीं।

करटक, दमनक, और मसक्को धीरे धीरे बढ़ने लगे। उनकी पगो टांगें सीधी होने लगीं। दूध-पीने, आपसमें खिलकौरियां करने, अपने मा-बापकी पूँछोंको खींचने और सोनेमें ही उनका समय बीतता। जब वे एक महीने के हुए, तब धसक्कोने मरी भैंसका एक हड्ड उनके सामने लाकर रखा। उसकी गन्ध पाकर तीनों बच्चोंकी आंखोंमें नशा-सा छा गया। करटकने तो अपनी गर्दनके बाल फुलाकर दमनक और मसक्कोकी ओर ईर्ष्यासे देखा और दबी गुर्राहटसे उन्हें धमकानेका भी प्रयत्न किया ; पर खुसमुड और धसक्को के सामने वह कुछ सहम गया और हड्डपर टूट पड़ा। दमनक और मसक्को भी हड्डको चाटने लगे ; पर करटकने हड्डको मुंहमें दबाया और गुर्राते हुए झाड़ीके एक किनारेकी ओर बढ़ा। धसक्कोने बीच-बिचाव किया। तीनों बच्चे हाऊं-फाऊं हड्डपर जुटे रहे। उस दिनसे खून उनकी दाढ़में लग गया और अपनी माके दूधसे अधिक मजा उन्हें मांस खानेमें आने लगा।

ढाई-तीन महीने तक करटक, दमनक और मसक्कोका जीवनक्रम लगभग इसी प्रकार चलता रहा। प्रातःकाल धसक्को उनके लिए मांस लाती। कभी तो मांस ताजा होता—तीतर, खरगोश अथवा बकरीके बच्चेका—और कभी-कभी सड़ा-बुसा। मगर देहातके मरे अन्य जानवरोंका मांस भी लाया जाता। खरबूजे, चूहे और दो-चार मेंढकों तकको भी बच्चोंके लिए धसक्को लाती। भोजन-प्राप्तिमें जो कठिनाई जंगल-जीवनमें उठानी पड़ती है, उसका अनुमान शहरी लोग नहीं कर सकते। अथक परिश्रम, सन्तोष,

सहिष्णुता और अन्य दाँव-घातोंके बिना काम नहीं चलता। कभी-कभी तो इन सबके होनेपर भी पेट-भर भोजन नहीं मिलता। फिर मांसाहारी पशुओंको तो अपनी खुराकके लिए और भी अधिक परिश्रम करना पड़ता है। कभी-कभी शेरके सतत् प्रयत्नोंसे भी कोई शिकार नहीं मिलता। भेड़ियोंको भी कभी-कभी कई दिनों तक भूखों मरना पड़ता है। फिर गीदड़ जैसे डरपोक और भुक्खड़ जानवरके लिए तो ताजा मांस मिलना बहुत ही कठिन है। परमात्माने इसीलिए उसे सर्वभक्षी-सा बनाया है। पक्षियोंमें कौआ और जंगली जानवरोंमें गीदड़ ही ऐसे हैं, जिनकी खुराक अनेक प्रकारकी है। पके आम, पके कटहल, गन्ना, चूहा, केंसा भी सड़ा और ताज़ा मांस, मेंढक, कीड़े, बेर, विष्टा, सूखा चमड़ा आदि गीदड़की खुराक है। मक्का, खरबूजों, पके आमों और मुलायम गन्नोंको गीदड़ोंसे रखाना पड़ता है; पर बच्चोंके लिए गन्ने और खरबूजे नहीं ले जाये जा सकते। इसलिए धसक्कोको अपने बच्चोंकी खुराकके लिए बेहद परिश्रम करना पड़ता। कभी-कभी तो दो-तीन चूहे ही बच्चोंके लिए मिल पाते और किसी-किसी दिन अखफुटटे और मरे मेढ़कोंपर ही बच्चोंको सन्तोष करना पड़ता। उमरके साथ उनकी भूख भी बढ़ रही थी। धसक्को अपने बच्चोंकी बढ़ती हुई भूख-ज्वालाको शान्त नहीं कर पाती थी। इसलिए जब वे डेढ़-दो महीनेके हुए तो रातके समय झाड़ीके बाहर निकलने लगे। झाड़ीसे साठ-सत्तर गजकी परिधिमें वे घूमते और कीड़े-मकोड़ोंपर वार करते। स्वभावसे उनमें चालाकी, कायरता और आक्रमणकी अपेक्षा छिपकर बचनेकी कलाका प्रादुर्भाव हुआ था। जब कभी आसपास कोई आहट होती, तब वे एकदम पीछे हट जाते और दबे पाँव झाड़ीमें

घुसकर जाते हुए सूअर या नीलगायको देखते। कभी-कभी छुट्टी खेलते-खेलते करटक और दमनक लड़ पड़ते; पर आपसकी लड़ाईमें करटक ही जीतता, इसलिए करटककी जमादारी दमनक और मसककोपर बैठ गई थी।

इन डेढ़-दो मासोंमें एकाध बार ऐसा भी हुआ कि धसक्को अपने बच्चोंके लिए कुछ खाना नहीं ला सकी और बच्चोंने भूखसे परेशान होकर झाड़ीमें पड़े सूखे हड्डोंको ही चबानेकी कोशिश की। घण्टों वे हड्डोंमें चिपटे रहते; पर उनसे पेट न भरता। धसक्कोके थनोंमें भी इतना दूध नहीं था, जिससे करटक, दमनक और मसक्कोकी तृप्ति हो जाती। इसलिए जब वे दूध पीनेके लिए अधिक जुटे रहनेकी कोशिश करते, तब धसक्को उनपर बिगड़ जाती—गुर्राकर धीमेसे उनपर मुँह मारती और उन्हें दूर भगाती।

अपने जन्मके लगभग पौने तीन मास बाद तीनों बच्चे खुड़मुड़ और धसक्कोके साथ भोजनकी खोजमें निकले। उससे पहले कई दिनों तक उनके साथ सौ-दो-सौ गज़ तक आये थे; पर धसक्कोने उन्हें धमकाकर वापस लौटा दिया था। बच्चोंकी बढ़ती भूख और उनकी उमरका खयाल करके धसक्कोने यह तय किया कि बच्चोंकी शिक्षा और भोजनकी खातिर उन्हें साथ लिया जाय। सतर्कता, खोजकी प्रवृत्ति, घ्राण-शक्ति, भय, लालच और भोजनकी भिन्नता गीदड़ोंके विशेष गुण हैं। इसीलिए वह प्रकृतिकी म्युनिसिपैलिटीका मेहतर है। किसी प्रकारका भी मुर्दार क्यों न हो, सियार उसे ज़रूर खा लेगा। मरी और सड़ी चिड़ियाँ, दस दिनोंकी सड़ी और गली लाशें और अन्य गन्दी चीजें सियार बड़े स्वादसे खाता है बचावके लिए यों तो उसके कुत्तोंका-सा जबड़ा है; पर वह अपना बचाव लुक-छिपकर और भाग-दौड़कर ही करता है।

पहले दिन जैसे ही करटक, दमनक और मसक्को खुड़मुड़ और धसक्कोके साथ चले, वैसे ही धसक्कोने उन्हें अपने पीछे रखनेकी कोशिश की। खुशीके मारे करटकने खुड़मुड़से भी आगे बढ़नेकी चेष्टा की। खुड़मुड़ करटककी इस तेज़ीसे कुछ घबराया और रुककर उसने धसक्कोकी ओर देखा, मानो उसने चेतावनी दी कि वह ढीठ करटकको रोके। खुड़मुड़के रुकते ही करटक भी रुका और धसक्कोने आगे बढ़कर करटककी भर्त्सना की। सहमकर करटक पीछे हो लिया। सियारोंका कुटुम्ब झाड़ियोंको सूँघता और वायुकी जाँच करता चुपचाप कुंडकी ओर बढ़ा। कुंडके किनारेसे कुछ दूर खुड़मुड़ और धसक्कोने सूँ-सूँ करते हुए अपनी थूथनें ऊपरको कीं। शीघ्र ही तीनों बच्चोंकी नाकमें भी तेज गन्ध पहुँची। थूथनें उठाकर वे भी उधरकी ओर आकर्षित हुए। धसक्कोने मुड़कर तीनों बच्चोंकी ओर कड़ी निगाहसे देखा। सियार-जीवनकी शिक्षाका पहला पाठ उसने अपने बच्चोंको पढ़ाया कि कैसा ही स्वादिष्ट भोजन कितना ही निकट क्यों न हो; पर जब तक यह अच्छी तरह न देख लो कि कोई डरकी बात नहीं, तब तक वहाँ उतावलेपनसे न जाओ।

खुड़मुड़ और धसक्को दो ओरसे दुल्की चालसे, पर बड़ी सावधानीसे, गन्धकी ओर गये। झाड़की आड़से धसक्कोने देखा कि कुण्डके किनारे दो गीदड़ एक लाशपर जुटे हैं। धसक्कोने पीछे हटकर अपने बच्चोंको आगे बढ़नेका संकेत किया। जब तक तीनों बच्चे उसके पास आये, तब तक खुड़मुड़ लाशपर पहुँच चुका था और लाशपर लगे एक गीदड़से उसकी हाथा-पाई भी हो चुकी थी। दोनोंके हल्की खुरसटें ही आई थीं। भोजनकी खातिर वे दोनों फिर अधिक नहीं लड़े। लाश भी काफ़ी बड़ी थी। घायल

घड़ियाल कुण्डके किनारे निकलकर मर गया था। सम्भवतः पिछली शामको ही वह निकलकर मरा होगा। करटक, दमनक और मसकोको पहले तो साहस ही नहीं हुआ कि वे उसपर मुँह मारें। इतने बड़े-भीमकाय जानवरको उन्होंने पहले कभी देखा नहीं था। फिर स्वाभाविक डरके कारण भी उनके पैर आगे नहीं बढ़ते थे। पर जब धसकोने घड़ियालके मांसका एक कौर अपने गलेके नीचे उतारा, तब मांसकी गन्ध उन्हें लाशकी ओर ऐसे खींच लाई, जैसे चुम्बक लोहेकी पतली तीलियोंको अपनी ओर खींच लेता है। अपनी मा द्वारा नोंचे गये स्थानपर करटकने डरते-डरते मुँह मारा। उसके बाद दमनक और मसकोने भी घड़ियालके मांसका स्वाद लिया। डटकर सबने पेट भरा और उसके बाद कुण्डेमें पानी पिया। फिर ऊपर खेतमें आकर बैठ गये। धसको और खुड़मुड़ने इतना पेट भर लिया था कि उन्हें चलना तक दूभर हो गया था। तीनों बच्चोंने उस रात आपसमें खूब छुट्टी खेली।

चार बजेके लगभग खुड़मुड़ उठ खड़ा हुआ और आकाशकी ओर तारा-गणको सम्बोधन-सा करता हुआ—अपनी थूथनको ऊपर करता हुआ—'हुरए हुरए हुरए' की ध्वनि करने लगा। आसपासके गीदड़ोंने भी स्वरमें स्वर मिलाया। करटकको भी स्वरमें स्वर मिलानेकी स्फूर्ति मिली।

खुड़मुड़का कुटुम्ब प्रातःकाल तक वहीं आराम करता रहा और सूरज निकलनेपर वह उठा और घड़ियालकी लाशपर जा चुपटा। अच्छी तरह फिर पेट भरकर और पानी पीकर पाँचों गीदड़ जंगलकी ओर चले और धीमी चालसे अपने स्थानमें आ छिपे। दोपहरके क़रीब धसकोको प्यास लगी। और वह पानी पीनेको चली। साथमें तीनों बच्चे भी हो लिए और खुड़मुड़

में साथ चला। वह तो समझ गया था कि धसक्को पानी पीने जा रही थी। स्वयं खुड़मुड़ पानी पीनेके लिए उठने ही वाला था कि धसक्को उठ बैठी। प्यासे तो बच्चे भी थे। एक तो मौसम ही गरम था और दूसरे उन्होंने डटकर मांस खाया था। गीदड़ोंके लिए यह ज़रूरी नहीं है कि वे शेर और बघेरेकी भाँति दिनमें सोएं। वैसे जंगलोंमें शेर और बघेरे भी कभी-कभी अपने शिकारको दिनमें पकड़ लेते हैं। गीदड़ोंको तो डरके मारे अपने-आपको छिपाना पड़ता है। कुण्डेमें गीदड़ोंने पानी पिया, और एक बालिश्त गहरे पानीमें वे कुछ देर तक बैठे। गरमीसे उनकी कोखें धौंकनीकी भाँति चल रही और जीभें बाहर लटक रही थीं। घड़ियाल की लाशपर नज़र डाली, तो वहाँ उसका कंकाल-मात्र ही था। हाँ, पासके पेड़ों और कुण्डके किनारे बहुत-से अघाये गिद्ध बैठे थे। कुछ तो पर फैलाए लेटे थे, मानो ज़रूरतसे ज्यादा खा गये हों। गरमीसे व्याकुल धसक्कोका कुटुम्ब हाँफू-हाँफू करता दुल्की चालसे अपने छिपनेके स्थानपर चला गया।

सायंकालको धसक्को और खुड़मुड़ अपने बच्चोंके साथ जंगलसे निकले। उन्होंने एक ख़रगोशको पकड़नेकी असफल चेष्टा की। घण्टों इधर-उधर मुर्दारकी तलाशमें घूमे; पर वह न मिला। हाँ, धसक्को और खुड़मुड़ दो चूहे पकड़ पाये; पर उनको वे ही चट कर गये। अपने बच्चोंको उन्होंने कुछ नहीं दिया। देते भी क्या? दो गपकोंमें ही तो वे चूहोंको खा गये।

खानेकी तलाशमें वे चाँदापुर गाँवकी ओर गये। गाँवके क़रीब उन्हें जो सड़ी-गली चीज़ें मिलीं, उन्हें उन्होंने अपने पेटमें डाला। बच्चे साथ थे, इसलिए गाँवके बिल्कुल निकट वे नहीं गये; पर गाँवसे कुछ दूर एक

ओरसे उन्हें कुछ गन्ध आई। वे उसी ओर गये। खेतमें पहुँचते ही कि खरबूजोंकी गन्ध और भी तेज़ हो गई; पर खुड़मुड़ने जैसे ही एक खरबूजेपर मुँह मारा, वैसे ही करटक तेज़ीसे उधर गया। उसकी पैछरसे किसानकी चारपाईके पास पड़ा कुत्ता जाग गया और भूँकता हुआ गीदड़ोंपर लपका। करटक, दमनक और धसक्कोंके पेटमें तो पानी हो गया। गीदड़ स्वभावसे ही खतरेसे डरते हैं और फिर उनके बच्चोंकी हालत तो और भी खराब होनी थी। घबराकर वे धसक्कोंके साथ भागे। अभी उन्होंने मेंड़ ही पार की थी कि कुत्ता उनपर आ टूटा। खुड़मुड़ जान-बूझकर बच्चोंकी खातिर पीछे रहा। जैसे ही कुत्ता खुड़मुड़के करीब पहुँचा, वैसे खुड़मुड़ने मुँह बाया और 'खाउ-खाउ हाउ-हाउ' करके कुत्तेको डराया। खींसें काढ़कर मुँह मारनेकी खातिर वह कुत्तेपर डेढ़-डेढ़ गज़ आगे बढ़कर लपकता। जब कुत्ता पीछे हटता, तब गीदड़ भागने लगता। किसानके प्रोत्साहन 'लेह बेटा भूरा'की आवाज़से कुत्ता आगे बढ़ता और गीदड़के क़रीब पहुँचता; पर खुड़मुड़का रौद्र रूप देख कुत्ता डरकर रुक जाता। थोड़ी देरमें खुड़मुड़ कुत्तेसे पिंड छुड़ाकर जंगलकी ओर अपने कुटुम्बसे जा मिला। उस रात उन्हें जंगलके क़रीब पानीके एक गड्ढेमें मेढ़क तलाश करने प... बड़ी कठिनाईसे दो तीन मेढ़क ही मिल पाये। बड़ेगाँवके क़रीब जो कुछ गन्दगी मिली, उसकी सफ़ाईकर वे दिन चढ़े जंगलमें आ छिपे।

दोपहरके करीब जब खुड़मुड़ और धसक्को पानी पीने कुंडेके किनारे आये, तब उन्होंने जंगलके पश्चिमकी ओर गिद्धोंको उड़ते देखा। पानी पीकर दुल्की चालसे डरे और घबराये-से वे उस ओर बढ़े। बैलकी लाशपर उन्होंने गिद्धोंको लड़ते पाया। खुड़मुड़ और धसक्कोने आगे बढ़कर गिद्धोंको
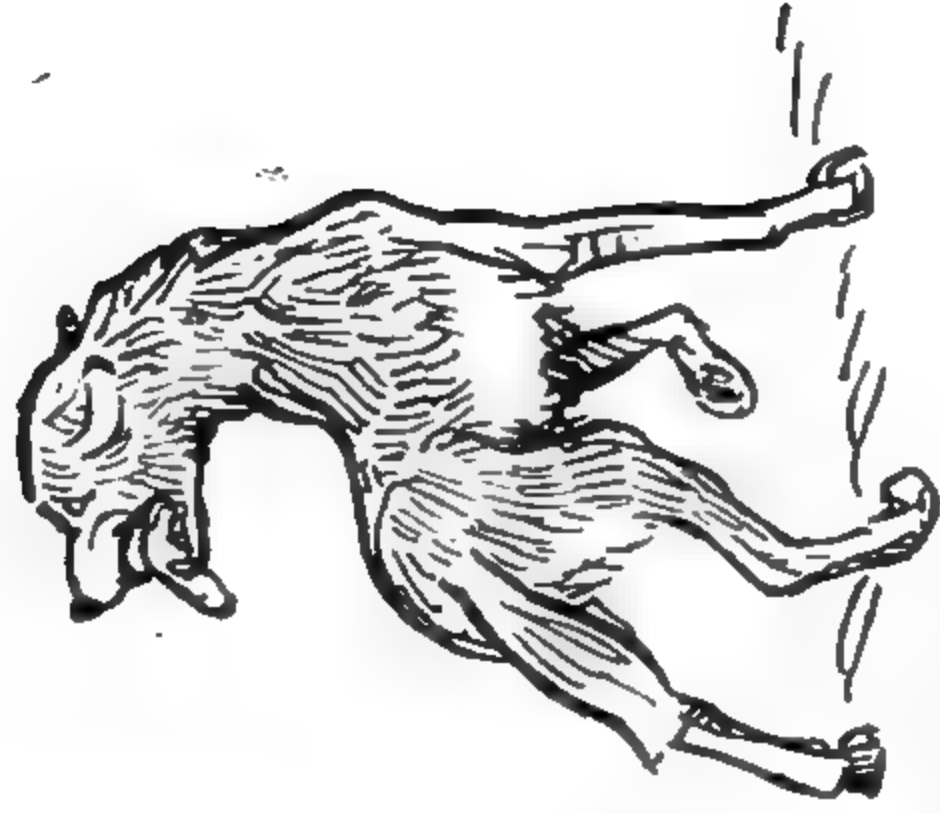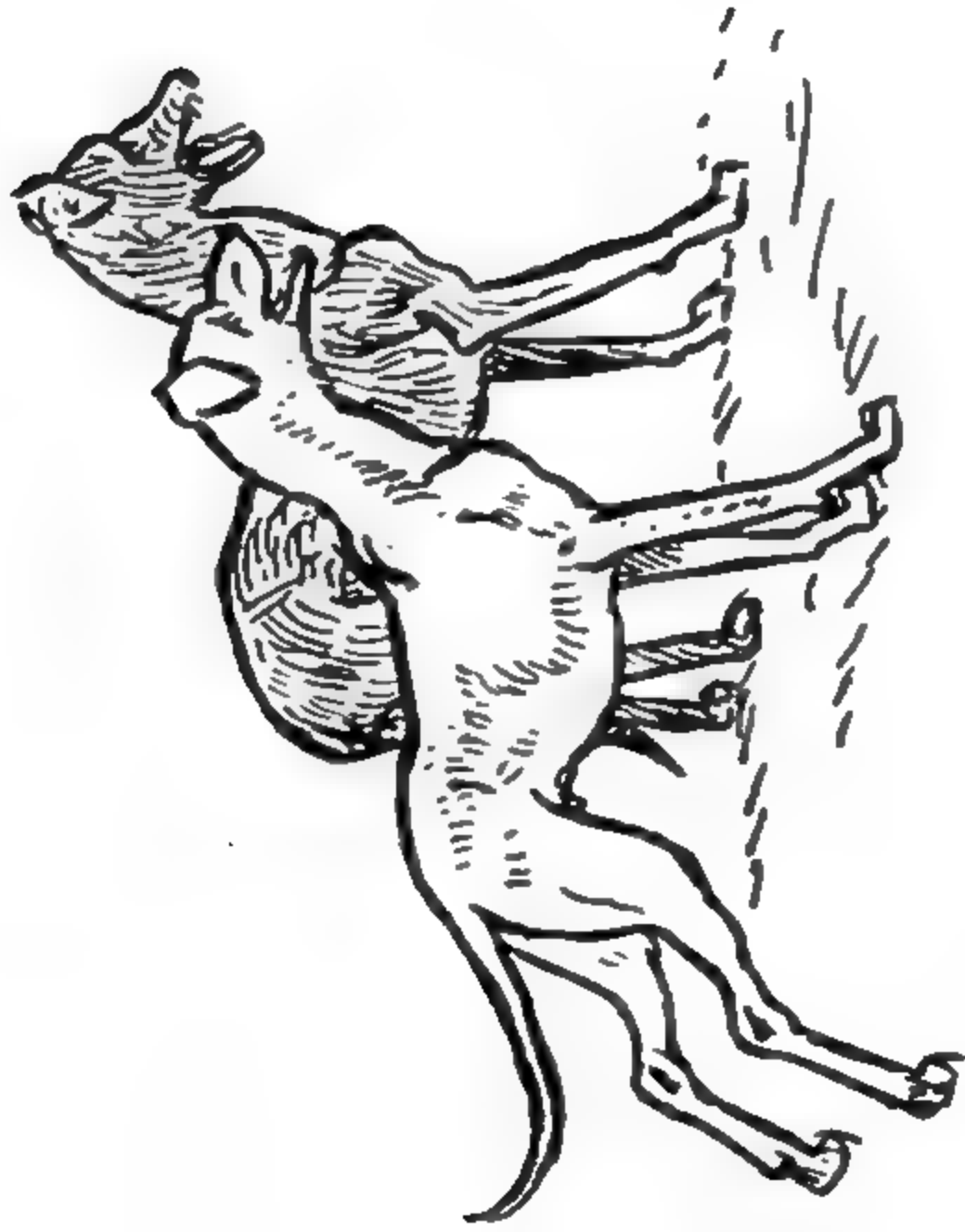
"जैसे ही कुत्ता खुड़मुड़के करीब पहुँचा, वैसे खुड़मुड़ने मुँह बाया" पृ० १७६

"करकट, दमनक और मयङ्को" पृष्ठ १७१

रपटाया। एक गिद्धका पंख उसने झकझोर डाला, जिससे वह फुदककर एक ओरको हो गया। खुड़मुड़ और धसक्कोको लाशपर मुँह मारते देख करटक, दमनक और मसक्को भी आ गये। बैलके मांसको गिद्धोंने लगभग खा ही लिया था, इसलिए गीदड़ोंके पल्ले बहुत कम पड़ा; पर तो भी उनके पेटमें कुछ पड़ ही गया। बैलके कंकालको छोड़कर वे फिर कुंडेकी ओर आये। पानी पीकर और पानीमें खूब ठण्डे होकर जीभें लटकाये वे जंगलकी एक घनी झाड़ीमें जा लेटे और सायंकाल तक अपने शरीरोंकी धौंकनी-सी चलाते रहे।

गरमीका मौसम इसी प्रकार बीता। भोजनकी तलाशमें वे आसपासके गाँवों—सरी, सरेसर, बेहटा, हरियापुर, धर्मपुर, खदीपुर, मस्तापुर, चाँदा-पुर—का चक्कर लगाते। खरबूजों, मेंढ़कों, चिड़ियों तथा अन्य सड़ी-गली चीजोंको भी वे खा जाते। एक दिन तो कबीर ठाकुरनकी कुटियाके बाहर रखे जूतोंको वे उठा ले गये और उनके कुछ टुकड़े खा गये।

आषाढ़के शुरूमें दो विशेष घटनाएँ घटीं। सायंकालको जैसे ही धसक्को और खुड़मुड़ जंगलके किनारे आकर कुछ रुके, वैसे ही लगभग सौ गज़की दूरीपर सामने साल-भरका एक छोटा पड़रा लँगड़ाता-सा दिखाई पड़ा। गीदड़ भूखसे छटपटा रहे थे। पड़रा कमजोर और लँगड़ा था। आसपास कोई आदमी भी न था। फिर भूखकी लपटें जोर मार रही थीं। खुड़मुड़ने धसक्कोकी ओर देखा, मानो संकेतसे उसने पूछा कि शिकार मारनेमें साथ देनेका दम हो, तो आगे बढ़े। धसक्कोने इशारोंसे आक्रमणकी अनुमति दे दी। दुल्की चालसे वे पड़रेकी ओर बढ़े। दाएँ और बाएँसे दोनोंने उसकी कोखोंपर तीन-चार मुँह मारे। बच्चे डरते हुए पीछे-पीछे आ रहे थे और

अपने माता-पिताके शिकार-कौशलको देख रहे थे। तीन-चार वारोंमें ही पड़रा रँभाकर गिर गया और उसकी आँतें बाहर निकल आईं। डटकर सबने भोजन किया। करटक, दमनक और मसक्कोने पहली बार ही गरम खूनका मजा चखा। मांस खाकर जब वे अघा गये, तब कुंडेमें पानी पीने गये और पड़रेके पास आकर फिर वे डट गये। अन्य गीदड़ोंको उन्होंने लाशके पास नहीं आने दिया। प्रातःकालके करीब खुड़मुड़, धसक्को और उनके बच्चोंने पड़रेको खाया। लाशावशेषको बड़ी कठिनाईसे घसीटकर वे अपनी झाड़ीमें ले गये और दो दिन तक उसीपर रहे।

असाढ़ महीनेका प्रारम्भ था। बादलोंके टुकड़े स्काउटोंकी भाँति आकाशका निरीक्षण कर रहे थे कि किस ओरसे पावस-सेना आक्रमण करे। तेज गरमी पड़ रही थी। सब लोग बेहाल थे। समय था दोपहरका। प्याससे व्याकुल गीदड़ कुंडेकी ओर गये और पाँचोंके पाँचों घुटने-भर गहरे पानीमें घुसे और लपर-लपरकर पानी पीने लगे। वे अभी पानी पी ही रहे थे कि मसक्कोके सामने एक गज़की दूरीपर हल्की लहरें उठीं। फौरन ही पानी फटा और एक नाकेका सिर बाहर निकला। नाकेकी थूथन और उसकी खूनी आँखें देखते ही मसक्कोके शरीरमें कँपकँपी-सी हुई। पानीसे बाहर भागनेके लिए वह अभी मुड़ ही पाई थी कि नाकेके दाँत उसके अगले पुट्ठे और गर्दनमें चुभे। ज़रा-सी चीख ही वह निकाल पाई थी कि नाका उसे लेकर पानीमें बैठ गया।

खुड़मुड़, धसक्को, करटक और दमनक नाकेको देखते ही भाग खड़े हुए। जब कुंडेकी करारपर खड़े हो उन्होंने मुड़कर देखा, तब नदीकी धार शान्त थी। मसक्कोके बिछोहका कुछ विशेष खयाल न करके वे

जंगलमें आ छिपे। भोगवादी बननेके अलावा उनके लिए और चारा ही न था।

आमोंके पकते ही खुड़मुड़ और धसक्को करटक और दमनकके साथ रातको आसपासके बागोंमें टपके आम खाने जाते। रखवाले प्रातःकाल अधखवे आम देखकर गीदड़ोंको गालियाँ देते। पर आमोंकी फसलमें वे टपकोंको खराब ही करते।

कुछ ही दिनों बाद एक नई मुसीबत धसक्कोके गार्हस्थ्य जीवनमें आई। आधे असाढ़के बाद खुड़मुड़के स्वभावमें कुछ परिवर्तन हुआ। एकाध दिन वह अनमना-सा पड़ा रहा और शिकारको नहीं गया। प्रातः-काल जब धसक्को, करटक और दमनकके साथ लौटी, तब उसने वहाँ खुड़मुड़को नहीं पाया। कई दिनों तक तो धसक्को खुड़मुड़की याद करती रही — विशेषकर शामको भोजनकी खोजमें जाते समय; लेकिन खुड़मुड़ तो बौरा गया था। शरीरसे दुर्बल, घबराया हुआ, मुँहसे लार टपकाता और परेशान वह उचंगमें चलता ही रहता। जब थक जाता, तब किसी झाड़ीके किनारे बैठ जाता। एक दिन वह इसी प्रकार परेशान और झल्लाया हुआ एक झाड़ीके किनारे बैठा था कि उधर बकरियोंका झुण्ड चरने आया। एक बकरीपर वह टूट पड़ा और किटकिटाकर उसकी गर्दनपर मुँह मारा। बकरी चिल्लाई और भागनेको चेष्टा की; पर पागल खुड़मुड़ने इस तेजीसे वार किया था कि जब तक बकरीका मांस नुच नहीं आया, तब तक खुड़मुड़की गिरफ्तसे वह छूटी नहीं। खुड़मुड़को भूख नहीं थी और न वह किसीको काटना चाहता था; पर उसको बीमारी ही ऐसी थी, जिसमें उसे दाँत किटकिटाने और मुँह मारनेमें अच्छा लगता था। सूखकर वह काँटा हो गया था। उसकी पूँछको बुरी हालत थी। देखनेमें वह खजैला लगता

था और मुंहसे लार टपकती थी। दिमागसे मानो कोई चीज उठकर उसके सारे शरीरमें दौड़ जाती और वह उससे बचनेके लिए भागा फिरता। गड़रियेने जो गीदड़को बकरीपर लगा देखा, तो डंगी लेकर उसे हुलकारता हुआ उधर आया। इतनेमें खुड़मुड़ने आठ-दस मुंह बकरीके मार दिये थे और बकरी गिर चुकी थी। गड़रियेके आते ही खुड़मुड़ने गड़रियेपर भी हमला किया। गड़रियेने अपनी डंगी तानकर खुड़मुड़की खोपड़ीपर मारी, पर वार ओछा पड़ा। सिरके बजाय अगली टांगपर वह पड़ी, जिससे उसकी टांग बेकार हो गई। पर खुड़मुड़ तो बेबश था। उसकी हालत करुणा-जनक और दयनीय थी। रोगके कीटाणुओंने उसे उन्मत्त बना रखा था। चोट खाकर खुड़मुड़ गिरा और उठकर गड़रियेपर टूट पड़ा। हाऊँ-फाऊँ करके वह गड़रियेकी टांगोंमें चिपटा गया और उसकी पिंडलियोंको फाड़ डाला। फिर उसे छोड़कर खदीपुरकी ओर भाग गया। लाल मिर्चें बटकर गड़रियेने घावोंपर लगाईं। इलाजके लिए उसे लखनऊ जानेको कहा गया; पर वह कहीं नहीं गया और एक महीनेके भीतर मर गया। बकरीको कुंडेमें फेंक दिया गया। मछुओं और मछलियोंने उसे बड़े स्वादसे खाया।

तीन-चार दिन बाद गंगपुरके करीब एक गांवमें रातको हो-हल्ला मचा। खुड़मुड़ घबराया हुआ उधर जा निकला। लोग खुलेमें सोये हुए थे। पन्द्रह-बीस आदमियोंको उसने काटा। पागलपनका दौरा उसे परेशान कर रहा था। जबड़े उसके उखड़े-से जा रहे थे। नाक सूख रही थी। शरीरमें आग-सी फुंक रही थी। वह अपने काबूमें न था। भूख, चोट और डरका उसपर असर नहीं था। मुँह मारना और तिलमिलाहटसे

परेशान होकर भागना—यही दो बातें खुड़मुड़के कंकालमें प्रबल थीं। इसलिए खुड़मुड़को जो कोई मिलता, उसे वह काटता और आगे बढ़ता। 'बौराना सियार, बौराना सियार' की ध्वनि फैली और गलीमें घेरकर लोगोंने उसे मार डाला। लाठीके एक ही वारसे उसकी महायात्रा हो गई। दम तो उसमें था ही नहीं। बीमारीके वेगसे वह भागा फिरता था। गाँववाले पागल सियारके काटेका इलाज कराने लखनऊ गये और सब बच गये।

उधर धसक्को कण्टक और दमनकके साथ अपने दिन बिताने लगी। बरसात हो जानेसे खेत बो दिये गए थे। मक्केकी फसल खासी बड़ी हो गई थी और छिपनेके लिए कोई कठिनाई न थी। मक्केके भुट्टे जैसे ही अधपके हुए, वैसे ही धसक्कोंने खेतमें घुसना शुरू किया। भरे भुट्टेको पहचान कर मक्केके पेड़को अगली टाँगोंके बीचमें करती। जैसे ही वह आगे बढ़ती, वैसे ही पेड़ बोझसे झुक जाता और फिर वह भुट्टे खाती। कण्टक और दमनक भी धसक्कोकी नकल करते। कभी-कभी झुकनेमें पेड़ टूटने अथवा उछलकर भुट्टा तोड़नेकी आवाज होनेसे रखवाला जाग पड़ता और 'दृ-लै-लै लै' की हुल्कार करता। रखवालेकी हुल्कारसे धसक्को अपने बच्चोंके साथ भाग जाती और खेतकी मेंड़से चालीस-पचास गजकी दूरीपर खड़ी होकर रखवाली करनेवालेकी आवाजकी ओर ध्यान लगाती।

सियार स्वभावसे खतरेसे बचता है। जंगलमें अगर कोई भी जानवर सबसे कम खतरेका काम करता है, तो सियार। वह सर्वभक्षी है—प्रकृतिका मेहतर है, इसलिए प्रकृतिने उसे और भी सावधानीसे रहनेको मजबूर किया है। प्रत्येक स्थानको शक और सावधानीसे देखनेकी उसकी बान है। कंजूस और चालाक सूदखोर जिस प्रकार जोखिमकी जगह रुपया नहीं लगाता,

उसी प्रकार सियार जोखिमकी बातसे दूर रहना पसन्द करता है—कम-से-कम जोखिका काम करता है। बकरी, घायल हिरन और पछरोंपर वह तभी आक्रमण करेगा, जब वह समझ लेगा कि आक्रमण सफल होगा। तनक-सी आहट और खतरेसे चौंककर वह दूर हो जायगा और मजबूर होकर शिकारी कुत्तेका डटकर मुक़ाबला करेगा।

कातिक और अगहनमें धसक्को, करटक और दमनकने स्वाद-परिवर्त्तन करने और भूख बुझानेकी खातिर मुलायम गन्नोंको भी तोड़ना शुरू किया। हड्डीकी तरह वे गन्नेको जबड़ोंमें दाबते और जितना भी रस निकलता, उतना वे अपने गलेके नीचे उतार लेते। इस तरह उनका पेट तो नहीं भरता; पर ईखका नुकसान बहुत हो जाता। पर कड़े गन्नोंमें सियारोंकी दाल नहीं गलती।

इन्हीं दिनों एक दिन शामको जब धसक्को जंगलसे निकलकर चम्पापुरकी ओर जा रही थी, तब उसे रास्तेमें एक सियार मिला। धसक्कोने उसे कनखियोंसे देखा। सियारकी चितवनसे उसमें खिंचाव हुआ। सिर ऊपर करके पूँछ हिलाते तथा स्नेहाकर्षणसे खिंचा वह क़रीब आया। एकने दूसरेको सूँघा और उनका उजड़ा घर बस गया। करटक और दमनक कुछ बिगड़े-से एक ओर खड़े हो गये। आकके पेड़पर टाँग उठाकर उसने पेशाब किया और अखलारे किये। फिर उसने करटक और दमनकपर रौब गाँठा। करटक और दमनकको इतनी हिम्मत नहीं हुई कि वे आगे बढ़ते। दमनकने कोशिश की कि वह धसक्कोको बगलसे चले; पर नए बड़े सियारने उसपर मुँह मारा। धसक्कोने तो आत्म-समर्पण कर ही दिया था।

करटक और दमनकने उसी समय धसक्कोका साथ छोड़ दिया। यदि

वे साथ न छोड़ते, तो धसक्कोका नया साथी उनको दुर्गन बनाता। वे अब इस योग्य भी थे कि अपनी जीविका स्वयं चलाते और प्रकृतिके प्रांगणमें स्वतन्त्र रूपसे विचरते। करटक और दमनकने धसक्कोका साथ छोड़कर पेट भरनेकी खातिर जंगलसे पश्चिमकी ओरका रास्ता लिया। स्वावलम्बनकी शिक्षा-दीक्षा उन्हें काफ़ी मिल गई थी। उनकी टाँगोंमें भी दम था। जबड़े भी उनके काफ़ी मजबूत थे। आँखें और कान ट्रेण्ड थे। आहट पाकर एकदम छिप जाना, घात लगाकर चिड़ियों और खरगोशोंको पकड़ना आदि सब दाँव-घात उन्हें आते थे। हाँ, उनके ऊपरसे पथ-प्रदर्शनका हाथ उठ गया था; सो उसका अभाव उन्हें दो-तीन दिन खटका और बादमें पुरानी बातोंको भूल गये।

कई दिनों तक करटक और दमनक अकेले रहे; पर शीघ्र ही उनका साथ अन्य दो समवयस्क गीदड़ोंसे हुआ, जिनको अपने पुराने कौटुम्बिक बन्धनोंको तोड़ना पड़ा था। यह नवीन चौकड़ी दो महीनों तक साथ रही। फागुनके प्रारम्भमें जब वे एक दिन अरहरके खेतमें छिपे आराम कर रहे थे, तब खेतके चारों ओरसे कंजरोंकी आवाजें आईं—'लेह बूचा, घुस बंडा, लेह!' चारों गीदड़ घबराये और एक ओरको भागे कि इतनेमें दो कुत्तोंने उन्हें आ घेरा। करटकने मुँह नीचा करके कुत्तेका जबड़ा पकड़ लिया और उसे इस जोरसे खींचा कि कुत्तेका नीचेका होंठ नुच गया। घबराकर और काँय-काँय करता हुआ कुत्ता एक ओरको हट गया। दूसरे कुत्तेकी हिम्मत नहीं हुई कि वह करटकपर वार करता। दमनक और दो गीदड़ मेंड़की ओर भागे। उनमें से एक तो जालमें जा उलझा और कंजरकी एक ही लाठीने उसका काम तमाम कर दिया। दमनक अरहरके

खेतसे बीस ही कदम भागा होगा कि उसको कुत्तोंने आ घेरा। दो-तीन झपटें ही हो पाई थीं और उनमें दमनक ही तगड़ा पड़ा था कि इतनेमें कंजरोंकी लाठियाँ बरसने लगीं। थोड़ी देरमें दमनकका भी दम निकल गया। करटक जो कुत्तेसे उलझता खेतमें रह गया था, मेंड़के क़रीब आया, तो उसने भीतरसे ही दमनककी दुर्गति देखी। वह पीछे लौटा और साथमें छोटी बची सियारिन भी, जो अपने भाईको जालमें फँसते देख झिझककर आगे नहीं बढ़ी थी।

खेतके एक कोनेसे झाड़ीकी आड़ लेकर करटक और नई सियारिन आगे बढ़ गये। कुण्डेकी पाँक उतरकर चार मीलकी दूरीपर वे जा रुके। फिर ढहियानेमें पहुँचकर वे एक घनी झाड़ीमें छिपे बैठे रहे। दोनोंकी कोखें धौंकनीकी भाँति चल रही थीं। उनकी जीभें उनके हाँफते मुँहसे बाहर लटक रही थीं और उनसे पानीकी बूँदें टपक रही थीं। कान खड़े किये वे अपने आनेके मार्गकी ओर देख रहे थे कि कहीं कंजर और कुत्ते उनका पीछा तो नहीं कर रहे। थके, डरे और चौकन्ने वे दोनों वहाँ बैठे थे। जब कभी कोई मक्खी उनकी नाक या जीभकी ओर आती, तब वे उसपर मुँह मारते। वह दिन करटकके लिए कितना खराब था! आतंक और दुःखकी टीस उसके अब भी बाक़ी थी; पर उस दिनकी मुसीबतोंका एक सुखद रूप भी था। उस बिछोहमें उसका मिलन अपनी जीवन-संगिनीसे हुआ। दोनोंकी जोड़ी उसी दिन मिली। वे सुखसे रहने लगे और महीनों तक बड़ेगाँवके जंगलकी ओर नहीं गये।

अपने नए स्थानमें करटक और उसकी साथिन हिरिया मज़ेसे रहने लगे। ढाकके पेड़के नीचेसे जब कभी वे गिद्धोंके पंखोंकी साँय-साँय सुनते,

तो झाड़ीसे बाहर आकर देखने लगते, फिर गिद्धोंकी उड़ानकी ओर दुल्की चालसे आते और लाशको तलाश कर लेते। लाशको देखकर वे दूरपर ही रुक जाते। जब गाँवके कुत्ते पेट भरके खा जाते, तब उनका नम्बर आता। कभी-कभी तो गाँवके कुत्तोंके साथ ही लाशपर जा चिपटते और इक्के-दुक्के गिद्ध भी खाया करते। एक दिन सरीगाँवकी एक भैंस मरी। चमारोंने गाँवसे दूर उसकी खाल काढ़ी। आकाशमें मुरदारकी खोजमें विचरनेवाले गिद्धोंकी नज़र पड़ी। झपटानी बम फेंकनेवाले हवाई-जहाज़ोंकी भाँति आसपासके गिद्ध उधर झपटे। उनको एक दिशामें उड़ते देख अन्य गिद्ध भी उधर उड़ आये। करटक और हिरियाने गिद्धोंको उड़ते देखा, तो वे भी उधर दौड़ लिये। प्रकृतिकी म्यूनिसिपैलिटीमें मुरदार दूर करनेके लिए काफ़ी स्टाफ़ है। हवाई-जहाज़ जिस प्रकार देख-भालकी उड़ान कर जंगी-जहाज़ोंको शत्रुके जहाज़ या पनडुब्बीकी ओर जानेका संकेत करते हैं, उसी प्रकार गिद्ध सफ़ाई-स्क्वेडके हवाई-जहाज़ हैं। करटक और हिरिया खेतकी मेंड़पर जाकर रुके। चमार खाल काढ़कर चले गये थे। दो तेज़ जवान कुत्ते लाशपर आ जुटे। गिद्ध भी भूखसे परेशान थे। आध घंटे तक तो उन्होंने प्रतीक्षा की ; पर बादमें गिद्धोंने दो टोलियाँ बनाईं। एक टोली लाशके एक ओर और दूसरी टोली दूसरी ओर बैठी। एक टोली फुदककर और चलकर लाशकी ओर आई। कुत्तोंको गिद्धोंकी धृष्टतापर क्रोध आया और हाँव-हाँव करके वे उसपर टूटे। लगभग सौ गज तक उन्होंने गिद्धोंको रपटाया। जब गिद्धोंने देखा कि फुदकने और उड़-उड़कर बैठनेसे काम नहीं चलेगा, तब वे उड़कर दूर जा बैठे। इतनेमें दूसरी टोलीने लाशपर कब्ज़ा कर लिया था। कुत्तोंने जब दूरसे देखा कि लाशपर गिद्ध आ चिपटे हैं, तो भौंककर उनपर पिल पड़े। जैसे ही कुत्ते पूरे वेगसे वापस हुए, वैसे ही उनके पीछे रपटाई टोली लाशकी ओर आई। कुत्तोंको करीब आते देख लाशपर लगे गिद्ध फुदके और उड़े। कुत्तोंने उनको भगाया। मुड़कर कुत्तोंने लाशकी

"वे दोनों हिरनपर टूट पड़े"

ओर जो देखा, तो पहली टोली उसपर जुटी थी। बस, चार-पाँच बार गिद्धोंको इधरसे उधर भगानेमें कुत्तोंका दम फूल गया। उन्होंने फ़जूलकी भाग-दौड़ बन्द की। फिर गिद्ध और कुत्ते एक साथ खाने लगे। करटक और हिरिया भी सहम और सँभलकर उधर आये। दाएं-बाएं चल कर और थमकर वे भी लाशपर आ लगे। कुत्ते तनक गुर्राये और करटक ने भी जवाबमें खीसें काढ़ीं, मानो कहा कि काहेको मरे जाते हो? गिद्धोंने तो तुम्हें उल्लू बना दिया। तुम अपना हिस्सा खाओ, हम अपना खाते हैं। बिना बातके ऐंठते क्यों हो?

एक दिन दोपहर बाद करटक और हिरिया बड़ेगांवके जंगलके किनारे की झाड़ीमें जा बैठे थे। एक दूसरेको वे नज़रोंसे ही समझ रहे थे। हिरिया अपने भाग्यको सराह-सी रही थी कि उसका सम्बन्ध करटकसे है। इतनेमें ही 'धायँ' की एक आवाज़ उनके कानोंमें पड़ी। सतर्क होकर वे खड़े हो गये। यों वे समझ तो गये कि किसी शिकारीने फ़ायर किया है; पर साथ ही उन्हें यह भी डर था कि कहीं कोई बला उनके सिरपर न आ पड़े। हिरियाने करटककी ओर देखा, मानो उसने संकेत किया कि खड़े क्यों हो? यहांसे कहीं दूर निकल चलो। पर इतनेमें ही एक काला हिरन उनकी नज़र पड़ा। मुँह उसका खुला हुआ था। अँतड़ियां और ओझड़ी बाहर लटक रही थी। बड़ी कठिनाईसे वह जा रहा था। ऊपर उसके कौए मँडरा रहे थे। हिरन जा रहा था अपने खूनके प्यासोंसे बचने और जान बचानेके मोहसे; पर उसकी जान पेटके धोंधुआसे धीरे-धीरे बाहर निकल रही थी। हिरनको अपनी जानके लाले पड़े थे। इतनेमें जानमें नए गाहक—करटक और हिरिया—की नज़र भी घायल हिरनपर पड़ गई। वे दोनों हिरनपर टूट पड़े। उन्होंने उसे फ़ौरन तोड़ डाला। शिकारीको पता भी नहीं चल पाया कि हिरन कहाँ जाकर मरा। करटक-

"करटक और हिरिया भी सहम और सँभलकर खाने लगे"

और हिरियाने डटकर स्वादिष्ट और ताजा मांस खाया और शेष भाग गिद्धों के पल्ले पड़ा।

करटककी बिरादरीके अन्य गीदड़ मध्य-प्रदेशके जंगलोंमें परिस्थितिके अनुसार शेर और बघेरेकी जूठन खानेके बड़े उत्सुक रहते। गन्ध पाकर अथवा शेरके पीछे चलकर वे उसके मारे शिकारसे दूर बैठ जाते। चक्कर काटकर वे शेरकी ओर सरकते; पर उसकी धमकीकी गुर्राहटसे ठिठककर पीछे हट जाते और अगले पंजोंके बीच अपनी थूथन रखकर टुकुर-टुकुर देखते रहते। जब शेर या बघेरा पेट-भर खाकर चला जाता, तब सहमते हुए बची-खुची लाशपर जुट जाते। अगर कहीं चर्खे भी वहाँ होते, तो गीदड़ोंका नम्बर उनके कुछ बाद आता। वैसे कभी-कभी वे साथ-साथ ही लाश खाते रहते। पर करटकको शेर या बघेरेके सम्पर्कमें आनेका कोई अवसर नहीं मिला था और न वहाँपर पहाड़ी इलाकोंकी-सी समस्या ही थी। हाँ, करटक और हिरियाको बड़ेगाँवके आसपास जीवन-व्यापनके लिए उतना ही परिश्रम करना पड़ता, जितना कि अन्य प्रदेशके गीदड़ोंको।

बरसातके दिनोंमें और बरसातके बाद करटक और हिरिया धीरे-धीरे कुंडके किनारे घूमते और बालू तथा मिट्टीकी गोलियोंके समूहको देखते। गोलाकार उठे हुए स्थानों और ऊपर चिलमनुमा जगहोंको न देखकर करटक और हिरिया समझ जाते कि वे केंकड़ोंके घर हैं। केंकड़ेके स्वादपर वे फ़िदा थे। वे ही क्यों आदमी तक केंकड़ोंको बड़े स्वादसे खाते हैं; पर केंकड़ोंके छेदमें मुँह डालनेके मानी थे केंकड़ोंकी टँगासे नाक कटाना। इसलिए करटक अपनी पूँछ छेदपर लाता और उसको छेदके भीतर डालता, जैसे कोई बोतलको ब्रशसे साफ़ करता हो। केंकड़ेके छेदमें करटककी पूँछके बाल जाते और केंकड़ा समझता कि कोई शत्रु उसपर हमला करता है, या कोई कीड़ा-मकोड़ा उसके चंगुलमें फँस रहा है। छेदकी बगलसे केंकड़ा पूँछके बालोंको पकड़ता, करटक उसके छेदसे तनक हटता, अपनी पूँछसे लटके केंकड़ेको मुँहमें रखकर और कड़र-कड़रके रेवड़ीकी भाँति खा जाता।

हिरिया भी यही करती। जहाँ-जहाँ केंकड़े होते हैं, वहाँ-वहाँ गीदड़ इसी प्रकार उन्हें पकड़ते हैं।

होलीके करीब हिरियाके दो बच्चे हुए। उनका पालन-पोषण भी ठीक वैसे ही हुआ, जैसे करटक और हिरियाका हुआ था। जब करटक और हिरियाके बच्चे पाँच-छः महीनेके थे, तब एक दिन शामको करटक और हिरिया जैसे ही शिकारको निकले, वैसे ही करीबकी एक झाड़ीसे मांसकी गन्ध आई। आगे बढ़कर करटकने देखा, तो एक बड़ा दँतैल सूअर बुरी तरह घायल हुआ पड़ा था। सब गीदड़ झाड़ीको घेरकर बैठ गये। घायल सूअरने क्रुद्ध दृष्टिसे उन्हें देखा ; पर सूअरमें इतना दम नहीं था कि वह गीदड़ोंको वहाँसे भगा सकता। गीदड़ोंमें भी इतना साहस न था — और साहस-प्रदर्शनकी ज़रूरत भी नहीं थी—कि सूअरपर जाकर जुट जाते। चक्कर काटकर और सावधानीसे झाड़ीमें झाँककर करटक अपने कुटुम्बवालोंसे कह देता कि जल्दी करनेकी ज़रूरत नहीं है।

प्रातःकालके समय करटकने हु४एकी तुरई बजाई, और शायद भारतवर्ष भरमें उस हु४ए और हु२ए, हु२एकी आवाज़ फैल गई। करटकको जब विश्वास हो गया कि सूअरका खात्मा हो गया, तब उसने हिरियाको संकेत किया कि अब दावत खानेमें कोई खटका नहीं है। सबने मिलकर खूब खाया और सन्तुष्ट होकर जंगलमें जा छिपे।

करटक और हिरियाके प्रतिवर्ष बच्चे होते रहे और आठ-दस वर्ष तक करटकने अपने जीवनको बड़ी शानसे चलाया। बादमें वह दिखाई नहीं पड़ा। बीमारीसे, किसी दुर्घटनासे अथवा किसी अन्य प्रकारसे उसकी मृत्यु हुई—मालूम नहीं हो पाया। पर बड़ेगाँवके करीब सियार-जीवन गंगाकी धारके समान अब भी जारी है।

जंगली मुर्ग़ : छैल-छबीला

जंगली मुर्ग : छैल-छबीला

उत्तर-भारतमें फागुनका महीना न्याय-तुलाकी भाँति दिन-रातको बराबर तोल देता है। गर्मी और सर्दीका भी समतुलन-सा हो जाता है—न गर्मी ज्यादा पड़ती है और न सर्दी। हाँ, भूतलसे सर्दीका सिक्का उठ जाता है। ग्रीष्मके सूत्रधार वसन्तका जन्म और यौवन फागुनमें ही होता है। मैदानके खेतों और गाँवोंमें वसन्त-नट रंग-बिरंगे वस्त्र पहने सर्दीके बुढ़ापे और गर्मीके शैशवपर खुशियाँ मनाता है। गेहूँ और जौके पौधे सिर हिलाकर, सरसोंके फूल अपने सौन्दर्यका प्रदर्शनकर, आम्र-कुंज अपने सौरभमय बौरका प्रस्फुटनकर और अन्य द्रुमदल पल्लवित और पुष्पित होकर अधखुली आँखोंसे—अधखिली कलियोंसे—ऋतुराजका स्वागत करते हैं।

शीतकालसे निस्तब्ध—ठिठुरी—जीवन-शक्ति वसन्त-स्पर्शसे सक्रिय होकर एक-एक दिनकी डगें भरकर—तीस डगोंमें—जवानीके जुएमें जुन जाती है। फिर जोशे-जवानीमें प्रकृति-परी थिरकती फिरती है। नीलकण्ठ, भुजंगा, पिंडक, पीलक, हरा बसन्ता, मुर्ग, तीतर और बतखकी प्रेम-भरी ध्वनियाँ कानोंमें पड़ती हैं। रास्तों और छतोंपर नरपिंडक गर्दन फुलाये अपनी मानिनीसे 'एक है तू', 'एक है तू' की रागिनीमें बातें करता है, तो नीलकण्ठ आकाशमें टाँय-टाँय-टाँय करके अपनी संगिनीको अपने कंठ और परोंकी सुषमा दिखाता है। तीतरकी 'टीलो-टीलो-पटीलो', कुकड़े (जंगली मुर्ग) की 'कुकड़ूँ२ कुकड़ूँ२' (प्लुत) की ध्वनि, बसन्ताकी 'ठुक ठुक-ठुक'—प्रणय-लीलाकी दुन्दभी बजाती हैं।

हिमालयकी तराईमें ऋषीकेशके क़रीब खड़े होकर कोई वसन्तागमनकी छटा देखे, तो वह मन्त्रमुग्ध-सा हो जाय। हिमालयके शिखर सीढ़ियोंके समान तर-ऊपर रखे मालूम होते हैं। वृक्षोंकी हरियाली और कोंपलोंसे वे सीढ़ियाँ हरी मखमलसे ढँकी प्रतीत होती हैं, मानो ऋतुराजके स्वागतके लिए स्वर्गसे भूतल तक प्रशस्त मार्ग बना हो। पेड़ों और पत्तियों, फूलों और फलों, घास और पात, चिड़ियों और जानवरोंमें जवानीकी उमंग फूट पड़ती है। जंगल शीत-निद्रासे जागकर एक अँगड़ाई-सी लेता है। विकसित यौवन और प्रणय-केलिके चिह्न जगह-जगह दिखाई पड़ते हैं। सारे जंगलमें बिजली-सी दौड़ जाती है।

वसन्तकी एक ऐसी ही संध्याको दिन-भरकी यात्राके उपरान्त, जब हसरत-भरी निगाहसे सूर्यने अपने दैनिक कार्यक्रमपर विचार किया, तब वह एक पराजित सेनापतिकी भाँति घबराने लगा। क्षितिजकी चादरमें उसने अपना मुँह ढाँकना चाहा और आकाशमें अपनी अन्तिम गरम साँस छोड़ी, जिससे बादलके इक्के-दुक्के टुकड़े रक्तवर्ण हो गये। इधर जंगलोंमें हिंस्र जन्तुओंने अपनी माँदोंको छोड़ा। पक्षियोंने बसेरा लेना शुरू किया। पर मार्गसे दूर घनी झाड़ियों और एक चट्टानके बीच एक मुर्गी—बसन्तो—अचल बैठी रही। छह अंडोंपर बैठी वह उनकी देखभाल कर रही थी और सेनेके लिए उन्हें गर्मी भी पहुँचा रही थी। पिछली बार उसने एक झाड़ीके किनारे अंडे दिये थे। एक झाँकने झाड़ीसे पत्ते चानेमें अपने पैरोंसे उसके चार अंडे कुचल दिये थे और शेष तीन अंडोंको एक बनबिलार खा गया था।

बसन्तो आँखें झपकाये अंडोंपर बैठी रही। प्रातःकाल होते ही इधर-उधर नज़र दौड़ाकर वह चुपचाप उठी और झाड़ीकी बगलमें होकर एक

नालेमें चली गई, जहाँ उसकी भेंट मुर्गियोंके एक झुंडसे हुई। मुर्गेने जो इसे देखा, तो 'को-कुकड़ूँ'की धीमी ध्वनि की और टोलीकी मुर्गियोंने 'की-क्लिक' करके अन्यमनस्क भाव प्रकट किया। सब-के-सब पत्तोंके नीचे पाये जानेवाले कीड़े खाने लगे। बसन्तोने नालेसे पानी पिया और गोबरके एक ढेरको अपने पंजोंसे कुरेद-कुरेदकर इधर-उधर फेंका, और उसके भीतर जितने भी दाने मिले, उन्हें वह खा गई। दीमक, सुंडी और हरी घासकी कोंपलोंसे अपना पेट भरकर घंटे-डेढ़-घंटेमें वह फिर अपने अंडोंकी ओर आ गई। झाड़ीके किनारेसे उसने देखा कि कोई उसे देख तो नहीं रहा। इस विश्वाससे कि किसीने उसे नहीं देखा, वह झाड़ीमें घुस गई और अंडोंपर जा बैठी। पर जंगल-जीवनमें भोजन-प्राप्तिके लिए सैकड़ों आँखें और नाकें घातमें रहती हैं। पहाड़की ररकके एक छेदसे एक चूहेने अपनी थूथन हिला-कर देखा कि एक मुर्गी बिना किसीके देखे-भाले चुपचाप झाड़ीमें घुसना चाहती है, वहाँ मुर्गीके अंडे ज़रूर होंगे। अंडोंके खानेकी लालसासे चूहेने जीभ लपलपाकर अपने होंठ भी चाटे, और वह घात लगाकर बैठा कि कब मुर्गी वहाँसे निकले और कब वह अंडोंका रसास्वादन करे। अपने बिलमें चूहा कभी ऊँघता, कभी अपने बच्चोंको चीं-चीं करके आश्वासन देता कि घबराओ नहीं, आज शामको मुर्गीके अंडोंकी दावत उड़ेगी।

उधर बसन्तो अंडोंपर बैठी तपस्या-सी कर रही थी। झाड़ीके आसपास ज़रा भी कोई खटका होता, तो वह अंडोंपर और भी छपक जाती और अधमिची आँखोंसे उस ओर देखती। प्रकृतिने नर और मादामें मादाको बदसूरत इसीलिए बनाया है कि वह अंडों-बच्चोंको सेने और पालनेमें अपने शत्रुओंकी आँखोंसे ओझल रह सके। कंकड़ों, पत्तियों और घाससे घिरे अंडोंपर बैठी मुर्गी या मोरनी आसपासके दृश्यका एक भाग-सा बन जाती है। अगर मुर्गे या मोरके-से चमकीले पर और आकर्षक कलगियाँ मुर्गी या मोरनीके भी होतीं, तो गीदड़, बनबिलार, न्यौले, लोमड़ी और साँपकी नज़र उनपर बहुत दूरसे पड़ जाती, और कदाचित् जंगली मुर्गकी नस्ल तो नष्ट ही हो जाती। पर

परमात्माके बदसूरती देनेसे ही बसन्तोकी आशंकाएं दूर नहीं हुई। दोपहर-को झाड़ीमें होकर कोई दस फुटकी दूरीसे शंखचूर सांप (King Cobra) धीरे-धीरे सरसराता हुआ निकला। उसका एक गज़ ऊँचा फन भी दिखाई दिया। बसन्तोकी तो जान-सी निकल गई। वह जानकी बाज़ी लगाये मृतवत् वहां बैठी रही। यदि तनक भी हिलती-डुलती, तो शंखचूरका घातक वार उसपर हुए बिना न रहता और अंडोंके साथ वह भी सांपके पेटमें पहुँच जाती। पर सांपने समझा कि वहां कोई चीज़ नहीं है— काई लगा एक पत्थर-सा रखा है। सांपके चले जानेके बाद बसन्तोने आरामकी सांस ली।

सायंकाल बसन्तो जब अंडोंपर से उठकर अपने चुगे-पानीको निकली, तब चूहेकी बन आई। नाक मटकाता हुआ वह बिलसे निकला और घास तथा पत्थरोंमें लुकता-छिपता अंडोंकी ओर लपका। झाड़ीमें घुसकर अंडोंको तलाश करनेमें उसे बहुत देर नहीं लगी। छह अंडोंको देखकर वह फूला नहीं समाया। यदि वह उन अंडोंको अपने घर ले जा सका, तो वह बढ़िया दावत उड़े कि क्या कहना! एक अंडेको ठेलकर उसने अलग किया। उसके मुँहमें वह आता न था, इसलिए अंडेको ठेल-ठालकर वह अपने बिलकी ओर ले जाने लगा।

"अंडेको ठेल-ठालकर वह अपने बिलकी ओर ले जाने लगा"

आध घंटेके अथक परिश्रमके बाद पहाड़की ररकके रास्तेपर वह उसे ला पाया। तेज़ ररकके ऊपर अंडेको ठेलकर ले जाना असम्भव समझ

चूहा अपनी श्रीमतीकी सहायता लेनेके लिए ऊपर चढ़ा ही था कि एक उल्लू झपटा और उसे पंजोंमें दबाकर ले गया। पेड़पर बैठकर उल्लूने चूहेका

"एक उल्लू झपटा और उसे पंजेमें दबाकर ले गया"

भोग लगाया। उधर चूहेके आनेमें बहुत देर होते देख और भूखसे व्याकुल बच्चोंकी चीं-चींसे परेशान होकर श्रीमती चुहिया रानी आवेशमें आकर बाहर निकलीं, मानो प्रकट कर रही थीं कि चूहेको अगर गृहस्थी चलानेका शऊर न था, तो घर काहेको बसाया था? अभी वह ररकसे नीचे नहीं आ पाई थी कि एक उल्लूने फिर झपट्टा मारा। खैर यही हुई कि श्रीमती चुहिया रानी एक पत्थरकी आड़में हो गईं। खाली वार जानेसे उल्लूके कुछ चोट भी आ गई, जिससे वह दोबारा भागती चुहियापर टूट न सका। चुहियाने अपने बिलमें शरण ली। उसने बच्चोंको खासी डाँट बताई—'निपूतो, तुम्हें होश नहीं है। मैं तो बाल-बाल बचकर आई हूँ और तुम

मुझे परेशान करते हो ! रखे दाने खा लो।' उल्लू रात-भर करीबके पेड़की सूखी डालपर चुहियाकी घातमें बैठा रहा ; पर वह उसके हाथ न आई।

अगले दिन प्रातःकाल बसन्तो अंडोंपर से उठकर झाड़ीके बाहर आई, तो वहाँ उसने एक खरगोशको चरते पाया। पर फैलाकर बसन्तो कौ-कौक करके उसपर पिल पड़ी और एक ठोंक दे मारी। खरगोश तो घबराकर ऐसा भागा कि कई फर्लांगकी दूरीपर जाकर रुका ; पर बसन्तोके उस आक्रमणसे न्यौलेके जोड़ेकी दो जोड़ी आँखें उस ओर हो गईं। पहाड़के किनारे तीस-चालीस गज़की दूरीपर न्यौलेका जोड़ा अपनी आखेटपर था। इस घातमें कि उधर कहीं कोई मरी चिड़िया मिल जाय, या कोई मांसावशेष ; दोनों भूखे उधर चल पड़े। ररकके नीचे मार्गपर उन्हें बसन्तोका अण्डा मिला, तो नर न्यौलेने उसे हथिया लिया और अपने पैने दाँत उसमें गड़ा दिये। मादा-न्यौलेने भी छीन-झपट की ; पर अंडेका अधिकांश नरके हिस्सेमें ही आया। अंडा खानेके बाद उन्होंने अपनी थूथनसे जो गन्ध ली, तो ररकके ऊपरसे चूहेकी गन्ध आई। चुहिया उधर होकर ही अपनी बिलकी ओर भागी थी।

दोनों खोजी सूँघते-साँघते चूहेके बिलपर पहुँचे और उसमें अपनी थूथनें लगाकर उन्होंने सूँघा। फ़ौरन ही अपनी पूँछें फुला और रोएँ खड़े कर उन्होंने एक-दूसरेकी ओर देखा, मानो वे परस्पर ये भाव प्रकट कर रहे थे कि बिलमें कैसा बढ़िया भोजन है ! न्यौलेने बिल खोदना शुरू किया। एक न्यौला थक जाता, तो दूसरा खोदनेमें जुटता। ज़रा-से खटकेसे डरकर वे एक चट्टानकी आड़में हो जाते। दो घंटोंके परिश्रमके बाद न्यौलोंने चुहिया रानीको मय बाल-बच्चोंके जा पकड़ा। चुहियाने साहसकर दो-एक मुँह न्यौलेके मारे ; पर उसकी एक भी नहीं चली। न्यौलोंने उस मूषक-कुटुम्ब का सफ़ाया कर दिया। इस सफ़ायेसे बसन्तोके अंडे उस दिन बच गये।

कई दिनों तक बसन्तोका यह क्रम चलता रहा। एक दिन सायंकाल से कुछ पहले न्यौले घूमते-घामते अंडोंवाली झाड़ीकी ओर आ निकले।

बसन्तोके भाग्यसे झाड़ीके करीब एक घसियारा घास खोदकर बैठा-बैठा बीड़ी पी रहा था। झाड़ीकी बगल और घसियारेमें समकोण बनता था। किनारे पर जैसे ही खोजी न्यौलोंकी थूथनें उसे दिखाई दीं, वैसे ही उसने अपनी खुरपी संभाली। बिदककर न्यौले भागे। घसियारेने अपनी खुरपी फेंककर मारी, जिससे एककी पूँछ कट गई। पीड़ासे न्यौलेने 'खिस्स' की, और दुम छोड़ तथा अपनी जान बचाकर बंडा न्यौला भाग गया। घसियारे की दो पालतू मुर्गियोंको एक दिन दो न्यौले मार गये थे, इसलिए वह न्यौलों पर खिजा हुआ था।

उस दिनसे न्यौले उधर नहीं आये, पर बसन्तोको तो एक-एक क्षण काटना दूभर था। उसकी झाड़ीके निकट ही एक रात बनबिलावोंमें लड़ाई होती रही। एक दिन जब बसन्तो पानी पी रही थी, तब सामनेसे एक बघेरेने उसे पकड़ लिया होता। एक दिन जंगली हाथियोंके झुण्डने बाँसोंके एक थांवलेको गिराया और उसके अंडे हाथियोंके पैरोंसे रूँदते-रूँदते बचे।

बीसवें-इक्कीसवें दिन झाड़ीसे निकलते हुए बसन्तोको दो गीदड़ोंने देखा। बसन्तोने भी उनकी क्रूर-दृष्टिको भाँप लिया, पर बसन्तोकी क्या बिसात कि वह गीदड़ोंको रोकती? मुँह बाये, कान खड़े किये और आँखोंसे घूरते गीदड़ झाड़ीकी ओर बढ़े। रोष और विरोध प्रकट करनेके अतिरिक्त बसन्तो कर ही क्या सकती थी? किल्क, कौं-कौंक करके वह झाड़ीके ऊपर बैठ गई और उन्हें गाली-गलौजसे दुत्कारने लगी। गीदड़ बसन्तोकी ओर घूरते हुए झाड़ीकी ओर बढ़े। एक गीदड़ने टाँग उठाकर जैसे ही एक झाड़ी पर पेशाब किया, वैसे ही रस्तेकी ओरसे एक घसियारा उधर आता दिखाई दिया। घसियारेको देखकर एक गीदड़ जो बिदका, तो दूसरा भी दुम तोड़कर भागा। दोनों गीदड़ वहाँसे दूसरी ओर शिकारके लिए चले गये। बसन्तो भी झाड़ीसे नालेकी ओर उड़ गई। घसियारेने समझा कि मुर्गीके बच्चोंको गीदड़ घेर रहे होंगे। घसियारेने बच्चोंकी तलाशमें झाड़ीके

भीतर, बाहर और ऊपर देखा, पर बच्चे कहीं दिखाई न दिये। वह वहीं घास छीलने लगा।

बसन्तो जो लौटकर आई, तो उसने घसियारेको झाड़ीके क़रीब घास खुरचते देखा। झाड़ीकी दूसरी ओरसे वह अपने अंडोंपर जा बैठी। दोपहर लौटे वह अंडोंको ध्यानसे देखने लगी। एक अंडेमें जो उसने दो-तीन खोंठें मारीं, तो अंडा टूट गया और उनमें से एक बच्चा निकल पड़ा। बसन्तोने उसे प्रेम-भरी नज़रसे देखा और अपने डैनेके नीचे छिपाना चाहा ; पर वह चीं-चीं

"बसन्तोकी पीठपर जा बैठा।"

करके एक ओर हो गया और बसन्तोकी पीठपर जा बैठा। घंटे-भर बाद बसन्तोने अपने शेष चार अंडोंको भी सेया। उनमें से भी चार छोटे बच्चे—चूज़े—निकले और भागकर बसन्तोके डैनोंमें छिप गये, मानो अंडोंके छिलकों

की तंग दुनियासे निकलकर आसपासकी दुनियाके प्रसारको देखकर वे डर गये हों और अपनी मांकी गोदमें जा छिपे हों। पहला बच्चा – अकड़फूं— अपनी मांकी पीठसे उतरा और उस अंडेकी छिक्कलोंको बड़े कौतूहलसे देखने लगा, जिसमें एक घंटे पहले वह क़ैद था। बसन्तो क्लिक-क्लिककी ध्वनिसे बड़े दुलारके साथ उसे अपने परोंके नीचे बुलाती ; पर अकड़फूं क़रीब ही रेंगते हुए एक कीड़ेपर ठोंक मार रहा था। उसके भाई-बहन बसन्तोके डैनोंके नीचेसे अकड़फूंकी ओर कौतूहलपूर्ण मुद्रामें देख रहे थे। थोड़ी देर बाद अकड़फूं भी अपने भाई-बहनोंकी ओर बढ़ा। उन सबने चीं-चीं और चूं-चूंके शब्दोंसे उसका स्वागत किया। सभी बच्चे मुर्गीके डैनोंसे बाहर आये। वे कभी अंडोंके छिक्कलोंको देखते और कभी अपनी मांकी ओर निहारकर उसके परोंसे चिपटते और कोई-कोई बच्चा बसन्तोकी पीठपर चढ़ता-उतरता। जीवन और जन्म प्रगतिके द्योतक हैं, और प्रगतिके लिए चाहिए शक्ति। शक्तिका संचार मानसिक और शारीरिक भोजनसे होता है। शिशुओंमें— मानवी शिशुओं तकमें —शक्ति संचारके लिए कुछ भोजन चाहिए। बसन्तोके बच्चे – अकड़फूं, मुल्या, मटकैला, गबदू और बिब्बो — भी कुछ खानेको चाह रहे थे। अकड़फूंको अण्डेसे निकले दो घंटे हो चुके थे और मुलिया, मटकैला, गबदू और बिब्बोको एक घंटेके क़रीब हुआ था। सब बच्चे फरेरे हो गये थे।

लगभग चार बजे बसन्तो अपने बच्चोंको लेकर चली। झाड़ीसे निकलते ही उनकी शिक्षा-दीक्षा प्रारम्भ हो गई। बसन्तोको एक-एक क़दम सम्भालकर रखना पड़ रहा था। क्लिक-क्लिक कीकी-कौके सिगनलों और संकेतोंसे वह अपने बच्चोंको ले चली। जब कभी कोई बच्चा अगल-बगलसे

कुछ दूर हो जाता, तभी तेजीसे वह उधर बढ़ती और चोंचके सहारे झिड़कते हुए उसे टोलीमें ले आती। पर अकड़फूँ विद्रोहीकी भाँति इधर उधर भागता और कठिनाईसे काबूमें आता। बसन्तो चाहती थी कि वह आगे चले और उसके बच्चे अगल-बगल उसकी चोंचकी मारके भीतर रहें। अंडे सेनेके स्थानसे वह लगभग एक फर्लांग गई होगी कि सुबहवाले दोनों गीदड़ उधर आये और झाड़ी में अण्डोंके छिक्कलोंको पाकर अपना-सा मुँह लिये चले गये। हाँ, दो-चार छिक्कलोंको उन्होंने करर-करर चबाया।

बसन्तोने एक दिमौरकी बगलमें अपने पञ्जोंसे पत्ते इधर-उधर हटाये, और सब बच्चे चीं-चीं करते हुए उधर दौड़ पड़े। अकड़फूँने एक कीड़ा धर पकड़ा और उसे निगल गया। उसके करीब ही उसके भाई मटकैला और गबदू कीड़ोंपर चोंचें मार रहे थे। मटकैला अकड़फूँके निकट ही था। बस, अकड़फूँ मटकैलापर टूट ही तो पड़ा। दो ठोंगें उसके जमाईं। मटकैला चीं-चीं करके भाग गया, और अकड़फूँकी जमादारी अपने भाई-बहनोंपर कायम हो गई।

थोड़ी देरमें बसन्तोके बच्चोंके सामनेसे एक बड़ा मुर्ग आया और उसके पीछे उसका पूरा रनिवास—सात आठ मुर्गियाँ। उठी हुई सतर लाल कलगी, हरे, नीले, काले और लाल पंखोंने मुर्गको बहुत ही आकर्षक बना रखा था। उसकी पूँछके पंख भी खूब सटे हुए थे। अकड़फूँ मुर्गकी सूरत-शकल देखकर चकित रह गया। उसके दो भाई मटकैला और गबदू भी कुछ देर खड़े रहे और फिर धीरे-धीरे चीं-चीं करते हुए अपनी माँकी ओर बढ़े। अकड़फूँकी दोनों बहनें मुलिया और बिब्बो तो घबराकर बसन्तोके पेटसे आ लगीं और वहीं से चीं-चींका प्रश्नवाचक शब्द करने लगीं। बसन्तो और मुर्गमें कुछ

अभिवादन हुआ। रनिवासकी मुर्गियोंने बसन्तोकी सफलतापर हर्ष प्रकट किया। मुर्ग़ने पर फड़फड़ाये और गर्दन ऊँची करके कुकड़ूँ ३, किंकरी ३ की ध्वनिसे आसपासके जंगलको गुँजा दिया। उसके बाद तो जंगल मानो कुकड़ूँ ३, किंकरी ३—सम्भल जाओ, उठ री ३—की गूँजसे प्रतिध्वनित हो गया। हिमालयकी तराई ऋषीकेशसे लगाकर दार्जिलिंगके नीचे तकके मुर्गों के स्वर मिल गये।

आठ-दस बार अपने चैलेंजको देकर मुर्ग उड़ा और क़रीब ही एक सालके पेड़पर जा बैठा। उसके पीछे उड़ीं पंखोंकी भिर्र-ध्वनिके साथ उसकी मुर्गियाँ। शाखोंपर बैठकर की-क्लिक करती हुईं, चोंचों और पंखों-से ठोंकें मारती और धक्का देती हुईं वे अपने-अपने स्थान चुनने लगीं। थोड़ी देर बाद बसन्तो भी उधर आई और एक कटीली झाड़ी—जंगली करौंदकी झाड़ी—में अपने बच्चोंको लेकर घुस गई। पंजोंसे खरोंचकर उसने मुलायम भुरभुरी बालूनुमा मिट्टी की। रज-स्नान करके वह बच्चोंको अपने डैनोंके नीचे बैठाकर रात बिताने लगी।

अंडे तो उसने से लिए थे; अब उसे बच्चोंकी देखभाल बहुत करनी थी। साँप, लोमड़ी, गीदड़, न्यौला और बनबिलारका क़दम-क़दमपर डर था। अभी कुछ दिनों तक तो उसे अपने बच्चोंको लेकर ज़मीनपर सोना था। कहीं कोई शिकारी उसे ही न मार डाले, कहीं छिपे साँपके वारका शिकार वही न हो जाय अथवा कोई बनबिलार ही उसपर न टूट पड़े—इन सब आतंकोंसे उसे बचना था, नहीं तो उसके बच्चोंके बिलख-बिलखकर मर जानेकी आशंका थी।

सुबहको जैसे ही मुर्गोंकी ध्वनियोंसे जंगल जगा, वैसे ही बसन्तोने

मी कुलबुलाकर अपने बच्चोंको सचेत किया। सूरज निकलनेसे पहले वह अपने बच्चोंको लेकर बाहर हुई। कई दिनों तक इसी प्रकार जीवन-क्रम चलता रहा। बसन्तोके बच्चोंमें भागने-दौड़नेका दम आ गया। जब बसन्तो कौक-कौकी आवाज़ करती, तब उसके बच्चे भागकर उसके पास आ जाते और घासमें छिप जाते। फिर बसन्तोके दोबारा बुलानेपर छिपे स्थानसे वे बाहर निकल आते।

एक दिन जब बसन्तो अपने परिवारके साथ एक नालेमें चुग रही थी, तब अकस्मात् पीछेसे दबे पाँव एक शेर उधर आ निकला। शेरको देखकर बसन्तोने आतंक-सिगनल दिया—'कौ-कौक-कौ', और लगी भागने नालेके नीचेकी ओर। यदि वह अकेली होती, अथवा अपनी टोलीके साथ होती, तो बिदककर उड़ जाती; पर उसके सामने बच्चोंकी रक्षाका सवाल था, इसलिए वह नालेके नीचेकी ओर भागी। किन्तु भागनेके स्थानसे तीस-चालीस गज़पर एक दुर्घटना हो गई। शेर तो अपने मार्गपर चला गया; पर बसन्तो जैसे ही तीस-चालीस गज़ नालेमें जाकर ऊपर चढ़ी और मटकैला एक झाड़ीके पाससे होकर निकला कि झाड़ीमें छिपे एक काले साँपका उसपर वार हुआ। साँपकी गुंजलकमें खिंचकर मटकैला गायब हो गया। मटकैलाकी चोंचसे एक ज़ोरकी चीं-चीं निकली। बसन्तो को-कौ करती हुई उधर आई। उसकी गर्दनके पर फूल हुए थे। आध घंटे तक वह झाड़ीके इधर-उधर को-कौ-कूकौ करती रही; पर उसके विरोध और रोष व्यर्थ थे। उसके बच्चे घबराकर अपनी माँसे दूर सिमटे-सुकड़े एक पेड़की जड़के पास खड़े रहे। एक घंटेके बाद बसन्तो वहाँसे चली। रुक-रुक वह आतंकसूचक शब्द करती और अपने बचे बच्चोंको ओर प्यार-मिश्रित चिन्तासे देखती।

सायंकाल तक बसन्तो भटकैलाके बिछोहको भूल गई। जंगल-जीवनमें, जहाँ वर्तमानकी पेचीदा समस्याएँ मुँह बाये सामने खड़ी रहती हैं, वहाँ भूत और भविष्यकी उलझनोंको सुलझाने अथवा चिन्ताओंके लिए कोई अवसर नहीं होता।

* * * *

जब बच्चे तीन-चार महीनेके थे, तब दोपहर लौटे एक दिन बसन्तो अपने बच्चोंके साथ नालेके किनारे-किनारे चुग रही थी। अकड़फूँकी तबीयत आई कि नालेके ऊपरकी हवा खाई जाय। उधरसे मुर्गोंकी तलाशमें एक शिकारी घात लगाये, नपे-तुले क़दमोंसे, हाथमें दुनाली बारह नम्बरकी बन्दूक साधे नालेमें होनेवाली खड़खड़की ओर आ रहा था। अकड़फूँने नालेके ऊपर जाकर उसे पूरा पता दे दिया। शिकारीने देखा कि मुर्गोंके झुण्डमें चूज़े भी हैं, और अगर एक छर्रेमें कई चूज़े मिलें, तो शोरबाका मज़ा आ जाय। इसलिए अकड़फूँको देखकर वह एकदम बैठ गया कि और चूज़े भी बाहर आ जायँ। अकड़फूँ वहाँसे भगा नहीं। उसके भाई-बहनोंने भी ऊपर जानेकी चेष्टा की, और जैसे ही मुलिया कुदककर ऊपर गई, वैसे ही शिकारीने बन्दूक तानी। क्लिक-की करके मुलिया नालेमें कूदी। अकड़फूँके भी पैर उखड़ गये। सब भाई-बहन घबराहटका सिगनल देने लगे और नालेके नीचेकी ओर भागने लगे। कोलाहल सुनकर बसन्तो उधर आई और बच्चोंको लेकर भागने लगी। उधर शिकारीने भागकर नालेके नीचेके एक मार्गको जा घेरा, जहाँसे मुर्गियोंके निकलनेकी सम्भावना थी।

जैसे ही शिकारी अपने स्थानपर पहुँचा, वैसे ही बसन्तोका परिवार भी

उधर आया ; पर अनुभवी बसन्तोने शिकारीके सिरको हिलते देखा और ज्यों ही शिकारी फ़ायर करनेको हुआ, वैसे ही बसन्तो उड़कर शिकारीकी बन्दूककी नालपर आकर फड़फड़ाई और एक ओर कूदकर झाड़ियोंमें आँखसे ओझल हो गई। बसन्तोके बच्चे मौका पाकर नालेके ऊपर चढ़ गये। शिकारी बसन्तोकी चालपर बहुत झेंपा और हँसता हुआ चला गया। बसन्तो और उसके बच्चे थोड़ी देर बाद आपसमें मिल गये।

शरद्-ऋतुके आगमनसे पूर्व बसन्तोकी चिन्ता कुछ कम हो गई, क्योंकि बच्चे काफी बड़े हो गये थे। उनके शरीरको पंखोंने ढँक लिया था और उनके भोंड़े शरीर—विशेषकर उनके पेट—पंखोंसे ढँकनेसे सुडौल प्रतीत होते थे। अब वे ज़मीनपर नहीं सोते थे, वरन् झाड़ियोंकी टहनियोंपर कूदकर चढ़ जाते और की-क्लिक करके काफ़ी ऊँचे जा बैठते थे। बसन्तो कुछ अधिक ऊँची बैठती और उसके नीचे बैठना अकड़फूँ।

शीतकालमें एक रातको बसन्तो अपने परिवारके साथ जंगली करौंदेके पेड़पर बसेरा ले रही थी। क़रीबके पेड़पर एक और मुर्गी अपने बच्चोंके साथ रात काट रही थी। टोलीका मुर्ग़ा सालके एक पेड़पर बैठा ऊँघ रहा था। रातकी कालिमा चारों ओर पुती हुई थी। कीड़े-मकोड़े भी सर्दीके कारण बिलों, कूड़ेके ढेरों और पत्थरोंके नीचे छिपे पड़े थे। सर्दीका घेरा पड़ा था। सम्पूर्ण जंगल शीतल-कोपसे थरथरा रहा था, मानो घबराकर पेड़की पत्तियाँ टप-टप आँसू बहा रही थीं—ओस-कणोंके रूपमें। हाँ, पेड़ोंपर बैठे बन्दर कभी-कभी शोरगुल मचाते थे। मुर्गियों और बच्चोंके ऊपर जब आँसूकी बूँदें अधिक गिरतीं, तो वे अपने परोंको फड़फड़ाकर उन्हें गिरा देते। शीतके कारण कीड़े-मकोड़े तो सुषुप्तावस्थामें

पड़े थे; पर शेर, बघेरे और बनबिलार रातके अँधेरेमें अपने शिकारकी खोजमें जुटे हुए थे।

"एक भूखा बनबिलार ओससे तरबतर उस करौंदेके पास आकर रुका"

अकस्मात् एक भूखा बनबिलार ओससे तरबतर उस करौंदेके पास आकर

रुका, जिसपर बसन्तोके बच्चे बैठे बसेरा ले रहे थे। पेड़के नीचे खड़े होकर उसने पहले तो अपने बाल फुलाये और फिर फरेरा होनेके लिए उसने अपनी देह हिलाई। खरगोश, चूहे और किसी चिड़ियाकी उसने चारों ओर टोह लगाई। जैसे ही उसने ऊपरकी ओर देखा, वैसे ही उसे कई चिड़ियाँ बैठी दिखाई दीं। बनबिलार एकदम जमीनसे लग गया और फिर पिछले पैरोंपर खड़े होकर अगले पंजोंसे उसने गबदूको खींच लिया। गबदू दो-तीन बार ही कौं-कौंक कर पाई और अपने छोटे डैने चलाये कि बनबिलारके तेज दाँतोंने उसे लोथ बना डाला। गबदूपर किये गये आक्रमणसे वह करौंदेका पौधा कुहराम और कोलाहलका क्षेत्र बन गया। फुर्र-फर्र, कौं-कौंककी ध्वनिसे करौंदा बोलने-सा लगा। बिब्बो, मुलिया और अकड़फूं करौंदेकी फुनगीकी ओर कूदने लगे। बसन्तो जो उड़ी, तो दूसरे करौंदेपर जा बैठी और बनबिलारको अपनी बोलीमें गालियाँ देने लगी तथा आतंक और चिन्ता प्रकट करने लगी। करीबके पेड़पर बैठे मुर्ग भी सचेत हो गये। बन्दरोंने भी सतर्कताकी खीं-खिरच की। बन्दरियोंने अपने छौओंको झटककर बगलोंमें ले लिया। अकड़फूंने जो ज़ोर लगाया, तो वह करौंदेके ऊपरकी फुनगीमें फँस गया। बिब्बो और मुलिया करौंदेके और ऊपर हो गये, जहाँसे वे नीचे कूद सकते थे।

गबदूको खाकर बनबिलारने मुलिया और बिब्बोको कूद-कूदकर डराना चाहा, ताकि घबराकर वे नीचे गिरें। पेड़के ऊपर वह चढ़ नहीं सकता था, क्योंकि शाख बहुत पतली थी और काँटे भी थे। बनबिलार बहुत कूदा-फाँदा; पर बिब्बो और मुलिया वहाँसे गिरीं नहीं। बनबिलार घंटे-भर झख मारकर चलता बना।

प्रातःकाल सूर्य निकलनेपर बसन्तो उड़कर बिब्बो और मुलियाके पास आई। उसने प्रोत्साहन देकर दोनोंको वहाँसे उतारा। अकड़फूं पहले ही झुल्मकर नीचे आ गया था। उस रातके बाद फिर बसन्तो उधर नहीं गई।

यों तो कुछ दिनोंसे बसन्तो अपनी टोलीके मुर्ग—पैंतरेबाज़—और मुर्गियोंके साथ रहने लगी थी; पर रातको बसेरेके लिए उसे अलग ही होना पड़ता था। अब अकड़फूं, बिब्बो और मुलिया भी उड़ने लगे थे, इसलिए वे भी पैंतरेबाज़की संरक्षतामें रहने लगे।

प्रातःकाल पैंतरेबाज़ जब गर्दन उठाकर कुकड़ूं २ किंकरी २ की ध्वनि करता, तब अकड़फूं के जीमें आता कि वह भी उसकी नक़ल करे। उसकी तबीयत अब मुर्गियोंके सामने अकड़कर चलनेको करती। अभी उसके कल्घी और कांटे (Spur) नमूदार ही हुए थे उस पट्ठे के समान, जिसके रेखें आ गई हों, अथवा उस सांड़के समान, जिसका ठट्टा अर्ध-विकसित हो चुका हो। वैशाखके आते-आते अकड़फूं मुर्गियोंके सामने शान बघारने लगा। उनके क़रीब जाकर, पर फुलाकर, तिरछा होकर वह देखता, गोबर और कूड़ेको कुरेदकर धीरे-धीरे कौ-कौक करता और उन्हें अपनी ओर आकर्षित करता। कल्घी भी उसके आ गई थी। पंखोंमें सब तरहके पंख थे। प्रेम-भरी दृष्टिसे वह बिब्बो और मुलियाको देखता।

पैंतरेबाज़ने अब तक तो उसका कोई खयाल नहीं किया था। एक दिन जब अकड़फूंने कूड़ेके ढेरको पंजेसे छितराकर मद-भरी आंखोंसे एक मुर्गीपर नज़र डाली और जैसी ही मुर्गी उस ओर गई तथा अकड़फूंने अपना स्नेह प्रकट किया, वैसे ही पैंतरेबाज़ उसपर पिल पड़ा। चोंच और कांटे के प्रहारसे अकड़फूं घबराया; पर उसने मुक़ाबलेकी ठानी। वह जैसे ही

गर्दन झुकाकर पैंतरेबाज़से भिड़ा, वैसे ही पैंतरेबाज़के काँटेने उसके पेटमें घाव कर दिया। उसकी गर्दन भी लोहू-लुहान हो गई। मार खाकर अकड़फूँ भाग गया और झाड़ीमें जा छिपा। इधर पैंतरेबाज़ने 'है कोई' (कूकड़ूँ३) का चैलेंज दिया। पंख फड़फड़ाकर वह मुर्गियोंकी ओर आया अपनी शान गाँठने कि उसके समान मुर्गियोंको और कोई मालिक नहीं मिल सकता। उसके बाद वह आध घंटे तक अपनी जीतका ढोल बजाता रहा—कूकड़ूँ३, किंकरी३ की ध्वनिमें।

अकड़फूँका सारा घमण्ड चूर हो गया। पैंतरेबाज़के काँटेके आघातसे वह इतना बेहाल हो गया कि अगले दिन तक उसी स्थानपर बैठा रहा। उस हारसे अकड़फूँने पूरा लाभ उठाया। उसे मालूम हो गया कि नेतृत्वकी सफलताके लिए चढ़ती जवानी ही सब-कुछ नहीं है। बाहरी आकर्षणके साथ मुर्गियोंके नेतृत्वके लिए मुर्ग़में अनुभव और दमखम भी चाहिए। विरहाग्निमें तड़पनेसे ही सफलता नहीं मिलती। कोरी विरहाग्नि तो जलाकर खाक कर देती है। द्वन्द्व-युद्धमें कोरे विरहियों और मनचलोंको मुँहकी खानी पड़ती है। पर दाँव-घातसे लड़नेवाले, सौन्दर्य-प्रदर्शन करनेवाले और चोंच और काँटेके पीछे तूफ़ानी जवानीवाले मुर्ग़को सफलता मिलनेके अवसर बहुत हैं। अकड़फूँने इसलिए कुछ दिनों तक किसी भी टोलीके मुर्ग़से लोहा लेनेका साहस नहीं किया, वरन् वह टोलियोंसे दूर-ही-दूर रहता। मुर्गियोंको वह आँखें फाड़कर देखता, पंख फड़फड़ाता, अगल-बग़ल झाँककर कौं-क करता और मुर्गियोंका ध्यान आकर्षित करनेके लिए पंजोंसे जमीन भी खोदता। सुबह और शाम किसी पेड़पर बैठकर 'कुकड़ूँ३' 'किंकरी३' की ध्वनि करता, मानो संगीतका विद्यार्थी स्वरालापका अभ्यास

कर रहा हो। धीरे-धीरे उसके स्वरमें तेजीके साथ दर्दीलापन भी आने लगा। उसके आकार-प्रकारमें भी काफ़ी परिवर्त्तन हो गया। पुट्ठोंपर मांस चढ़नेसे उसकी टाँगोंमें अपेक्षाकृत बल आ गया और तीखा काँटा भी उसके निकल आया था।

इस बीच जंगलमें आग लग जानेसे घबराकर वह दक्षिणकी ओर ऋषीकेश से दूर चला गया था। नवीन स्थानमें उसे बेंतकी अगम्य झाड़ियाँ देखने का मौक़ा मिला, जिनमें दिनके समय भी रात-सी रहती थी। जब कभी चुगकर वह दोपहरके आरामकी बात सोचता, तो बेंतकी झाड़ीमें सावधानीसे घुस जाता। किन्तु बरसात होते ही उसे अपने स्थानकी याद आई। नदी-नालोंके बढ़ते पानीने भी उसे ऋषीकेशकी ओर आनेको मजबूर किया। वह साथमें दो अधजवान मुर्गियोंको भी ले गया।

अपने पुराने स्थानमें आकर वह अपनी नई साथिनोंके साथ जीवन बिताने लगा। एक दिन जब अकड़फूँ एक नालेके मोड़पर अपने पंजोंसे कूड़ा-कर्कट छितरा रहा था और अपनी साथिन नवेलियोंको बुला रहा था कि आओ देखो, तुम्हारे भोजनके लिए मैंने कितने बढ़िया कीड़े ढूँढ निकाले हैं, तब नालेकी दूसरी ओरसे पैंतरेबाज़ छैल-छबीला भी अपने पूरे रनिवासके साथ—दस-बारह मुर्गियों-सहित, जिनमें बसन्तो, बिब्बो और मुलिया थीं—उधर आ निकला। अकड़फूँ और पैंतरेबाज़—पुत्र और पिता—का सामना हुआ। एक दूसरेको देख-कर दोनोंके तन-बदनमें आग-सी लग गई। पैंतरेबाज़ने ललकारा—कुकड़ूँ३ किंकरी२—है कोई२, जो आवे१। अकड़फूँने भी चैलेंज स्वीकार करते हुए कहा—कुकड़ूँ३, किंकरी२—कोई है३, जो भुगते२। बस, दोनों प्रतिद्वन्द्वी पिल पड़े। जैसे ही दोनों प्रतिद्वन्द्वी क़रीब आये, वैसे ही दोनोंने अपनी गर्दनें

"बस, दोनों प्रतिद्वन्द्वी पिल पड़े"

झुकाई और हमला किया। बदनोंमें चोंचें मारीं और काँटेसे काँटे भिड़ाये। फिर दोनों गोलाकार परिधिमें चक्कर काटने लगे और आक्रमण करने का मौका ढूँढ़ने लगे। परिधि तंग होती गई। फिर एकदम दोनों तीन-चार गज ऊपर उड़े पंजों और चोंचोंका प्रहार करते हुए, परस्पर गुत्थम-गुत्था होकर धम्मसे नीचे गिर पड़े। उनके नीचे गिरनेके बाद चोंचों और काँटोंसे खुसे हुए उनके पंख हवामें चक्कर काटते और झूमते हुए धीरे-धीरे जमीनपर आ गिरे। पैंतरेबाज और अकड़फूँ नीचे गिरकर अलग हो जाते और चक्कर काटकर वारका मौका ढूँढ़ते; पर कभी-कभी बिना मौका देखे, आवेशमें आकर चोंचोंसे सीधा वार करते। दोनोंका प्रयास था कि मौका पाकर सिरपर कारगर वार किया जाय, जिससे शत्रुको परास्त करनेमें सुविधा हो।

मुर्गियोंका झुण्ड खड़ा तमाशा देखता रहा। अकड़फूँकी साथिनें जैसे ही पैंतरेबाजके रनिवासकी ओर बढ़ीं, वैसे ही बिल्लो और मुल्लियाने उनके ठोंकें मारीं, जिससे वे दोनों कुछ दूर भागकर खड़ी हो गईं और कातर दृष्टिसे उस युद्धको देखने लगीं। दोनों लड़ाके ऊपरको उड़ते और काँटोंके प्रहारोंसे खुसे तथा डगमगाते हुए जमीनपर गिरते। जमीनपर जब किसीकी चोंचका बेपनाह प्रहार होता दिखाई पड़ता, तब दूसरा मुर्ग सिर झुकाकर पहलेकी टाँगोंके नीचे कर लेता, जिससे चोंचका प्रहार पूँछ या पीठपर ही होता।

आध घंटेकी तेज लड़ाईके बाद हवाई-लड़ाई तो बन्द-सी हो गई— और बन्द हुई पैंतरेबाजका दम फूलनेके कारण। अकड़फूँ तो आध घंटेकी लड़ाईसे गरमाया था। उसके रग-पुट्ठे लड़ाईके लिए अब खुले थे; पर ढलती

जवानीके पैंतरेबाज़का नाकोंदम था। फिर भी वह रक्षात्मक लड़ाईमें जुटा हुआ था। पैंतरेबाज़को वार तो नहीं करने थे; पर अपनी प्रतिष्ठाकी खातिर अकड़फूंके आक्रमणोंसे बचना जरूर था। अपने नेतृत्व-रूपी डूबते जहाज़में से वह जो-कुछ भी बचा सके, वही बहुत था। नेतृत्वका उसे खयाल था और अपने पुराने रनिवासको क़ायम रखनेकी भी बात थी। सबसे बड़ी बात थी उसके युद्धका प्रदर्शन अपनी चहेतियोंके सामने। पर यौवन, अनुभव और नेतृत्वके लिए मर-मिटनेकी भावनाने अकड़फूंको और भी तेज बना दिया था।

मौका पाकर अकड़फूंने ताककर पैंतरेबाज़की कलगीपर वार किया और उसको इतने ज़ोरसे पकड़ा कि वह (पैंतरेबाज़) अपने सब पैंतरे भूल गया। झकझोरकर अकड़फूंने दो-तीन कसके झटके मारे, जिससे पैंतरेबाज़की कलगी कतर गई। कलगीका कतरना पैंतरेबाज़के लिए मुकुटहीन होना था। उसके बाद पैंतरेबाज़की रक्षात्मक लड़ाईमें भी ढिलाई आ गई। इधर अकड़फूंके हमले बढ़ गये। कोई भी वार उसका खाली न जाता। जब कभी पैंतरेबाज़की पीठपर ठोंक पड़ती, तो पीठसे खून फल्ला उठता। अकड़फूं भी लोहू-लुहान हो गया था; पर पैंतरेबाज़की तो बहुत ही बुरी हालत थी। पेट और गर्दनके उसके अधिकांश बाल खुस गये थे। उसकी सांस भी बहुत फूल गई थी, और अकड़फूंके बेपनाह हमले जारी थे।

पैंतरेबाज़के सामने अब जीवन-रक्षाका सवाल था। नेतृत्व तो वह कलगीके कतरनेसे खो चुका था, इसलिए जब अकड़फूंने अपनी चोंचका प्रहार किया, तब पैंतरेबाज़ झुककर अकड़फूंके पेटके नीचे हुआ और उसकी टांगोंमें होकर भाग गया। वह सौ गज़की दूरीपर एक झाड़ीमें बेतहाशा घुस पड़ा, जहां एक गीदड़ने उसे धर दबोचा।

‘विजयी अकड़फूंने गर्दन ऊँची की, पंख फड़फड़ाये और ‘कूकड़ू३, किंकरी३’—मार लिया है, विजयी हूं—की ध्वनिका तांता बांध दिया’’

विजयी अकड़फूं ने गर्दन ऊँची की, पंख फड़फड़ाये और 'कुकड़ूँ ३, किकरी ३'—मार लिया है, विजयी हूँ'—की ध्वनिका तांता बांध दिया और अपने रनिवासको लेकर मस्त चालसे नालेकी ओर चलने लगा। उसकी दो साथिनें भी रनिवासमें शामिल हो गईं। मुर्गियोंने भी 'राजा मर गया और राजा चिरायु हो' (The King is dead. Long live the King.) के तरीकेको व्यवहृत किया।

* * * *

टोलीका नेता बनकर अकड़फूं ने आसपासके जंगलमें अपनी धाक जमा ली। उषाकालमें वह अपनी गलेबाजी—'कुकड़ूँ ३, किकरी ३' प्रारम्भ करता और सूर्योदय तक चैलेंज देता रहता। पेड़से उतरकर बड़े गर्वसे वह अपनी मुर्गियोंको चुगाने ले जाता। दोपहरको आँखें झपकाये हुए वह झाड़ियोंमें आराम करता। जब कभी पाससे कोई बनबिलार या सांप निकलता, तब एकदम आतङ्क-सिगनल कौ-कौ-कौकू-कौ करके वह भागता और पेड़पर जा बैठता और वहींसे कौ-कू-कौ करके विरोध करता।

दसों बार उसे ऐसे प्रतिद्वन्द्वी मिले, जिन्होंने उसके नेतृत्वको छीननेका प्रयत्न किया; पर अकड़फूं की जवानी अभी तनिक भी न ढली थी। जवानी के अतिरिक्त उसके अनुभव और वजनको बहुत कम मुर्गे पा सकते थे। फल-स्वरूप अब तककी सब लड़ाइयोंमें उसकी जीत हुई थी।

गाँववालोंने भी अकड़फूँ की लड़ाई देखी थी, और जब कभी वे उसे देख पाते, तो कहते—"ज्वानीकी मरोरा छोरा लै बैठैगी तोड़।" पर इन सब बातों को अकड़फूँ कुछ न समझता, और जब कभी लोगोंको देखता, तो अपनी गर्दन हिलाते हुए दूर भाग जाता।

एक दिन चुगे चुगाकर अकड़फूँ अपने रनिवासके साथ झाड़ियोंमें दोपहरी बिरमाने जा रहा था। अकड़ और शानसे उसके क़दम उठ रहे थे। धीमेसे जैसे ही एक पंजा उठाता, वैसे ही मुड़कर वह अपने रनिवासकी ओर एक स्नेह-दृष्टि डालता। बसन्तो अधेड़ावस्थाको पहुँचकर बहुत मुटिया गई थी और अकड़फूँके पीछे-पीछे जा रही थी। बिब्बो और मुलियाके अध-जवान बच्चे भी साथ थे। एक पेड़के नीचे होकर जैसे ही अकड़फूँ निकला, वैसे ही पेड़से एक धमाका हुआ, और बघेरेने अकड़फूँके स्थानमें बसन्तोको पकड़ लिया।

टोलीमें तहलका मच गया। 'कौ-कौकू' की ध्वनिसे जंगलमें खलबली मच गई। अकड़फूँ उड़कर एक पेड़पर जा बैठा। टोलीकी मुर्गियाँ भी शोरोगुल करती हुई पेड़ोंपर जा बैठीं। बघेरा बसन्तोको लेकर एक झाड़ीकी आड़में चला गया। अकड़फूँने लगभग एक घंटे तक 'कौ-कौ-कौ-कू' की ध्वनिसे सबको सावधान रखा। लगभग चार बजे सायंकालको अकड़फूँकी टोली इकट्ठी हो गई और चुगनेमें लग गई।

* * * *

कई वर्षों तक अकड़फूँकी जीवन-क्रिया इसी प्रकार चलती रही। उसके समकालीन अनेक मुर्ग अनेक टोलियोंके नेता बने और बुढ़ापे, दुर्घटना तथा शिकारियोंके शिकार हुए। अकड़फूँ अभी तक अपने स्थानपर क़ायम था। हाँ, उसकी उमर ढल चुकी थी। सिरकी कलगी आयु-भारसे झुक गई थी। पूँछके पंख भी तितर-बितर हो गये थे। जवानीकी ज्वाला शान्त हो चुकी थी, पर उसकी गर्मी बाक़ी थी। पट्ठे मुर्ग अकड़फूँके मोटे-ताज़े शरीरको देखकर उसका मुक़ाबला न करते थे ; पर कईएकने उसको चैलेंज तो कई बार दिया था।

एक दिन गाँवके एक महतरकी नज़र अकड़फूँपर पड़ी, और उसे देखकर उसके मुँहमें पानी भर आया। इतना बड़ा मुर्गा हाथ लगे, तो सब घर शोरवा खायँ। ऐसी भावनासे वह घर लौटा। दूसरे-तीसरे दिन महतर अपना एक असील मुर्ग लेकर अकड़फूँके छुपनेकी जगह एक झाड़ीमें जा बैठा। सायंकालके चार बजे अकड़फूँ उधर होकर निकला। महतरने अपने असील मुर्गको छोड़ दिया। असीलने आवाज़ कसी —"कुकड़ूँ २, किंकरी २"। अकड़फूँके गलेसे भी गोली-सी छूटी —"कुकड़ूँ २ किंकरी २"। थोड़ी ही देरमें दोनों मुर्ग भिड़ पड़े।

दोनोंका कोई जोड़ न था। एक ओर ढलती हुई जवानीका अकड़फूँ और दूसरी तरफ हट्टा-कट्टा जवान असील मुर्ग। तीन-चार प्रहारोंमें ही अकड़फूँकी दुर्गत बन गई। असीलने बात-की-बातमें उसे अन्धा और घायल कर दिया। घंटे-भर बाद छुरीकी दयालु तेज़ धारने अकड़फूँकी पीड़ाका अन्त कर दिया।

अकड़फूँ उस बेजोड़ लड़ाईमें शहीद हुआ; पर उसकी औलाद अब भी उसकी आन और शानको कायम किये हुए है। अकड़फूँके सैकड़ों बच्चे जंगलोंकी शोभा बढ़ा रहे हैं। जब तक वह जीवित रहा, शानसे रहा। बुढ़ापेके आनेसे पहले उसे एक बेजोड़ लड़ाईमें परास्त होना पड़ा और परास्त होकर वह अधिक तरसा-बिलखा नहीं। यदि क्षणिक कष्ट पाकर जीवनके दुःखोंकी लड़ी ही टूट जाय, तो कितना अच्छा :—

तरसने-बिलखनेसे मरना ही अच्छा।

———

लेखककी अन्य कृतियाँ

१ प्राणोंकी सौदा—(सचित्र)	...	३॥)
२ शिकार (सचित्र)	....	३)
३ शिकार उर्दू (संस्करण)	....	३)
४ बोलती प्रतिमा	...	२।)
५ हमारी गायें	...	१५)
६ पपीता	....	।)
७ झांसीकी रानी	...	॥)
८ शब्द-चित्र	...	२)
९ नेताजी सुभाषचन्द्र बोस (अंगरेजी)	...	२०)

लेखककी वे पुस्तकें जो प्रेसमें हैं :—

१ नयना सितमगर (सचित्र) (शिकार सम्बन्धी रोमांचकारी कहानियाँ)	...	४)
२ १९४२ के संस्मरण	—	५)
३ हमारे पड़ोसी पक्षी (सचित्र)	...	५)
४ हमारे सौ जंगली जानवर (सचित्र)	...	५)
५ निबन्ध संग्रह	...	४)
६ तरस न खाइये (उपन्यास) स्टेफिन ज्वाइगके उपन्यास Beware of pity का अनुवाद	...	६)